सहस्रं शीर्षा

गजेन्द्र ठाकुर



श्रुति प्रकाशन

गजेन्द्र ठाकुरक जन्म भागलपुरमे सन् १९७१ मे भेलन्हि आ आइ कालि्ह ओ दिल्लीमे रहै छथि।

सहस्रं शीर्षा

गजेन्द्र ठाकुर



श्रुति प्रकाशन

Sahasrasheersha: A Maithili Novel by Gajendra Thakur first published in 2010, IInd edition 2015 by M/s Shruti Publications, India

Price:₹400

पहिलसंस्करण : 2010 दोसर संस्करण : 2015

ISBN : 978-93-80538-29-7

Author acknowledges: Parmeshwar Kapari, Kapileshwar Raut, Kapileshwar Sahu, Hemnarayan Sahu, Madan Prasad Sahu, Rajdeo Mandal, Durganand Mandal, Yoganand Jha, Smt. Kamla Chaudhary, Smt. Lalita Jha, Umesh Mandal, Umesh Paswan, Jagdish Prasad Mandal, Mahendra Narayan Ram, Om Prakash Bharati, Shiv Kumar Jha, Manoj Kumar Karn (Munnaji), Poonam Mandal, Priyanka Jha, Bechan Thakur, Nand Vilas Roy, Jagdish Mallik, Ram Vilas Sahu, Jhameli Mukhiya, Lakshmi Das, Indrakant Mishra (Bauwa Kakka), Direndra Kumar, Shashikant Jha, Shiv Kumar Mishra, Ramdeo Prasad Mandal 'Jharudar', Bacheshwar Jha, Bahadur Ram, Yadunandan Pandit, Bulan Raut, Parmanand Thakur, Manoj Kumar Mandal, Jitendra Yadav, Mohammed Gul Hasan, Umesh Kumar Mahto, Keshav Mahto, Sanjay Kumar Mandal, Sanjeev Kumar Shama, Mihir Jha, Phulo Paswan, Om Prakash Jha, Chandan Jha, Amit Mishra, Sandeep Kumar Safi, Anand Kumar Jha, Kashyap Kamal, Dinesh Mishra, Preeti Thakur, Laxmi Thakur, Swastika Thakur, Madhulika Chaudhary, Buchru Paswan, Tulika Choudhary, Neelima Choudhary, Shreemohan Choudhary, Dukhiya (Durganand) Chaudhary, Panjikar Vidyanand Jha, Vinit Utpal, Jyoti Sunit Chaudhary and others whose oral/ written collections of Maithili Folk Tales/ music/ cultural diaspora; andthe discussions held with some of them and many othershelped author understand the economy, society and culture of Mithila in detail. The author acknowledges the contribution of folktellers like Jayram Thakur, Saryug Thakur, Currant Lal, Vishnudev Paswan, Bindeshwar Paswan, Ramdev Ram, Shivan Paswan, Shivchandra Paswan, Beli Roy, Anil Sada, Rajo Sada, Suresh Sada, Rajendra Sada, Jagdish Sada, Chhotelal Sada, Nirmal Sada, Pawan Singh Paswan, Jage Mahto, Jage Raut, Yogendra Yadav, Ganga Ram Mallick, Rambabu Paswan, Ghuran Paswan, Bablu, Shrawan, Dinesh, Lalu, Shanti Devi and numerous other unsung personalities/ philosophy books/ authors who are the real torch bearers of Mithila's rich tradition; and; national and international news magazines/ newspapers.

श्रुति प्रकाशन: रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यूराजेन्द्रनगर, नईदिल्ली-११०००८.दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८फैक्स- (०११)२५८८९६५७

Website:http://www.shruti-publication.come-mail: shruti.publication@shruti-publication.comफ्रण्ट आ बैक कवर चित्र: सौजन्य उमेश मण्डल

Printed at: KV Publisher & Printer, New Delhi.

Distributor : Pallavi Distributors, Ward no-6, Nirmali (Supaul), Mob. 9572450405, 9931654742

Sahasrasheersha: A Maithili Novel by Gajendra Thakur

ए.एम. रत्नम, एस.शंकर आ कमल हसन लेल,
जिनकर *हिन्दुस्तानी (भारतीयुडु, इण्डियन)* हमरा अपन पिताक
स्मरण करबैत रहैत अछि।

स॒हस्र॑ शीर्षा॒

हजार माथ, हजार मुँह, हजार तरहक गप-खिस्सा, सत्य आ ...|

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षःसहस्रपात्। सभूमिग्वंसर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलम्॥...

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

... पद्भ्यांशूद्रो अजायत||..पद्भ्यां भूमिर्दिशः...||

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल.... मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति....

अनुक्रम

पहिल कल्लोल

गढ़ नारिकेल- महिसबार ब्राह्मणक गाम

पहिल पल्लव

कोना एकरा कहि दैए कोल्हुमे जोतल बड़दक चालि सन!

भोर होइसँ पहिने, सुरुज उगैसँ पहिने सूति-उठि ठाढ़ भऽ जाइए जिनगी।

घरमे कतेक काज होइ छै। जिनगी चलबैले कतेक काज होइ छै। भोर होइसँ पहिने शुरू भऽ जाइ छै जिनगी। सभकेँ बुझल छै ओकरा की सभ करबाक छै, सोझे शुरू भऽ जाइ छै बिना रुकने, बिनु ठाढ़ भेने। कतेक फुर्तीसँ चलै छै जिनगी। कोनो सरोकारकेँ बिसरल नै जाइ छै, कोनो काज छोड़ल नै जाइ छै, मुदा ऐ तेजगर जिनगीकेँ कोना कियो कहि दैए आस्ते-आस्ते चलैत जिनगी, ठाढ़ जिनगी; कोना एकरा कहि दैए कोल्हुमे जोतल बड़दक चालि सन!

"भैया, कन्हापर चढ़ा कऽ नै घुमा देब?"

ममतोड़केँ कन्हापर चढ़ा कऽ कोनो काज करबामे मुखदेवकेँ कोनो दिक्कत कहियो नै होइ छलै, नहिये काज करबा काल आ नहिये खेलबा काल। खेलेबाक समै सेहो फड़िछाएल छलै, ईलम सिखब शिक्षा छलै आ तकर बीच खेल, दौगा-धूपी। ईलमो बाप रे, काज उद्यमसँ लऽ कऽ टाट बनेनाइ, बन्हन देनाइ, बाँस पंगनाइ, पोखरिमे हेलनाइ, माँछ-डोका-काँकोड़ पकड़नाइ, ढोलक बनेनाइ। आ सेहो ईलम सिखबामे कोनो हरबड़ी नै। एक तूरक बच्चाकेँ की सभ अबै छै से सभकेँ बूझल छै।

टोलोक बच्चा सभ आबि जाइ, कहियो वर-कनियाँ बनै जाइ, तँ कहियो भाए-बहीन। ममतोड़कैं दू भाइ, दयाराम आ मुखदेव। मुदा दयारामकैं कहियो काल टोलक दोसर बुचिया अपन भाए बना लै, मुदा ममतोड़क बखड़ामे सदिखन मुखदेवे आबै।

"भैया, हमरा बिसरमे तँ नै। भौजी आबि जेतौ तँ हमरा बिसरि तँ नै जेमे।"

"भैया बिसरि तँ नै जाएत?", अपन माए-बाबू सँ सेहो ममतोड़ पुछै छलै। कियो ओकरा कहि देने छलै जे ओकरा घरमे भौजी आबि जेतै आ भैया ओकरा बिसरि जेतै।

"भौजीक भरोसे रहबाक छौ तोरा? अपने बियाह हेतौ आ अपन घर जेमे।", माए ओकरा कहै छलै।

"नै, हम बियाह नै करब, आ माए-बाबूए संग भरि जन्म रहब।"

बच्चाकैं माए-बाबू सभसँ बेशी प्रिय होइ छै।

आ माए-बाबू कहै- "ठीक छै, हमरे सबहक संग रहिहें।"

मुदा ममतोड़कैं होइ छलै जे माए-बाबू ओकर मोन बहटारैले से कहि रहल छै। सुतली रातिमे ओ ओकरा सभकैं झमाड़ि कऽ उठाबै, सकरबाबै आ फेर निश्चिन्त भऽ सुति रहै छलै।

माए-बाबू, काका-काकी, मामा-मामी, मौसा-मौसी, दीदी-पीसा। गामक लोक, समाज। आ भाए बहिन; सहोदर, पितियौत, ममियौत, मसियौत आ पिसियौत।

-केहेन नीकसँ तँ जिनगी बीति रहल अछि, आत्मनिर्भर जिनगी। ने ककरो आगाँ हाथ पसारै छी, ने ककरोसँ कोनो सरोकार। जे सरोकार समाजसँ अछि ओहो अछि मात्र स्थितप्रज्ञबला, बिनु भावक। ऐ बिधमे हमर

काज जँ छै, तँ कऽ देलौं, ढोलहो दऽ देलौं, पिपही बजा देलौं। सेहो एकतरफा, बात खतम। कोनो हृदैसँ जुड़ल हुअए, से नै। हमर घरमे कोन बिध होइए, केना बियाह-शादी होइए, ओइमे दोसराक कोनो ने खगता-बेगरता, नै कोनो समाद-सूचना, ने ओ सभ खोजे-पुछाड़ी बा जिज्ञासे करैले आबैए। बादमे कहियो भेट भऽ गेलापर पुछि दै जाइ छथि, भऽ गेलै सभ काज नीक-नहाँति ने। मुदा सुनबाइ छै, कोनो उपद्रव कियो केलकै तँ चारि गोटे ठाढ़ भऽ जाइ छै अन्यायक विरुद्ध, एकतरफा गप नै रहलै कहियो गढ़ नारिकेलमे। सुनबाइ छै।

सुनलौं, बाबू कहै छल आ माए कहै छल- केहेन नीकसँ तँ जिनगी बीति रहल अछि, ओकरा हमर काज मुदा हमरा तँ ओकर कोनो काजे नै।

माएक नैहर, माएक बहिन सभक सासुर, बाबूक बहिन सभक सासुर। गढ़ नारिकेलक अलाबे ई किछु आर गाम मुखदेवक जिनगीमे आबै छलै। गढ़ नारिकेलक आन टोलसँ स्वतंत्र आत्म निर्भर जिनगी मुखदेवक टोलक। ऐ किछु आन गामक एक-एकटा टोलसँ सेहो जुड़ल रहै मुखदेवक टोल। बाहरीकेँ आत्मनिर्भरे बुझाइ छै, मुदा एकतरफा कहियो किछु नै रहलै गढ़ नारिकेलमे। रौदी-दाहीमे सौंसे गाम एक भऽ जाइ छै। गढ़ नारिकेलक मुखदेवक टोलक आत्मनिर्भर संस्कृति अही गामक दोसर टोलसँ भिन्न बुझा पड़ै छलै। मुदा माएक नैहर, माएक बहिन सभक सासुर, बाबूक बहिन सभक सासुर, ऐ सभ गामक ई सभ टोल अपन टोल सन बुझा पड़ै। वएह काज, वएह बात।

अपन दुनियाँ...

अपन दुनियाँमे मस्त लोक। भने केहेन नीकसँ तँ जिनगी बीति रहल अछि, आत्मनिर्भर जिनगी। तोरा हमरासँ काजे भरि सरोकार तँ हमरा तोरासँ कोनो सरोकारे नै, ले जो...।

माटिक साम्राज्य.. चिक्कन चुनमुन घर अंगना, गोबरसँ अंगना नीपल

जाइत आ चिकनी माटिसँ दुआरि।

नारसँ घर छारल जाइत, अहू टोलमे आ दोसरो टोलमे आ पातसँ पटोटन देल जाइत अहू टोलमे आ दोसरो टोलमे। खढ़सँ मात्र कोनो-कोनो धनिकक घर छराइ छलै।

-कत्ते सुन्नर लागै छै माए ई घर। खढ़सँ छारल।

-धुर, बाहरे टा सँ। खढ़बला चारमे साँप सभ सहसह करैत रहै छै। खढ़मे तेना कऽ सन्हिआएल रहै छै जे बुझाइओ नै पड़तौ। आ ई खढ़ आ नार-पुआर.. सभ माटिक रूप छिऐ। चल देखबै छियौ।

माए पछुआर लऽ जाइ छलै मुखदेवकेँ। चारमे जतऽ सँ पानि चुबै, ओतऽ सँ नार घीचि नवका नार दऽ दढ़ कएने रहै बाबू। आ पुरना नार पछुआरमे ठिकिआएल रहै।

-देखही, ऊपरमे नार छै मुदा माटिसँ सटल निचुलका नार माटि बनि गेल छै। अहिना आस्ते-आस्ते सभटा नार माटि बनि जेतै। खढ़ सेहो माटि बनि जेतै।

माटिक साम्राज्य। बर्तन, चूल्हि, घरक देबाल, सभटा माटिक।

आ आब ई नार-पुआर सेहो माटिये छी!

रसनचौकी, पिपही। ढोलक, मृदङ। पनही, जुत्ता। गोरोचन।

चमराक गंध नै सुंघब तँ चमराक बौस्त कोना बनत।

-मनुक्ख आ जानवरक चमड़ामे कोनो खास अन्तर नै छै। घा भेलापर मनुक्खक चाम नै देखै छिहीं, कोना दुर्गन्ध करऽ लागै छै। जानवरे छी ने मनुक्ख, जिनगी छै तँ चाममे चेँछ लगलापर दर्द होइ छै, जिनगी खतम आ... चाम, खढ़ आ नार सभ माटि बनि जाइ छै। माटि लग राखि देबहीं तँ माटि बनि जेतौ, सुखा देबहीँ तँ मरलाक बादो किछु दिन आर चलतौ।

सभ किछु माटिक साम्राज्यक पराधीन छै।

आ अही माटिक साम्राज्यमे मुखदेव राम ठेहुनिया देलन्हि आ ठाढ़ भऽ गेला। अपन टोलसँ दोसर टोलक बीच एकटा अदृश्य माटिक देबार देखा पड़ै छलन्हि हुनका। आ तकर ओइ पार सेहो माटियेक साम्राज्य रहै। हँ, ओ माटि दोखर आ चिकनी दुनू तरहक रहै। ऐपार तँ दोखर आ चिकनी माटिक बीचक साम्राज्यमे सामंजस्य रहै; घर-अंगनाक भीतर सेहो आ बाहरमे सेहो, देबार, गहबर सभ ठाम। मुदा ओइ अदृश्य माटिक देबारक ओइ पार दोखर आ चिकनी माटि कखनो काल गरीबी-विपन्नता आ धनिक-आभिजात्यक बीचमे बँटल बुझाइ छलै।

कलम-झाड़ीमे बेढ़ लागब शुरू भऽ गेल। पोखरिक महार तँ घेराएल छले, डबरा सेहो बेढ़ल जाए लागल।

माटिक साम्राज्य आर विस्तृत बुझाए लागल, बेढ़ल आ बाँटल। घनगर बनल।

मुदा रकबा घटल साम्राज्य।

साम्राज्य।

पोखरि दिस जाइ काल जे कलम-झाड़ी अनन्त बुझाइ छलै ओ माटिक देबार दिस सहटि कऽ आबए लागल।

पनिछुआ लेल आ नहाइ लेल जाइ घड़ी पोखरि तँ पहिनहियो अलभ्य छलै। डबरेकेँ एक कातसँ साफ कऽ नहाइक बेबस्था कएल जाइ छल आ दोसर कात साफ कऽ छौंचबाक व्यवस्था होइ छल। आब ओहो माटिक देबारसँ सटऽ लागल।

माटिक देबार एतेक भयौन नै लागै छल।

सभटा भोर एक्के रङ। मुखदेवक गाम गढ़नारिकेलक गाछ-बृच्छ, माल-जाल, जलचर आ लोक; सभ रङ बिरङक। मुखदेवक संगी साथी सभ गारल कठबोगना। पोखरिक यज्ञमे कोनमे गारल काठक भुट्ट मनुक्ख। लोक कहितो छै, कतबी टा अछि.. जवाब भेटै छै, कतबी टा नै अछि, अदहा तँ जमीनमे गारल अछि।

एकपेड़िया सड़कक कातमे मुखदेवक घर। मुदा एकपेड़िया केना, सड़क तँ चकरगर छै, मुदा लोक चलैत-चलैत बीचमे एकपेड़िया बना दै छै। कखनो काल ऐ एकपेड़िया सड़कक दुनू कात एक-एकटा एकपेड़िया खधाइ सन चेन्हासी जे कटही गाड़ीक दुनू चक्का बना दै छै, बरखामे पानी जमा होइले। आ ओइमे छपछप करैत मुखदेव गढ़ नारिकेल आ साहेबगंज आन-जान करैत रहैत अछि।

दयाराम आ ममतोड़क संग चलि रहल छलै जिनगी।

बँसबिट्टीक अन्हार गुज्ज वातावरण, लगै छल जेना घरक भीतर धरि पैसि जाइ छल। घरक, टोलक ओहार बनि जाइ छलै ई अन्हार। ऐ अन्हारसँ सुरक्षित छल दयाराम आ ममतोड़क संग मुखदेवक जिनगी।

मुदा लोकक कमी गाछ-बिरिछ, धान-माँछ, चिड़ै-चुनमुनी आ माल-जालक विविधता पूर्ण कऽ दै छल, मुखदेव, दयाराम आ ममतोड़ मनुक्खसँ बेशी अही सभसँ लग रहथि। खेल-धूप, गीत-नाद सभ ततेक तरहक, बिधे-बाध सन। सभकेँ ततेक लगसँ आ कतेक गहींरसँ चिन्हैत रहथि। रंग, समए, गुण।

पटोटन, नार, खढ़ आ माटि।

कोल्हुक बड़दक घेराबा ठाढ़ भऽ कऽ आगाँ चलैत रहै छै गढ़ नारिकेलमे। चक्का घूमऽ लगै छै आ चलैत रहै छै, भोरसँ साँझ धरि एक्के-ठाम ठाढ़ नै रहै छै कोल्हुक बड़द, कटही गाड़ीक बड़द नहाँति आगाँ बढ़ैत रहै छै, भोरसँ

साँझ होइत-होइत खेत-पथार, खढ़-पात-बाँस, पोखरि चभच्चाक माटि-पानि-जजात इम्हरसँ उम्हर भऽ जाइ छै, बढ़ि जाइ छै, जे भोरमे अहाँ देखने रहिऐ, से गाम साँझमे नै रहि जाइ छै गढ़ नारिकेल। गामक बाहा, पोखरि सभ अपन जिजीविषा बढ़ा लैए, ई गाम कहियो निश्चिन्त नै होइए। कोनो समस्या चाहे ओ खेत पथारक हुअए, बाड़ी-झाड़ीक बा पोखरि-धारक, लोक सभ पढ़ल पाठ जकाँ ऐ सभमे जिनगी भरि दैए।

दयाराम, ममतोड़ आ मुखदेव सेहो अपन ईलम सभ साँझ बढ़ा लै जाइए।

दोसर पल्लव

चारू कात गाछ-बृच्छ, पोखरि। गाममे एक.. दू.. तीन आ एकटा आर, चारि टा पोखरि।

ओना तँ तीन टा आर पोखरि अछि। एकटा उत्तरबरिया पोखरिक उत्तरभर बड़का डकही पोखरि। लोक सभ बजैए जे कोनो डकैत एक्के रातिमे खुनने रहए ई पोखरि। मुदा तकर प्रमाण पुछने यएह पता लागत जे आन तँ कोनो प्रमाण नै मुदा खुनैत-खुनैत भोर भऽ गेल रहै आ तइ कारणसँ ओ डकैत पोखरिमे जाइठ नै गारि सकल रहए। हड़बड़ीमे ओइ डकैतक, डकैत की राक्षस कहू, एक पएरक पनही सेहो रहि गेलै पोखरिक कातमे। बड्ड दिन धरि पोखरिक कातेमे रहै मुदा फेर बाढ़िमे ओहो बहि गेल। से जे एकटा प्रमाण रहए सेहो नै बचल। गामसँ ई पोखरि दूर अछि से छठि पाबनिसँ एकर कोनो सम्बन्ध आइ धरि स्थापित नै भऽ सकल। हँ उपनयनक बिध-बाधमे धरि एकर उपयोग होइतहि अछि। किसिम-किसिमक माँछ रहै छै ऐ पोखरिमे। माँछक कोनो कमी नै। कहियो डकही पोखरिमे जीरा देबाक खगताक अनुभव नै कएल गेल। सलाना मछैर होइए आ सभ टोलक लोककेँ- दछिनबाइ टोल माने गढ़ अरड़नेबाकेँ छोड़ि कऽ– मछैरक सभ दिन अपन-अपन टोलक माँछक हिस्सा देल जाइ छै।

दछिनबाइ टोलक दक्षिणमे अछि बुचिया पोखरि।

गामसँ दुरगर अछि मुदा जाइठ छै बीचोबीच। काठक ऐ जाइठकेँ गारबा काल पीअर बच्चा, आइक जमीन्दारक अतिवृद्ध प्रपितामह एकटा बड्ड पैघ आयोजन केने छला। बस्तीसँ दुरगर आ खेतक बीचमे रहबाक कारणसँ एतौ लोक सभ स्नानक लेल कम्मे-सम अबैए। मछैर सेहो होइए मुदा से मात्र ऐ दछिनबरिया टोलक लेल। ऐ पोखरिक एकटा आर विशेषता अछि। जखन दुर्गापूजाक समएमे दुर्गाजी फेरसँ नैहरसँ सासुर दसम दिन- जकरा जतरा सेहो कहल जाइ छै- बिदा होइ छथि तँ हुनकर मूर्तिक भसान अही पोखरिमे होइए। पुरुखपात्र तँ नै, हँ महिला लोकनि दुर्गाजीक भसानपर हबोढकार भऽ कनै छथि। दुर्गाजी ऐ टोलकेँ के पूछए, ऐ गामेमे नै बनै छथि। ओ बनै छथि पड़ोसक गढ़ टोलीमे। ऐ गामक लोक तँ अगत्ती सभ। खष्ठी दिन धरि दुर्गाजीकेँ झाँपि कऽ राखल जाइए, मात्र मूर्तिकार हुनका उघारि कऽ देखि सकैए, कारण ओ नै देखत तँ फेर दुर्गाजी बनती कोना। आन कियो देखत तँ आन्हर भऽ जाएत। हँ, खष्ठी दिन बेलनोतीक बाद मूर्तिक अनावरणक बाद हुनकर दर्शन लोक कऽ सकैए। आ ओही दिनसँ मेला सेहो लगैए। ऐ गाममे दुर्गा बनती तँ कतेक लोक खष्ठीक पहिनहिये आन्हर भऽ जाएत। आ पड़ोसक गाम की कम अगत्ती अछि? मुदा पूजाक नामपर देखू, सभ सञ्च-मञ्च भऽ जाइए। नाममे टोल लागल छै- गढ़ टोल, मुदा अछि ई गाम। अही गाम जकाँ महिसबार ब्राह्मणक गाम। अगतपनामे हम आगू आकि हम-एकर तँ बुझु प्रतियोगिता होइत रहै छै दुनू गामक मध्य। गढ़ टोलक गाम दऽ कऽ जाउ तँ ओइ गामक बान्हक कातक दलानपर बैसल छौड़ा सभ किछु ने किछु सुनेबे टा करत। मुदा ऐ गामक फसादी प्रकृतिक छौड़ा सभ अरबधि कऽ ओइ गाम बाटे जेबे टा करत। हँ, सध-बध सभ अही बुचिया पोखरिक बाटे गेनाइ श्रेयस्कर बुझैए, भलहि कनी हटि कऽ रस्ता छै, तेँ की।

गाममे एकटा आर पोखरि अछि। मुदा गामक दुनू कात कमला-बलान आ कोसी, ऐ दुनू धारकेँ नियन्त्रित करबा लेल दू-दू टा बान्ह बान्हल जाए, ई चर्चा देर सबेर होइत रहैए। गामसँ सटल पच्छिम दिस उत्तर-दक्षिण दिशामे रहत एकटा छहर, फेर रहत कमला महारानीक भाइ बलान धार आ तखन कमला महरानी आ फेर जा कऽ ओइसँ पच्छिम उत्तर-दक्षिण दिशामे दोसर छहर, ऐ तरहक चर्चा होइत रहैए। बान्हक बीचमे पड़ि जाएत बल्ली पोखरि। कोना ऐ पोखरिकेँ सरकार भरत से नै जानि। ऐ पोखरिसँ बलान एकटा नालासँ जुड़ल अछि, जखन धारमे पानि अबैए तँ लोक नालाक मुँह खोलि दै छथि आ धारक उपरका पाँकबला पानिसँ पोखरि भरि जाइए, बालु धारमे नीचाँमे रहै छै तेँ ओ नै आबि पाबैए। ओनाहितो बलानमे बालु कम आ पाँके बेशी अबै छै। आ ओइ पोखरिसँ पटौनी होइए। बैसाखमे सकराइतिक लगाति गौँआ सभ हेँज बना सभ पोखरिक सफाइ करै छथि, उराहै छथि। आ पूसक पूर्णिमाक मेला। माछ मखान खूब होइ छै।

गामक शुरूहेमे साबिकी दूटा इनार। इनारक पानिसँ किछु गोटेकेँ घेघ बहरा गेलै तँ लोक गढ़ नारिकेलकेँ घेघहा गाम, मोटका बुइधबला गाम कहि बनोतरी बनाबैए।

धार आ विशाल बल्ली पोखरिक सटले रहए एकटा फुटबॉल क्रीड़ाक्षेत्र- विशाल रमना। जमीन्दारक करतबसँ ई रमना पीअर बच्चाक खेतमे चलि गेल, माने मिला लेल गेल। बड़का जमीन्दार बरबरिया रॉय सेहो ओइ बीचमे नै जानि कोन कारणसँ एक गृहस्थक एकठाम एकट्ठे जमीन हेबापर जोर देने रहए। सुरजू भाइक गोबरसँ सीटल खेत सेहो ऐ क्रममे पीअर बच्चाक खेतमे मिलि गेल छल, माने मिला लेल गेल छल।

कमला आ बलानक बीच महिसबार सभक मालक भोजन लेल बौआचौड़ी अछि। महिसबार सभ एतऽ अबै छथि, खेलाइ छथि आ कमलामे हेलै छथि। कखनो ओ सभ अपना-अपनीकेँ कमलाक धारमे बिन

प्रतिरोधक बहऽ दै छथि तँ करवनो धारक प्रवाहक उनटा हेलै छथि। बौआ चौरीक ई स्नातक सभ छथि।

धारक बीच गुअरटोली।

कुञ्जड़ा टोलीमे मोहम्मद शमशूल। बान्हपर। खिस्सा सुनबैत रहै छथि...

डिलरीनगर। एकटा सैयद छला ओतऽ। एकटा कनियाँ छलखिन्ह आ कैकटा बेटा छलन्हि। लड़ाका सभ।

नूनजागढ़क युद्ध। मुदा ऐबेर सैयद आ हुनकर सभटा बेटा मारल गेल। मुदा हुनकर विधवा गर्भसँ छली। किछु दिनमे बच्चा भेलन्हि। नाम राखल गेल मीरां।

ओहो लड़ाका, मुदा माएकेँ ई पसिन्न नै। हुनकर बियाह करबाओल गेल कमे बयसमे, ई सोचि जे मोन युद्धसँ हँटतै। मुदा..

माए आ कनियाँ बड्ड बुझेलखिन्ह मुदा मीरां असगरे नूनजागढ़ गेला आ बाप-भाएक बदला लेलन्हि आ घुरि कऽ डिलरीनगर एला।

हुनकर आत्माक प्रभावसँ डिलरीनगरमे हुनकर मृत्युक बादो बहुत दिन धरि शान्ति रहल।

बान्हेपर बौधा मलिक आ आर डोमक चारिटा घर सेहो अछि। ईहो दुनू टोल अही गामक सिमानमे अबैए। डोम अपनाकेँ मलिक वा सोपच कहै छथि। बौधा मलिक खिस्सा सुनबै छथि...

चारि टा ब्राह्मण स्नान लेल पोखरि जाइ छला तँ एकटा मरल गाए देखलन्हि। मरल गाए के उठाएत? से छोटका भाएकेँ ओ भार दऽ देल गेल आ जखन ओ घुरल तँ जातिसँ बहिष्कृत कऽ देल गेलै।

सभ जातिक काज पाबनि-तिहार-संस्कारमे होइते छै।

बक्खो जे दान मांगै अंगना नचौनी/
पमरिया जे दान मांगै चिलका खेलौनी/
दगरिन जे दान मांगै नार कऽ छिलौनी/
नौअनि जे दान मांगै आरत लगौनी/
धोबिया जे दान मांगै खिरक घुलौनी

सभ जातिक काज पाबनि-तिहार-संस्कारमे होइते छै।
डोमक काज सेहो पाबनि-तिहारमे होइ छै।

पेटार बनेबासँ सूप, बीअनि सभ किछु बनेबामे डोमक काज, आ पाहुन परख लेल आ बरियाती लेल जे खस्सी काटल जाएत तै लेल मिआँटोलीक काज। खस्सीक मूड़ा दुर्गापूजाक बलिमे कमिटी लऽ लैए। जैनुल मिआँ जे खस्सी काटैत अछि से हलाल कऽ कऽ। गरदनि अदहा लटकले रहै छै, मुदा बना सोना कऽ गरदनि लऽ जाइए आ खलरा सेहो। तखन महिसबार ब्राह्मणमे सँ जे भजन आ अष्टजाम करैत छथि से ओही खलरासँ बनल ढोलक किनै छथि। दाहा लऽ कऽ जखन ओ सभ गढ़ नारिकेल घुरै छथि तकर दृश्य अद्भुते होइए। दाहामे झरनी खेलाइ जाइ छै, बाँसक झरनीसँ।

मर्सिया सुनैत ओहिना पुरुखपात हबोढकार भऽ कानऽ लगै जाइए जेना दुर्गाजीक भसान दिन स्त्रीगण हबोढकार भऽ कानऽ लगै छथि।

ऐ दसो दिन सैयद बँसवा कटौलक रे हाइ हाइ
सेहो बँसवा भेलै बिसरनमा रे हाइ हाइ

गढ़ नारिकेलक सभ लोक गबैय्या, खिसक्कर सभ। सुनैत रहू...

भाव खेलाइ कालमे मीरांसाहेब अबै छथि आ वर दै छथि।
एक्के खिस्सा कए बेर कहबह?
सुनने जाह ने.. गढ़ नारिकेल छिऐ। जए बेर सुनबह नव लगतह।

डिलरी नगरमे हरफूल सैय्यद रहथि।
दिल्लीकेँ तँ डिलरी नगर ने कहै छै हौ?
की जानऽ गेलिऐ?
हरफूलक कनियाँ रहथि आतम।
नूनजागढ़क युद्धमे हरफूल मरि गेला, आतम गढ़ुआरि रहथि।
जन्म भेल एकटा बच्चाक, जकर नाम राखल गेल मीरां।

आतम मीरांक बच्चेमे बियाह करा देलन्हि, मुदा मीरांकेँ नूनजागढ़क युद्ध आ ओइमे ओकर पिता हरफूलक मृत्युक समाचार देर-सबेर लागिये गेलन्हि। आ ओ नूनजागढ़पर आक्रमण कऽ ओकरा हरेलन्हि आ डिलरीनगर घुरि कऽ आबि गेला।

गिर-गिर नगेड़ा दलमे धौंसा बोलै, हे रौ भैया धौंसा
भैया हौ, धौंसा कऽ बोल कहलो नै जाइ
मार-काटि कऽ लकड़ी दलमे बजना बोल बोलैए,
रे भैया बजना बोल बोलैए
भैया छिटकल जाइए सिंघिन तलवार
करिया रे कुमैता दलमे घोड़ा जे ठनकै,
हे रौ भैया घोड़ा
भैया घोड़ा पीठ अगिन हो असवार

फेर एकटा आर टोल अछि।

चर्मकार, मुखदेव राम आ दयाराम राम । पहिने गामसँ बाहर रहए ई टोल, बसबिट्टीक बाद। मुदा आब तँ सभ बाँस काटि कऽ खतम कऽ देने अछि, आ लोकक बसोबास बढ़ैत-बढ़ैत ऐ चर्मकार टोल धरि आबि गेल छै। घरहट आ ईंटा पजेबा सभ अगल-बगलमे खसिते रहैए। ढोलहो देबासँ लऽ कऽ ढोल-पिपही बजेबा धरिमे हिनकर सभक सहयोग अपेक्षित। माल

मरलाक बाद जाधरि ई सभ उठा कऽ नै लऽ जाइ छथि लोकक घरमे छुतका लागले रहैए। मुखदेव अछि जागेश्वर झाक संगी।

लाला महराज, चर्मकारक लोकदेवता। चौरीसँ माँछ मारि कऽ अनै छलथि। चौरीक माँछपर सभक अधिकार रहै छै। सभ ओतऽ माँछ मारि सकैए। मुदा सोनायमनी कहै छलै जे वएह टा चौरीसँ माँछ मारि सकैए। लाला महराज बलगर रहथि, ओ से नै मानथि। एक दिन ओ माँछ मारि कऽ आबि रहल छला आकि सोनायमनीकेँ पता लागि गेलै। पहिने ऐ इलाका सभमे बाघ रहै छलै। सोनायमनी लग सेहो कएकटा बाघ रहै। ओ एकटा बाघ लाला महराजकेँ मारबा लेल पठेलक। मुदा लाला महराज अपन लाठीसँ ओकरा मारि देलन्हि। सोनायमनीकेँ बड्ड तामस उठलन्हि, ओ गहिल देवीक आराधना केलन्हि। गहिल देवी लाला महराजकेँ एकटा बाघिन पठा कऽ मारि देलन्हि।

खसियाक तीर मैया घूरै छै हौ/
हाइ लालाक करै छै नै खोज
लालाकेँ खोजै छै जौँ आबे/
कानि कानि कहैए ने बुझाय
कतौ नै देखियै रे दैबा जो आब/
कतौ नै लाला बाबीकेँ रे आब
केकरासँ से पुछबै केकरा समुझेबै/
केकराकेँ कहबै हम्मे हो उदेश।

लाला महराजक मित्र नाथ मिश्र लाला महराजक माए-बाबूकेँ दूध देनाइ बन्न कऽ देलन्हि।

डाँटि-डपटि कहै लागलै गे/
रूपामाय मिसरकेँ ने बुझाय

जेकरे परसादे नाथ मिसर छह हौ/
धोबिये पाट सनक जे शरीर
केराक थम सनक छौ मिसर रे/
तोरो जे अबै नै हौ जाँघ
कुनल कुनल बाँही नाथ मिसर हो/
ललिये परसादे छौ ने आब

लाला महराजक आत्मा तमसा गेल आ नाथ मिश्रकेँ ओ मारि देलक आ सोनायमनी आ ओकर परिवारकेँ सेहो मारि देलक। फेर लाला महराजकेँ पूजा पाठसँ मनाओल गेल आ तखन जा कऽ ओ शान्त भेला।

गढ़ नारिकेलक सभ लोक गबैय्या, खिस्सा कहक्कर सभ। सुनैत रहू...

मनसाराम चमार आ छेछनमल डोम। दुनू बहादुर, मनसाराम मोरंगक राजाक सेनापति आ छेछनमल सिरीराजखण्ड राजक सेनापति।

मोरंगक राजाकेँ पता रहन्हि जे सिरीराजखण्डक सेनापति छेछनमलकेँ ओना कियो नै जीति सकैए, मनसाराम सेहो नै।

छेछनमलकेँ मोरंगराज अपन दरबारमे बजेलन्हि आ ओकरा लालच देलन्हि। मुदा ओ नै मानलन्हि, सिरीजखण्डसँ विश्वासघात? करबनो नै।

मोरंगराज हुनका गछारि कऽ बन्हबा देलन्हि। मुदा छेछनमल एक्के बेरमे सभ बन्हन तोड़ि देलन्हि। मोरंगराज फेर डेरा गेला, जतुक्का छेछनमल सन सेनापति ओतऽ सेना सेहो तेहने बलगर हएत। आ सिरीराजखण्डपर आक्रमणक विचार ओ त्यागि देलन्हि।

कुछ नै बीति जेतै हौ मनसाराम,
चाहे सिरो कियै नै उतरि जाएत।

तैयो हम्मे नै टपै लेल देबै हौ,
अप्पन राजक रौ भीतर।
जौँ तोरा आबो जी-जानक डर छौ हौ,
तँ घर घूरि जा हौ नै अप्पन।
हम्मे तँ एको करम नै बाकी रखबऽ हौ,
हम्मे करबै सिमानक रछिपाल।
जौँ तोँए एको डेग आगू बढ़बै हौ,
हम्मे तोहर सिर लेबै नै कतारि।

गढ़ नारिकेलक खिस्सा सुनैत रहू... एक्के खिस्साक कएकटा रूप। जतऽ जतऽ सँ कनियाँ-मनियाँ एली, ततुक्का खिस्सा नेने एली।

लुकेसरी एकटा चर्मकारक पुत्री रहथि। छेछनमलकेँ पति रूपमे प्राप्त करबा लेल एकादशी करथि। मुदा हुनका सपना एलन्हि जे छेछन साधु बनि गेल अछि। आ जखन छेछनक भेँट लुकेसरीसँ भेल तँ छेछन हुनका देवी मानि लेलन्हि, हुनकासँ उपदेश लेलन्हि आ लुकेसरीकेँ देवी बना देलन्हि। लुकेसरी देवी बनि गेली।

फेर धनुख टोली। भगवानदत्त मंडल आ अधिकलाल मंडल-धानुक। पहिने यएह लोकनि भार उघैत रहथि मुदा पछाति दुसधटोलीक लोक सेहो भार उघए लागल छथि। खेती करब धनुकटोली आ दुसधटोलीक पुरान पेशा अछि। हँ पहिने ई सभ मात्र बोनिपर काज करैत रहथि, आब बटाइपर करै छथि। बकरी पोसब आ दुर्गापूजामे छागर बलि लेल बेचब, तकरा अहाँ ऐ दुनू टोलक पशुपालनमे गानि सकै छी। एक-एकटा बड़द सेहो कियो कियो राखऽ लागल छथि आ पार लगा कऽ तकर उपयोग जोड़ा बड़दसँ खेती करबामे करै छथि।

कोनो झगड़ा-झाँटी भेलापर महिसबार ब्राह्मणक चाइन कारी खापड़िसँ तोड़ैत कोनो टोलक महिलाकेँ अहाँ सालक कोनो एहन मास नै अछि, जइमे

नै देखि सकै छी, कारण कहती जे ई सभ निर्लज्ज होइए आ से ऐ कारणसँ जे जन्मेपर एकरा सभक पाछूमे थूक दऽ देल जाइ छै, जइसँ लाज नै हेतै।

गढ़ नारिकेलमे कोनो एहेन व्यक्ति जकरासँ समाजकेँ नोकसान होइ छै, ओकर मुइलापर शोक नै मनाओल जाइए, उन्टे ओकरा मुइलापर जनानी सभ खापड़ि फोड़ि कऽ बान्हपर फेकि दै छथि।

तीने टा घर रहलोपर धोबियाटोली एकटा टोल बनि गेल अछि। झंझारपुर धरिक मारवाड़ीक कपड़ा एतऽ साफ कएल जाइए। महिसबार ब्राह्मण सभ जे बरियातीमे बेलबटम झाड़ि कऽ सीट-साटि कऽ निकलै छथि से कोनो अपन कपड़ा पहीरि कऽ? वएह मंगनिया कपड़ा महगौआ, मारवाड़ी सभक। मारवाड़ी सभक ई कपड़ा साफी भाइ दू दिन लेल भाड़ापर हिनका सभकेँ दै छथिन्ह। कोरैल, बुधन आ डोमी साफी, धोबि। डोमी साफी आब डोमी दास छथि, कारण कबीरपंथी जोतै छथि। गुरु गोसाँइ जखन अबै छथि तखन डोमी दासक सरस्वती मन्द पड़ि जाइ छन्हि। मैथिली कबीरवाणीक भण्डार छन्हि हुनका लग।

प्रथमहि छलौं हम आदि पुरुख संग तब हम रहलौं कुमारि हे
भैया मिलल भतारक जनमल ता संग भेल बिआह हे
का संग रसलौं का संग बसलौं का संग केलौं धरुआर हे
का संग देश देशाउर घुमलौं कोन पुरुख के नारि हे
पाँच संग रसलौं पचीस संग बसलौं तीन संग केलौं धरुआर हे
संगहिमे देश देशाउर घुमलौं एक पुरुख एक नारि हे
साँपिन रूप हम शहर बसलौं डँसलौं मये चारू वेद हे
ससुर भैंसुर मिलि एक मत केलौं अचरज कहलो ने जाइ हे
एक आद्या तीनि रूप धराए छल मति बुद्धि विस्तार हे
कहए कबीर सभकेँ मन मोहे सन्त कोइ उतरए पार हे

डोमी दास सालमे एकबेर गढ़ नारिकेलमे सन्त समागम करबै छथि। भरि साल घुमिते रहै छथि। से कत्तौ, कबीर धर्मस्थान, दुहबी, नेपाल; सहजयोग सत्संग केन्द्र, अरेड़ बरही टोल, अरेड़हाट, मधुबनी; कबीरमठ, सतमलपुर, समस्तीपुर; कबीर आश्रम, समस्तीपुर; कबीर आश्रम, तुर्की, मुजफ्फरपुर; कबीर जागू आश्रम, अन्धराठाढ़ी, मधुबनी; कबीर आश्रम, ब्रह्मोत्तरा, मधुबनी; सदगुरु कबीर आश्रम, सुरतगंज, मधुबनी; कबीर आश्रम, भरवाड़ा; कबीर आश्रम, लदौरा, समस्तीपुर; कबीर मठ, कृष्णाटोली, ब्रह्मपुरा, मुजफ्फरपुर; ई कोनो स्थान हुनकासँ छुटल नै छन्हि। कतेको गुरुगादी द्वारा चादरि दऽ मठक महन्थी देबाक कार्यक्रममे हुनकर उपस्थिति अनिवार्य रहैत अछि।

गढ़ नारिकेलक सभ लोकक स्मृति बड्ड तेज, पुछबै एकटा गप्प आ तखन सुनैत रहू...

नौआटोली सेहो तीन घरक। जयराम ठाकुर, लक्ष्मी ठाकुर आ माले ठाकुर, हजाम। बड़ बजन्ता सभ।

जोगिन्दर ठाकुर, गढ़ नारिकेल गामक कमरसारिक बड़ही कमारमे सभसँ समंगर परिवारक। छड़ीदार छथि जोगिन्दर ठाकुर। मुदा माइनजन वा हुनकर देवान जखन भोजमे अबै छथि तखन लगैए जे छड़ीदार जोगिन्दर बाबूक सरस्वती मन्द पड़ि जाइ छन्हि आ नीक आ अनर्गल दुनू गपपर खाली हँ निकलै छन्हि। जोगिन्दरकेँ तीनटा सन्तान- बिहारी, अर्जुन आ शिवनाराएण। सभ गोटे काठक व्यवसायमे लागल छथि मुदा बिहारी संगमे लोहाक काज सेहो करै छथि आ अर्जुन साइकिल मिस्त्री सेहो बनि गेल छथि आ रिक्शा-साइकिलक छोट-मोट भङठीसँ लऽ कऽ पेन्चर साटब धरि सभ काज करै छथि। बच्चा सभक लेल ओधिक गेन्दसँ लऽ कऽ लोहाक तारकेँ नीचाँमे मोड़ि लकड़ीक पहियाकेँ गुड़काबए बला खेल आ कतेक आर खेलाक इजाद केने छथि शिवनाराएण। से लोक कहितो अछि- देखियौ,

पढ़ला लिखलासँ नोकरीये टा भेटै छै, से धारणा बदलू। देखियौ शिवनाराएणकेँ। की-की फुराइत रहै छै, कुकाठसँ की-की बना लैए। मुदा बिहारीक हाथक ईलम ककरोमे नै, आराकाट, सोझकटाइ, खड़ाकाट, फेँटकटाइ सभमे शिव नाराएणसँ आगाँ। शिवनाराएण आविष्कार करैए आ तकर बाद ओकर देखा-देखी वएह बौस्तु बिहारी ओकरासँ नीक बना लैए। आब गाममे कोनो बौस्तुक कॉपीराइट आविष्कारककेँ थोड़बे भेटतै। पथरौटी लकड़ीपर शिवनाराएणक आरी, बसुला मुरुछि जाइ छै मुदा बिहारी नै जानि कोना सम्हारि लैए। टोनाह लकड़ीसँ सेहो किछु ने किछु बना कऽ मेला ठेलामे बेचि अबैए। तकथा चिरबाक लेल नम्हर आरी सोझाँमे नै रहने छोटको आरिसँ चीरि दैए। लकड़ीक कामिल भागकेँ असरासँ अलग करबामे बिहारीक जोड़ नै।

मोट सूतक बनल अँचरी भगवतीकेँ खोइँछ देबा लेल पटवा जगदीश माइलकेँ ताकल जाइ छन्हि, पटमीनी बड्ड काजुल।

भोला पंडित कुम्हार, माटिक कोहा सभसँ लऽ कऽ बच्चा सभक लेल चिड़ै चुनमुनी धरि बनेबाक इन्तजाम छन्हि। मटिकममे कोनो जोड़ नै।

बासू चौपाल, खतबे। भार उघैत रहथि, माँछ सेहो उघै छथि, कहार सेहो बनि जाइ छथि। आ माँछ बेचैयो लागल छथि।

चलित्तर साहु आ लड्डूलाल साहु हलुआइ, दुर्गापूजामे दोकान लगबै छथि। काज उद्यममे सब्जी-तरकारी बनेबाक ठीका-पट्टा सेहो लेमऽ लागल छथि।

शिवनारायण महतो, सूरी। लछमी दास, ततमा। लाल कुमार राय, कुर्मी।

भोला पासवान आ मुकेश पासवान- दुसाध। गेना हजारीक निचुलका खाढ़ीक संबंधी। वएह गेना हजारी जे कुशेश्वरस्थानमे एकटा कुशपर एकटा

गाए द्वारा आबि कऽ दूध दैत देखने रहथि तँ ओइ स्थानकेँ कोड़ए लगला, महादेव नीचाँ होइत गेला, फेर ताकि लेलन्हि। सीताक बेटा कुश (लवक भाए) द्वारा स्थापित ई महादेव गेना हजारीक ताकल।

आब सुनू खिस्सा.. गढ़ नारिकेलमे सभ चीज लेल एकटा खिस्सा अछि.. खिस्सा नै इतिहास...

पुहपीनगरमे कीरति पासवानकेँ जोतला खेतमे एकटा बच्चा भेटलै। नाम पड़लै जोति।

-जोतला खेतमे भेटलै तैँ ने तँ हौ।

ओ ओकरा पोसि-पालि कऽ पैघ केलन्हि।

जोतिक दोस रहै हरिया। दुन्नु संगे रहथि। एक दिन जखन हरिया सुग्गर चरबै लेल जोति संग गेल तँ जोति नाचऽ लागल। इन्द्रलोक डोलि गेल। कालिदासकेँ जोतिसँ भेँट भेलन्हि आ कालिदास हुनका ढेर रास शक्ति देलन्हि आ हुनका धर्म आ सत्यक प्रचार लेल कहलन्हि। पुहपीनगरमे जोति धर्मक प्रचार प्रारम्भ केलन्हि। ओ बच्चा सभक हाथमे माटिक ढेपा देथि आ ओ ढेपा शंकरचूड़ लड्डू बनि जाइ छल।

जिअए निरबुद्धि बालक जोति हौ/
जगमे तूँ अमर भऽ जा
नित दिन करिहैं बलकवा रौ/
आहे धरमक हौ बेबहार
जहीं ठीन जे चीज चाहबै बालकबा रौ/
पुरेतौ दाता हौ धर्मराज

अमरीताक बेटा कालिदास ब्राह्मणक वेश धरि जोतिसँ भेँट करै लेल गेला, मुदा जोति कोनो कारणसँ हुनकासँ भेँट नै केलन्हि। कालिदास हुनका स्राप दऽ देलन्हि आ जोतिकेँ कोढ़ भऽ गेलै।

कालिदास एकटा जोतखीक भेष बना कऽ एला आ जोतिकेँ बोनमे बारह बर्ख भूखे पियासे रहै लेल कहलन्हि। जोति अन्तमे सफल भेला।

सत्यनारायण कामत, किओट, दरभंगाक जमीन्दारक कामतपर रहै छला।

रामदेव भंडारी। किओटक प्रकार भंडारी, जे दरभंगा जमीन्दारक भनसाघर सम्हारै छला।

सत्यनारायण कामत महौत सेहो रहथि, बरबड़िया रॉयक। हाथीक हौदा बनबैमे हुनकर जोड़ इलाकामे नै छल। हाथीक शब्दावली अगत्त, पिछू, थाइत, माइल बिरि ऐ सभक प्रयोगक हुनका अभ्यास भऽ गेल छन्हि, अनेरो आनो ठाम ऐ सभक प्रयोग करैत रहै छथि।

कपिलेश्वर राउत आ रामावतार राउत, बरइ। पानक खानदानी पेशा।

मलाह जीबछ मुखिया। डकही पोखरिमे सालमे एक बेर मछैर, पन्द्रह दिनसँ मास दिन धरि मलाह ऐमे महाजाल खसबै छथि। मलाहक टोल जुमि अबैए।

पोखरिक कातमे मास दिन लेल बाहरी मलाहक गाम बसि जाइए। पहिने तँ मास भरिसँ ऊपर ई सलाना मछैर चलैत रहए मुदा आब घीच तीर कऽ बीस दिन। फेर मलाहक सरदार घोषणा करै छथि- जे आब माँछ शेष भऽ गेल। आब जे मारब, तँ महाजालमे तँ एको टा बड़का माँछ नै आओत। भौरी जालसँ मारब तँ सभटा छोटका माँछ मरि जाएत आ अगिला साल तखन जीरा देमए पड़त। ओइ पन्द्रह-बीस दिनमे गाममे उत्सवक वातावरण रहैए। अही बहन्ने पोखरिक साफ-सफाइ सेहो भऽ जाइ छै। भोरे चारि बजेसँ

दुपहरिया धरि माँछ मारल जाइए। आ फेर बेरू पहर धरि सभ टोलक लोककेँ -दछिनबाइ टोलकेँ छोड़ि कऽ- अपन-अपन टोलक हिस्सा दऽ देल जाइ छै। सभ अपन-अपन हिस्सा लऽ गामपर अबै छथि। ओतऽ टोलक सभ परिवार अपन-अपन हिस्सा बाँटि लै छथि। टोलक माँछक कतेक कूड़ी लागत, ऐ विषयपर कहियो काल विवाद सेहो भऽ जाइए। जिबैत भलहि मसोमात काकीसँ टोका-बज्जी नै होइन्ह, भलहि मरबा काल बेटीकेँ हिस्सामे सँ किछु देबाक मसोमातक इच्छाकेँ कंठ मचोड़ि देने होथि; आ बेचारी मसोमातक मुइल शरीरक औँठा स्टाम्प पेपरपर लगबा लेने होथि। हुनकर स्मरण आन काल भले नै अबैत होइन्ह मुदा डकही पोखरिक हिस्सा लेबा काल सभकेँ अपन-अपन मसोमात काकी मोन पड़िये जाइ छन्हि। ऐपर विरोध व्यक्त सेहो होइए आ पहलमान, जिनका सभ प्रेमसँ खलिफ्फा सेहो कहै छन्हि, केँ छोड़ि किनको ऐ प्रकारक हिस्सा नै भेटै छन्हि- भले खलिफ्फाक अंगनाक ओ मसोमात बीस बर्ख पहिनहिये किए ने मरि गेल होथि। डकही पोखरिक एकटा आर विशेषता अछि। ऐमे माँछ, काछु सभ स्वयं बढ़ैए। पोखरिक कातमे मलकोका सभ अनेरुआ, आ मारते रास लीढ़ केचलीक प्रकार। कातमे भेंट-कन्द महिसबार बच्चा सभक भोजन। कमलाक नाहक खेबाह मलाह, गामक लोकसँ तकर बदलामे अन्न लै छथि। अनगौँआसँ हँ, धार पार करेबाक बदला पाइ लै छथि।

सुनू खिस्सा...

भरौड़ाक दुलरा दयाल मलाह। गोनू झाक गामक।

आब गोनू झाक गप आएल तँ ओइ महामहोपाध्याय धूर्तराज गोनूक खिस्सा पहिने...

मिथिला राज्यमे भयंकर सुखाड़ पड़ल। राजा ढोलहो पिटबा देलन्हि, जे जे क्यो एकर तोड़ बताओत ओकरा पुरस्कार भेटत।

एकटा विशालकाय बाबा दस टा आकि बेसिये ठोप केने राजाक दरबारमे ई कहैत एला जे ओ सए वर्ष हिमालयमे तपस्या केने छथि आ यज्ञसँ वर्षा करा सकै छथि। साँझमे हुनका स्थान आ सामिग्री भेटि गेलन्हि। गोनू झा कतौ पहुनाइ करबा लेल गेल रहथि। जखन साँझमे घुरला तखन कनियाँक मुँहसँ सभटा गप सुनि आश्चर्यचकित भऽ हुनकर दर्शनार्थ विदा भेला।

इम्हर भोर भेलासँ पहिनहिये सौंसे सोर भऽ गेल जे एकटा बीस आकि बेसिये ठोपबला बाबा सेहो पधारि चुकल छथि।

आब दस ठोप बाबाक भेंट हुनकासँ भेलन्हि तँ ओ कहलन्हि-

"अहाँ बीस ठोप बाबा छी तँ हम श्री श्री १०८ बीस ठोप बाबा छी। कहू अहाँ कोन विधिये वर्षा कराएब।"

"हम एकटा बाँस रखने छी जकरासँ मेघकेँ खोँचारब आ वर्षा हएत।"

"ओतेक टाक बाँस रखै छी कतऽ।"

"अहाँ सन ढोंगी साधुक मुँहमे।"

आब ओ दस ठोप बाबा शौचक बहन्ना कऽ विदा भेला।

"औ। अपन खराम आ कमण्डल तँ लऽ जाउ।"

मुदा ओ तँ भागल आ लोक सभ पछोड़ कऽ ओकर दाढ़ी पकड़ि घीचऽ चाहलक। मुदा ओ दाढ़ी छल नकली आ तइसँ ओ नोचा गेल। आ ओ ढोंगी मौका पाबि भागि गेल। तखन गोनू झा सेहो अपन मोछ-दाढ़ी हटा कऽ अपन रूपमे आबि गेला। राजा हुनकर चतुरताक सम्मान केलन्हि।

आब ओ खिस्सा... भरौड़ाक दुलरा दयाल मलाहक। ओही गोनू झाक गामक।

आब सुनू असली खिस्सा....

दुखहरन सहनीक बेटा। बच्चेमे ओकर बियाह बखरीक बहुरा गोढ़िनक बेटी धनियाँ मरौतीसँ भेलै। मुदा किछु तेहेन भेलै जे सभ बरियातीकेँ कन्यागत जहलमे बन्न कऽ देलक आ दुखहरन अपन बेटाकेँ लऽ कऽ पड़ा कऽ गाम आबि गेला। दुलरा दयाल नाच-गानामे पारंगत छल से लोक ओकरा नटुआ दयाल सेहो कहै छलै। पैघ भेलापर ओ बाबूसँ पुछलक जे ओकर गौना अखन धरि किए नै भेल छै। जखन ओकरा सभ किछु पता लगलै तँ ओ बिदा भऽ गेल बखरी। आ बखरीक सिमानपर इनारपर भेँट भऽ जाइ छै ओकरा अपन कनियाँसँ। विघ्न बाधाक बाद ओ आनि लैए अपन कनियाँकेँ।

मुसहर बिचकुन सदाय। डकही पोखरिक सटल गड़खै सभ, थलथल करैत दलदल भूमि सेहो। ओइमे बिसाँढ़ कोरि-कोरि कऽ मुसहर सभ खाइ छथि। अकालमे जखन सभटा पोखरि, गड़खै सुखा जाइए तखनो ई डकही पोखरि मुदा नै सुखाइए।

भुमिहार, राधामोहन राय। कोइर, दुखन महतो। सोनार, अशोक ठाकुर। तेली रामचन्द्र साव, बौकू साव आ कारी साव।

गामक आमक गाछी सभ, कएक टा। बड़का कलम। खढ़ोरिक नवगछली। भोरहा कातक कलम। पोखरिक महार सभपर गाछी।

फेकल आमक आँठीसँ निकलल पिपहीसँ गाछ आ आमक प्रकार बनबैमे ई गौँआ बड्ड माहिर।

कालापहाड़, हरिमोहन, मल्लिका, सुरजापुरी, फजली, चौरिया, बम्बै, डोमा बम्बै, सोभजा (सोबजा बम्बै), नाजरा बम्बै, नेङरा बम्बै, दसहरी, कृष्णभोग, जरदालू, गुलाबखास, कलकतिया, फजिली, सजमनियाँ, सपेता (सफेदा), कठमाहा, सतुआहा, भोंट, बरमसिया (बारहो मास), कलमी भदैया, बथुआ (भदैया), कुल्हरिया, केरबा, परोड़िया, सिनुरिआ, घिबहा, भदैया, सोनहा, खीरमोहन, राइर (खूब मीठ), चौरिया, करिअम्मा (देखैयो

आ खाइयोमे दब), लरूबा, धुमनाहा (पैघ मुदा सड़ही), भोगहा, कपूरिया, सकचुनियाँ, रोहनियाँ (सड़ही, बरसाइतमे भारमे जाइ छै, मिथिलामे सभ आमसँ पहिने पाकै छै), मिश्रीभोग, मोहन भोग, खटहा, रसहा, अल्हुआ, गुलड़िया, सुपरिआ, बरबड़िआ, कस्तुरिआ, दिबराहा, अनन्दी, दुर्गीदाय, केरबा, दरिमा, मिरचैया, बंशिया, मोहरठाकुर, जलमड़ै, सिपिया। बम्बै आँठी फेक दियौ टिपिया बनि जाएत। कलमी फेकलाहा आँठीसँ नै बनैए, ओकरा बनाओल जाइए। कलमीमे गुद्दा होइए, ई गरिष्ठ होइए; सरहीमे रस होइए आ ई सुपाच्य होइए, कने अम्मत सेहो होइए। तही कारणसँ सरहीक अम्मट बनैए। बरियातीकेँ अगता समएमे बम्बै आ पछता समएमे सपेता देल जाइ छै, ई दुनू आम सभसँ नीक मानल जाइए। कलकतियाक अचार आ आमिल बनैए ओना आनो आमक बनैए। बिन कोसा बला आमक कुच्चा अचार– कसौनी- आ कोसाबला आमक फारा अचार बनैए। कोबी आ परोरसँ अन्तिम कालमे लोक अघा जाइए मुदा आमसँ नै। सभ आमक सभ तरहक स्वाद।

खढ़ोरिमे सेहो खेत रहए। मुदा एक गोटे जे नवगछुली लगेलन्हि, तइसँ छाह भेने दोसर खेतक धानक खेती दबि गेल। से ओहो कने चौक-चौराहापर अनट-बनट बजैत आमक गाछी लगा देलन्हि।

एक टा जमबोनी सेहो अछि। नमहर-नमगर गाछ सभ, जोम सभ आ पतरगर जोमनी। आ छोटका-छोटका गुलजामुन।

पीपरक गाछ सभ डिहबारक स्थानसँ लऽ कऽ स्कूलक प्रांगण धरि एत्तऽ-ओत्तऽ पसरल अछि। पीपर गाछक जड़ि एत्तऽ आ शिरा सभ दहोदिस। नागफनी, पाकड़िक गाछ, बेलक गाछ, तेतैरक गाछ सेहो ठाम-ठीम अछि।

बान्ह सभक कातमे बोनसुपारीक गाछ, साहर दातमनिक झोँझ, बँसबिट्टी आ मारिते रास फूल आ काँट सभ। लजबिज्जी तँ सभ कलममे।

चाकर आमक गाछपर रखबार सभ ओछैन कऽ सुति रहै छथि। वरक गाछ मुदा एक्केटा, पीचक कातमे मीआँटोली लग। घौका साग, लौफ साग, कुम्हरक लत्ती, राजा-रानी साग, गम्हारि, मड़ुआ, चीन, बथुआ, तिलकोरक पात आ फर, मखान, सिंगरहारक फूल, पोरो साग, अरिकोंछ, ओल, थल कमल, भेंट, करोनाक गाछ आ ओकर फड़क अचार, अण्डी, अपराजिता फूल, अनानास, हुरहुर, आँता फलक गाछ, श्याम तुलसी, जिलेबी, धान, केयोरा, समा, कोदो, जइ, सोआ, कुरथी, मूंग, उरीद, खजूर, नरकट, औरा-धातरीम, पान, मतार, गुलैंच, गुलमोहर, रजनीगन्धा, नूनी साग, ठढ़िया साग, लताम, दाड़िम-अनार, पिरार, बन्धनी, मुरइ, सर्पगन्धा, गुलाब, कुसियार, अशोक, तील, अगस्ती, काउन, भाँटा, आलू, जौ, पलाकी साग, अमरा, कदम, चिरैता, तग्गर, गेना, तेतैर, अर्जुन, कनैल, सिंघारा, परोर, मेथी, गहूम, पतेरा, केरैया, बोरा, मकइ, आद, बैर, मोथा, शीसो, धथूर, गजरा, बाँस, सीम, मड़ुआ, कुश, यूकेलिप्टस, जामुन, गुलजामुन, मखान, कट्ठा, बडा, गुल्लरि, डुम्मरि, पपड़िस, पीपर, सौंफ, गन्धराज, साहोर, गम्हारि, मुरलीमनोहर, बांग, फलसा, सूर्यमुखी, रामतरोइ, अड़हुल, जौ, गोकुलकाँट, अल्हुआ, करमी साग, जूही, चमेली, कुण्ड, बेली, सजमनि, खेसारी, मेहदी, मौसरी, तीसी (चिकना), झिंगुनी, घेरा, टमाटर, आम, नीम, मेथी, पुदीना, चम्पा, लजौनी, भालसरी, संध्या, टूटी, कामिनी, बबूर, खएर, चिरचिड़ी, बेल, मालती, सिरीस, प्याजु, लहसुन, घीकुमारी, ठढ़िया, ओल, चोरकाँटी, जइ, शरिफ्फा, कदम, चिनियाबदाम, कटहरी चम्पा, कटहर, बरहर, जनेर, कमरखा, बाँस, झाँटी, महुआ, कचनार, कुम्हर, चुकन्दर, घापसारी, सिम्मर, तार, शलगम, रैंची, सरिसो, पलाश, राहरि, अकोन, बड़सीम, सर्वजया, भांग, मेरचाइ, कुसुम, अमलताश, अमरलत्ती, बथुआ साग, जटाधारी, गुलदाबड़ी, बदाम, तारबूज, टाभनेबो, कागजी नेबो, जमीरी नेबो, अपराजिता, नारिकेर, पाट, धनी, शोन, खीरा, कदीमा, अम्मादि, हरदि, दूभि, दुद्धि केरा (देखैमे खूब सुन्नर), मरिचमान केरा, गौरिया केरा (खूब

मीठ), बागनर केरा (पैघ आ मोट मुदा ओते स्वादिष्ट नै), भोस केरा, कमल, लिच्ची, कनैल, तमाकू, सिंगरहार, भेँट, तुलसी। महिंस जँ समैपर पाल नै खाइए तइ स्थितिमे गरमाइ लेल मेनागोभी पात खिऔल जाइए। खरही टाट-फरक आदिमे उपयोग होइए, पानक लत्ती खरहीयेपर लतरैए आ एकर उपयोग बरैबमे देखल जाइए।

गढ़ नारिकेलमे मनुखक जाइतसँ बेशी गाछ-बृच्छ, फल, अन्न आ तरकारीक प्रकार।

खूब तरकारी होइ छै- झींगली, सीम, भट्टा, मुनिगा, बन्दकोबी, फूलकोबी, शलजम, मुरइ, गाजर, टमाटर, अरड़नेबा, आलू, ओल, कच्चू, टेकना, चटैल, कैता, करैला, करौंदा, कदीमा, कुम्हर, केरा, कमलककरी, कटहर, खजबा कटहर, खम्हारु, बड़हर, परोर, सजमइन। घेरा, एकर फूलक तरुआ होइ छै।

साग आरो प्रकारक- भटपुरैन, कटैया, पेकचा, पटुआ, सिरहोंची, ठढ़िया, गेन्हारी (उज्जर आ लाल), चोलाइ, पोरो, तोरी, अल्हुआ, बथुआ, कदीमा, मटर, बदाम, दूम्फा, खेसारी, पाल, रैंचा, फूटिया, नोनी, बरदनोनी, लफ्फा, पलाकी, मुरै। ललठढ़िआ, झल्ला, लौफ, चोलाइ, पलाँकी, कुसुम, मेथी, सुआ, अर्ड़ा पटुआ, घौका, सरहन्ची, करमी, अरिकंचन, अरूआ, औरबी, तिलकोर, कोबी, सेरसो, तोरी, बदाम, केराओ, मटर, खेसारी, तिनपत्ती, अकटा, मिसिआ, कुम्हर, झलरी, केसी झल्ला, पेंची, राजा रानी। मुनिगा(सहजन)क, अल्लूक, मुरइक साग। बनपलाकी।

चैतमे नीमक कलसल पत्ता भट्टाक संग प्रयोग होइए।

दालिमे कुरथी, मसुरी, खेरही, राहरि, रहरिया, कलाय, खेसारी, मटर, बदाम, मसुरी, तेबखा, केलाइ, रजमा , मटर, केराओ, मेथ, बोड़ा, अकटा, मिसिया, भटपुरनि, रामझुमनी, सीम।

राहरिक दालि धनिक खाइए आ रहरिआ दालि गरीब खाइए।

डबरा, दसरिया, मलिदा, बेलोर, ई सभ धानक किसिम पाइनमे डुबलो रहलापर खखरी नै होइ छै।

बोरी धानक लत्ती होइ छै, ई लत्ती पानिक ऊपरमे लतरै छै आ सभ गिरहसँ गाछ बहराइ छै, एक कट्ठामे दसटा गाछ मुश्किलसँ रहै छै आ ओहीसँ खेत भरि जाइ छै।

सोरना, सुगवा, रंगा, दसहरिया, चननचूर, करियाकामौर, मंसूरी, हप्सा (सुगन्धित), रजनी, पाइनझालि, सिंगरा, कर्रावती, गुलांकी, जसुआ, चौंतीस, छत्तीस, नाजिर, जल्ली, धुसरी, पाखरि, पिच्चरि, कजरागौर, ई सभ धान चौरीमे होइ छल, रोपै कालमे तँ पानि नै रहै छलै मुदा बादमे भरि ठेहुन, भरि जांघ पानि तँ चौरीमे रहिते छै। कनेक मोटका चाउर होइ छै, सएह ने।

गढ़ नारिकेलक चापी जमीन माने चौरीमे उपजैबला धानमे सुंगहा सतरा, सिंगरा, बेलोर, देसरिआ उजरा, देसरिआ करिआ, गोला, केशौनी गोला, मलिदा, गहुमा, पिच्चरि, पाखरि, सत्तोखरि, परबापाँखि, तत्तो, कसहम, उमट्ठ। मध्यम खेतमे उपजैबला धानमे सतरिआ, रमदुलारी, हरिनकेल, धुसरी, बक्कै, सेहमाना, बासमती, तुलसीभोग, ननियाँ, नाजीर, कनजीर, करिआ कामोर, सीता, पंकज, जया, चननचूर, खेमटी, उलाँक, पनिझाली, तुलसी फूल, अम्माघौर।

उपरारि खेतक धान अछि जसबा, कमलकाठी, दूधराज, भालसरी, मंसूरी, भोला मंसूरी, कांक्षीमंसूरी; ऐमे कम्मो पानिमे नीक धानक खेती भऽ जाइए।

धान अगहनमे तैयार होइए।
धान बिहिया-बिहिया कऽ कमाइए सभ।
विहनि लेल बीआ जोगा कऽ लोक राखैए।

बिरारमे बीआ छीटि कऽ विहनि तैयार होइए।
अरदरा पाबनि दिनसँ रोपनी शुरू होइए।

दही, बसिया भात, गुर-चिन्नी, काजर सभटा सानि कऽ कन्चु पातपर तीन वा पाँच कूड़ी बना खेतमे सभ दै छै। जँ ब्राह्मण किसान तीन प्रवर अछि तँ किसान आ बोनिहार बजैए, तीन गव, तीन पान; आ तीन टा कूड़ी बना खेतमे दैए। आ जँ ब्राह्मण किसान पाँच प्रवर अछि तँ किसान आ बोनिहार बजैए पाँच गव पाँच पान; आ पाँच टा कूड़ी बना खेतमे दैए। ई सभ खेतमे बजैत, बिरारसँ उपारि आनल विहनिसँ धानक खेतमे बोनिहार गब लगबैए।

जेठहि बिअवा गिरेलौं अषाढ़हि जनमि गेल हे
साओन रोपनी करेलौं भादव बिट भेल हे
आसिन फूल भेल धान कातिक फर भेल हे
अगहन काटल धान दौनिया कराएल हे
दौनि कराए कोठी ढारल कूटि-कूटि खाएब हे

अदहा बिहब बाकी रहि गेलापर लोक साँस लैत अछि।

भद्दैकेँ बुनि दै छै; छिटुआ धानक ऐ खेतीमे गौँआ सभ निपुण अछि।

भदै सेहो कएक तरहक, लक्खी, जल्ली, झरहा, बच्चिया, रंगबा, गम्हरी उजरा, गम्हरी करिआ। ई भादवमे तैयार होइए।

मिरचाइक विहनि, बिरार।
केराक करजान।

फलमे लिच्ची, केरा, कटहर, लताम, महु, जिलेबी, बुनियाँ, बैर, आँता, शरिफ्फा, सपाटू, बड़हर, जोम, शहतूत, अनार, नारियल, टाभनेबो, बेल, कदम सभक गाछ चारू दिस। केरा सेहो कए तरहक मरिचमान, गौड़िया

मालभोग, झुरकुटिया, दुधी, बंशीबट, अनुपान, दुधमुंगर, बतिसा, मालभोग, सिंगापुरी, बाघनर, बरहरी, चिनिया, मालभोग, कपुरिया।

कास, पटेर, झौआक जंगल। खगरा घास।

केराओ दालि, सरिसो, तोरी, रैंची आ अण्डीक तेल। तीलै गाछ अफरातमे देखब, ऐ गाछक बरेड़ी देबामे प्रयोग होइए आ बजरकेराइक जारनिमे प्रयोग होइए। आमक बाँझीक घूर होइए। जमाइनक गाछ धोइन ढेकारमे काज अबैए।

मंगरैल गाएक दूध बढ़बैए, जनीजाइतक सेहो। सुआ, जमइन-अजमइन, मंगरैल मसल्लामे प्रयोग होइए। मोथी, मोहलीसौंफ, धनी, पुदीना, लहसुन-रसुन, पियौज आ मेथीक गाछ। कागजी आ जमीरी नेबो। तेतैर।

चिड़ै जेना कचबचिया, वाक, चुहिया, पिहुआ, हसुवादागैन, टिड्ढ़ी, बटेर, फुद्दी, बंचर (वनबादुर), सारस, हरदी, ललबोङी, टिटही (टहरीटि), चौंचा, चकोर, चकबा, नीलकण्ठ, धनछोहा, कारकौआ, पनिडुम्मी, सिल्ली, हाँस, फुलचोभी, परुकी, लालसर, गागन, मुर्गी (मुर्गा), चेहा, गछखोदही (कठखोदही), मुजेलिया, चमगादर (चमगुदरी), डकहर, बादुर, मुँहदुस्सी (उल्लू), चिल्होरिया, गिद्ध, बगुला, बाझ, बगेरी, बगरा, पपिहा, बुलबुल, सुगा , परबा, बत्तक, मोर, मैना, कौआ, कोइली, लालसर, देशी कौआ, कार कौआ (काग, बाझिल कौआ), सिल्ली, कचबचिया, अगिन, अधङा, कोइली, कठखोधी, खंजनिचिड़ैआ (शरद ऋतु), गरूड़, चकेबा, चाहा–चेहा, चिल्होरि, चुहचुहिया, चोँचा, डकहर, तित्तिर, कंठमे लाल-धारीबला सुग्गा, दिघौंच, धनेस, धोबिनियाँ चिड़ै, पड़बा, पनिडुब्बी, बनमुर्गा, पहाड़ी मैना (मुँहपर लाल), पपीहा, पौड़की, फुद्दी, बगड़ा, बगुला, बगेड़ी, बटेर, बत्तक, बदर (लाल नाम पुच्छी), बाझ, मैनी (कारीपर उज्जर थप्पा, लोल लाल),

मुँहदुस्सा, ललमुनियाँ, नीलकंठ, सामा, सारस, साहीन, हरियल (मारि कऽ खाएल जाइ छै), हंस।

फतिंगा जे आँखिमे मारैए (अँखिफोड़ा), तितली (दू पाँखिबला रंग बिरंगक, नांगरि रहित), टुकिली (चारि पाँखिबला, नांगरि युक्त), हरियर रंगक हनुमान जीक घोड़ा, एकटा आर होइए अंग्रेजिया मशीन जेकाँ, लगैए एकरे देखि कऽ अंग्रेज सभ जे.सी.बी. मशीन बनेलक।

खढ़िया, हरिन, नीलगाय, हरकाछु, हराशंख, बिज्जी, खिखीर, शाही सेहो खूब।

घोंघहाक मांसक तीमन खाएल जाइए, सुरका बना सुरकलो जाइए आ कोनो बर्तनमे राखि पाँच-सात घंटा बाद छुटलाहा पानिकेँ ममरखामे धिया-पुताकेँ पिऔल जाइए आ सुलबाइमे सेहो फएदा करैए, पेट ठंढा करैए।

माछो किसिम-किसिमक रेखा, टेंगरा, कपटी, कौआ, गरइ, गरचुन्नी, गैंचा, चेंगा, सिंघी, डेरा, कोतरा, लट्टा, कांटी, रेबा, छही, चिनमा, दरही, सौराठ, कबै, सिंघी, मांगुर, पटोरिया, बेलौना, बुआरी, बामी, गागर, भुन्ना, इचना, पोठी, रिट्ठा, भौरा, भुहला, रौह, भाकुर, नैन, ग्लासकप, सिल्वर कप, फोकचा, बद्दो।

चिचोर, गढ़ नारिकेलमे होइबला निरर्थक घासक प्रजाति, नाम-नाम धरगर। पाइनिक केशौर। जटाधारी फूलक गाछ। हरदिक गाछ। अगिया ग्रहक गाछ, नजरि-गुजरि नै लगबा लेल एकर डाढ़िकेँ बाँहिपर बान्हि देल जाइ छै।

रोटी कएक तरहक- मरूआ, चाउर, खुद्दी, जओ, बदाम, खेसारी, काउन, चीन, मक्कै, बाजरा, जनेर, अल्हुआ, अकटा, मिसिया, मसुरी, फकुआ, खेरही, गुरा, सिंघार, मखान, भैँट। एकाध कट्ठामे गहूमक खेती सेहो पैघ लोक करै छथि आ तकर सोहारी सेहो बनैए।

एक्के बौस्तु कए-कए बेर आबि जाइ छै..

टोकियौ नै.. ऐ गामक लोक सुरमे बाजैए.. एक्के चीज कए बेर अबै छै मुदा कतेक नवो चीज आबि जाइ छै ओइ सुरमे।

खेल सभ सेहो कए तरहक- संस्कृतक अटकन-मटकन आ कबड्डी। चंपा-चंपा कनैलक फरसँ खेलाएल जाइए, करिया-झुम्मरि खेलै छी ढील पटापट मारै छी, समाचकेबा खेलै छी चुगला धोती फाड़ै छी, चुगला कोठी छाउर भैया कोठी चाउर, चुगला रौ तोहर ई कोन बानि .... सँ खसलौ निच्छीकै पानि। चल झरनी खेलाइले। बंसी खेलाइले चलू। अम्मन छू अम्मन छू, चैत कबड्डी आबऽ दे। भागवतलीलाक हथियासुर आ उज्जीउज्जी, लालछड़ी.. जकरे नाम लाल छड़ी सएह चलि आबए ठोकर मारि पड़ाए। झिझिया, जट-जटीन, झरनी, हुरियाहा-हुरियाही, हुरा-हुरी, छुतिया, कोइली दौड़, चोर पुलिस, हुक्का-लोली, कनसुप्ती, सिन्गी-पताही, झिझिरकोना.. झिज्झिर कोना झिज्झिर कोना.. कोन कोना, गदहा-गुड़कन, चौसा, सतघरिया, डोलपत्ता, हाथी-चुक्का, गुड़ी कबड्डी, घोड़ा कबड्डी, जूआ, कौड़ी-कौड़ी, कित-कित, डोरी कूद, घरबा-दुअरबा, खो-खो (ई एतुक्का खो-खो छी बम्बैक नै), चोर-सिपाही, चोरानुक्की, गुल्ली-डंटा, पिंगला, लठमार, लुक्का-छिप्पी, जट-जटिन, सोना-डुब्बी, कुश्ती, पचीसी, घास-घास, पचगोटबा, पिट्टो, घोघोरानी, आँखि मिचौनी, कनियाँ-पुतरा, मरूआ-मरूऐनी, मरूआ ढेरी, बनरफान, मालदरी, फुटबॉल, सतरंज, तास, अन्ताक्षरी, पिठियाठोक, गोबरकन्ना, झीलम झाड़, सोल्हगोटिया, झिलहरि, छुली-छुली, ढेंगापानी, चिक्का कब्बडी, अकरो-मकरो, गोली-गोली।

बाप रे...

गढ़-नारिकेलक चटनी-सन्ना सेहो तरह तरहक। काँच लताम, अरिकोँच, ओल, लहसुन, पिऔज, तेतरि, कदम, मेथी, धनियाँ, पुदिना, तील, तिसी,

अमादी, टमाटर, कुतरुम, धात्रीम (धात्री), आमक टुकला, सेरसों, पोस्ता दाना, चठैल, पीरार, भाँटा, घेरा, झुमनी, रामझुमनी, करैला, अल्लु (सन्ना/चोखा), परोर, कुरली (मधकुरमी), मुड़ै, सागक पतौरा, केरा (सन्ना), बरहर, करौना, अमरोरा, अमरा, आदी (आद), तुइत, आमक मोजर (बौर), मुनगा फूल, घोरजौड़ (घोरक छाँछ), सरिफा, खम्हरूआ, पेंची, औरबी, नारियल, नून-मरचाइ-कसौनी मिला कऽ, माछ (सन्ना), काँकोर (सन्ना), डोका (सन्ना), मोछी (कटहरक), पोरो, कटहरक फरक झक्का।

तेलमे सेरसो (करू तेल), तोरी, सूर्यमुखी, रैंची, तोर, अण्डी, कुशुम, मुड़ै, तील, सुआबीन, नारियल, चिनिया बदाम, महु, कटैया, तीसी।

खेत पथार सेहो कएक तरहक। दुनू धारक बीचक खेतकेँ सभ ओइ पारबला खेत कहै जाइ छथि। बलुआही खेत आ पाँकबला सेहो। कमला आनै छथि बालु आ बलान आनै छथि पाँक। परोर, तारबूज, फुइट आ अल्हुआक खेती, सभसँ सस्त खेत जे किनबाक हुअए तँ एतए आउ। मुदा बाढ़िक बाद खेतक आरिक मुँह-कान बदलल भेटत। कोनो साल बाढ़िक बाद खेतक रकबा घटि जाए तँ अराड़ि नै ठाढ़ कऽ लेब। अगिला बाढ़िमे भऽ सकैए कमला महरानी ओकर रकबा बढ़ा दैथि। खेती ओना तँ धानोक होइ छै, मुदा से सुतारपर छै। कोनो बर्ख तीन बेर रोपलोपर बेर-बेर बाढ़िमे दहा जाएत तँ कोनो साल कमला महरानी खेतमे ततेक पाँक भरि देती जे जँ दू मोनक कट्ठा मोनमे सोचब तँ तहूसँ बेशी उपजत।

कनेक महग खेत किनबाक हुअए तँ मोड़बला आ गम्हारिक गाछ लगबला वा डुम्मरितर बला खेत कीनू। एतऽ लोक खेतीसँ बेशी बसोबास लेल जमीन कीनि रहल छथि।

डकही पोखरिबला खेतकेँ बढ़मोतर कहल जाइत अछि। पहिने ब्रह्मोत्तर रूपमे किनको मंगनीमे राजा द्वारा भेटल हेतन्हि। पहिने सुनै छिऐ जे नीक

खेती होइत रहै मुदा आइ काल्हि पानि भरल रहै छै। इलाकामे जे छिटुआ धानक खेती होइए से अही बाधमे।

महीसक मरलापर कन्नारोहटक स्वर सेहो मास दू मासपर सुनबामे आएत। आ जादूटोना, ककरो दरबज्जापर पूजल फूल रातिमे फेकल, सेहो सालमे एकाध मासमे देखऽमे अबैए। आब लोको मुदा बूझि गेल अछि जे ई कोनो छौड़ाक किरदानी अछि।

कृषि-मत्स्य-पशुपालन आधारित महिसबार ब्राह्मण बहुल ऐ गामक चारूकात पढ़ल लिखल, ततेक नै पढ़ल लिखल आ मुँहदुब्बर गाम सभ अछि, मुदा एकटा चोरक गाम सेहो अछि ओतऽ। खाँटी चोर, द्रव्य, बौस्तु-जातक। मुदा गढ़ नारिकेलमे चोरि कऽ लेत से साधांश नै छै।

आन गाममे सभ तरहक चोर- साहित्यक, आचारक, विचारक, प्रचारक।

पड़ोसक चोर सभक हिम्मत नै छन्हि जे गढ़ नारिकेलमे कोनो जातिक घरमे चोरि कऽ लेथि। ऐ गाममे जकर बियाह भऽ जाइए ओकर सभटा फसादी जमीनक निपटार भऽ जाइ छै। ऐ गाममे कुटमैती भेने लोक समंगर भऽ जाइए। एतऽ सँ हसेरी दूर-दूर धरि जाइए। कुटुमक जमीनक झगड़ाक निपटारासँ लऽ कऽ आन-आन काल हसेरी बहराइए। जे जमीन ऐ गाममे हजार रुपैये कट्ठा अछि, वएह जमीन पड़ोसक बनराहा गाममे एक सए रुपैये कट्ठा। उँचगर जमीन गाममे सस्त अछि कारण बर्खाक पानिसँ उत्थर जमीनक पटौनी नै भऽ सकैए। उपरारि खेतक धान जसबा, कमलकाठी, दूधराज, भालसरी, मंसूरी, भोला मंसूरी, कांक्षीमंसूरी; आ मकै, कुरथी, राहरि, मड़ुआ, कोदो, खेड़ी आ सरिसो उपजाबैए ई बनराहा सभ।

बनराहा.. बुझलहुँ नै, ओइ गामक गाछीमे बानर सभ भरल छै आ लोको सभ बानरे सन पीअर कपीश!

बाड़ी मुदा गढ़ नारिकेलक सभ घरक पाछाँ भेटबे करत, भट्टा, नेबो, साग, मुरइ, ई सभ बाड़ीमे भेटि जाइए, आ आन आन तरहक जड़ी बूटी सभ सेहो।

धरि दुर्गापूजा ऐ गाममे नै शुरू भेल। मुँहदुबरा गाममे आ बनराहा गाममे सेहो शुरू भऽ गेल, मुदा एत्तऽ? चाहबै तँ किए नै हएत। रामलीला एक मास केलौं हम सभ आकि नै। धू, बान्ह लगहीसँ घिना गेल। भने नै होइए दुर्गा पूजा। एक तँ धी बेटीकेँ लियाउन करेबाक झमेला रहत आ जे मेलपेँचसँ रहै जाइ छी सेहो पार्टी-पोलिटिक्स खतम कऽ देत।

खुरपीसँ आध माइल एक निशाँसमे छीलि कतेको बोरा घास भरि लैए ऐ गामक ब्राह्मण। ऐ गामक ब्राह्मण महीसक सभटा नीक प्रजाति रखने अछि। ऐ गामक पारा सभकेँ जँ आनो गाममे छूल जाए तँ हँसेरी बहरा जाइए, ओना अनजाने-सुन्जानमे अनगौँआ ऐ गामक पारापर लाठी उसाहैए।

गढ़ नारिकेलमे कलाकार सभक कमी नै। खुरदक वादक जंगल राम, कॉरनेट वादक जीतन राम, भगैत गबैया- रूपलाल यादव, खिसक्कर- छुतहरु यादव आ टहल मुखिया। नाच कम्पनी खुशीलाल साहु खोलने छथि, मैनेजर छथिन फुसन यादव। सिमराहा सप्तरी, सिमराहा सुपौल दुनू ठामक नाच कम्पनीसँ नीक। अल्हा रूदल, लछिया रानी- सती लछिया, शीत वसंत, गुगली घटमा, राजा कुँवर वृजभान, धूलक फूल, सुल्ताना डाकू, राजा हरिश्चन्द्र, राजा नल, राजा सलहेस, काँच ताग, आन्हर कानून, लोहा सिंह, माइक कलेजा, चूड़ी आ सिनूर, जंगल बादशाह, वंश उजाड़न, पिआ देशांतर (बिदेसिया), लोरिक मनियार, बापक हत्या, दमाद वध, निशाद वध, गोपीचन, शंकर शोसिला/ उतिमचन/ सुन्दर वनक सुन्दर फूल, विजय सिंह, पिता हत्या, जंगली बादशाह, रास लीला, रुणा-झुणा, कबीर लीला, कलयुग प्रेम आ आर ढेर रास गाथा। नागार्ची (नडेरा/ डिग्री बजबैबला) गुणेश्वर राम, खौजरी वादक सुकदेव साफी। घुनामुना (सारंगी) बजबैबला खट्टर मल्लिक, मामागाम कमरैलक डोम-मल्लिक सभसँ कताक गुणा नीक घुनामुना बजबै

छथि । झलिबाह (झालि बजौनिहार) अशर्फी मण्डल। कठझालि/ रमझालि/ करताल बजौनिहार छेदी मण्डल। बौसली वादक गुलाब पासवान/ झोटन मण्डल। घोड़ा नृत्य, मजूर नृत्य केनिहार लाइनसँ महादेव बनियाँ, दसाँइ ठाकुर, दुर्गीलाल ठाकुर, घूरन पंडित। झुनझुन्ना (मजिरा) वादक अर्जुन मण्डल। झालड़ वादक रमजानी पासवान, जलतरंग वादक मलभोगी दास, कठतरंग वादक भयलाल दास, मृदंग वादक छोटकनि दास, बीन वादक दुखरन यादव, तानपुरा गंगाय साहु, तरसा (तासा) हूराहूरी आ दाहामे बजाओल जाइए, कल्लर मल्लिक आ मो. आजम द्वारा। झालड़-बच्चा मण्डल। बिपटा बनै छथि सीताराम राम। डिगरी सेदैबला प्रायः भड़िया सेहो होइए, असला-खसला उघैए, डिगरी सतन मुखिया बजबै छथि आ झोटन मण्डल डिगरी सेदै छथि आ भड़ियाक काज सेहो करै छथि। डिगरीमे छोट पातर स्वर निकलै छै। नडेरामे मोट अबाज निकलै छै, चोट पड़ै छै तँ बुझ्झु नाच शुरू भेल। गुमगुमियाँ (ग्रुमबाजा), बबाजीक धुथू (तुरही) डोमी दास बजबै छथि। सिंगहरिया- धुधुबाजा बड़ी टा होइ छै- थूक फेकऽ पड़ै छै बजेलापर, तते दम लगै छै। बेंजो। नृतक (रघुनाथ सदाय), नारी पात्र (अशोक सिंह)। पुरुष पात्र, अभिनय, गायक, नायक, ठेकैता (ढोलकिया)। ऑर्गन डुब्बी मुखिया, नाल सुनर चौपाल, कॉरनेट फूसन राम, नडेरा अशर्फी गोसाँइ, ढोलक हियालाल, मृदंग वादक- झड़ीलाल सदाय। अल्हा/ महराइ। जोगिरा, पराती (प्रभाती) गौनिहार लेल्हु दास। झरनी- मो. आकुफ। नाल वादक खट्टर मण्डल। ड्रमसेट, हरमुनिया तँ बुझू गढ़ नारिकेलक सभ लोक बजबैए। डंका/ ढोल/ तबला- चुनाइ राम। बीकू राम सन डम्फा होलीमे कियो नै बजबैए ।

भगैत गबैया बिचकुन सदाय, रसुआरक भगैत पार्टी हुनका लग किछु नै, ओ भगैत गबै छथि आ संगमे खजुरी सेहो बजबै छथि।

दीप गामक पटियाबला, मोथाक पटियाक कारीगरी किछु एतुक्को लोककेँ सिखेने छथि।

साहेबगंजवाली, बलाटवालीक अरिपन आ मिथिला चित्रकला, बेलमोहनवाली आ बेलाहीवालीक लोकगीत। सिलाइ कढ़ाइमे मछधीवाली। सराइ-कटोरा, माटिक हजार-हजार महादेव एतुक्का बचिया आ स्त्रीगण लेल एक हाथक खेल। बाड़ीमे भँसाओल हजारक-हजार माटिक महादेव जत्तऽ तत्तऽ भेट जाएत। अंगना घर नीपल पोतल, कुटिया-पिसियासँ लऽ कऽ रोपनी पटौनी कथूमे गढ़ नारिकेलक स्त्रीगण पाछाँ नै। सप्ताडोराक कथा हुअए बा मधुश्रावणीक, एतुक्का स्त्रीगण एक्के निसाँसमे सभ कथा कहि जाइ छथि आ जखन एतुक्का बेटी-धी बियाहि कऽ दोसर गाम जाइ छथि तँ ओतुक्को गाममे गुण पसारै छथि।

गाम अछि गढ़ नारिकेल, महिसबार ब्राह्मणक गाम।

दोसर कल्लोल

की बन्है छी? पुरबा-पछबा।

पहिल पल्लव

देश सुनै छिऐ स्वतंत्र भऽ गेलै।
मुखदेव राम अंगैठी-मोड़ करै छथि।

स्वतंत्र भऽ गेलै देश। जेलक बाहरमे महात्मा गाँधी आ जमाहिरलालक गुणगान भऽ रहल अछि, लगैए कोनो सरकारी स्कूलक बच्चा सभ छी ई सभ। एतेक रातिमे..

अखबारोमे निकलल रहै, पहिनहियेसँ तिथ निर्धारित भऽ गेलै। तिथ निर्धारित भऽ गेलै जे १४ अगस्त १९४७ कैं पाकिस्तान स्वतंत्र हेतै आ बारह बजे राति धरि जमाहिरलाल झण्डा फहराबै लेल रुकता, बिलमता भारतक स्वतंत्रताक घोषणा करै लेल!!

घरमे भिन-भिनाउज भेलैए, से एक्के दिन दुनू समांग कोना अपन जन्म दिन मनाएत? छोटका भाए एक दिन पहिनहिये मनाएत जन्म दिन!

सभ काज मेल-पेंचसँ भेलैए।

जाधरि भारतक संविधान बनतै माउन्टबेटन रहबे करत भारतमे।

मुदा पाकिस्तानमे अंग्रेज नै, जिन्ना बनता गवर्नर जेनेरल। छोट भाए देखेतै जे ओ बेशी क्रान्तिकारी अछि, विदेशीकैं नै रहऽ देत ओ सभ गवर्नर जेनेरल।

सभ काज मेल-पेंचसँ भेलैए।

कहि देलकै जे जो तोरा स्वतंत्र कऽ देलियौ। लागैए जे गराक ढोल निकालि कऽ फेकि देलक। आब एतऽ सँ जे लेबाक छलै लऽ लेलक आ आब कऽ देलकै स्वतंत्र।

जमाहिरलालक भाषण शुरू.. जेलर साहेबक रेडी बाजि रहल छन्हि..

"..नियति.. निर्धारित दिवस। कतेको शताब्दीक निन्न आ संघर्षक बाद.."

नियति.. भाग्य.. एकरे विरोध तँ करै छल जागेश्वर..

निन्न आलस्यक रूप आ संघर्ष, ई दुनू संगे?

जमाहिरलाल भाँसि गेल छथि भरिसक।

आगाँ सुनू..

"अपन जिनगी आ काजसँ फेरसँ नव इतिहास जे प्रारम्भ भेल अछि, तकर हम निर्माण करब.. आ दोसर गोटे तकरा लिखत.."

गप तँ ठीके कहैए जमाहिरलाल..

"... हम ओइ असंख्य स्वतंत्रता सेनानीक स्मरण करै छी जे बिन कोनो स्तुति वा पुरस्कारक अपन जान दऽ देलन्हि.."

चलू जागेश्वरक प्रति जमाहिरलालक जिम्मेवारी खतम भेल।

"....जय हिन्द"

भक टुटलन्हि मुखदेवक।

बीच रातिमे जतऽ मुखदेव राम जहलमे रहथि जयरामदास दौलतराम बिहारक राज्यपालक रूपमे शपथ लेलथि। १५ अगस्तकैं बेरू पहर अगस्त क्रान्तिमे मारल गेल छात्र सभक मोन पड़लन्हि जयरामदास दौलतरामकैं आ तखन ओ शहीद स्मारकक शिलान्यास केलन्हि। आ अगस्त क्रान्तिक वीर

मुखदेव जहलमे अछि बन्न!

बिहार प्रान्तक मुस्लिम लीग स्वतंत्रता समारोहमे भाग लेलक, चलू बुधि एलै।

मुखदेव राम स्वतंत्रता संग्राममे जेल गेल रहथि आ देश स्वतंत्र भेलाक बाद नवका सरकार हुनकर सोह बिसरि गेल। मुखदेव राम सभ दिन लोक सभसँ पुछैत रहथि जे स्वतंत्र भारतमे की सभ भऽ रहल छै। पता लगै छलन्हि जे गाँधीजीकेँ कियो टेरै नै छन्हि, हिन्दू-मुसलमानक फेरमे हिन्दी-उर्दू भऽ रहल छै। देशक संविधान बनलै आकि नै बनलै। नहियेे बनल हेतै तेँ ने नबका सरकार पुरनके कानूनसँ चलि रहल अछि आ देशकेँ चला रहल अछि। आ तेँ ने ओकरा पुरनका कानूनक अन्तर्गत जेलमे ठुसले राखल गेल छै। मुखदेव रामो जेलमे आ चोरो-उचक्का जेलमे! हरही संगे सुरही जाए, घी खिचड़ी बरोबरि खाए।

दिन बितैत जाइ छलै। कहियो पता लागै छलन्हि जे गाँधीजीकेँ मारि देल गेलन्हि। तँ कहियो पता चलन्हि जे देशमे शरणार्थीक संख्यामे ततेक बढ़ोतरी भेल छै जे सरकार सभ काज छोड़ि कऽ ओही पाछाँ लागल अछि।

बड़का छहरदिवारी। बाहरी लोककेँ तँ पतो नै लगैत हेतै जे ऐ जेलक भितरो एकटा दुनियाँ छै, छहरदिवारीक भीतरमे सड़क छै, घर छै, एकटा सभ्यता छै। छहरदिवारीक भीतर गाछ बृच्छ सेहो छै। छहरदिवारीक बाहरी लोककेँ तँ बुझाइ छै जे ई छहरदिवारी सूर्यकेँ रोकि दैत हेतै, हबा-बसातकेँ रोकि दैत हेतै। मुदा ऐ छहरदिवारीक भितरो सर्दी गर्मी पड़ै छै, मौसम बदलै छै आ अन्हर बिहाड़ि सेहो अबै छै। लोक बुझैए जे ऐ छहरदिवारीक भीतर जइ परिस्थितिमे लोक जाइए ओहने निकलैए, ने एतऽ बोखार लगैत हेतै आ नहियेे सुलबाहि धरैत हेतै। मुदा एतऽ लोकक मोनो खराप होइ छै आ डाक्टरो वैद्यक आवश्यकता पड़ै छै। लोक बुझैए जे ऐ जेलक भीतर लोक

दुखी रहैत हएत, हँसैत नै हएत। मुदा ऐ छहरदिवारीक भीतर सेहो लोक कुहरैत हँसैए, आ कुहरनाइ बिसरि खुलि कऽ सेहो हँसैए।

आ मुखदेव रामकेँ हँसबै छन्हि एतुक्का लोक सभ। माने जे एतऽ जहल काटै लेल नै आएल अछि वरन एतऽ नोकरी करैए। किछु गोटे जेलमे काज करैले बाहरसँ अबैए आ किछुकेँ जेलक भितरे डेरा भेटल छै। जकरा जेलक भितरे डेरा भेटल छै सेहो कखनो काल मासक मास जेलक भितरे रहैए। मुदा ओकर सभक मोन नै अगुताइ छै। ओकर मोन ऐले नै अगुताइ छै जे ओकरा बुझल छै जे ओ जखन चाहि लेत बाहरक दुनियाँसँ घुरि कऽ आबि जाएत। मुदा ओकर दुनियाँ यएह छहरदिवारीक भितुरका छै। एतऽ ओकर घर आ लोकवेद सुरक्षित छै। एतऽ चोरि नै भऽ सकैए। से ओकरा अगुताइ नै छै।

मुदा मुखदेव रामकेँ अगुताइ छन्हि। हुनका घुरि कऽ जेबाक छन्हि बाहरक दुनियाँमे। जतऽसँ अंग्रेज अपन देश पड़ा गेल छै आकि स्वेच्छासँ चलि गेल छै।

जेलक कर्मचारी सभ हिलि-मिलि गेल छन्हि मुखदेव रामसँ।

घनानन्द, हलधर, नोने, दौलति जहाँ, भट्ट भूषण, रुद्रमति ई सभ तँ मुखदेवक गीत आ खिस्सा सुनै लेल जान देने रहै छथि। ओना एकटा कैदी आर अछि, रघुवरन। ओहो सुनैत रहैए सभटा गप। मुदा चुपचाप। ने मुस्की आ ने ककरोसँ कोनो टोकेचाली।

मुखदेव राम पटनिया जेलकेँ बना देने छथि मिथिला पाठशाला।

बिसरि गेल छथि मुखदेव राम अपन गाम, अपन परिवार।

यएह जेल छी, पहिने बाँकीपुर जेल कहै छलै सभ एकरा।

१९४२ क स्वतंत्रता संग्राममे जागेश्वर झा आ मुखदेव रामकेँ पकड़ि कऽ गामसँ अही बाँकीपुर कैम्प जेल अनने रहै।

१९४२ क स्वतंत्रता संग्राम आकि १९४ २क गढ़ नारिकेलक इनार सभक

स्थापना .. संगे संग दुनू काज भेल रहै।

कम्यूनिस्ट पार्टी क्विट इण्डिया मूवमेंटक विरोध केने रहै। जागेश्वरकेँ से पसिन्न नै पड़लै आ जँ जागेश्वरकेँ पसिन्न नै पड़लै तँ मुखदेवकेँ ई गप कोना पसिन्न पड़तै। अलगे कॉमरेड छल ओ।

जागेश्वरक सासुर पहद्दी गाम रहै।

आ इम्हर भारतक १९४२ क अगस्त क्रान्ति शुरू।

गढ़ नारिकेलक मुखदेव आ जागेश्वर, मधेपुरक कुञ्जन, तारसरायक चेथरू, बहेरीक मुसाइ, बिरौलक ढिनाइ, दलसिंहसरायक भत्तू, ताजपुरक पिचकुन, बेनीपट्टीक छुतहरू आ मेंहथक घोंघाइ आ धनेसर। ई सभ गोटे जतऽ ततऽ घुमथि- पटना, पूर्णियाँ, चम्पारण, मुजफ्फरपुर, मालदह, राजमहल, जलपाइगुड़ी, बिलासपुर, अलीगढ़, मुंगेर।

मुखदेवराम कहै छलखिन्ह जोगिन्दर ठाकुरकेँ, यौ, ओइ बिलासपुर क्षेत्रमे कमार सभ ढेर छथि, ओतऽ लोक सभ हुनका सभकेँ मैथिली बजैत सुनैत रहथि तँ झाजी कहऽ लगला। आ आब हुनकर सभक टाइटिल झा भऽ गेल अछि। आ जे झा सभ मालदह गेला, ओ सभ ओझा टाइटिल राखि लेलन्हि, *अरै डंगा* गाम छै मालदहमे, सभ मैथिली बजै छै, बहुत रास गाम छै ओइ इलाकामे मैथिल ब्राह्मण सभक। *अरै डंगा* माने अढ़ाइ जमीन। अलीगढ़मे जे झा सभ गेला ओ शर्मा टाइटिल राखि लेलन्हि, की हौ जागेश्वर।

ई राज, महराज, महाराजाधिराज सभ पसरल अछि सभ ठाम, सगर मिथिलामे। ई सभ कोनो महराज-तहराज सभ नै छी। अंग्रेजक स्थायी बन्दोबस्तक कुपरिणाम छी। बेगारी खटबै जाइए। ओकर दलाल सभ अछि ई अबवाब आ अमला एजेन्ट सभ, एकटा तंत्र बना लेने अछि। औरंगजेब लै छलै जजिया आ ई जमीन्दार सभ लै छलै चौकीदारी टैक्स।

पुरहित, ई खाली ब्राह्मणेटामे किए होइए, आ जे से छै तखन ओ अछोपक घरमे पुरहिती करै लेल किए नै जाइए।

कबिराहा मठ, गुरू गोसाँइ।

कबीरमठ, लक्ष्मीपुर बगीचा, रोसड़ामे सेहो उच्च वर्णक लोक महन्थीपर कब्जा कऽ लेलन्हि। कृष्णकारखदास कबीरमठ, लक्ष्मीपुर बगीचा, रोसड़ाक महन्थीपर उच्च वर्गक कब्जाक विरोध केलन्हि। ओ निम्न जातिक रहथि आ वचनवंशीय आचार्य गद्दी, महादेव मठ, रोसड़ाक स्थापना केलन्हि। सुनै छिऐ कबीर साहेब अपने प्रगट भेल छला आ कृष्णकारिखदासकेँ दीक्षित केने रहथि।

दुसाधक अप्पन पुरहित सभ होइते छलै।

मिथिलामे सत शूद्रकेँ सोलकन्ह आ असत् शूद्रकेँ अछोप कहल जाइए, मुसलमानमे सेहो अछोप होइ छै जकरा अरजल कहल जाइ छै। आब अछोपकेँ छोड़ू शोल्कन्हक घरमे सेहो अपन-अपन पुरहित हेबऽ लगलै जे बियाह दानसँ लऽ कऽ सभ संस्कार कराबैए।

हाइ रे जागेश्वर..

... आ हाइ रे मुखदेव।

मुदा जागेश्वरकेँ तइ लेल कतेक गोटेसँ भतबरी भऽ गेलै। मुदा ओ की ककरो टेरै छल। अरे की होइ छै भाग्य, किछु नै, मात्र आलस्य। आ जाति की होइ छै? काजक बखरा? तखन फेर शोलकन्ह आ अछोप की? तखन ले, आब सभ जातिमे पुरहित भऽ गेलौ। ले आब!

हाइ रे जागेश्वर।

मुखदेव रामक आँखि नोरा जाइ छन्हि।

मंत्रमे हमरा सभकेँ “ओम” नै पढ़ेबह तँ लऽ लैह, तोरासँ पुरहिती कियो करेबे नै करतौ।

सत्यनारायण पूजामे भूजल मिठगर आँटा नै लेबऽ देबहक, केराक प्रसाद लेबऽ तँ लैह, आब तोरा कियो पुरहितमे रखबे नै करतह।

किछु अधला नै भऽ जाए। पुरहित ब्राह्मण नै भेने किछु अधला नै भऽ जाए।

की अधला हेतै?

दू चारि गोटे हिम्मति केलक तँ आब सभ कियो बुझि गेल जे किछु अधला नै होइ छै।

सही मंत्र कियो पढ़ाबै, पढ़निहारक सहायता लेल पुरहित छै, पुरहित पूजा नै करैए, करबाबैए।

रघुवरन आब किछु बाजऽ लागल अछि। कोनो कॉमरेड आबै छै जेलमे ओकरासँ भेँट करै लेल।

रघुवरन आब किछु बुझऽ लागल अछि। पूछऽ लागल अछि।

राज दरभंगा आ राज सूर्यपुरा ई दुनू जमीन्दार किसानकेँ ठकऽ चाहै छला, कागजपर दसखत कराबऽ चाहै छला, जकरा बदला अंग्रेज हुनका सभकेँ शोषणक अधिकार दऽ दैतन्हि।

अंग्रेजक *बिहार सरकार* जमीन्दार सभकेँ आदेश देलकै जे टैक्स अगिला पन्द्रह बर्ख धरि नै बढ़ाओल जाए।

मुदा दरभंगाक जमीन्दार काश्तकारकेँ जमीनसँ बेदखली करब प्रारम्भ कऽ देलक।

बड़बरिया रॉय, जमीन्दारक अमला एजेन्ट, बिना रसीदक बकाश्त जमीन दैत रहथि, जे जखन मोन होइन्ह ओकरा सभकेँ बेदखल कऽ दैथि।

मुदा जमीन-आपसी आन्दोलनक शुरुआत जागेश्वर केनहिये छल, मुदा ओ आगाँ बढ़ितै ओइसँ पहिनहिये.. एलै १९४२ क अगस्त क्रान्ति।

मुखदेव राम आ जागेश्वर जेल चलि गेला.. मुदा ओ क्रान्ति दुआरे आकि पीअर बच्चाक राधामोहन रायक इनारसँ कैन ओसूलबाक दुआरे...।

बारूद रहबे करन्हि हिनका सभ लग। घूमि-घूमि कऽ एकट्ठा केने रहथि।

गढ़ नारिकेलक मुखदेव आ जागेश्वर, मधेपुरक कुञ्जन, तारसरायक चेथरू, बहेरीक मुसाइ, बिरौलक ढिनाइ, दलसिंहसरायक भत्तू, ताजपुरक पिचकुन, बेनीपट्टीक छुतहरू आ मेंहथक घोंघाइ आ धनेसर।

जटमलपुरक लचका पुल उड़ि गेल। पंडौलक तार काटि देल गेल। नौताल आ धनहरक पुला सेहो बारूदसँ उड़ा देल गेल। फुलपरास थानाक दरोगाकेँ उड़ा देल गेल।

आ फेर गढ़ नारिकेलक इनार...

बारुद कतऽ सँ आएल.. पुछै छलै अंग्रेज.. मुखदेव रामक अलाबे आर के के संगी छौ जागेसर.. मुदा ने जागेसरे आ ने मुखदेवे ककरो नाम बतेलकै।

जेलर मुखदेव आ जागेश्वरकेँ एकटा टॉर्चर रूममे आनै छल। झक्की अंग्रेज। मिनट-मिनटपर आनै छल आ छोड़ै छल।

आ जहिया दुनू गोटे टॉर्चर रूममे आनल जाइ छला दुनू गोटे बुझि जाइ छला जे आइ फेर अंगरेजबा आएत आ खाल खीचत।

बारूद.. आन्दोलन.. संगठन..

सूचना..

कतेक रास सूचना चाही अंग्रेजकेँ..

कोना तोड़त डाँर.. आन्दोलनक।

मुदा तोड़बाक जरूरति की छै, छहोछित भेले छै समाज, नै तँ पीअर बच्चा ई करितए?

“असल बदमास ई अछि।”- जागेश्वर दिस आंगुर देखबैए ओ अंग्रेज।

ओइ दिन फेर दुनू गोटेकेँ ओधबाध कऽ देलकै, अंग्रेज आ ओकर हिन्दुस्तानी सिपहिया।

मुखदेवकेँ घिसिया कऽ टॉर्चर रूमसँ बाहर कऽ देलकै।

मुदा जागेश्वर ओतै रहए।

मुखदेव बाट ताकैत रहथि, आससँ.. तकिते छथि बाट। आइयो लगै छन्हि जे जागेश्वर आबि रहल अछि, बजा रहल छन्हि।

मुदा...

मारि कऽ खतम कऽ देलकै जागेश्वरकेँ.. बेचारोकेँ ने कोनो भाइ रहन्हि ने बहिन, आ ने बाले-बच्चा भेल रहन्हि।

अखन तँ बियाह भेले रहै.. कुसुमावती..

जागेश्वरकेँ अंग्रेज प्रतारणा दऽ मारि देलकै अही बाँकीपुर जेलमे.. आ घेंघी बेचारी.. कोना हएत घेंघी..

“घेंघी? घेंघी के मुखदेव?”- बिच्चेमे पुछि दै छै रुद्रमति।

“घेंघीये ने कहै छलिऐ कुसुमावतीकेँ हम सभ।”-- कहै छथि मुखदेव।

मुखदेवो राम कमाले छथि। फेर मुस्की दऽ रहल छथि। कोनो दुख मोन पड़लापर चोट्टे कोनो सुखितगर खिस्सा हुनका मोन पड़ि जाइ छन्हि। कोना मोन पड़ि जाइ छन्हि से नै जानि।

घनानन्द, हलधर, नोने, दौलति जहाँ, भट्ट भूषण, रुद्रमति ई सभ मुखदेवकेँ घेर कऽ बैसि जाइ छथि।

आ रघुवरन सेहो अछि..

आ मुखदेव राम शुरू..

मौना पञ्चमी- श्रावन मास कृष्णपक्ष पञ्चमीकेँ साँपक माए बिसहराक बर्थडे मनाएल जाइत अछि।

"बर्थडे?"- दौलतिजहाँ टीपै छथि।

हलधर टीप देलन्हि- "की बुझै छिऐ मुखदेवकेँ, अंग्रेजक जेलमे रहैए.. नै नै, आब तँ भारत स्वतंत्र भऽ गेल, अंग्रेजक नै, स्वतंत्र भारतक जेल अछि ई।"

भट्ट भूषण बाजै छथि- "बड्ड टोका-टाकी करै जाइ छह। चेन-मेनसँ सुनै ने जाइ जाह खिस्सा।"

मुखदेव राम शुरू..

मधुश्रावणीमे विषहरा गीत..

मिथिलाक ब्राह्मण-कायस्थ नवविवाहिताक बियाहक प्रथम वर्षक मधुश्रावणीक ई प्रथम दिन, धुरखुरपर गोबरक नाग-नागिनपर सिन्दूर-पिठार लगाएल जाएत।

जागेश्वरक बियाहक बाद पुरबा-पछबा बान्हने रहथि मुखदेव, "की बन्है छी?"- पुछथि मुखदेव। "पुरबा-पछबा"- कहै छलथि घेंघी। पता नै कोन बिध-बाध सभ जागेश्वर सभमे होइ छै, ओइसँ कोनो फाएदा हेबो करतै

आकि नै। मुदा आब कोनो चिन्ता नै। पुरबा-पछबा बन्हा गेलै। बियाहक किछु दिनुका बादे बन्हेलै तैयो कोनो बात नै।

-किए? कोनो अन्तर छै बिध-बाधमे की?

-नै। मोटा मोटी वएह मटिकोर-कुमरम, घीढारी आ पाँच सूप पानि साँझमे कनियाँपर धऽ देनाइ।

हे पाइन-ताइन कनियाँपर नै धऽ दिहक।

मटिकोर, बिलौकी, हँ ई सभ उपनयनमे हमरा सभकेँ भऽ जाइए।

उपनयन मूड़नमे दिन तकेलाक बाद खा-पी कऽ छऽ-सात दिनक खेलौना सोहर गाएल जाइए। उपनयनमे मड़बापर खेलौना, दसमासी सोहर गाबि कऽ उल्लास मनाएल जाइए। उपनयन भेलाक बाद भोरमे चारि बजेसँ पराती गाएल जाइए जे चारि दिन चलैए, रातिम धरि। रातिम दिन बिलौकी मांगल जाइ छै। बेटीक बियाह, बेटाक बियाह आ बेटाक द्विरागमनमे चारि-चारि दिन पराती भोरमे गाएल जाइए, कोबरक बाद सेहो पराती गाएल जाइए, उपनयनमे खाली पराती आ तकर बाद भजन गाएल जाइए।

टोलक ननदि-भाउजमे उतराचौड़ी, मड़बापर स्त्रीगणकेँ पान-सुपारी देल जाइए:

नै छलौ परतर छिनरिया किए बजेलैं गे
टुटले पटिया बैसक देलैं
किए देलैं हकार गै..

टोलक ननदि-भाउजमे उतराचौड़ी होइते रहैए, से ओ उपनयन रहए आकि सामा:

सामा खेलऽ गेलौं फलना भैया आंगन हे
आहे कनियाँ भउजो लेलनि लुलुआए

एतेक वचनियाँ जे सुनलनि भैया
भैया मरय लगलनि तिरबा घुमाए
बहिनिया मोरा पाहुन हे।

परिछनि, ओठंगर कुटनाइ आ लावा छिरियेनाइ, सभ एक्के रङ। हँ घटक तँ रहैए मुदा माइनजन आ छड़ीदार हमरा सभमे नै रहैए। मुदा पीअर बच्चा तँ अछिये असगरे माइनजनो आ छड़ीदारो।- कहै छलथि जागेश्वर।

वर मौड़ वा पाग पहिरने लोकनियाँ संग बैसल, फेर परिछनिमे केराक बीर आ आमबीर चिन्हाएल जाइए, जँ वरकेँ मिर्गी हेतै तँ काछुक खपलोइयाक दीप देखिते ओकर बेमारी बियाहक वेदीपर जाइक पहिनहिये देखार भऽ जेतै। फेर रेहीसँ वरक गाल सेदल जाइए।

घेंघीक मधुश्रावणी मोन पड़ि जाइ छन्हि मुखदेवकेँ। जागेश्वर तँ जहलेमे मरि गेल, घेंघीकेँ ई समाचार भेटबो केलै आकि नै।

नै जानि ई जेल कटत की काटत।
पञ्चमीक माटिक थुम्हा घरमे आनि कऽ राखै छी।
साँप कटलापर झाड़ा-फूकी लेल।
गोसाउनिकेँ खीर-घोरजाउड़क पातरि।
बिसहराकेँ नेबो, झौआ, नीमक पातरि।
गोसाउनिक, गौरी आ बिसहराक गीत।

पूजा-पाठक बाद पाँच बीनी फकड़ा-कवित्त, तीन-तीन बेर सुनलाक बाद कथा।

देशक हाल।

स्वतंत्र देशक हाल। यएह बिख झाड़ैबला फकड़ा सभसँ जँ भऽ जइतै देशक कल्याण!

घेंघीक कल्याण तँ भऽ नै सकलै.. आ..

पाँचो बहिन बिसहरा लग जाइ जाउ, बचल खीर-घोड़जाउड़ मृतकेँ चटाउ। खिस्सामे मृतक जिबिये जाइ छै, मुदा जागेश्वर नै जीअत।

मरड़ए नाम पड़लन्हि, जीब गेला तेँ।

“मरड़ तँ नै छै हौ। देशक नवका नेता सभ बनि गेल छै मरड़।”

“साँपक पोआ सभ।”- घनानन्द आ हलधर संगे बाजि उठै छथि।

व्यापारी चन्नू-चन्द्रधरक बच्चा लखन्दर पहाड़पर कोठामे बिज्जी आ बिढ़नीक पहराक बीच कान्याँ बिहुलासँ विवाह केलक।

मुखदेव की छथि, बिज्जी आकि बिढ़नी..

बिज्जी आ बिढ़नी तँ ई जेलर आ प्रशासन अछि..

ऐ जेलक पहरेदार सभ तँ खिस्सा सुनि रहल छथि... से..। तेँ ने लगेलन्हि.. आ प्रशासन।

मुदा कोहबरमे साँप ओकरा डसि लेलकै।

अहू जेलमे तँ नै छै कोनो डसैबला जन्तु हौ।

एह, मिथिलाक मुखदेवराम कतेक मीठ बाजै छै।

तमसैलोमे मीठ बाजै छै।

आगाँ सुनऽ।

बिहुला लहाशकेँ केराक थम्हपर राखि गंगाधारमे चलि गेली आ ओ हुनका उनटा प्रयाग पहुँचा देलकन्हि।

नै रौ, प्रयागक उत्तर दिससँ आएल हेती, खिस्सा मिथिलामे सुनल जाइ छै तइसँ की।

ओतऽ एकटा धोबिनकेँ ओ देखलक।

ओ बच्चाकेँ मारि नुआसँ झाँपि देलक आ कपड़ा खिचलाक बाद ओकरा जिआ देलक।

बिहुला इन्द्रक दरबार गेलथि, बिसहराक पएर पकड़ि कहलन्हि जे हुनकर पति आ छबो भैंसुर जीबि जेता तखन ओ बिसहरा पूजा करबो करती आ तकर प्रचार सेहो करती।

आब बुझलिऐ, ई सभ भेल बिसहराक पूजा नै केलासँ। प्रचार तँ सभकेँ चाही बाबू।

प्रचारे भऽ रहल छै जे हम करेलियौ स्वतंत्र, आन सभ जे लड़ल, से छल फूसि।

सभ जीबि गेल?

हँ हौ, खिस्सामे सभ जीबिये जाइ छै।

सत्तोमे जीतै सभ, मुदा देश असलमे स्वतंत्र हेतै तखन ने।

दोसर पल्लव

खढ़क घर। धनिकहा लोकक घर।

मुदा खढ़मे साँप सहसह करै छै!!

कोनो चीज नीक लागल आ ओ जँ नै भेटि सकए तँ कहि दियौ जे धुर, ओइमे बुड़या छै, सभ नीक आ अलभ्य चीजमे बुड़या छै।

गढ़ नारिकेलक चारू दिस साँपक साम्राज्य छै। मुदा पोसुआ साँप सभ। साँप कटलासँ मरबाक कोनो घटना मोन नै छै मुखदेवकेँ। मुदा सुनल खिस्सा सभ छै।

घरपर लोकक आएब, दूरेसँ सोर करब।

अखनो ओ अबाज सभ मुखदेवक कानमे अबैत रहै छन्हि।

स्मृतिमे अबै छन्हि बहुत रास घटना, दृश्य तँ कखनो काल देखाइ छन्हि मुदा अबाज बेशी काल सुना पड़ै छन्हि।

भोजक एकाधटा स्मृति।

भोजक ऐँठ पात बिछबाक स्मृति। बादमे तँ लोक पातपर किछु छोड़नाइ बन्ने कऽ देलकै, अपने समेट कऽ लऽ जाए लगलै।

बान्हपर गोलिआएल लोक। भोजक तोड़ खतम हेबाक बाट जोहैत।

ओइ एकाधटा स्मृतिमे मुखदेव सेहो छल।

अहगरसँ पड़सैत जागेश्वर, बान्ह परका पतबिच्छाकेँ किए एते-एते पड़सै छेँ रौ जागेश्वर... चलू पड़सऽ दियौ, बच्चा छै।

मुखदेव आ जागेश्वर दुनू छोटे छल। पाँच बर्खक हएत प्रायः।

समाजक एक लोकक दोसर लोकसँ सरोकार देखार होइ छलै ऐ भोज सभमे। पात बिछै लेल दोसर टोलक लोकक संग छलै सरोकार। खुशीक भोज आ मृत्युक भोज सेहो।

मृत्यु।

मृत्यु कोनो तेहेन अनचिन्हार गप नै छलै। मनुक्खक मृत्यु बँसबिट्टीक अन्हार छाहक ओइपारक लोकक लेल बड़का आडम्बर छलै। मुदा ऐ पारक लोक लेल ओ सामान्य गप छलै। ई माल-जाल, गाछ-बृच्छ, चिड़ै-चुनमुनी आ माछ-काछुक मृत्यु सन आ ओइ सभसँ जुड़ल छलै।

मनुक्खक मृत्युमे कननाइ होइ छलै, मुदा ओकर क्षतिपूर्ति केना हएत सेहो महत्वपूर्ण रहै।

ऐ जेलमे सेहो किछु गोटे बँसबिट्टीक अन्हार छाहक ऐपारक लोक छथि।

रुद्रमतिक बच्चा पानिक हौदमे खसि गेलै। मरि गेलै, डूमि कऽ मरि गेलै। ओ कानलि, मुदा काज करिते रहलि। बँसबिट्टीक अन्हार छाहक ऐपारक लोक जकाँ।

खरड़ासँ दरबज्जा खरड़थि मुखदेव आ बाढ़नि सँ अंगना बहारथि ममतोड़।

खरड़ासँ खरड़नाइयो एकटा काजे छल। आँकड़-पाथर उड़ै।

सम्हारि कऽ।

जागेश्वर छलै।

आ भोरे-भोर खरड़ा खरड़ै काल जागेश्वरसँ भेँट हेमऽ लगलै।

खरड़ा खरड़नाइ छोड़ि कखनो काल खेल-धूप सेहो होइ छलै।

बँसबिट्टीक अन्हार छाहक ऐपारक आ ओइपारक लोकक बीचमे अवैयक्तिक सम्बन्ध रहबाक चाही। बिध-बाध धरि। मुदा जागेश्वर से नै मानै छलै, बच्चा छै, पैघ होइत जेतै तँ अपने सभटा गप बूझि जेतै। मुदा मुखदेवकेँ बुझल भऽ गेल छलै। ई जे भोरमे खेलाइ लेल अबैए से देनहार अछि, आ मुखदेव अछि मंगनिहार, बान्ह परका पतबिच्छा।

मुदा से खेलाइ कालमे बिसरा जाइ छलै, बच्चाक स्मृति ओनाहियो बड्ड कमजोर होइ छै। मुदा जँ बच्चाक स्मृति कमजोर होइ छै तँ अखन मुखदेवकेँ ओ सभ गप कोना मोन छै?

मुदा आस्ते-आस्ते पोखरि आ आमक गाछी जे बँसबिट्टीक अन्हार छाहक ओइपारक बौस्त छलै, ओत्तौ मुखदेव जाए लागल। जागेश्वर ओकरा ओइपार लऽ जाए लगलै। खेला-धूपी बड्ड सनगर चीज छिऐ, कतेक खेल जे ऐपारक लोककेँ आबै छै से ओइपारक लोककेँ नै आबै छलै। आ तँ मुखदेव

ओइपारक दुनियाँमे पएर राखऽ लागल, दुपहरियामे जखन कलममे दूरसँ दुपहरिया नाचै छलै, स्पष्ट, तखन मुखदेव ओइपार प्रवेश करै छल।

अजीबे नाचै छलै दुपहरिया, पहिने तँ ओकरा होइ छलै जे ई कोनो करामात छी, आब बुझेलै जे हवा गरम भऽ कऽ ऊपर जाइ छलै आ उपरका नीचाँ आबै छलै, कोनो बुइया आकि डाइनक काज ई नै छलै।

तेसर कल्लोल

कतेक जना हरिवासर ठानल/ भात
बहुत कै सपना

पहिल पल्लव

जागेश्वर चलि गेल.. सर्वगुणी रहए.. मुदा ओकरा तँ मारल गेल। नै तँ ओहो होइतए दीर्घायु.. सर्वगुणी दीर्घायु!! .... सर्वगुणीकेँ अल्पायु किए बना देल जाइ छै? परिवर्तन रोकबा लेल तँ नै!

कशप मुनिक एक हजार साँप आ देशक एतबे नेता सभ, करीब-करीब।

कशप मुनि विष झारबाक मन्त्र बनेलन्हि।

बिसहरा बनेलन्हि। सएह भेल मनसा।

ओ कैलास आ पुष्कर गेलि।

बूढ़सँ हुनकर विवाह भेल, तइसँ आस्तीक पुत्र जन्म लेलक।

राजा जनमेजयक सर्प-यज्ञमे जरल सर्पकेँ आस्तीक बचा लेलक।

बिसहराक पूजा पसीझक डारिपर होइए। कोन पसीझ, जकर रस पोखरिमे मे धऽ देलासँ सभटा माँछ मरि जाइ छै। हँ हौ, ओकर पात छातीपर गर्म कऽ कए धऽ देलापर खोंखी सेहो मेटा जाइ छै।

आब नव राजा सभक पूजा कतऽ हएत?

श्रुतकीर्ति राजाकेँ भगवती कहलन्हि जे जँ सर्वगुणी बेटा चाही तँ ओ सोलह वर्ष मात्र लेल आएत आ जँ महामूर्ख बेटा चाही तँ ओ दीर्घायु भऽ कऽ आएत। मुदा भेटत कोनो एक्केटा।

जागेश्वर चलि गेल.. सर्वगुणी रहए.. !

श्रुतकीर्ति सर्वगुणी मंगलन्हि। ओकर नाम चिरायु राखल गेल। अल्पायुक नाम चिरायु!

मंगलागौरी गौरकेँ तेना गोहरने रहथि जे जइ वरक माथपर हुनकर हाथक अक्षत पड़त से दीर्घायु भऽ जाएत। अंग्रेज जेना गोहरने रहथि विजयकेँ, हारियो कऽ जीति जाइत रहथि। आ आब नवका अंग्रेज सभ..

सिन्दूर-दान भेल। चिरायु आ मंगलागौरी पति-पत्नी बनि जाइ गेला।

कोहबरमे फेर गहुमन साँप डसबा लेल आएल।

गहुमन सोझाँ दूध देखि ओकरा पीबि पुरहरमे पैसि गेल।

मंगलागौरी पुरहरक मुँह बन्न कऽ देलनि। पुरहरिक साँप रत्नक हार बनि गेल, मंगलागौरी गरामे से पहीरि लेलन्हि।

बाह...

महादेव बिख घोँटि गेला, नील रंगक कण्ठ बनि गेलन्हि, ओ नीलकण्ठ आब चिड़ै बनि मिथिलाक बच्चाकेँ पहिल विद्या दै छथि, मांगै तँ सभ अछिये, पता नै ओ दै छथि आकि नै।

मंगलागौरी गरामे रत्नक हार बनल साँप पहीरि लेलन्हि।

आब के पहिरत ई रत्नमाला आ के घोँटत ई बिख।

स्वतंत्र जँ सही अर्थे भऽ जाए ई पृथ्वी..

मुदा घेंघीक पुरहरिक साँप तँ हियासि कऽ जागेश्वरकेँ काटि लेलकै। सेहो ओइ जागेश्वरकेँ, सर्वगुणी...

घड़ी पाबनि होइ छलै जागेश्वरक घरमे। भगवतीक पातरि, भगवती घरसँ नवेद बाहर नै जाइ छलै। ओही भगवती घरमे केरा पात सहित ऐँठ-

कूइठ गारि दै छलथि। सभ खिस्सो करन्हि- घड़ी पाबनि ब्राह्मणक घरमे? ई तँ शोलकन्हक घरक पाबनि छिऐ। मुदा जागेश्वरक घरमे तँ ई कतेक पुरखासँ होइत आबि रहल छै, नाम छिऐ भगवती घर मुदा स्थान छियन्हि धर्मराज बाबाक। घड़ी पावनि, साओन मास, मधुश्रावणीक बाद जहिया बुध पड़त, तहिया। कतेक ठाम अषाढ़मे घड़ी पावनि होइ छै। नव बर्तन, नव चुल्हामे खीर, दालि भरल पूड़ी, मोतीचूड़क लड्डू। आँचर, आ भगवती घरमे भगवतीक टांगल मौड़, कोठियाक मालिक बनाएल धर्मराजक गोल मड़रानी, मड़रानीपरसँ जनौ टांगल। चौदहो देवान भगवती घरमे। गढ़ नारिकेलमे चौदहो देवानक वास। चौदहटा खीर-पूड़ीक पातरि, लड्डू आ खेरही वा केराओक दालिक दालिपूरीसँ झाँपल। फेर भगवती घर बन्न कऽ देल जाइ छै। फेर थोपड़ी पारि कऽ खोलल जाइ छै। बाले-बच्चे प्रसाद खा भगवती घरमे माटि कोड़ि कऽ गाड़ि देल जाइ छै। आंगनमे सेहो एकटा पूजा होइ छै। खाधि खूनि कऽ, ढेका खोलि कऽ बालापीरक पूजा खीर-पूरी राखि, धूप-दीप देखा कऽ होइ छै आ माटिकेँ फेर नीप देल जाइ छै।

बालापीर, बिसहरा, काली, दुर्गा..

काली, दुर्गा, महामाया.. भगवतीक सात बहिन...

गहबर, धर्मराजक सेवा.. काली.. नरसिंह..

जलपा.. सेवक..

कालीक सेवक, भगवती। दुर्गा आ भैरव, भैरव आ हनुमानक गीत।

चौदहो देवान, माँ भगवती, बाबा धर्मराज। भगवती, धर्मराज आ ब्राह्मणक गीत।

रुद्रपुरक गहबर, काली.. शम्भू झा भगत.. सुरेश झा डेलवाह.. डालामे अक्षत-फूल लऽ कऽ डेलवाह भगताकेँ सोझ रस्तापर आनै छै.. कहै छै.. भगता.. भगत-भाव खेलाइ छै, लोकक की तागति जे ओकरा लग किछु

बाजत, तखन डेलवाह बजै छै.. हे ओइ स्त्रीक घरमे बच्चा बड्ड दुखित छै.. आ भगता ओकर उपाए बतबै छै।

गरीब गुरबा पहिनहियो मिथिलासँ बाहर जाइ छलए।

गरीब गुरबा आइयो मिथिलासँ बाहर जाइए।

ओतौ मैथिली बाजै छलए, आइयो बाजैए आ ओतुक्का भाषामे मैथिली शब्द फेंटैए। घड़ी पाबनि सेहो किछु एहने सन.. फेंटुआ..

एतुक्का धार सेहो.. फेंटुआ...

पूर्णियाँमे बहै छली कोसी। ब्रह्मपुत्रमे मिलि जाइ छली।

कोसी पहिने ब्रह्मपुत्रमे मिलै छली आ ओकर सम्मिलित हिलकोर गंगासँ पद्मा धार बहार कऽ देलकै। नै तँ मात्र हुगलीटा पहिने रहै। आ से भेलाक बाद फेर ओ आपस फीरि गेली? कोसी पहिने ब्रह्मपुत्रमे मिलैत हेती आकि नै, से की जानी? मुदा पूर्णियाँक पूबमे तँ बहिते छली। फिरोज तुगलक बंगालसँ घुरती काल कुरसेला लग कोसी पार करैले सोचलथि। हाजी शम्सुद्दीन ऐपार रहथि। हाजीसँ हाजीपुर आ शम्सुद्दीनसँ समस्तीपुर, ई दूटा नग्र ओ बसेने रहथि। हाजी शम्सुद्दीनक सेना ऐपार तैयार रहए। मुदा फिरोज कोसी नै टपि सकला आ उत्तर दिस ओतऽ धरि पहुँचि गेला जेतऽ पहाड़सँ जमीनपर कोसी खसैए। ओतऽ कोसी पार केलन्हि फिरोज आ ई समाचार सुनिते शम्सुद्दीनक सेना भागि गेल। टोडरमल तँ धारक नैहर बला इलाका जे आजुक खगड़ियाक आसपासक जमीन अछि, मे पानिये पानि देखि कऽ नापी नै केलन्हि आ राजस्व ओसूलीसँ ऐ इलाकाकेँ बकसि देलन्हि।

मुदा आब बकसैबला कियो नै। जागेश्वर आ मुखदेवक ऐ इलाका सभक यात्राक समाप्ति १९४२ ई. मे भऽ गेल।

बाढ़िक बाद अकाल अबै छै।

फतूरीलालक फसली बर्ख १२८१ साल १८७३-७४ ई. सन क अकाली कविता रटल छन्हि मुखदेवकैं।

साल एकासिक वर्णन सुनू/ चौदिस पड़ल अकाल
भेल बरिसात खिन्न ऐ सालक/ कहाँ लगि वरनौं हाल
रोहिणि आदि थीक बरिसातक/ जेहिँ एला तेहिँ गेला
म्रिगिसिरा मन पुरल मनोरथ/ दै झीसा किछु गेला
अरदड़ा आडम्बर भारी/ गरजत हइ चहु ओर
पुख रुख राखल धरती केर/ भेल बरखा केर ओर
पुनर्वसु थिक बड़ पुनीता/ ओहो बड़ा कसरेस
बिआ बिड़ारक जे किछु उपटल/ धनि बरिसल असरेस
मघा भेल मंगाहिआ कल्लर/ जगभरि के नै जान
पुरबा पूर पछ नै राखल/ ककरा करब बखान
उत्तरा आइ जाए घर बैसल/ सपतौं लै नै बून
हथिआ शृंग मुँड़ दै मूनल/ तनिकौं लागल घून
चितरा चित मित नै राखल/ ओहो भेल डाकू धाती
नाक रंगौलन्हि सभै नछत्तर/ दोम नुकौलन्हि खाती
जोतिष पढ़ि-पढ़ि जे जन ऐलाह/ साधि-साधि भूगोल
रेखागणित बीजसौं ओआकिफ/ तनि कौं कच्ची बोल
श्रीराम कृपागति ओहो ने जानथि/ जाइ कृपा सभ काज
पानिक प्रश्न कबौं जौं पुछियन्हि/ सेहो कहैत होइन्हि लाज
जेइखन नदी नाल नै भरलै/ तेइखन रौदी सरती
बिना जले जग किछु नै उपजल/ दगध भेल छथि धरती
ते नर रौदीक आगम बूझल/ जे छल कृषि किसान
दैव बेपच्छ पच्छ नै राखल/ जड़ि कटौलक धान
कोदो मड़ुआ एको ने उपजल/ नै उपजल किछु साम
गम्भड़ि गद्दरि खेते सुखाएल/ भेल विधाता वाम

मर्तभुवनमे के कर रच्छा/ कहाँ जाइ कैं भागी
सुखल पताल हाल नै ओतौ/ सगरो लागल आगि
धृक जीवन ओइ नृपति इन्द्रकैं/ जे रोकल गहि पानि
जीवा-जन्तु विकल पुहमीमे/ ताकैं हो नै आनि
रवी-राय एको नै उपजल/ ने खेढ़ी औ चीन
घर-घर सोच करै नर-नारी/ दुरदिन भेल अब बीन
धनिक लोक सभ मनहि मगन छथि/ राखथि बहुतो ढेरि
हसोथि रुपैया घर कै राखथि/ महगी भेल अब सेर
केओ कुरथी खेत मासु बेसाहल/ जइ कौड़ि छल अपना
कतेक जना हरिवासर ठानल/ भात बहुत कै सपना
कतेक जना मिलि जनेर बेसाहल/ निरधन बैसल ताकइ
भेल धनन्तिरि दूइ फसिल जग/ राहड़ि आओर मकइ
काल पड़ल तिरहुतिमे भारी/ तैं ई बहि गेल हावा
घर-घर मगन करै नर-नारी/ फाँकि मकइ केर लावा
मालिक और महाजन सभकैं/ घर-घर ढेरी अन्न
लोक बुझाओन ओहो तकै छथि/ मूँह गरीबक सन
समै देखि बनियाँ सभ सनकल/ डरे लगौलक टट्टी
सुन्न दोकान सहरमे परि गेल/ सुन्न भेल सभ चट्टी
सूखल गात बात भौ लटपट/ कतेक बात अब सहना
नर नारी सभ सान तेआगल/ बिकरी भेल अब गहना
मँगटीका खूटी औ तड़की/ नकमुन्नी नै नाक
कटसरि बिछिआ औ झिमझिमिआँ/ बाजूबन्द औ बाक
चन्द्रहार, हैकल औ सिकड़ी/ और घमौरिक दाना
सूति, नवग्रह औ पचखँड़ी/ लशुनी भेल निदाना
तापर दर्बजात नै बचले/ करम भेल निखट्ट
तमचैल, अढ़ैआ औ पिकदानी/ नै तसला औ तट्टू

बाटी, बट्टा औ पनबट्टा/ भोजन करैक थारी
माधव सीहि सहित सोबरना/ नै बचले घर झाड़ी
धन संपति घर किछु नै बचले/ सभटा पड़ि गेल बंधक
तैओ भूख छुटल नै ककरो/ एहन पेट भेल खंधक
दैब अंश अबतरल कम्पनी/ जा पर राम सहाए
मिथिलापुर बूड़न जब लागय/ से सुनि पहुँचल धाए
खरिद अनाज जहाजहिँ बोझल/ भरती करि करि बोरा
सदर तिलंगा ओआ पर भरती/ और ओलाइति गोरा
हाजीपुरमे लाख हजारम/ कै लाखन हइ पटना
बाजितपुर सुलतानपुर गोला/ नै जानत हौँ केतना
गाड़ी, बैल, छकड़, ऊँट बिहारे/ उबहत हइ सभ दाना
मिसर कन्हैआ कैं पोखरन मे/ पहिलुक अड़ी ठेकाना
श्री लक्ष्मीश्वर सिंह नृपति/ महाराज मिथिलेश
अचल राज दड़िभंगा/ श्रीपति हरहिं कलेश
गाड़ी बैल लाखन हजारन/ ताकैं परे घड़ेर
पहिलुक गोला मधुबन, भौड़ा/ जफरा और अड़ेर
बेनीपट्टी, औ पचमहला/ कुम्हरौल औ कमतौल
हरिहरपुर, पिड़ारुछ बरनौं/ कारज केतेकाँ बरिऔल
बारि पोखरि, बिरसायर बरनौं/ पण्डौल को नै जान
नवहद, सरिसो ओ भटपुरा, ता सौं दक्षिण उजान
झंझारपुर,महरैल, कन्हौली/ मधेपुर हइ खास
बेनीपुर, कमान, नरैहिओ/ बरनौं फूलपरास
झमना हइ जगजानित जगमे/ महथा और बछौर
दुहबी औ महिनाथपुर/ और जैनगर तक हइ दौर
बलदेबपुर औ ढंगा बरनौं/ मिरजापुर लघु हाट
सीबीपटी औ कपसीआ/ सदर गोला सौराठ

गुरबाकेँ परबरसी हाकिम/ कर तिरहुतमे आके
नै तो मरते कत नर नारी/ बाले बचे सुखा के
कत मुरदा गरदा मै मिलते/ असंख जीव चल जाता
सर समधी केँ संभा ने लम्भन/ नै बचते जलदाता
सभकेँ सभ उपछै भै गेल/ धुर पोखर औ सड़क
रहि गेल ब्राह्मण सोती पण्डित/ कायथ पछिमा ठाकुर फरक
केओ ओरसिअर नाम लिखाओल/ केओ मोहर्रिर भेँट
धर्म्मकार्यमे लुटथि रुपैआ/ तेँ भेल सभ केर भेँट
केओ जमानत दैकेँ बचला/ जिनका अमला नेही
ककरो मारि केँत पिठि तोड़ैन्हि/ उतरैन्हि जन्मक ठेही
ककरो गारत गात सुखाओल/ बहुतो होअय चलाना
मातुपिता घर परिजन रोवय/ बाबू गेला जहलखाना
ककरो घर भेल खानातलासी/ भेट मोहर्रिर घोँछ
केओ अदालतिमे डिड़िआइ छथि/ ककरो उपरैन्हि मोँछ
एतना सुनि हाकिम रिसिआओल/ तेँ लागल जन ठीका
नाक रंगौलन्हि सभै मोहर्रिर/ लागल चूनक टीका
जोग, बिकौआ, लौकिक वंशक/ किरिआमंत सुकूल
गाछी, बाँस, बैल औ महिसि/ जगह कैल भकफूल
ताइ रुपैआ सौँ करा गजर/ लै कोरट सौँ रीन
तेँ कारन बहुतो घर झगड़ा/ भाइ भतीजा भीन
आए लाट बहादुर/ औ दड़िभंगा धाम
बाबू औ बबुआन सहित मिलि/ कीन्ह कुमैटी खान
....
एह सभ संग बैठि कै/ जाय कुमैटी भेल
अजब कार सरकार के/ तिरहुत पहुँचल रेल
बाजितपुरसँ सड़क निकालै/ आये दौड़िह दौड़ी

हहेया गंडक पुल बन्हाए/ आए चौरही चौरी
धर्म्मधीर, बलबीर, कम्पनी/ जानत हइ जगदीशन
लछमी सागर के पोखरिमे/ ताहि कीन्ह इसटीसन
....
धन्य धन्य अंगरेज बहादुर/ सभकेँ जूटल गात
गरिब, गनी, गुरबा, करु जै, जै/ ब्राह्मण देत असीस
श्री रघुनाथ बढ़ै बदसाही/ गदी लाख बरीस
फतुर लाल कवि बरनत हैँ/ एह रौदी के हाल
गौरमिंट गौरनल बहादुर/ तिरहुति राखहिँ बहाल

दोसर पल्लव

गीत खूब गाबैए मुखदेव, से घण्टाक घण्टा।

-सभ एहिना गाबै छऽ तोरा गाममे हौ।

-गढ़ नारिकेलक लोक सभ इलाकामे गीत आ खिस्सा कहबैकामे नामी छै।

केहेन हेतै गढ़ नारिकेल! सोचऽ लागै छलि रुद्रमति।

पीअर बच्चा, गामक जमीन्दार। एकटा जमीन्दारी बान्ह रहै गाममे। ओतेक मजगूत नै रहै। बाढ़ि आबै तँ गह सभसँ पानि बहार भऽ जाइ छलै आ कोनो नोकसानी नै होइ छलै।

छोट मोट बाढ़ि-पानि तँ ई बान्ह रोकि दै छलै।

मुदा इम्हर पीअर बच्चा ऐ जमीन्दारी बान्हकेँ खूब दढ़ कऽ देलक।

ओइ बाढ़िसँ पहिने ई बान्ह दढ़ भऽ गेलै।

सत्यनारायण कामत दरभंगाक जमीन्दारक भितुरका छोटका जमीन्दार बरबड़िया रॉयक महौत रहथि।

जागेश्वर, मुखदेव, दुखन महतो, बासू चौपाल आ जीवछ मुखिया...

बाढ़ि आ अकालसँ लड़बा लेल सत्यनारायण कामतकेँ एकटा प्रस्ताव देलन्हि ई लोकनि, बरबड़िया रॉयकेँ कहबा लेल।

ऐ बेरुका बाढ़ि पहिने जकाँ नै अछि। लगैए झझा देत बान्ह। आ तखन बान्ह कतौ ने कतौसँ कटि जाएत। मुदा अप्पन सक्क नै रहत ओइपर। कतौसँ कटि सकैए। बस्तीक सोझाँक बान्हपर बेसी अबरजात रहने ओतऽ बान्ह घिसा गेल अछि, नीच भऽ गेल अछि, कमजोर भऽ गेल अछि। तेँ ओतऽ पहिने झझाएत आ फेर कटत।

मुदा बरबड़िया रॉय मुखदेव, दुखन महतो, बासू चौपाल आ जीवछ मुखिया सभकेँ छबड़ा कहथि। ई जागेश्वर ऐ छबड़ा सभक संग थइरमे रहैत अछि। एकरा सभसँ किछु नै हेतै।

जमीन्दारी बान्ह काटबाक प्रस्ताव छल। मुदा से किए मानत बरबड़िया रॉय? ओ अपन छोटका जमीन्दार पीअर बच्चासँ पुछलक। पीअर बच्चा तँ बाट ताकिये रहल छल।

सत्यनारायण कामत मुँह लटकेने फिर्ता होइ छथि।

बाढ़ि लगैए जमीन्दारी बान्हकेँ तोड़ि देत बा झझा देत। झझा देत तखनो तँ बान्ह कटनीसँ टुटबे करत। गाम स्वाहा भऽ जाएत।

पीअर बच्चाकेँ की लगै छै, ओकर घर थोड़बे बहतै, ऊँचमे घेराबा दऽ कऽ बन्हाएल छै। बान्ह कटलासँ ओकर जजात बहि जेतै आ तइ लेल लोकक घर बहा देत?

गाममे कएक ठाम बैसकी भेल।

जागेश्वर आ जीवछ मुखिया, ई दुनू गोटे छथि सभसँ पैघ तैराक।

भऽ गेलै फैसला, जागेश्वर आ जीवछ मुखिया यएह दुनू गोटे काटता ई बान्ह!

भऽ गेलै फैसला। भरि गामजमे गप पसरि गेलै। मुदा पीअर बच्चाकेँ पता नै लगलै, के कहतै। गामक हित पीअर बच्चाक हितसँ मेल नै खाइ छै।

राति काटबाक छै। मुखदेव ऐठाम जागेश्वर आ जीवछ राति भरि रहता। यएह फैसला भेल छै।

रामदेव भण्डारी दू टा टोकना आनि कऽ राखि दै छथि। यएह फैसला भेल छै। की करै जेबै टोकना यौ- रामदेव पुछै छथि। मुखदेव, जीवछ आ जागेश्वर हँसि कऽ चुप भऽ जाइ छथि। रामदेव बहरा जाइ छथि।

जोगिन्दर ठाकुर दूटा छोट-छोट कोदारि आनि कऽ राखि जाइ छथि। अलगे डिजाइनक कोदारि, छोट, नाम धरगर। जोगिन्दर ठाकुर दुनू कोदारि आनि कऽ मुखदेवक घरमे राखि दै छथि, यएह फैसला भेल छै।

मुखदेव, जागेश्वर आ जीवछ बड़का बड़का दुनू टोकनामे दू-दू टा भूर कऽ कए राखि देलन्हि। आँखिसँ बाहर देखता तखन ने हेलता।

गपशप चलैत रहल। हे सुतै जाइ जाह। भोरे निकलबाक अछि।
मुदा किए ककरो निन्न हेतै। भरि राति गप सरक्का। कने शंका सेहो। मुदा काज तँ करबाके छै, नै तँ बड्ड हरजा भऽ जेतै।

हहाइत धारक अबाज रातिमे सभ सुनि रहल छला।

भोरहरबामे तीनू गोटे बहरा गेला। बान्ह धरि मुखदेव सेहो संगमे रहथि।

हे, बान्ह धऽ कऽ जाएब तँ कियो चिन्हियो सकैए। आ एतेक टाक टोकना भारी सेहो लागत। कियो पुछियो सकैए।

जागेश्वर आ जीवछ बान्ह टपि कऽ हेलि जाइ गेला।

मुखदेव दुनू टोकना आ दुनू कोदारि दुनू गोटेकेँ बेरा-बेरी पकड़ा देलन्हि,

माथमे दुनू गोटे ई टोकना पहीरि लै जाइ गेला।

मुखदेव बान्ह बाटे आगाँ बढ़ि गेला, ओइ बिन्दु लग जतऽ जागेश्वर आ जीवछकेँ बान्ह कटबाक छन्हि। तेजी आबि गेल छै धारमे, बान्हक काते-काते बहि रहल छै पानि।

देरी भऽ रहल छै। मुखदेव झटकारि कऽ पहुँचै छथि बिन्दुपर, मुदा दुनू टोकनाकेँ- माने जागेश्वर आ जीवछकेँ- एबामे कने देरी छै।

महिसबार सभ महीसकेँ दोसर कात डबरा लग आनि कऽ झम्मासँ रगड़ि रहल अछि।

हँ, आबि गेल दुनू बिड़नल। फरिच्छ भऽ गेल अछि। दुइए छह देबाक तँ काज रहै।

ऊपरसँ नीचाँ देखलापर बाढ़िक पानि खूब निच्चा देखा पड़ै छै, बस्तीक सोझाँमे तँ बान्हक ऊपर झझाइले छै।

बान्हमे भूर बनि रहल अछि। पानि ओतऽ हिलकोर मारि रहल अछि। जागेश्वर आ जीवछ आगाँ बढ़ि जाइ छथि। दू टा टोकना भँसियाइत देखबामे आबि रहल अछि। कने आर फरिच्छ होइ छै। किछु लोक ओतऽ जुमि जाइ छथि। बान्हक माँटिमे सँ बमकोला बहरा रहल छै आ दुनू टोकना दूर जा रहल अछि।

भोरमे लोक सभ हुनका सभकेँ पानिमे बहैत देखलक तँ चीन्हि नै सकल।

दुइये छहक काज छलै?

दू छहक बाद ई जमीन्दारी बान्ह कटि रहल छलै आ पीअर बच्चाक खेत होइत पानि ससरि रहल छलै।

पानि तँ उगडुम भैये रहल छलै। टोल दिस बान्ह कमजोर छलै, जँ ई दुनू

गोटे बान्हकेँ पीअर बच्चाक खेतक सोझाँ नै कटितथि तँ गामक जल-समाधि निश्चिते छलै।

किछु दिन धरि पीअर बच्चा रङ तरङ होइत रहला मुदा गाममे लोकक समर्थन देखि ककरापर आरोप लगबितथि।

प्रस्ताव पठाएल गेल छल, जे बान्ह काटि देल जाए, ऐ आधारपर की आरोप लगबितथि?

लोकक समर्थन जागेश्वरक पक्षमे भेल देखि मोन मसोसि कऽ रहि गेला।

सत्यनारायण कामत, जागेश्वर, मुखदेव, दुखन महतो, बासू चौपाल आ जीवछ मुखिया गामक लोकक सहयोगसँ एकटा बड़का बाहा खोधलन्हि, ई बाहा जागेश्वरक जमीन बाटे आ सड़कक कात बाटे खोधल गेल। जतेक पानि आबै से ऐ बाटे चौरी, डबरा आ पोखरिमे बहि जाए। धारक छारन सेहो कहियो काल ई बाहा बनि जाइ छल।

अकाल नै आएल ओइ बर्ख गढ़ नारिकेलमे।
अकाली कवित्त नै पढ़लन्हि मुखदेव ओइ बर्ख।
बाढ़िक बादक अकाल नै आएल ओइ बर्ख।

घनानन्द, हलधर, नोने, दौलति जहाँ, भट्ट भूषण आ रुद्रमतिक संग रघुवरन सेहो निसाँस लेलन्हि।

देश स्वतंत्र भेलै आ आब संविधान बनतै। फेर ओ दिन तका कऽ लागू हेतै। शासन जेलक, प्रबन्ध धरमसालाक हेतै!

आबऽ दियौ..........।

चारिम कल्लोल

विश्वकर्माक रखबाड़िमे इन्द्र लग अमृत

पहिल पल्लव

स्वतंत्रता भेटि गेलै, माने अमृत भेटि गेलै।

मुदा कतऽ राखल छै।

घनानन्द, हलधर, नोने, दौलति जहाँ, भट्ट भूषण, रुद्रमति आ रघुवरन। पटनाक बाँकीपुर कैम्प जेल।

कतऽ राखल छै अमृत? स्वतंत्रता रूपी जेलमे? रखबाड़िमे? ककर रखबाड़िमे?

पापसँ पृथ्वी पाताल चलि गेली, प्रार्थनासँ ऊपर एली तँ डगमगाइ छली।

पापसँ पतन होइ छै? हमरा तँ लगैए जे तकर उन्टा होइ छै। कारण ऐ शून्यमे किम्हर नीचाँ आ किम्हर ऊपर?

गोलाकार.........

विष्णु काछु बनि नीचाँ चलि गेला, तैयो पृथ्वी जलपर भँसै छली।

अगस्त्यक जाँघ तरसँ माटि आनि, तकर जोड़न दऽ पृथ्वीकेँ स्थिर कएल गेल। भगवान वराह बनि उत्तर माथसँ पृथ्वीकेँ ठोकि ठीक केलन्हि।

फेर समुद्र-मन्थन भेल, बासुकीनागकेँ मन्दार पर्वतमे लपेट कऽ समुद्रमे उतारल गेल।

मुँह दिसनसँ दानव आ पुच्छी दिसनसँ देवता नागकेँ पकड़ि मन्दारक

मथनीसँ मंथन शुरू केलन्हि।

रगरसँ मन्दार पर्वतपर जे गाछ-वृक्ष रहै ओइमे आगि लागि गेल।

इन्द्र वर्षा केलन्हि आ तखन जा कऽ आगि मिझाएल।

समुद्रक नुनगर पानि दूध आ घी बनि गेल।

लक्ष्मी, सुरा आ उच्चैःश्रवा घोड़ा बहराएल मन्थनमे, से चन्द्रमा लऽ लेलन्हि। अमृत लेने धन्वन्तरि बहार भेला, विष निकलल से महादेव कण्ठमे लेलन्हि।

गौरी बिसहरा, साँप, बिढ़नी, चुट्टीक मदतिसँ महादेवक देहसँ विष निकाललन्हि।

अमृत लेल झगड़ा .. होइते रहैए। नै तँ की बिख लेल हएत?

...विष्णु मोहिनी बनि सभ देवताकेँ अमृत पिआ देलन्हि।

दैत्य राहु भेष बदलि अमृत पीबऽ चाहलक...

मुदा चन्द्रमा आ सूर्य हुनका चीन्हि गेल, गर्दनि काटि देल गेल ओकर।

मुदा अमृतक जे स्पर्श ओकरा भेल से ओ मरल नै..

बचल अमृत विश्वकर्माक रखबाड़िमे इन्द्रकेँ दऽ देल गेल।

बासुकी नागकेँ माइक श्राप नै लगबाक आ जनमेजयक यज्ञमे भागिन आस्तीक द्वारा सपरिवार प्राणरक्षा भेटबाक वर भेटलन्हि।

दोसर पल्लव

मुखदेव राम आ दयाराम राम।

कलम गाछी, पात खरड़ै लेल खेखनिया, गोबर बिछै लेल खेखनिया।

मुखदेव रामकेँ मोन छन्हि, आमक मासमे एकटा आम उठा लेने रहथि।

बहरबैया मालिकक रखबार छीनि रहल रहन्हि आम। मुखदेवकेँ तखने दूरसँ अबाज सुनाइ पड़लै, जागेश्वरक.. मुखदेव, दाँत लगा दे आममे.. दाँत लगा दे। मुखदेव दाँत लगा देलक। मुदा ओ ओगरबाह तैयो नै देलकै आम। बाजल रहए.. ऐँठ कऽ देलहीं तँ की होइछौ जे दऽ देबौ। आ मुखदेव आ जागेश्वरक सोझाँमे आम खत्तामे फेकि देने छल। फेर जागेश्वर मुखदेवकेँ अपन कलम लऽ गेल आ मचानपर बैसा कऽ एक जलखरी आम सोझाँ राखि देलक। मुखदेवकेँ मुदा मोन मलिने रहलै। जागेश्वर किए नै मानैले तैयार अछि जे ओकरा आ मुखदेव राममे अन्तर छै। घरक चारूकातक बोन जकर ओइ पार गाम छलै, आ गामक लोक जइ बोनमे आबैसँ डेराइ छलै, आ जे बोन मुखदेवक बाप दादाक छलै, से आब कलम भऽ गेलै बहरबैयाक।

दयाराम राम आ मुखदेव राम। समाज ओकरा लेल काज निर्धारित केने छै। ढोलहो देबाक काज, पिपही बजेबाक काज।

कने पैघ होइ जाइ गेला तँ ढोल छारब सीखि लेलनि।

मुइल मालक खल्ला मुरदारी ओदारथि।

भारीसँ भारी माल सङरैठा पर दयाराम आ मुखदेव उठा कऽ चमरखल्ला लऽ अनै छला। छूरीसँ बनछोलबामे मुदा दयारामक जोड़ नै।

गाइक नाभिसँ निकालल गोरोचन लेबा लेल दूर देशक एकटा आश्रमक एकटा महात्मा अबै छला, रातिमे नुका कऽ। ओइ आश्रममे सुनै छिऐ गोरोचनसँ सभ बिमारीक इलाज होइ छै।

मिरदङक दुनू पूराक चामक गद्दा मुदा मुखदेवसँ नीक कियो नै बनबै छल। मुदा मानरि बनबैमे दयाराम आगू छला, टुनमुनिया मिरदङे ने छल मानरि।

परमेश्वर राम आ साहेबगंजबालीक बेटा मुखदेव, दयाराम आ बेटी ममतोड़। खड़मास, पूस, चैत आ भादव, लगैए सभ काज बन्न अछि।

रोहिणी नक्षत्रमे बर्खा नै भेने खेतीबारी शुरू नै होइए, बर्खा भऽ गेने खेतीबारी शुरू भऽ जाइए। ई जेलक प्रवास खड़मासे तँ छी। सभ काज बन्न अछि। गाममे कहियो खड़मास आएले नै रहए। जनीजाति पिसिया कालमे लगनी गाबै छथि।

आ पेटक बिरह आ मोनक कष्टमे बिरहा गबैए लोक सभ।

कोन मास बिरहा जनम लेलकै रौ जोड़ीदार
कि कोन मास भेलै छठिहार
कोन मास परेमियाँ डेगा-डेगी देलकै रौ की
कोन मास भेलै परचार
अगहन मास परेमियाँ बिरहा रौ जनम लेलकै
पूस मास भेलै छठिहार
माघ मास परेमियाँ डेगा-डेगी देलकै रौ की
फागुन मास भेलै परचार
जागेश्वर धरि पाबनि तिहारमे नै छोड़ै छल मुखदेवकेँ।

वैशाखमे जूड़िशीतल पाबनि होइए, ओइ दिन पूरी, दलिपूरी, बड़ी बनै छलै। साहेबगंजबाली रातिमे बड़ी झोराबैए। पैघ सभ अपनासँ छोट बच्चाकेँ पानिसँ जुड़बैए। स्त्रीगण सभ रस्तापर पानि पटाबैए, कहबी अछि जे ई केलासँ भाएक औरदा बढ़ै छै। आ बहिनक औरदा...

पुरैनिक पातपर सभ गोटे बसिया भात आ बड़ी खाइ छथि।

साहेबगंजबाली पोखरिसँ समार आनि ओकरा बसिया भात, बड़ी, सतुआमे मिला कने-कने मोख पर, नीपल पोतल चुल्हापर दै छै, जकरा जुड़ेनाइ कहै छलै।

दयाराम, मुखदेव आ जागेश्वर आन बच्चाक संग बाँसक फुछुंगा बना कऽ पोखरि इनारमे खेलाइ-धुपाइ अछि, भिजैत अछि, भिजाबैत अछि।

कादो, माटि, गर्दा सभ एक दोसरापर खूब फेकैत अछि, इनार उपछैत अछि, ओइमे दयाराम, मुखदेव आ जागेश्वर यार-दोस्तकेँ फाटल-चीटल, पथिया, मौनी, बान्हि दैत अछि, आ बना दै जाइ अछि मिथिलाक महादेव।

सभक दलाने दलान जा कऽ भांग सेहो पीअल जाइत अछि। हँसी मजाक सेहो होइत अछि। महादेवक नचारी ढोल-नगारा संग गबैत रहथि सभ गोटे, सभ गोटे माने.... मुखदेव, जागेश्वर, दयाराम, अधिकलाल मण्डल, मोहम्मद शमशूल, बिचकुन सदाय, रामचन्द्र साव, जीवछ मुखिया, राधामोहन राय, अशोक ठाकुर, बौधा मलिक, दुखन महतो, कपिलेश्वर राउत, सत्यनारायण कामत, रामदेव भण्डारी, भोला पासवान, लछमी दास, लाल कुमार राय, शिव नारायण महतो, चलित्तर साहू, बासू चौपाल, सत्यनारायण यादव, जगदीश माइल, भोला पण्डित, बुधन साफी, जयराम ठाकुर, जोगिन्दर ठाकुर, दरोगा सिंह, सरपंच मण्डल, परसादी झा, फुक्की झा, सीताराम चौधरी, बिशेसर पासवान, सरुफ लाल, महेन्दर राम, जैनुल मियाँ, सिदो मुर्मू, उमेश रजक, भूप यादव।

जूड़िशीतलकेँ चाण्डाल संक्रान्ति सेहो कहल जाइत अछि। एकर परात भेल मिथिलाक नव वर्ष।

नव वर्षमे चाण्डाल स्पर्श, खेला-धूपी, आ भगवती प्रसाद माने सुरापान। बासि भातक भोजन मद्यपान सदृश मुदा ओकरा पुरैनिक पातपर राखब तँ विकार नष्ट भऽ जाएत।

बसहापर भोला असवार हो जिया थरथर काँपै।

कथीक आला, कथी केर माला, कथी केर सोलहो सिंगार हो जिया थरथर काँपै।

साँपै के आला साँपै के माला साँपेक सोलहो सिंगार हो जिया थरथर काँपै।

किनकाले मैना मन्दिर घर पैसलि ठोकि लेल वज्र केवाड़ हो जिया थरथर काँपै।

गौरीले मैना मन्दिर घर पैसलि, ठोकि लेल वज्र केवाड़ हो जिया थरथर काँपै।

तकर बाद सभ गोटे स्नान-पूजा कऽ कए अपन-अपन घर दिस जाइए। एकटा बात आर, मिथिलाक पहिचान दही सेहो खाएल जाइए। मैथिल जतऽ रहैए, ततऽ ई पाबनि मनबैए। यएह मिथिला समाजक पहिचान अछि।

ऐ बाँकीपुर, पटनाक कैम्प जेलमे घनानन्द, हलधर, नोने, भट्ट भूषण आ रघुवरन बनि गेल छथि मिथिलाक महादेव।

दोसर दिन।

भोरे भोर जेलक भितुरका बाट-घाट पानिसँ सभ खूब पटबैत अछि, सबहक माय, बाबू, बाबा आ मैंया धीया-पुताकेँ पानिसँ खूब जुड़बै अछि।

बसिया भात बड़ी पुरैनी पातपर खाइ अछि। घनानन्द आ हलधर पुरैनी पात आनि लेने अछि। ओकर बाद जेलक भितुरके गाछीमे जा कऽ गाछमे सेहो, सभ बड़ी पूरी भात चढ़बैत अछि। सभ मिल कऽ कादो माटि एक दोसरपर दैत अछि।

फेर महादेव पार्वती बना कऽ भांग धुथुर लावा फाटल पुरान पथिया बोरी लाधि जेलर बाबू आ जेलमे रहै बला डागडर बाबूक दलान जा कऽ हँसी मजाक करैत ढोल बजा कऽ महादेवक नचारी गबैत खूब धूम-धामसँ ऐ जेलगामामे घुमैत साँझमे पोखरिक डबरामे जा कऽ नहा धो कऽ अपन-अपन जेलक खोली माने घर घुरि जाइए। लोकक संग प्रकृतिक कल्याण, घरक पैघ लोकनि अपनासँ छोटक माथपर पानि दऽ ओकर सुख समृद्धिक कामना करैत अछि, ओतऽ गाछ वृक्षमे सेहो पानि देबाक परंपरा अछि। एक दिन चूल्हा जरेबापर सेहो प्रतिबंध रहैए। घरक स्त्रीगण सड़कपर पानी दैत अछि, ऐसँ घरमे सुख समृद्धि अबैए !

पाबनिक दिन बासी भोजनसँ भगवानक भोग लगाएल जाइए। एक दिन एक संग भारी संख्यामे चूल्हा नै जरेलासँ पर्यावरणकेँ चूल्हासँ

निकलैबला धुआसँ मुक्ति भेटैए आ ईंधनक खपत सेहो कम भऽ जाइए।

दौलतिजहाँ झोरा देने रहथि बड़ी, रातियेमे।

रुद्रमति आनि लेने छथि पोखरिसँ समार आ ओकरा बसिया भात, बड़ी आ सतुआमे मिला कऽ कने-कने जेलमे सभ ठाम जुड़ा देने छथि।

तकर बाद वएह बसिया भात बड़ी, पूड़ी-दलिपूड़ी सभ खाइए।

बैशक्खा, अगता आम हुअए आकि मौसमी, कोनो मे स्वादे नै। वएह लोक, जे चैतावर गबै छल, लगैए बदलि गेल। ने कोनो हर्खे, ने कोनो विषादे। पुण्य संचय होइए ऐ मासमे। तेँ ने तेल लगाउ, ने दिनमे सुतू। गरीब लोक तेल कतऽ लगबैए, आ ई जे जेल मे ककबासँ केश थकरै जाइए, से बिनु तेल लगेने थकरऽ चाहत तँ थकरेतै?

चैत वैशाखक रब्बी!!! वैशक्खा!! भदैया!! सभटा अगहनी भऽ जेतै तँ काज चलतै?

आएल चैत बैशाख रबियाक दिनाजी
कटि गेल जौ मटरबा रबिया फसल जी
बोलय सासु ननदिया पीसू जोकराइ जी
मोटे-मोटे रोटी पकाबू कि सभ मिलि खाएब जी

दयाराम, मुखदेव आ जागेश्वर... गबैत रहथि लगनी... खेतमे.. जागेश्वरक खेतमे खेती..

केहन कठोर भेलौं हमरा बिसरिये गेलौं
कि आहे रामा हमरो जनम एहिना जाएत रे की
दिन अनचिन्हारे भेलै, रातियो पहाड़े भेलै
कि आहो रामा हमराले दिनकर कहियो ने जागत रे की
माघ गेल फागुन एलै आमो मजरि गेलै

कि आहो रामा कुहकैत कोयली एहिना कानत रे की
दुखमे जनम भेल नोरे मरन भेल
कि आहो रामा कहियो ने नैना हमर सुखाएत रे की

दयाराम, मुखदेव आ जागेश्वर। साहेबगंजवाली जान बचेने रहै जागेश्वरक माएक। सोइड़ीमे ....

कोनो डर-डाक्टर गाममे थोड़बे होइ छै। जागेश्वरक अंगनामे प्रसव करेबामे कोनो जनानीकेँ ईलम नै छलै। बच्चाक पएर नीचाँ आ मूड़ी ऊपर चलि गेल रहै। जागेश्वरक बाप गेल रहए साहेबगंजवालीकेँ बजबैले। साहेबगंजवाली हुलहुली देवीक स्मरण केलक आ बिदा भेलि, संगमे परमेश्वर राम सेहो आएल रहए। नुआसँ घेरल रहै सोइड़ी...

कनियाँ आ बच्चा दुनू ने चलि जाए... मुदा साहेबगंजवाली बचा लेने रहै.. माइयो आ बच्चोकेँ। बच्चा जागेश्वरकेँ ई खिस्सा माए सुनेने छै आ मुखदेवकेँ साहेबगंजवाली। से तेँ ने जागेश्वर साहेबगंजवालीकेँ एतेक इज्जत करै छलै.. आ मुखदेव लेल जान दै छलै। मुखदेवसँ जखन ओइ भोजमे जागेश्वरक भेँट भेलै तावत ई गप जागेश्वरकेँ बुझलो नै रहै, बच्चाकेँ आवश्यकता पड़लेपर गप कहल जाइ छै।

रुद्रमति बंगालक अछि। चुनुड़ी जातिक, डोका जराकऽ चून बनबैए। प्रसव करबैले चर्मकार नै हाढ़ी जाति होइ छै बंगालमे। खेती आब सभ करै छै।

जेठहि बियवा गिरेलौं असाढ़हि जनमि गेल हे
साओन रोपनी करेलौं भादव बिट भेल हे
आसिन फूल भेल धान कातिक फर भेल हे
अगहन काटल धान दउनिया कराएल हे
दउनि कराए कोठी ढारल कूटि-कूटि खाएब हे

दुपहरिया आ बेरू पहर पुरुख पात सुतैए मुदा ढेकीमे धनकुटनी होइते रहै छै। उक्खड़ि समाठमे चूड़ा कुटाइते रहै छै।

ठक-ठक ठों-ठों, बेंग करै गो-गो
नन्हकी लोटल भुइयाँ, गोदी लिअ गुइयाँ
ठोकरा करे खट-खट, समाठ बोलै धम-धम
भैया लग सुतै जाएत के? भौजी कहै हम-हम

रुद्रमतिये सन तँ रहै मुखदेव आ दयारामक बहीन, ममतोड़.. सभ ममतोड़िया कहै जाइ छलै। माए आएल छै साहेबगंजसँ गढ़ नारिकेल आ ममतोड़ गेलै गढ़ नारिकेलसँ साहेबगंज। उदासी गाएल गेल जमाएक बिदा होइ घड़ी। घरभड़ी भेल.. भगवती घरमे पटिया ओछा कऽ डाँटबला पानक पात, धान, मखान, दूभि, चानीक रुपैय्या वरक हाथमे देल गेल, कनियाँक हाथ पाछूसँ पकड़ने... सासु-ससुरक घर भरै छी, माए-बापक घर भरऽ जाइ छी.. पाछूसँ उदासी उठैए..

कथीले प्रीत लगओले रे जोगिया
प्रीत छोड़ने चलि जाए
तोरा हाथ पनमा सपन भेल रे जोगिया
तोरा बिनु रहलो ने जाए
अंगना जे तोरा लख बिजुबन रे जोगिया
घर लागे दिवस अन्हार
सुतहुँ के पलंगा विषम सन रे जोगिया
तकिया तँ मोहि नै सोहाय

जागेश्वर सभ थारीमे सिनूर घोरि कऽ राखल रहै छै, कनियाँक हाथ घोरल सिनूरमे दऽ कऽ पाछूसँ वरक डोपटापर छाप दऽ देल जाइ छै। कनियाँक मुँह वरकें देखा देल जाइ छै।

चूड़ा, चाउर, बगिया.........

बड्ड होइ छलै तँ मड़ुआक रोटी पर नून तेल, आ नै तँ भदैया धान कहियो काल। मुदा हाइ रे जागेश्वर... आ कहै की छलै.. मुखदेव, तोहर माए हमर जीवन बचेनिहारि, हमर माएक जीवन बचेनिहारि.. कथीक अहसान.. कथूक नै.. ई तँ हमर कर्जा अछि।

पीअर बच्चा हँसै, आब देखैत ने रहियौ.. ई जागेश्वर आ ओकर बाप एकरा सभकेँ जेना माथपर चढ़ा रहलए, आब देखैत ने रहियौ...

कुटू-कुटू सखिया
नव नव धान भेल भोगब कहिया
कुटू-कुटू सखिया
चूड़ा कुटू, चाउर कुटू, करू बगिया
लुच-लुच चाउरक पूआ लागत, मचमच खटिया
कुटू-कुटू सखिया
ठोकरा लिअ समाठ लिअ बान्हू जुटिया
चाकर-चाकर चूड़ा कुटू, फटकू सूपिया
कुटू-कुटू सखिया
पाहुन अओता, सनेह करता, लेता गोदिया
ननदो के जुड़एतनि हिआ, कुटू सखिया
कुटू-कुटू सखिया

जागेश्वरक *साहेबगंजवालीदीदी* बनि गेल रहथि मुखदेवक माए। तखन ममतोड़ जागेश्वरक पिसयौत बहीन बनि गेली किने।

परमेसर, साहेबगंजवाली, ममतोड़, मुखदेव आ दयाराम, सभ संगे खेतमे काज करैत रहथि।

जागेश्वर पनपिआइ लऽ कऽ खेत जाइ छल।

केहन नीक नहाँति जिनगी चलि रहल छल। पीअर बच्चाकेँ छोड़ि कऽ आन ककरो कोनो दिक्कत नै रहै।

आ पीअर बच्चा, अपन लठैत सभसँ घेराएल रहै छल सदिखन। हाथ तोड़ि दियौ, पएर तोड़ि दियौ, कपार भांगि दियौ। यएह सभ गप सबखन होइत रहै छलै पीअर बच्चाक दरबारमे।

हँ, *बा झा* नाम रहै ओइ लठैतक। जखन तखन मरड़ए लागल छल खेतक आसपास। जखने असगर देखै छल, कखनो साहेबगंजवालीकेँ तँ कखनो ममतोड़केँ, की कहाँ बाजि दै छल। ऐ गामक छलैहो नै। बहरबैया लठैत छल बा झा।

साहेबगंजवाली आ ममतोड़ ककरो कहबो नै करै किछु, ने परमेसर, मुखदेव आकि दयारामकेँ, आ नहिये जागेश्वरकेँ।

मुदा बा झाक भाग- अभाग। एक दिन जागेश्वर ओकरा पकड़ि लेलकै।

-बा झा, तोहर हिम्मत कोना भेलौ हमर बहिन आ दीदी संग ऐ तरहेँ गप करबाक।

-तोहर दीदी आ बहिन। ममतोड़िया तोहर बहीन आ साहेबगंजवाली दीदी कहियासँ भऽ गेलौ? ऐ आरिमे कोनो खेला तँ नै खेला रहल छँह तूँ?

-बा झा.....

उठि कऽ बैसि रहै छथि मुखदेव। लगै छन्हि जे जागेश्वरक पघरिया जेना एक्के छहमे बा झाक गरदनि काटि देने रहै आ ओकर शोनितक बमकोला मुखदेवक मुँहपर जेना ओइ दिन आएल रहै, सएह आभास।

बा झाक लहास मुखदेव आ जागेश्वर ओही खेतमे गारि देलन्हि। ककरो किछु पता नै चललै।

पीअर बच्चा किछु दिन बा झा केँ तकैत रहला। किछु पाइ अगूवार लेने

छलन्हि। लगैए नेत खराप भऽ गेलै ओकर। पड़ा गेल गामसँ.. नै जानि कोन गामक छल, बलिष्ठ देखि कऽ लठैतीमे राखि लेने छला।

कने शंका जागेश्वरपर भेलो छलन्हि, मुदा पुछलन्हि नै। अपने बदनामीक आशंका भेलन्हि। हाथ तोड़ि दियौ, पएर तोड़ि दियौ, कपार भांगि दियौ; ई कहनिहार दोसर लठैत सभ सेहो आशंकित रहऽ लागल। नै जानि ई पीअर बच्चा आ ओ जागेश्वर, दुनू कोन मन्तर जनै जाइए। मरबाक अपनहिये सभकेँ छौ।

बा झा निपत्ता भेल तँ गौँआ सभ निशास लेलक। ओकर पएर जमीनपर पड़ै छलै तँ धरती हिलऽ लागै छलै। हरिश्चन्द्राकेँ मारि कऽ पाड़िये ने देने छलै। गेल तँ भने गेल।

आब दोसरो लठैत सभ सञ्च-मञ्च भऽ गेल अछि। आ की ओना ई सभ सञ्च-मञ्च भेल अछि? जे जतऽ पाबै छलै ऐ लठैत सभकेँ थोपड़ा दै छलै। किछु दिनमे सभ शान्त भऽ गेलै।

आ इम्हर ममतोड़क बियाह सेहो हरबड़ी-धरफड़ीमे भऽ गेल। साहेबगंज चलि गेली ममतोड़।

घेंघी कत्ते कानल रहए आ कनैत-कनैत गेने रहए।

जौं हम जनितौं सीता जेती सासुर, रोपितौं गुअबाक गाछ
छाहरि छाहरि सीता सासुर जैतथि लगितनि सीतल बसात
माथ उखारि सीता दहो दिस ताकल छुटि गेल बाबाक राज
चारि कहरिया राम पाँचम लोकनियाँ छअम सहोदर भाइ
घुरु घुरु भैया घुरि जइयौ हकन कनैत हेती माय
अम्माकेँ कहबनि पाथर भय बैसती हमहूँ बैसब हिअ हारि

ममतोड़िया माए, किए हरबड़ा गेल अनेरे। माएक मोन छिऐ। नैहर बेटीकेँ पठा देलक।

बोक्खो-गोक्को, घनश्यामपुरक रहै प्रायः, बियाह दिन आबि गेल रहै, खूब झमकौने रहै। ब्रह्मपुरक नट सभकेँ एक्को हाथ नै सकऽ दै छै ई गोक्को सभ।

मुखदेव मुँह पोछऽ लगै छथि, जेना बा झाक शोनितक लस्सा पोछि रहल होथि।

की छौ पेबाले?
सौंसे दुनियाँ।
छौ की जे लेतौ?

पूस गोइठा डाहि तापब
माघ खेसारिक साग यौ
फागुन हुनका छिम्मरि माकरि
चैत खेसारिक दालि यौ
वैशाख टिकुला सोहि राखब
जेठ खेरहिक भात यौ
अखाढ़ गारा गारि खाएब
साओन कटहर कोअ यौ
भादव हुनको आँठी-पखुआ
आसिन मरुआक रोटी यौ
कातिक दुख सुख संगहि खेपब
अगहन दुनू साँझ भात यौ

पूससँ शुरू आ अगहनपर खतम। दुनू साँझ भात। अमृत, इन्द्रक अमृत, रखबारिमे विश्वकर्मा.. कोन रहस्य छै ऐमे?

रखबारिमे हम, मुदा अमृत नै पिअब? अमृत जँ पी लेब तखन? अमृत पी लेब तखन संघर्षक जरूरति खतम भऽ जाएत, निश्चिन्त भऽ जाएब जे कतबो मारि-काटि हएत तैयो जीबे करब। तखन जिनगी नर्के भऽ जाएत ने, तै

हिसाबे तखन तँ ई अमृत पिनाइ नीक गप नै ने भेल। मुदा रखबारिमे अमृतक छी आ अमृते नै पीअब तखन ई कोन महत्वपूर्ण बौस्त भेल? अमृत नीके छै तइ हिसाबे।

पाँचम कल्लोल

बो-बो

ईहो मुखराम..बड़का गप्पी.. कोनो कथासँ मनुक्खक कल्याणक गप निकालैए..

आगाँ सुनू..

ईश्वरकेँ विश्वक सृष्टि करबाक छलन्हि...

सहस्रशीर्षाबला खिस्सा आब सुनाएत प्रायः ई मुखराम...

ईश्वरकेँ विश्वक सृष्टि करबाक छलन्हि...से ओ विष्णु, फेर शिव आ तखन ब्रह्माक रूपमे अवतार लेलन्हि।

तखन देवता-ऋषि-मुनि, शतरूपा-स्त्री, स्वयंभुव मनु..

दहिना आँखिसँ अत्रि, कान्हसँ मरीचि, दहिना पाँजरसँ दक्ष-प्रजापतिक रचना केलन्हि..

मरीचीसँ कश्यप, अत्रिसँ चन्द्रमा, मनुक प्रियव्रत आ उत्तानपाद बेटा आ आकृति, देवहूति आ प्रसूति बेटी भेलन्हि।

प्रसूतिक विवाह दक्ष प्रजापतिसँ भेल आ तइसँ साठिटा कन्या भेल। साठिमे आठक विवाह धर्म, एगारहक कश्यप, सत्ताइसक चन्द्रमा आ एक गोट जिनकर नाम सती छलन्हि हुनकर विवाह महादेवसँ भेलन्हि।

चन्द्रमाकेँ जे सत्ताइस टा पत्नी भेलन्हि तइमेसँ ओ रोहिणीकेँ सभसँ बेशी मानै छला...

से २६ टा बहिन अपन पिता दक्षकेँ शिकाइत केलन्हि आ चन्द्रमाक शरीर घटऽ लागल।

तखन चन्द्रमा महादेव लग गेला तँ महादेव हुनका अपन कपारपर चढ़ा लेलन्हि।

दक्ष महादेवसँ भतबड़ी कऽ लेलन्हि। ओ यज्ञ केलन्हि आ शंकरकेँ नोत नै देलन्हि।

सती नैहर जेबा लेल जिद पकड़ि लेलन्हि तँ वीरभद्रक संग शिव हुनका पठा देलखिन्ह। सती चलि तँ गेली मुदा अपमान देखि यज्ञकुण्डमे कूदि पड़ली। वीरभद्र ई देखि दक्षक गरदनि काटि लेलन्हि।

महादेवकेँ तमसाएल देखि कऽ देवता सभ महादेवक प्रार्थना केलन्हि, तखन महादेव यज्ञमे काटल छागरक मूड़ी दक्षक धरपर लगा देलखिन्ह...

ओ जीबि तँ गेला मुदा बो-बो करऽ लगला...

से देखि महादेव प्रसन्न भेला।

तहियेसँ महादेवक पूजाक अन्तमे बो कहल जाइए..

अच्छा से..

ई मुखदेव.. सहस्रशीर्षाबला कथा नहिये सुनेलक। ईहो बो-बो कऽ देलक लगैए.. हमरा सभकेँ प्रसन्न करबा लेल।

मुदा मुखदेवक ललाटमे कतेक तेज छै, आँखिमे कतेक भद्रता छै, लगैए चन्द्रमा माथपर लेने अछि।

पुरुख सभ आपसमे लड़ैए आ स्त्रीगण कुण्डमे कूदैए!

मिथिलामे बौद्ध धर्म पसरल, बौद्ध भिक्षुणी मैथिलानी सुमंगलमाता। भिक्षुणी कुमारि रहथि?

हँ तँ नै कि बियाहल रहितथि, तखन भिक्षुणी कोना कहेती?

हे कहऽ दियौ खिस्सा आगाँ..

सुमंगलमाता बाजै छथि, भनसाघरक हाड़ तोड़ैबला काजसँ, भूखक गछाड़सँ, ढनढनाइत बरतनसँ आ मेघडम्बर बनबैबला ओइ बैमान पुरुखसँ त्राण दिअ। तँ एकटा दोसर मैथिलानी भिक्षुणी मुक्ता कहै छथि- हमरा त्राण दिअ उक्खरि, समाठ, ठकुरा आ अपन हरीफ स्वामीसँ।

जखन कुमारि रहत तखन बेइमान आ हरीफ स्वामी कतऽ सँ आएल?

दोसराक विषयमे नै लिखि सकैए कियो की? बाजऽ ने दियौ..

सभ स्त्रीगण खूब काज करै छलै, कोनो रोक टोक नै। स्त्री पुरुखसँ डेराइत हुअए, से नै छलै। कलम गाछी, बाट घाट, अंगना बाड़ी सभ ठाम स्त्री सभकेँ एक दोसरासँ भेँट होइ छलै।

भोला पण्डितक कनियाँ कुम्हैन बेलाहीवाली, सत्यनारायण यादवक कनियाँ मझारीवाली, बासू चौपालक कनियाँ रामखेतारीवाली, चलित्तर साहुक कनियाँ लछमिनियाँ वाली, शिवनारायण महतोक कनियाँ निर्मलीवाली, लछमी दासक कनियाँ सोनवर्षावाली, लाल कुमार रायक कनियाँ सुखेतवाली, भोला पासवानक कनियाँ बेलमोहनवाली, सत्यनारायण कामतक कनियाँ कदमाहावाली, रामदेव भण्डारीक कनियाँ धर्मडीहावाली, कपिलेश्वर राउतक कनियाँ मेटरसवाली, बौधा मलिकक कनियाँ बेहटवाली, दुखन महतोक कनियाँ धेपुरावाली, राधामोहन रायक कनियाँ मोहलीवाली, अशोक ठाकुरक कनियाँ जगदरवाली, रामचन्द्र सावक कनियाँ कोठियावाली, जीवछ मुखियाक कनियाँ तमुरियावाली, बिचकुन सदायक कनियाँ जेठियाहीवाली, मोहम्मद शमशूलक कनियाँ मछधीवाली, भगवानदत्त मण्डलक कनियाँ बलाटवाली, कोरैल साफीक कनियाँ गंजवाली, जयराम ठाकुरक कनियाँ चनौरावाली, परमेश्वर रामक कनियाँ साहेबगंजवाली, जोगिन्दर ठाकुरक कनियाँ नवानीवाली।

आ ममतोड़ भऽ गेल हएत गढ़नारिकेलवाली।

नागपंचमी साओन मासमे शुक्ल पंचमी दिन होइए। ओइ दिन सबहक

कनियाँ अपन-अपन घर-आंगन खूब नीकसँ चिकनी माटिसँ नीपै छथि। गोबरसँ आंगन नीपै छथि। गाइक गोबरसँ जतेक घर छै ओइमे रेखा खीचल जाइए, जकरा घेरा कहल जाइ छै। ओकर बाद सभ कनियाँ आ बेटी मिलि कऽ चिकनी माटि आनि कऽ आंगनमे थुम्हा बनबै छथि। ओइमे सिनूर पिठार दुइभ लगा कऽ सुखा कऽ घर ओरिया कऽ राखल जाइए। ऐ माइटिक अपन विशेष महत्व अछि। साँझमे सबहक कनियाँ धानक लावा भुजि कऽ ओइमे मूसक माटि मिला कऽ घर आंगनमे छीटैए। देवता पूजा सेहो मानल जाइए। शुभ आगम सेहो होइए।

नागपंचमीमे नेङरा कुशमे नीमक पात बान्हि चारमे खोंसल जाइए। नीमक पात, नेबोक रस आ घोरजाउर खेबाक प्रावधान।

भादव अमावस्यामे लोहक खुरपीसँ पुरुख सभ भोरमे बाधमे जा कऽ कुश उखारि कऽ कन्हापर दुनू भाग टांगि कऽ अबै छथि। ओहो कुश सुखा कऽ राखल जाइए। ओ कुश बहुत काज अबैए।

नागपंचमीक दिन रहै...

अशोक ठाकुरक कनियाँ जगदरवाली धाइम छल, केहनो साँपक बिख होइ छोड़ा दै छल, आब ढोढ़िया साँप काटत तँ छोड़ाइये ने देत।

मोहम्मद शमशूलक कनियाँ मछधीवाली बड्ड दिनसँ नेहोरापाती कऽ कए ओकरासँ साँपक मंत्र सिखने रहए। कपिलेश्वर राउतक कनियाँ मेटरसवालीकेँ साँप कटने रहए। नागपंचमीयेक दिन रहै.. ई मंत्र पढ़िते दर्द दूर भऽ गेल रहै। चारि साँप लोकनी, बार चित्ती गंडा, ऐनी मेनी खापड़ि टेनी....

आजन भाजन तँ स्वरूप, डोमा डोमा सरपए तारा
अनिया लारू पाइनिया लारु, काँच माटि सोने भराउ
एस डण्ड बीस करु, संख चित्ती सोम बित्ती

हाथ जाइत, बिख लोइट, बाट जाइत सुमेर पर्वत
ताँति तोहर धी बिआनी, एका एका एकौत्तर नौ दस अठारह पौआ
कोन कोण? खतिरा मतिरा, चाँपसँ बैरनी काँटा
नाम पूता जामा जूता, तिन्हके नौ मरए पूता
लंका झारी, झार-झार बेंगो पूत दहिने कौर
बेंगी पूत गरुड़ भवे, नील कंठ रोना हसन हुसन
बहुरे बिखाह, तँहा गरुड़ हाथ पसारए
तँहा सरपा नै बिखहा, ब्रह्मा ब्रह्मा ब्रह्मा
सोलह हाथक करैत, हाथ जाइत बिख मारए
देखिअ एटनियाँ, मेटनियाँ लाकड़ा
सूनन करैतर आउर साँखड़ा
नेउरारे मारे भैया जे तौरे विष चौरिया
आरेहन पेरहन तोर सम्हार, उथ बहुरि घर जाउ रे
गरुड़ा तोर भतार, एक पाँखि नै पसरए
कुस परिछए नारी, नामे नामे पोखरि
सोने फूल फलाइ, तँहि देखल जनमिल
कुस तोड़ि कऽ बाँटि ले, तीन खण्ड कऽ काटि लए
सिंहिन पूत तौं छिएँ, सिंह चढ़ि तौं कए लए घाव
माइ तोहर बाघिन बिएलौ, चौसप निरबिख होइ जाइ
दोहा ई ईश्वर महादेव गौरा पार्वती
कामरु कमरछ, नैना जोगिनक दोहाइ

ढोढ़िया साँप जे हबकै छै तँ खूब जोरसँ दुखाइ छै। ई देखलाक बादे मोहम्मद शमशूलक कनियाँ मछधीवाली नेहोरापाती शुरू कऽ देने रहए आ साँपक मंत्र सिखने रहए।

महिला सभक बीच कतेक मेल रहै छलै गाममे। पुरुखमे कहाँ छै ओते हौ।

छठिमे देखहक ने स्त्रीगण सभमे कतेक मेल रहै छै।

बिहने पहरमे डोमिन बेटी हे
बेटी धनिया दउरिया लए आउ
अरघ केर बेर भेल हे
बेटी पिअर कएल सूप लए आउ
पुरुख रंथी ठाढ़ भेल हे
बिहने पहरमे बनिआइन बेटिया हे
बनिआइन नवका कसैलिया लए आउ
अरघ केर बेर भेल हे
बिहने पहरमे तौंहि मालिन बेटिया
मालिन सतरंगा हार लए आउ
अरघ केर बेर भेल हे
बिहने पहरमे तौंहि बाभन दैया हे
बाभनि पिअर जनौ लए आउ
अरघ केर बेर भेल हे

मोहम्मद शमशूलक कनियाँ मछधीवालीक माए इस्लामपुरक छै। मछधी आ दीपमे बेशी कुञ्जरा सभ छै किछु जोलहा (मोनिन), धुनियाँ (मन्सूर), हजाम (इब्राहिम) सेहो छै, ई सभ अजलब कहाबै छै, हिन्नूक शोल्कन्ह बुझू। आ किछु अछोप मुसलमान जकरा अरजल कहै छै सेहो छै। मुदा इस्लामपुरमे सभ तरहक मुसलमान छै। बाभन, राजपूत, भुमिहार सभ मुसलमान बनल हेतै तँ अशरफ बना देने हेतै, सैय्यद, पठान संगे ई शेख सभ, किंशाइत। कुनौली लग नेउरक राजपूत दरोगा सिंग शमशूल मियाँकेँ ई सभ कहि रहल छलै, तेँ मछधीवाली ई सभ बुझलकै।

स्त्रीगण सभ पुरुख सभकेँ बो-बो कहि सकैए! मुदा जागेश्वरक गढ़ नारिकेलमे पहिने तँ स्त्रीगण सभक बेबहार अनुकरण करैबला छलै।

घनानन्द, हलधर, नोने आ भट्ट भूषणकेँ आजुक कथा बड़ बढ़ियाँ लगलै मुदा रुद्रमति आ दौलति जहाँकेँ बड्ड सनगर। रघुवरन तँ अपन नोटबुकमे नै जानि की की टिपने जा रहल छल।

मुदा आजुक कथाक बाद मुखदेवकेँ अपन वनवासी संगी साथी सभ मोन पड़ऽ लगलै। बोनसँ झाँपल गढ़ नारिकेलक वासी वनवासीये ने भेला, जतऽ कत्ते प्रकारक साँप आ संस्कृति पसरल छै। जय महादेव.. बम-बम-बम-बम ब्रू.........

छअम कल्लोल

छुच्छो हाथ भैया अबितथि बैसितथि माड़ब चढ़ि रे/
ललना अपने सड़िया पहिरतौं भैया नाम लितौं रे

मुखदेवक खिस्सा चलिते रहैए। आ दर्शक वा श्रोता कहू.. सभ कान पथनहिये रहैए।

एकटा राजा छला। हुनका दूटा बेटी छलन्हि- कुमरव्रता आ पतिव्रता।

कुमरव्रता नन्दनवनमे कुटीमे आ पतिव्रता विवाह कऽ कए सासुर...

एकटा योगीक माथपर कौआ चटक कऽ देलकै तँ ओ शाप दऽ कऽ ओकरा भसम कऽ देलन्हि..

नन्दनवनमे आगि लागल रहए।

पतिव्रता अपन बहिन कुमरव्रताक कुटी बचेबाले तुलसीक बेढ़ देलन्हि तइमे योगीकेँ भीख देबामे देरी भेलै।

योगी तमसाएल तँ पतिव्रता देरीक कारण कहलन्हि।

योगी बोनमे गेल तँ देखलक जे सौँसे बोनमे आगि लागल अछि मुदा कुमरव्रताक कुटी बचल अछि।

ओ कुमरव्रताकेँ एकर रहस्य बतेलक तँ ओहो निर्णय लेलन्हि जे हमहूँ विवाह कऽ पतिव्रता बनब।

भोरमे एकटा कुष्ठरोगीकेँ ओ देखलन्हि आ ओकरेसँ विवाह कऽ लेलन्हि।

पति हुनका कहलखिन्ह जे हमरा तीर्थ करा दिअ। ओ हुनका पथियामे लऽ बिदा भेली तँ रस्तामे जखन पथिया उतारि रहल छली तँ ओइसँ एक गोट

सूलीपर लटकल ऋषिकेँ चोट लागि गेलै। ओ भोर होइते पतिक मृत्युक शाप हुनका दऽ देलन्हि। से सुनि बेचारी सूर्यक उपासना करऽ लगली, से पति मृत्यु पाबि फेर जीबि उठलखिन्ह आ ऐबेर बिना रोग व्याधिक घुरि एलन्हि।

पत्नीव्रता एकोटा नै, सभ पतिव्रता। आ पुरुख महतमा सभ तमसाह, क्षणे-क्षण स्राप दैत रहैए।

मोन पड़ि जाइ छन्हि ओ गीत, ममतोड़ आ माय गबैत रहैत छली।

बेर बेर बरजह दीनानाथ हे
बाबा हे तिरिया जनम जुनि दैह
तिरिया जनम जँ दैह हे दीनानाथ
बाबा हे सुरति बहुत जुनि दैह
सुरति बहुत जँ दैह हे दीनानाथ
बाबा पुरुख अमरुख जुनि दैह
पुरुख अमरुख जँ दैह हे दीनानाथ
बाबा हे कोखिया बिहुन जुनि दैह

ममतोड़सँ भेँट करै लेल बिदा भेल रहथि मुखराम, संगमे जागेश्वर सेहो रहथि। बच्चा भेल रहै.. जौँआ.. आ सेहो एकटा बेटा आ एकटा बेटी। दूरे ततेक छलै जे...

परमेश्वर रामक बियाह साहेबगंज। ममतोड़, दयाराम आ मुखदेवक मामागाम साहेबगंज।

मुखदेव राममेँ गीत सभ सुनाइ पड़ऽ लगै छन्हि आ ओ सुनलाहा गीत सभ मुँहसँ बाजऽ लगै छथि...

बाजे बाजे बधाबा नन्द के अंगना
कथक नाचे पमरिया नाचे, छोटकी ननदिया नाचे अंगना।

किए तोँ ननदी नाचह आंगन, तोरो भैया रहथि पटना।
बाजे बाजे बधाबा नन्द के अंगना
भैया हमर पटना रहै छथि, ओतहि सँ आओत मोती के कंगना।
भाइ मोरा जीबौ भतीजबा जीबौ, देव पुराओल मन कामना।
बाजे बाजे बधाबा नन्द के अंगना ..

ममतोड़क जन्म।

दीपक पमरिया हरबिर्रो उठा देने छल। दोसर पमरियाकेँ खबखब्बी उठि गेलै, तेँ की? डुबकीपर लऽ कऽ डुग-डुग करैत जे ई सभ नाच गाना करैए से कमाले। दसौन-भाट-महाराज जी सभ ब्रह्मपुरसँ आबि गेल रहै। पमरिया मुसलमान आ महराजजी हिन्नू। मुस्लिम नट सभ बेनीपट्टी लगसँ नै जानि कतऽ सँ आबि गेलै।

दूटा नट बहिन हिरनी-बिरनीक मोहना पारा, जे ओकरा नाथि देत तकरेसँ ओ दुनू गोटे बियाह करती। दिल्लीमे उज्जैन सिंह मोहना पारासँ लड़ैए, दू दिन धरि लड़िते रहैए, मुदा फेर हारि जाइए आ मरि जाइए..

उज्जैन सिंहक शिष्य पोषण सिंह मोहना पाराकेँ नाथि दैए आ हिरनी-बिरनीसँ बियाह करैए, आ हिरनी-बिरनी दुनूकेँ बेटा होइ छै।

ममतोड़ कहियो काल कऽ जे कानऽ लागै छलै तँ कानिते रहि जाइ छलै। नजरि-गुजरि खूब लागै छलै ओकरा। नजरि-गुजरि उतारबाक मंत्र अखनो मोन छै मुखदेवकेँ.. हिन्नू आ मुसलमान दुनू फेँटल मंत्र..

ओम नमो बिस्मिल्ला, रहीम रहमान
गजनीसँ चलला मोहम्मद पीर, चढ़ि चलला।
सवा सेर के तोसा खाए, अस्सी कोस के धावा जाए।
सफेद घोड़ा, सफेद लगाम, ओइपर चढ़ए मोहम्मद पीर।
नौ सए पलटन आगाँ चलै, नौ सए पलटन पाछाँ चलए।

चल-चल रे बीर, तोहर समान आन नै कोइ।
हम्मर शत्रुकेँ पकड़ि कऽ आनह,
हाड़-हाड़, चाम-चाम, नखसिख,
रोम-रोमसँ पकड़ि कऽ आनह।
सिलारजिन्ह पीर भरता,
पीटन्त, पछाड़न्त, तोड़न्त, फोड़न्त,
हाथमे हथकड़ी, गोरमे तउख,
उलटे मुसुक चढ़ाओल।
आबह सेमरपर सवारी,
खेलह, खा, खुश रहह।

मुखदेवक मुँहपर मुस्की आबि जाइत अछि- ओ बाजि उठै छथि.. ओम नमो बिस्मिल्ला, रहीम रहमान....

ईल सन कील सन, धोबियाक पाट सन कुम्हारक चाक सन। ममतोड़केँ तेल कूड़ होइ छलै, हमरो होइत हेतै माए।

-हँ तँ तोड़ा किए नै भेल हेतौ... माए कहै छलै।

मुखदेवकेँ नजरि-गुजरि नै लागै छलै..

आको मैया चाको,
प्रह्लाद मैया राखो,
संझा मैया तारनी,
सभ दुख निवारणी

पहद्दीक बसहा-बड़दबला पचनियाँ.. बसहा जे सजा कऽ राखै जाइए। छोट-छोट कौड़ीसँ सजाओल, छह मास ई सभ बसहा-बड़द लऽ कऽ भिक्षाटन करैए। रहौर-रठौर सभ सेहो भिक्षाटनेसँ गुजर करैए।

बच्चाकैं पाच सेहो लगबैए पहद्दीबला सभ...

छोट मोट शीतला मैया अल्प बएस कऽ
हे डाला लेने ना, मैया फूल लढ़ऽ चलली
हे डाला लेने ना।
फूल लोढ़िते मैयाक घामे शरीर हे घमा गेलनि ना
मैयाक माथक सिनूर हे घमा गेलनि ना।

आ पड़ि गेलै ममतोड़कैं पाच।

ममतोड़ सङे खेलाइत बनि जाइ छल मुखदेव राज कोतवाल।

मुखदेव- (ठहकैत) हूँ, अँह, हूँ-हूँ...

ममतोड़-हमरा बाड़ी हमरा बाड़ी के ठहकैए?

मुखदेव-राज कोतवाल..

ममतोड़-की की मंगैए..

मुखदेव- अरबा चाउर नव ढकना, राजा बेटीक बियाह छिऐ एकटा कटहर मंगैए।

अखन तँ खिज्जे छै..

मुखदेव- (ठहकैत) हूँ, अँह, हूँ-हूँ...

ममतोड़-हमरा बाड़ी हमरा बाड़ी के ठहकैए?

मुखदेवक मुँहपर हँसी आ आँखिमे नोर आबि जाइ छन्हि.. रुद्रमति पानि आनि कऽ दै छन्हि..

झिज्झिरकोना- झिज्झिरकोना कोन कोना? ऐ कोना, नै ओइ कोना...

साहेबगंजक रस्ता, हम आ मुखदेव..

नै जानि पीअर बच्चाक के रहै खबरी।

पीअर बच्चा, हँसैत खेलाइत गाममे टाटी-बेनाठी उठा देलकै।

जागेश्वरकैं धरि सभ बाट देखल रहै। मनिहारीघाट पहुँचबामे तत्ता-सिहर काटऽ पड़लै। कॉमरेड सभक पहुनाइ करैत गंगा टपला आ फेर आगाँ बढ़ला, मुदा पुलिस साहेबगंज पहुँचि गेल रहै।

नै जानि के रहै भेदिया। घरक भेदिया। पीअर...

भाग मुखदेव...

पिंजड़ाक सुग्गा भागि कऽ कतऽ जाएत जागेश्वर...

पुलिसबा जँ वर्दीमे रहितै तखन जागेश्वर ओकरा नै पार पाबऽ दैतै। मुदा हमरा सभकैं तँ भेल जे कुटुम सभ स्वागत करै लेल आएल अछि।

लग पासक जेलो नै लऽ गेल, बड़का आतंकीक चार्ज लगलै..

... से पटनाक जेलमे कड़ा सुरक्षामे...

.....घनानन्द, हलधर, नोने, दौलति जहाँ, भट्ट भूषण आ रुद्रमतिक सुरक्षामे... पठा देलकै।

ममतोड़ बाट ताकिये रहल हेतै..
पीअर बच्चा गाममे नै जानि की कहने हेतै।
ममतोड़ की सोचने हेतै..

छुच्छो हाथ भैया अबितथि
बैसितथि माड़ब चढ़ि रे
ललना अपने सड़िया पहिरतौं
भैया नाम लितौं रे

सातम कल्लोल

धुन-धुन धुन-धुन बोलै चरखा,
डर लागै घमासान हो

दक्षक पुनर्जन्म भेलन्हि हिमालयक रूपमे, आ ऐ जन्ममे हुनका उमा, पार्वती, गंगा, गौरी आ सन्ध्या ई पाँचटा कन्या भेलन्हि।

हिमालय आ मनाइनक बेटी उमा, महादेवकेँ प्राप्त करबा लेल तपस्या करऽ चलि गेली..

माय उमाकेँ रोकलन्हि। मुदा ओ वरक रूपमे महादेवकेँ प्राप्त कऽ लेलन्हि।

दोसर पुत्री पार्वती एकदिन कनक शिखरपर गेली आ बसहापर चढ़ि महादेवक संग चलि गेली।

तेसर पुत्री गंगा रहथि। एक दिन महादेव भिक्षुक भेष धऽ एला आ गंगाकेँ जटामे नुका चलि गेला।

बसहा-बड़द...

मुखदेव फेर किछु शुरू करत....

ममतोड़क जन्म। मिथिलाक एकटा दलित परिवारमे भेल, आर्थिक आ सामाजिक दुनू रूपेँ दलित परिवारमे।

सभ तरहक लोक गढ़ नारिकेलमे। आर्थिक रूपसँ दलितक संख्या बेशी। दू चारि घर छोड़ि कऽ सभ आर्थिक रूपेँ दलित, मुदा सामाजिक रूपसँ नीच ऊपर केर खधाइ। मुदा स्त्रीगणमे से कम, सामाजिक मेल-मिलाप स्त्रीगणमे बेशी। जखन ममतोड़ पेटमे रहथि तखन साहेबगंजवाली समएसँ खाइ-पीबै छलि, मुदा काज-उद्यम करिते छलि मुदा परमेश्वर हुनका भारी काज नै करऽ दै छला। ममतोड़क जन्म समाजक व्यवस्थासँ अपनाकेँ दूर रखबामे मदति

केलक, लोक अपनेमे ओझरा गेल। आ समाजमे पहद्दीक बसहा-बड़दबला, ब्रह्मपुरक भाट, दीपक पमरिया, बेनीपट्टीक नट, घनश्यामपुरक गोक्को सभ सेहो छल।

की होइ छै शिक्षा! जे शिक्षा माए आ समाज ममतोड़कें दऽ रहल रहै की ओ शिक्षा स्कूलमे देल जाइत हेतै?

से नै छै जे एकाध थापड़ माए ममतोड़कें नै मारै छलै, मुदा आस्तेसँ। मुदा तकर ओकरापर कोनो असरि नै पड़ै छलै। हँ जँ कहियो माए ममतोड़सँ वा ममतोड़ माएसँ बाजा भुकी बन्न कऽ दै छल तखन जे एक दोसराक आगाँ-पाछाँ करै छल से मुदा देखबा जोगर होइ छलै, हमरो लेल आ बाबूओ लेल।

डेढ़ मास तक तँ ममतोड़ ने बोलारे देलापर हँसिते छल आ ने कोनो काने-बात दै छल। मुदा डेढ़ मासमे ओ हँसऽ लागल। हमर करेज शान्त भेल मुदा माए कहलक जे ई तँ सभ बच्चा संगे होइ छै। तीन मास होइत-होइत ओकर हँसी लागए जे ठहक्कामे बदलि रहल छै। आ किछु दिनक बाद लगै साल भरिसँ पहिने, ओ अप्पन लोक आ अनठियामे भेद केनाइ सीखि गेल।

जो..........., भेल ई भगवानसँ दूर, पएरक औंठा मुँहमे देमऽ लागल अछि।

पाँच छह बरखक बाद तँ ओ सभ काज अपनेसँ करऽ लागल, खूब बाजए। गीत सभ सीखि गेल।

हँ जहिया कहियो कोनो छौड़ी आकि छौड़ा ओकरा किछु तेहन गप कहि दै आ माए ओकर गप नै सुनै छलै तँ ओइ राति ओ खूब दाँत कटकटबै छल। माए कहै छलै जे छौड़ीकें पेटमे कीड़ा भऽ गेल छै। खिज्जा नीमक पात खूब खाए पड़ै छलै बेचारीकें।

जागेश्वर आनि कऽ देने रहै खादीक टुकड़ा आ कहने रहै किछु झोरा बनबै लेल। माए कहलकै जे हम सभ झोरा कहाँ बनबऽ जानै छी, मुदा

जागेश्वर कहलक जे ममतोड़ बना लेत, अहाँ निश्चिन्त रहू।

आ ममतोड़ बना लेलक।

खादी कपड़ा, कोनो छोट भेड़ाक बच्चाक चाम, तूर, मधुमाछीक छत्ता आ लकड़ीक छोट तख्ता।

ममतोड़ कुरेड़ीकेँ मधुमाछी छत्तासँ मंत्र पढ़ि मधु निकालैत देखने अछि:

आँट बान्हू, साँट बान्हू, बान्हू अपन काया

सत गुरुक बान्हू काया, सूर महामाया।

मधुमाछीक छत्ता एकटा दुनियाँ अछि, आइ काज आएल।

आ तइपर सँ तरह तरहक नक्काशी।

धर्मडीहावालीक बेटी लखनी, मेटरसवालीक बेटी फूदो, बेहटवालीक बेटी सुगन, धेपुरावालीक बेटी फुलो, मोहलीवालीक बेटी सोमनी, जगदरवालीक बेटी मरनी, कोठियावालीक बेटी भुल्ली, तमुरियावालीक बेटी भूरी, जेठियाहीवालीक बेटी भुरकुरी, मछधीवालीक बेटी कलकुसरि, बलाटवालीक बेटी घुट्टरि, गंजवालीक बेटी मुनेसरी, चनौरावालीक बेटी लुखिया आ नवानीवालीक बेटी कुसुमा।

खादी आ चामक झोरापर जे नक्काशी ई सभ मिलि कऽ केलक से अद्भुते। जागेश्वर सभ टा झोरा कॉमरेड सभमे बाँटि देलक। आ हमरा घरमे चरखा सेहो आबि गेल। हमरे घरमे किए, ममतोड़क सभ संगी साथीक घरमे। आ गढ़ नारिकेलमे रंग बिरंगक कपड़ा लोक सभ पहिरऽ लागल। बनजारा सभसँ शिक्षा लेबा लेल कहै छल जागेश्वर। गामे गाम घुरैए ओ सभ मुदा कपड़ा लत्ता केहन रंग-बिरंगक पहिरै जाइए।

धुन-धुन धुन-धुन बोलै चरखा, डर लागै घमासान हो
धक-धक धक-धक धड़कै छतिया, डर लागै घमासान हो

गुल-गुल गुल-गुल पिउनी लागै, दुलकै हिया झमान हो
जाड़ा बीतल, गरमी बीतल, बीतल भादो साओन हो
एखनौं धरि नै ऐल निर्मोहिया, हुक-हुक करै परान हो
धुन-धुन धुन-धुन बोलै चरखा, डर लागै घमासान हो

ऐ देशक स्वतंत्रताक बाद ई चर्खाक धुन-धुन कानमे भय किए उत्पन्न कऽ रहल अछि।

मुदा बा झाक घटनाक बाद ओकरामे विचित्र तरहक भय आबि गेल रहै।

पहिनहियो ओकरा डर होइ छलै। हमरो होइ छल। ऐ जीवनकेँ लऽ कऽ, ऐ मृत्युकेँ लऽ कऽ।

माए कहै छलै ओकरा जे अगिला जन्ममे ओ राजकुमारी बनि कऽ जन्म लेत। आ ऐ जन्ममे की ओ राजकुमारी नै अछि? मुखदेव आ दयाराम सन भाइ छै आ परमेश्वर सन बाप छै।

-आ तोरा सन माए। - ई कहैत ममतोड़ हँसऽ लगै छलि। मुदा बा झाक घटनाक बाद..

पहिने बियाहक गपपर ओ कहै छलि जे हम बियाह नै करब, माए-बाप आ भाइ संगे जिनगी भरि रहब। मुदा बा झाक घटनाक बाद ओ एक्को बेर किछु नै बाजलि। जेना ई गाम ओकरा लेल नग्र बनि गेल हुअए जकरा ओ छोड़ि कऽ जाए चाहै छलि।

ऐ स्वतंत्र भेल वा नै स्वतंत्र भेल देशक जेलमे मुखदेव राम, स्वतंत्रता सेनानीक प्रश्न सुनि घनानन्द, हलधर, नोने, दौलति जहाँ, भट्ट भूषण, रुद्रमति आ रघुवरन स्तब्ध अछि।

आठम कल्लोल

आजु धीया कोना अमा बिनु रहती/ छन-छन उठति चेहाय

बाह.. मिथिलाक मुखराम...
आर एकटा खिस्सा..

सगर राजाक पत्नी रहथि शैब्या आ हुनकासँ असमंजस नामक पुत्र भेलन्हि। असमंजस..

हँ हौ असमंजस...

दोसर पत्नी वैदर्भीसँ कोनो बच्चा नै भेलन्हि। वैदर्भी महादेवक सए बरख तपस्या केलन्हि तँ एकटा लोथ जन्म लेलकन्हि। महादेव एला आ लोथकेँ साठि हजार खण्डमे काटि ओतेक तौलामे राखि झाँपि देलनि। ई सभटा किछु दिनमे पुत्रक रूप लेलक।

सगर राजाक सएम अश्वमेध यज्ञक इन्द्र विरोधी भेला कारण तखन सगर शतक्रतु इन्द्र भऽ जेता।

इन्द्र यज्ञक घोड़ाकेँ लऽ भागि गेला आ कपिलक आश्रममे बान्हि देलखिन्ह।

साठियो हजार पुत्र कपिलपर दौगला, ओ तपस्यालीन छला आ अपन क्रुद्ध आँखि खोलि सभकेँ जरा देलन्हि। वैकुण्डसँ गंगाकेँ अनबा लेल असमंजस आ तकर बाद हुनकर पुत्र दिलीप आ तकर बाद तिनकर पुत्र अंशुमान तपस्या करैत-करैत मरि गेला।

अंशुमानक पुत्र भगीरथक तपस्यासँ विष्णु प्रसन्न भेला आ गंगाकेँ मृत्युलोक लऽ जेबाक अनुमति दऽ देलन्हि।

महादेव हिमालयपर जा कऽ स्वर्गसँ उतरैत गंगाकेँ अपन जटामे राखि सम्हारि लेलन्हि..

मुदा जे ओ आगू बढ़ली तँ जहु ऋषिक कुटी दहाए लागल।

जहु ऋषि गंगाकेँ पीबि गेला। मुदा फेर ओ गंगाकेँ छोड़ि देलन्हि आ तहियासँ गंगा हुनकर पुत्री जाह्नवीक रूपमे विख्यात भेली।

फेर अन्तमे सगरक पुत्र लोकनि द्वारा घोड़ाक खोजमे खुनल ओइ खाधिमे गंगा खसली जे आब सागर कहाबए लागल आ ऐ तरहेँ सगरक पुत्र सभकेँ सद्गति भेटलन्हि।

बाह...

सद्गति.. गंगाक किनारमे जागेश्वर आ मुखदेवकेँ अंग्रेजिया सिपाही सभ पकड़लकन्हि आ सद्गति देलकन्हि। मुखदेवकेँ सद्गति कहाँ भेटल छन्हि, हँ गंगाक किनारक ऐ बाँकीपुर कैम्प जेलमे जागेश्वरकेँ धरि सद्गति अवश्य भेटि गेल छन्हि।

गाममे रंग-बिरंगक पुरहित सभ।

बिन्देश्वर ठाकुर हजाम छथि, ओ हजामक अलाबे इलाकामे केओट आ धानुकक बियाह सेहो करबै छथि।

रामावतार राउत बरइ, चमार, ततमा आ धानुकक पुरहित छथि, संगमे अनकर सेहो, सत्यनारायण भगवानक पूजा, सरस्वती पूजा, घरबास पूजा, होम, बिआह, श्राद्ध कर्म करबै छथि। घूरन राम मुसहर आ चमारक पुरहित छथि, ब्राह्मण पुरहित ॐ नै पढ़बै छलै खाली नमो पढ़बै छलै से जागेश्वर आ मुखदेवक कहलापर घूरन राम पुरहित बनि गेला, बियाह करबै छथि, पूजा करबै छथि आ दिन ताकै छथि। मुदा श्राद्धकर्म नै करबै छथि, हिनका सभमे श्राद्ध कर्म गोधनपुर गामक लछमी राम आ कछुआक कोना राम करबै छथिन्ह। ममतोड़क बियाहक पुरहित यएह रहथि आ नौआ रहथि लक्ष्मी

ठाकुर। नौआकेँ बेशी खटऽ पड़ै छै मुदा दान दक्षिणामे छहे आना नौआक आ दस आना पुरहितक होइ छै। बिधक बीचेमे ऐ बातपर दुनूमे बहसा-बहसी सेहो होइ छन्हि। लक्ष्मी ठाकुर पुरहित नै बनि सकला, मुदा हिनकर पिता बिदेश्वर ठाकुर केओट, नौआ आ धानुकक पुरहित रहथि, बिआह पूजा आ श्राद्धकर्म करबै छला। जीवछ राम सेहो चर्मकारक पुरहित छथि। नरहियाक सत्तो मण्डल धानुक आ आन आन जातिक पुरहित छथि। कपिलेश्वर राउत सत्यनारायण पूजा, सरस्वती पूजा आ बियाह करबै छथि। रामनारायण राउत पहिने बियाह आ पूजा करबै छला मुदा आब नै। पहिने किछु दिन शंका भेलै जे ब्राह्मण पुरहित नै रहने किछु अनिष्ट भऽ सकैए, मुदा आब सभ किछु ठीक छै, सभ बुझि गेल अछि जे ऐ सभसँ किछु नै होइ छै।

बियाहक एकदिन पहिने कुमरम।

खेतमे मटकोर, मड़बा भरै लेल ममतोड़ आ चारि गोट स्त्रीगण खेतसँ माटि अनलथि। ओही माटिसँ चूल्हि बनल, ओइमे साँझमे लावा भूजल जाएत। कुमरम दिन बम-ब्राड़ कऽ नोतल जाइए, विघ्न निवारण लेल पितरक अनुमति मांगल जाइए, हुनका उपस्थिति लेल आग्रह कएल जाइए।

खूब ढोल-पिपही बजैए।

गितगाइन सभकेँ तेल, सिनूर देल जाइए।

बिलौकी मांगब माने समाज अहाँक काजमे सहयोग दऽ रहल अछि।

बियाहक पहिने रातिमे घरक गोसाँइक सोझाँ बाँसक करची, खड़ही आ केराक पात राखल गेल, ई छी पुरबा-पछबा। आ ऐ पुरबा-पछबाकेँ बान्हल गेल। सभक नजरि-गुजरि खतम आ ममतोड़क वंश बाँसक करची, खड़ही आ केराक पात सन बढ़त।

आइ बियाहक दिन अछि।

तिरहुत आ बटगवनी गीत सभ, ऐ घरसँ ओइ घर, भगवती घर, केश

फेकबा काल आ नगहर भरै लेल जाइ काल गाओल जाइए। मलार, बाटमे, साओन भादवमे, रस्ता काल विध कालमे...

पावस, झूलन- रास- ग्वालरि- झूमरि- कजरी, चौमासा- छौमासा, साओनमे रस्तामे। चैतमे चैतावर।

कुमारि कनियाँ तुसारि पुजबए। साँझ पाबनि, तिला संक्रान्तिमे।

बियाह दिन नगहर भराइ छै, कोबर घरमे राखल रहै छै। पालोपर सिनूर पिठार लगा कऽ अरिपन दऽ कऽ, वर कनियाँ बैसा कऽ कौआ डकैसँ पहिने भगवती गीत, गोसाउनि गीत, ब्राह्मण गीत गाबि कऽ... ब्राह्मणक गीत माने ग्रामदेवताक गीत।

मधुखार पाँच गो अहिबाती लगबै छथि, नगहरक पानि ढारल जाइए, धोअल जाइए... शुभे हे शुभे बजै छथि..

बियाहमे शुभे हे शुभे आ मूड़न आ जागेश्वरक उपनयनमे जीबह हे जीबह.. गनियारि पिसबाक गीत, चिल्कौरकेँ बच्चा भेलापर पिबऽ लेल देल जाइ छलै... तेल-कसाय- मधुखार-, मूड़न, उपनयन, बेटीक बियाहमे, दही हरदि माथपर लगेने आ पानि ढारि धोअल जाइए।

ममतोड़क हाथसँ पाँच हाथ चाकर आ सात हाथ नाम मड़बा बान्हल गेल, नौ-एगारह हाथक मड़बा लेल आंगनमे जगह नै अछि।

साहेबगंजवाली ऐ मड़बाकेँ निपबा रहल छथि, सात बेर अवश्य निपबाक अछि साँझ धरि।

बर-बरियाती अबैए।

मौर लेल मालीकेँ साइ देल छै, आनल जाइए, पानिसँ परिछल जाइए।

ब्रह्मस्थानमे घोड़ा राखल अछि, माँटिक घोड़ा। बरहम बाबाक दर्शन-पूजा वर-बरियाती करै छथि। गामक रक्षक छथि ई बरहम बाबा। आ वरक

संग *लोकनियाँ* हर-हमेशा मौजूद, मर-मजाक रोकबा लेल।

आमक पातपर वरक पुरखा आ कनियाँक पुरखा पुरहित लिखै छथि, आङनक दुआरिपर वरक परीक्षण कएल जाइए, ऐ परीक्षणमे सभ पास होइते अछि। काछुक खपलोइयामे सरिसौ तेलक बाती, कच्छदीप अछि तँ कच्छपे सन दीर्घ उमेर ममतोड़ आ ओकर वर लेल निश्चित...

वर मड़बाक तीन फेर चक्कर लगबैए।

फेर जागेश्वर वर पक्ष आ कन्या पक्षसँ ५-५ मुट्ठी धान लैए आ आङनक दक्खिन-पच्छिम कोणमे राखल उक्खरिमे दैए।

वर आ ओकरा गामक आर सात गोटे सौंस सुपारी हाथमे लऽ समाठ लऽ ठाढ़।

माले ठाकुर पीअर ताग समाठमे बान्हि ओइसँ आठो गोटेकेँ बान्है छथि, सभ तीन-तीन बेर उक्खरिक धान समाठसँ कुटै छथि। फेर हाथक सुपारी पुरहितकेँ देल जाइए।

माले ठाकुर उक्खरिसँ चाउर बहार करै छथि, आमक पातपर दही, चाउर दै छथि, पीअर तागक कंगन कनियाँ आ वर लेल बनबै छथि आ परमेश्वरकेँ दै छथि।

मड़बापर ममतोड़क वर पूब मुँहे बैसैए।

परमेश्वर वरक सोझाँ पच्छिम मुँहे बैसैए।

आमक पल्लोक बैसकी परमेश्वर वरकेँ दै छथि, ओ ओकरा पएरक तरमे उत्तर दिशामे राखि लै छथि।

फेर वरकेँ आँजुरसँ जल दै छथि परमेश्वर। वर पहिने दहिन फेर वाम पएर धोबै छथि।

फेर दोसर आमक पल्लोक बैसकी परमेश्वर वरकेँ दै छथि, ओ ओकरो

पएरक तरमे उत्तर दिशामे राखि लै छथि।

सम्मर गाओल जाइए, बियाह काल। सीता सम्मर, गौरी सम्मर, रुक्मिणी सम्मर।

फेर परमेश्वर अर्घपात्रमे दूभि, अच्छत, फूल, चानन दऽ वरकेँ दै छथि। वर कने दूभि, अच्छत, फूल, चानन अपन माथपर लै छथि आ शेष पूब आ उत्तर कोणमे फेकै छथि।

फेर परमेश्वर वरकेँ जल दै छथि आचमल लेल। वर आचमन करै छथि; वाम हाथक तर्जनीकेँ औंठासँ दबाबै छथि, फेर मध्यमा, कनिष्ठा आ अनामिका जोड़ै छथि आ फेर हाथक नीचाँ तीन बेर ठोढ़ सटा कऽ गट्टा लगसँ जल ग्रहण करै छथि आ चारिमे बेर ओकरा गट्टा दिससँ पात्रमे खसबै छथि।

फेर परमेश्वर कांस्यपात्रमे झाँपल राखल बाटीमे दही, मधु, घी वरकेँ दै छथि। वर ऐ मधुपर्ककेँ वाम हाथमे राखि ढकना उघारै छथि। अनामिकासँ सभ वौस्त मिलबै छथि। अनामिका आ औंठासँ तीन बेर फेकै छथि फेर अनामिका आ औंठासँ तीन बेर ठोढ़मे लगबै छथि आ अपन वाम राखि दै छथि। फेर वर हाथ धोबै छथि। आचमन करै छथि आ फेर मुँह, नाक, आँखि, कान, कान्ह आ जाँघ पहिने दहिन-फेर वाम एना बेरा-बेरी छुबै छथि। फेर सौंसे देहकेँ हँसोथै छथि।

फेर माले ठाकुर वरक आँजुरमे एकटा खढ़ दै छथि। वर मंत्र पढ़ि खढ़ तोड़ैए।

वर वेदीपर जाइए, पुरहित मारि होम करैए। भुस्सा, आँकड़-पाथर आ केश नै रहबाक चाही ओतऽ। पुरहित एकहाथ नाम आ चाकर भूमि कुशसँ बहारैए, ओइ कुशकेँ पूब आ उत्तर कोणमे फेकैए, स्थानकेँ गाइक गोबरसँ नीपैए। फेर ठुट्ठी, औँठा आ तर्जनी पसारि दच्छिन, बीच आ उत्तर भागमे

पूबे-पछिमे नापैए। ई तीनू नापल स्थानपर स्रुवसँ पच्छिमसँ पूब रेखा बनबैए। स्रुवकेँ दक्षिणमे राखि तीनू रेखापरसँ औंठा आ अनामिका आङुरसँ माटि लऽ फेकैए। भूमिपर जलक छिच्चा दैए। कांस्यक पात्रसँ आगि आनैए आ पच्छिम मुँहे अग्नि राखैए आ आमक ठहुरी ओइमे दैए।

वर उठैए आ कोबर घरसँ ममतोड़केँ आनैए, कोबर घरमे सुगापंछी रंगक पाँखि आ लाल ठोरबला दूटा लटपटिया सुग्गाक चित्र भीतपर लिखल छै। चारू कोणपर नैना योगिन माथपर डाली लेने लिखल अछि।

पहिल कोणमे फकड़ा पढ़ल जाइए:

थिकौं बंगालिन बसी बंगाला, सुरपुरसँ एलौं अछि
बिना नदी कऽ नाओ बहाओल, अपन तरहत्थी दही जमाओल
कोठी ऊपर वर नचाओल
आलरि-झालरि कावरि माथे, सिर ऊपर बीअनि माथे
पहिल योगिनी अपन सासु हे,
आबे बाबू पड़ल योगिनियाँ बास हे

दोसर कोणमे फकड़ा पढ़ल जाइए:

यमुना तीरे कुंज कृष्ण बसै छथि
गोपी दधि लए चलि नै सकै छथि
बालक माए चेहों चेहों करै छथि।
आलरि-झालरि कान्हे कामरु, हाथे बीअनि
ई योगिनियाँ पितिया सासु हे
आबे बाबू पड़लौं योगिनियाँ बास हे

तेसर कोणमे फकड़ा पढ़ल जाइए:

सोहए रे पनपट्टा पानी भरए लए जाएले
बाटपर ठाढ़ि बेटी बसिया बजाएले
तोरा के कहलकौ बेटी लाजो ने भेल रे

तोँ तँ भेलि जुआनि बेटी तेँ सम्हारि ने सकलैं मन रे
आलरि-झालरि कान्हें कामरु माथे बियनी
तेसर योगिनियाँ पिसिया सासु हे
आबे बाबू पड़ल योगिनियाँ बास हे

चारिम कोणमे फकड़ा पढ़ल जाइए:

काँच बाँस काटि कऽ बंगाल घर छारि कऽ
एत्ते एत्ते राति पिया कतएसँ एलौं हे
राहड़िक खेत पोखरौनासँ आएल छी
हाथमे टुन-टुन पएरमे काड़ा
कर दमनियाँ नैन योगिनियाँ
एक पटोर तर दुइ रे कुमारि
बाम छौ कनियाँ दहिन छौ सारि
आलरि-झालरि कान्हें कामरु माथे बीयनि
चारिम योगिनियाँ मसिया सासु हे
आबे बाबू पड़ल योगिनियाँ बास हे

वर ममतोड़कैं मड़बापरबैसाबैए। खादीक साड़ी आ खादीक आंगी दैए।

परमेश्वर वरकैं एक जोड़ धोती दै छथि।

वर आ ममतोड़ दू-दू बेर आचमन करै छथि। परमेश्वरक कहलापर ममतोड़ आ ओकर वर एक दोसराकैं देखै छथि।

परमेश्वर वरक दहिना हाथक गट्टामे आ ममतोड़क वाम हाथक गट्टामे आमक पातक कंगन पहिराबै छथि। फेर पीअर नव वस्त्रक टुकरामे दू मुट्ठी धान, दू ढेकी हरदि, दू गोट सुपारी, दूभि आ पाइ बान्हि जन्मग्रन्थि बनबै छथि आ वरक तौनीक खूँटमे बान्है छथि।

परमेश्वर अर्घपात्रमे दूभि, अच्छत, फूल, श्रीखण्डचन्दन, सुपारी लऽ वरक दहिन हाथपर ममतोड़क दहिन हाथ राखै छथि, ओइपर अर्घपात्रकैं पूब

मुँहे दऽ अपन दहिना हाथे ऊपरसँ पकड़ि कन्यादान करै छथि।

फेर परमेश्वर अर्घपात्रक ऊपर दक्षिणाक पाइ राखि जलसँ सिक्त करै छथि, वरकेँ ई दक्षिणा दै छथि।

वर आ ममतोड़ वेदीपर जाइए। वेदीक दक्खिन घैलमे पानि आ पल्लव राखल रहैए। परमेश्वरक कहलापर वर आ ममतोड़ फेर एक दोसराकेँ देखै छथि। तखन आगाँ पुरहित, फेर ममतोड़ आ तकर पाछाँ वर अग्निकेँ दहिन कऽ चारू कात घुरै छथि। फेर आगिक पच्छिममे सभ पूब मुँह भऽ बैसै छथि। पुरहित, तकर दक्षिण वर आ तकर दक्षिण ममतोड़।

पुरहित कुशक ब्रह्मा आ कुश तिल जल लऽ मंत्र पढ़ै छथि।

फेर आगिक दक्खिनमे अच्छतपर ब्रह्माकेँ बैसबै छथि।

पुरहित प्रणीता-पात्र आगू करै छथि, ओकरा इनारसँ आनल जलसँ भरै छथि, कुशसँ झाँपै छथि, ब्रह्मा दिस ताकै छथि, आ पात्र आगिक उत्तर कुशपर राखै छथि। आब पुरहित कुश पसारऽ लागै छथि; दक्खिनसँ पूब-उत्तर दिस; फेर ब्रह्मासँ अग्नि धरि; फेर दक्खिन पच्छिमसँ पच्छिम-उत्तर धरि; आ फेर आगिसँ प्रणीता-पात्र धरि। कुशक आगाँक भाग सदिखन उत्तर दिशामे रहैए।

आगि उत्तर पच्छिमसँ पूब तेकुशा, दू पातक दू कुश (पैता बनेबा लेल), पशुपर पानि छीटल जाइबला पात्र (प्रोक्षणीपात्र), घीक बाटी, सम्मर्जन कुश, कुशक गूहल विरनी, तीनटा समिधा लकड़ी, स्रुव, घृत, आरब चाउरक बासन, लावामे शनिक पात मिलाओल, चन्द्रौटा, कोनियाँ। आ ओइसँ आगाँ मुखदेव।

तखन एक ठुट्ठीक दूटा पैता कुशसँ बना, हाथमे लऽ प्रणीता पात्रक जल प्रोक्षणी पात्रमे तीन बेर दऽ, दुनू हाथक अनामिका आ औँठासँ उत्तर दिश नोक कऽ पैता धऽ तीन बेर प्रोक्षणीक जलसँ अपन माथपर मार्जन।

प्रोक्षणीपात्र आ प्रणीतापात्र।

पशुपर पानि छीटल जाइबला पात्र अछि प्रोक्षणीपात्र, आ राधामोहन रायक खुनाओल गढ़ नारिकेलक सभ टोलक इनारक जल अछि प्रणीतापात्रमे।

फेर प्रोक्षणीपात्रकेँ वाम हाथमे राखि दहिना औंठा आ अनामिकासँ पैंता पकड़ि तीन बेर ओकर जलकेँ ऊपर छीटि प्रणीताक जलसँ प्रोक्षणीक जलकेँ सिक्त कएल गेल आ प्रोक्षणीक जलसँ सभ वौस्तकेँ सिक्त कएल गेल। फेर आगि आ प्रणीताक बीचमे प्रोक्षणीकेँ राखि देल गेल।

स्रुवकेँ धिपा कऽ कुशक अग्रभागसँ स्रुवक भीतर आ कुशक जड़िसँ स्रुवक पाछाँक भागकेँ झाड़ि, प्रणीताक जलसँ सिक्त कऽ तीन बेर स्रुवकेँ आगिमे धिपा दक्खिन भागमे कुश राखल गेल।

घीकेँ अग्निक चारू दिस घुमा ओइमे दऽ पैता हाथे अनामिका आ औंठासँ घी लऽ माथपर मार्जन कऽ माने निर्मल शुद्ध कऽ, घीक बाटीकेँ देखि ओइमेसँ जँ काठी वा आन चीज जे उड़ि कऽ गेल रहै, से हटा देल गेल। फेर माथपर मार्जन कएल गेल।

फेर विरनी वाम हाथमे राखि मोनसँ प्रजापति ब्रह्माक ध्यान धऽ घी लगाओल तीनू ठुहड़ी-समिधा आगिमे धऽ देल गेल।

फेर पुरहित बैसि गेल। प्रोक्षणीक जलसँ हाथसँ आगिक प्रदिक्षणा करैए आ आगिकेँ सिक्त करैए। प्रणीतापात्रमे दुनू पैता राखि, दहिन ठेहुन खसा कऽ कुशसँ ब्रह्मासँ सम्पर्क करैए। धधकैत आगिमे स्रुवसँ आहुति दैए आ अवशिष्ट घृतकेँ प्रोक्षणीपात्रमे खसा दैए।

पुरहितक होम खतम भेल।

ममतोड़ आ ओकर वर आगिक पच्छिममे पूब मुँहे ठाढ़ भऽ गेलथि। आगाँ ममतोड़ आ पाछाँ वर।

वर पाछाँसँ दुनू दिससँ हाथ आगाँ कऽ अपन आँजुरमे ममतोड़क आँजुर लऽ लेलक।

हम शनिक पात मिलाओल लावा आ घी ओइ आँजुरपर राखि देलिऐ। ममतोड़ लावा आगिमे धऽ दैए। वर ममतोड़क दहिन हाथ पाँचो आंगुर धऽ दहिना हाथे पकड़ैए, ममतोड़केँ आगिक उत्तरमे पूब मुँहे ठाढ़ कऽ चन्द्रौटापर ओकर दहिना पएर रखबाबैए। ममतोड़क रक्षाक ओ प्रतिज्ञा लैए। आगू ममतोड़ पाछाँ वर प्रणीता आ ब्रह्माक संग आगिक प्रदीक्षणा करैए।

ममतोड़ आ ओकर वर आगिक पच्छिम-पूब मुँहे ठाढ़ भऽ लावा छिरियाबै छथि।

फेर वर ममतोड़क दहिन हाथ पाँचो आंगुर धऽ दहिना हाथे पकड़ैए, ममतोड़केँ आगिक उत्तरमे पूब मुँहे ठाढ़ कऽ पाथरपर पएर रखबाबैए आ आगिक प्रदीक्षणा करैए आ ममतोड़ आ ओकर वर आगिक पच्छिम-पूब मुँहे ठाढ़ भऽ लावा छिरियाबैए।

फेर तेसर बेर वर ममतोड़क दहिन हाथ पाँचो आंगुर धऽ दहिना हाथे पकड़ैए, ममतोड़केँ आगिक उत्तरमे पूब मुँहे ठाढ़ कऽ पाथरपर पएर रखबाबैए आ आगिक प्रदिक्षणा करैए आ ममतोड़ आ ओकर वर आगिक पच्छिम-पूब मुँहे ठाढ़ भऽ लावा छिरियाबैए।

आब ममतोड़ अपन दुनू हाथपर कोनियाँ राखैए आ हम ओइपर लावा दै छी। वर ममतोड़क पाछाँसँ दुनू हाथेँ कोनियाँ पकड़ैए आ ममतोड़ आगिमे लावा दैए, फेर वर आ ममतोड़ चारिम बेर प्रदिक्षणा करै छथि।

फेर वर आ ममतोड़ बैसि गेल।

पुरहित कुशसँ ब्रह्माकेँ छुबैत, मोनसँ अगिला मंत्र पढ़ैए, श्रुवसँ घी लऽ आगिमे हवन करैए, आ स्रुवमे लागल घीकेँ प्रोक्षणीपात्रमे झाड़ैए।

आगिक उत्तर सातटा गोल अरिपनमे पएर रखैत ममतोड़।

पुरहित हवनमे लागले अछि; स्रुवसँ घी लऽ आगिमे हवन करैए, आ स्रुवमे लागल घीकेँ प्रोक्षणीपात्रमे झाड़ैए; फेर भरल घैलक जलमे देल आमक पल्लोसँ वर-वधूपर जल छीटैए।

वर ममतोड़केँ ध्रुवतारा देखबैत अछि।

वर ममतोड़क दहिन कान्हपर बाँहि धऽ ओकर हृदयक स्पर्श करैए।

पुरहित कुशसँ ब्रह्माकेँ छुबैत मोनसँ अगिला मंत्र पढ़ैए, स्रुवसँ घी लऽ आगिमे हवन करैए, आ स्रुवमे लागल घीकेँ प्रोक्षणीपात्रमे झाड़ैए।

आचमन कऽ, अनामिका आंगुरसँ घी ठोरमे लगा, फेर आचमन कऽ, तेकुशा तिल-जल लऽ चैल भरि चाउर ब्रह्मा लेल पुरहितकेँ देल जाइए।

तखन आगिक प्रदीक्षणाक क्रममे कुशक ब्रह्माक गीरह खोलि देल गेल, दुनू पैता लऽ प्रणीतापात्रक जलसँ पुरहित अपन आ वरवधूक माथ सिक्त करैए आ पूब-उत्तर कोणमे प्रणीतापात्र ओंघरा दैए। छिड़िआएल कुशकेँ एकट्ठा कऽ घी लगा आगिमे धऽ दैए।

पुरहित उठैए, स्रुवसँ घी, फूल, फल, सुपारी लऽ आगिमे धऽ दैए।

वर स्रुवसँ भस्म आनि अपन दहिन हाथक अनामिकासँ भस्म लऽ अपन कपारपर ठोप करैए।

ममतोड़क कपारपर सिन्दूर फेंटल भस्मसँ वर ठोप कऽ दैए।

वर ममतोड़क पाछाँ ठाढ़ भऽ सिन्दूरदानक पात्र लऽ शनिक पात, पटुआक सोन, साँख, सोहगैली आ घेंघीक देल सुवर्ण संगे सिन्दूर लऽ कनियाँक सीथमे नीचाँसँ ऊपर मुँहे सिन्दुरदान करैए आ घोघटक पटोरसँ झाँपि दैए। तीन बेर ओ ई करैए।

साहेबगंजवालीक आँखिसँ नोर टघरि गेल छै।

वर बैसि जाइए, कुश-तिल-जल लऽ पुरहितकेँ दक्षिणा दैए। फेर वर आ

ममतोड़ वेदीपरसँ मड़बापर आबि गेल आ सभक आशीर्वाद लेबऽ लागल, सोहाग लेबऽ लागलि ममतोड़।

बरियाती खाइ काल डहकन गाओल जाइत अछि, बरियत्ता गीत तकर बाद गारि बला गीत। जोग वरकेँ जादू-टोनासँ बचेबा लेल; ग्राम देवता लेल बाह्मन-ब्रह्मा, धर्मराज लेल धर्माक गीत।

अगिला दिन तेल-उबटन लगेलक दुनूँ गोटे आ सूर्यकेँ प्रणाम केलक। दिनुका बियाह रहितै तँ वेदीयेपर सूर्य देखितए मुदा रतुका बियाह रहै तेँ ध्रुवतारा देखने रहए। चलू आइ सूर्य नमस्कार केलक। घरसँ बहराएल ममतोड़, फेर घुरि कऽ आएल।

फेर साड़ी बदलि खोँइछ लऽ घूर-बहूर भेलै।

आ ओ बिदा भऽ गेलि, साहेबगंज लेल। दीन-द्विरागमन बियाहमे घूर-बहूर भऽ गेल आ ममतोड़क बिदाइ भऽ गेल, *लोकनियाँ* संग गेल ममतोड़।

बेटा कुमार गीत वरक घरपर गाओल जाइत अछि। ऐहबऽ फर वरक ऐठाम गौना-द्विरागमनमे बाँटल जाइत अछि।

विदागरी बियाहक अगिला दिन, समधी मिलान, चादरिसँ दुनू समधि झँपा जाइ छथि आ गरा मिलै छथि। मड़बापर एक्कोटा लावा पएरतर नै पड़ऽ देल जाइए, एक गोटे ओकरा बिछै छथि, ई संग जाइए कनियाँक। वरक ऐठाम सेहो लावा भूजल जाइए, ओइ भूजैबला बासनमे चारिम दिन, चौठारी दिन वर कनियाँ गामक बाहर जाइबला चौराहापर बासन फोड़ि दै छथि। जे लावा मड़बापर ककरो पएरमे नै लागैए से लोक सभक पएरसँ पिसीमाल होइए। जतेक लोक ओकरा पिसीमाल करत ततेक बड़कति ऐ वैवाहिक गठबंधनमे हएत।

जागेश्वर सभमे चतुर्थी कनिये ऐठाम होइ छै, सावर्ण, वत्स आ काश्यप गोत्रमे बियाह दिन लगा कऽ पाँचम दिन सूर्योदयसँ पूर्व- पाँच थारी आ

शाण्डिल्य आ आन गोत्रमे बियाह दिन लगा कऽ चारिम दिन सूर्योदय भेलापर- माने चारि थारी।

बा झाक घटनाक बाद जे भय ममतोड़मे हम देखने रहिऐ से आइ खतम बुझाएल।

बड़ रे जतन सँ सिया जी कैँ पोसल
सेहो रघुवंशी नेने जाय।
कौने रंग डोलिया कौने रंग ओहरिया
लागि गेल बतीसो कहार।
लऽ कऽ निकसल बिजुवन सखिया
ओइ वन केओ ने हमार।
केयो जे कानय राजमहलमे
केओ कानय दरबार।
केओ जे कानय मिथिला नगरमे
जोड़ि सँ बिजोड़ि केने जाय।
आजु धीया कोना अमा बिनु रहती
छन-छन उठति चेहाय।

लोकनियाँ घुरि कऽ आएल आ सभटा जानकारी देलक। माएकैँ भरोस भेलै। सात दिनपर जे भार जाइ छै से संगे लोकनियाँ लऽ कऽ गेल छल।

दौलति जहाँ आ रुद्रमतिक फरमाइसपर रहए मुखदेवक अझुका खिस्सा।

दौलति जहाँ आ रुद्रमतिकैँ अपन-अपन बेटीक बिदाइ मोन पड़ि गेलन्हि। नोरसँ डबडबाएल आँखि तँ पुरुष स्रोताक सेहो छलन्हि। मुदा मुखदेवक आँखि कोनो शून्यमे बौआ रहल छल।

नौम कल्लोल

मुँह चन्द्रसन, आँखि कमलसन, भौँह कामदेवक धणुषसन, ठोर पाकल तिलकोरसन, नाक सुग्गाक लोलसन, बोली कोइलीसन

आर एकटा खिस्सा..

सतीक मृत्युक बाद महादेवकेँ विरक्ति भऽ गेलन्हि। तखन ताड़कासुर ब्रह्माकेँ प्रसन्न कऽ महादेवक पुत्रक अतिरिक्त ककरो आनसँ नै मरबाक वर लऽ लेलक आ देवताकेँ स्वर्गसँ भगा देलक।

तखन देवता लोकनि महामाया दुर्गाक आराधना केलन्हि आ ओ हिमालयक घरमे जन्म लेलन्हि। ओ बड़ गोर-नार छली से हुनकर नाम पड़ल गौरी।

नारद एकदिन हिमालय ओइठाम एला आ गौरीक हाथ देखि कहलन्हि जे हिनकर विवाह महादेवसँ हेतन्हि।

हिमालय गौरीकेँ दूटा सखीक संग महादेवक सेवामे पठा देलखिन्ह। देवतागण कामदेवकेँ हुनकर मित्र वसन्त आ स्त्री रतिक संग पठेलन्हि।

वसन्त तँ ऋतु होइ छै..

हँ हौ, खिस्सा छिऐ, सुनने ने जाह..

गौरी जखन पहुँचली तखन कामदेव वाण चलेलखिन्ह। महादेव आँखि खोलि गौरीकेँ देखलन्हि। गौरी पूजा केलन्हि। महादेव हुनका देखि ढेर रास उपमा देलन्हि.. मुँह चन्द्रसन, आँखि कमलसन, भौँह कामदेवक धणुषसन, ठोर पाकल तिलकोरसन, नाक सुग्गाक लोलसन, बोली कोइलीसन।

मुदा तखने झाँखुरमे कामदेवकेँ महादेव देखलन्हि तँ तेसर नेत्र क्रोधित

भऽ खोलि देल आ कामदेव जरि गेल। रति मूर्छित भऽ गेली।

रतिक विलाप देखि देवतागण एला आ कहलन्हि जे ताड़कासुरक वध लेल ई सभटा रचल गेल। महादेव कहलन्हि जे रति समुद्रमे शम्बर दैत्य लग जाथि। कृष्णक पुत्र प्रद्युम्नकेँ ओ दैत्य उठा कऽ लऽ जाएत। जखन प्रद्युम्न पैघ हेता तखन ओ शम्बरकेँ मारि रतिकेँ बियाहि द्वारका लऽ जेता। वएह प्रद्युम्न कामदेव हेता।

बाह... ईहो नीक...

गौरी कामदेवक दहन देखि डेरा गेली। नारद गौरीकेँ तपस्या करऽ लेल कहलखिन्ह।

गौरी फेर पटोर खोलि देलन्हि आ कृष्णाजिन आ बल्फर पहीरि सखी संग गौरीशिखर चोटीपर चलि गेली।

घोर तपस्या देखि ऋषि-मुनि संग नारद महादेव लग पहुँचला। महादेव गौरीक परीक्षा लेल भेष बना गौरीशिखर पहुँचला आ महादेवक ढेर-रास निन्दा केलन्हि। गौरी तमसा गेली तँ ओ सोझाँ आबि गेला आ विवाह लेल तैयार भऽ गेला।

बाह..

जय औढरदानी। भूख आ पियास।

पियासक इन्तजाम तँ गढ़ नारिकेलमे भऽ गेल आ काजक कोनो कमिये नै से खेबाक इन्तजाम सेहो भैये जाइ छल। बचल खेती, तँ मात्र खेतीये टा काजक गनतीमे थोड़बे अबै छै। मुदा सेहो खेती तँ जागेश्वर दैये देलक। मुदा ई द्वन्द्व, छोट-पैघक द्वन्द्व, लोको छोट-पैघ आ काजो छोट-पैघ। दुसाधक छूलासँ हड्डी छुआ जाइ छै। मुदा से कोना? जागेश्वरकेँ ओकर टोल-पड़ोसबला सभ बतहा नाम राखि देलकै। से किए?

खेती नीक आ चमरखल्लाक काज अधला? मुदा खादी आ चमड़ा मिलि कऽ जे झोरा बनलै, ममतोड़ आ ओकर सभक संगी जे स्वतंत्रता संग्रामी सभकेँ बना कऽ देलकै? कमारक बनाओल हर, हाँसूमे धार कोना हएत जँ कमरसारि नै रहत?

यएह सभ चिन्तन होइत रहै छलै छबड़ा सभक थइरमे। छबड़ा सभक थइर, ई एकटा पियासक नाम छल। मुखदेव, दुखन महतो, बासू चौपाल, जागेश्वर आ जीवछ मुखियाक बीच समस्या सभपर गप होइ छलै। एकटा समाधान ताकल जाइ छलै आ ओइ समाधानपर काज होइ छलै। पीअर बच्चा बैसकी बजबै छल, जँ ओकर दृष्टिकोण ठीक रहितै तँ हमर सभक काजक ओ समर्थन करितए। ओहो समस्यापर चिन्ता करै छल, मुदा हमर सभक समाधान होइ छलै ओकर चिन्ता! यएह रहै दृष्टिकोणक अन्तर। मुदा ऐ दृष्टिकोणक अन्तरक की कारण? जागेश्वर आ पीअर बच्चाक द्वन्द्व, व्यक्तिक आ संस्कृतिक द्वन्द्व तँ नै। गामक संस्कृतिक पोषक जागेश्वर आ व्यक्तिक वा टोलक सुविधावादी संस्कृतिक पोषक पीअर बच्चा। मुदा लोक पीअर बच्चाक समाजक सम्बन्धक प्रशंसक कहाँ रहै। मुदा जमीन्दार ओकरा मानै छलै आ पाइ आ लठैतक शक्ति ओकरा लगमे आबि गेलै? से किए? जमीन्दारक दृष्टिकोणक अछि ई पीअर बच्चा? हमर सभक चिन्तनसँ सर्जन होइ छल आ ओकर सभक चिन्तनसँ विनाश! से किए? लोकक भितरो तँ द्वन्द्व चलै छै। सभ जाति लेल अलग काज रखलोपर द्वन्द्व किए नै खतम भेलै। कोन दवाब रहै पीअर बच्चापर, समाजक? आ से दवाब जागेश्वरपर किए नै रहै आकि कोनो चेतना रहै जागेश्वरमे जे एकटा पैघ दवाब, प्रतिरोधी दवाब उत्पन्न करै छलै? आकि पीअर बच्चाक ई मात्र जिदपनी छल? जागेश्वर समैक पक्का रहै, अखराहापर जाइ छल, समाजक लोकसँ सरोकार रहै, चिन्तने मनन नै ओइ चिन्तन-मननक निष्कर्षक अनुपालन सेहो ओ करै छल।

आ घेंघीकेँ कहै छल- कुसुमावती अहाँक मुँह चन्द्रसन, आँखि

कमलसन, भौंह कामदेवक धणुषसन, ठोर पाकल तिलकोरसन, नाक सुग्गाक लोलसन, बोली कोइलीसन। आ ओ लजा जाइ छलि।

आ कुसुमावतीक स्कूल प्रारम्भ भऽ गेलै। जइ गाममे पुरुख कम्मे-सम्म पढ़ल छल, मात्र ब्राह्मण-भुमिहार पढ़ै छल मास्टर साहेब लग ओइ गामक बचिया सभ, सेहो सभ जातिक, कुसुमावती लग आबए लागलि।

धर्मडीहावालीक बेटी लखनी, मेटरसवालीक बेटी फूदो, बेहटवालीक बेटी सुगन, धेपुरावालीक बेटी फुलो, मोहलीवालीक बेटी सोमनी, जगदरवालीक बेटी मरनी, कोठियावालीक बेटी भुल्ली, तमुरियावालीक बेटी भूरी, जेठियाहीवालीक बेटी भुरकुरी, मछधीवालीक बेटी कलकुसरि, बलाटवालीक बेटी घुट्टरि, गंजवालीक बेटी मुनेसरी, चनौरावालीक बेटी लुखिया आ नवानीवालीक बेटी कुसुमा। आ ममतोड़ तँ रहबे करए।

मेटरसवालीक बेटी नौ मासमे फुदकऽ लागल रहए से फुदो नाम पड़ि गेलै आ बेहटवाली बेटीक नाम तँ सुमन राखलक मुदा लोक सुगन कहऽ लगलै।

बाप-दादाक खून नै, माए-बापक, शिक्षकक आ समाजक प्रोत्साहन चाही बच्चाकेँ। खादीक झोरा जे ई बचिया सभ बनेलक ओइसँ गामक नाम चमकलै आ स्कूल खुजि गेल एकरा सभ लेल।

ऐ बच्चा सभक विशेषता ई रहै जे ओ सभ अपन घरमे किछु ने किछु बनबैते रहै छल, सिखिते रहै छल। आब सभ घरक बच्चा अपन-अपन विशेषता देखबऽ लगलै। एक दोसराकेँ सिखाबै आ एक दोसरासँ सीखै, कित-कित खेलक संग नवो घर दू तरहेँ घुमै छल सभ। आ कएक तरहक त्रिभुज चतुर्भुज सभ सीखै छल।

लखनी कम तेलमे आ बारी-झाड़ीक तर-तिलकोड़सँ स्वाथ्यवर्धक खेनाइ बनबै-सिखबै छलि, फूदो पानक पातक खेती आ संरक्षण, सुगन सीकी-मौनी आ आन बाँसक कलाकृति, फुलो छोटो बाड़ीमे किसिम-किसिमक तर-

तरकारी उपजेबाक, सोमनी कबीर कानेक खाँत, मरनी गहनाक डिजाइन आ ओकर शुद्धताक जाँच, भुल्ली अण्डी सँ लऽ कऽ कतेक तरहक बीआसँ तेल पेरबाक विधि, भूरी माँछकेँ खत्ता-डबरामे उपजेनाइ, भुरकुरी बिसाँढ़-भेँटक प्रयोग, कलकुसरि शमशूल तरकारीकेँ हफ्ता-पंद्रह दिन धरि शीतमे राखि जोगेबाक विधि, घुट्टरि सवा कट्ठामे जीवनोपार्जनक तरीका, मुनेसरी कोरा-वस्त्रसँ धोआ-वस्त्र बनेबाक विधि, लुखिया शरीरक घा-घोस नहरनीसँ निकालबाक विधि आ कुसुमा किसिम-किसिमक लकड़ीक समान आ खिलौना सभकेँ रंगबाक विध जानै छलि। ममतोड़केँ सेहो चमराक विविध प्रयोग बुझल छलै। मुदा कनिये दिनमे ई सभ गोटे सभ चीजमे माहिर भऽ गेल। जागेश्वर ओकरा सभकेँ हिसाब सिखबै, अन्धिविश्वाससँ लड़बा लेल तरह-तरहक खिस्सा सुनबै। फाटल पुरान कपड़ासँ जे ई सभ रंग-बिरंगक कनियाँ-पुतरा बनेने छल से अद्भुते, शान्त, लड़ाका, गृहणी, डाक्टर, इन्जीनियर, वनवासी.. सभ तरहक स्त्री, कनियाँ पुतरा।

कोनो आनुवंशिक बाधा किए नै एलै ककरोमे?

कोइली सन बोल ऐ बचिया सभक, जकरा सभ कचबचिया कहै जाइ छलै, से उठै छलै। कचबचियाक कोइली सन बोल!

जतऽ जाएत ई सभ ओइ घरकेँ इजोतमय कऽ देत।

घेंघी नै जानि कोना हएत।

मुखदेवक दार्शनिक अन्दाज रघुवरनकेँ खूब नीक लागलन्हि। तमिल गीत गुनगुनाइत रहथि ओ, बच्चा सभक गीत।

घनानन्द, हलधर, नोने, दौलति जहाँ, भट्ट भूषण आ रुद्रमतिकेँ अबेर भऽ रहल छन्हि। कतेक मोश्किलसँ रघुवरनक मुँहसँ बोल निकलल छै, सेहो गीत बनि कऽ। मुदा अबेर भऽ रहल छन्हि, कहियो फेर....

दसम कल्लोल

किए तोहर आहो लालाजी मुँह मलिन भेल/ किए मन लागैए उदास

काशीमे सप्तऋषि , वशिष्ठ आ वशिष्ठक स्त्री अरुन्धती एली।
महादेव हुनका लोकनिकेँ कथा लऽ हिमालयक ठाम पठेलन्हि।

हिमालय आ मैनाक आँखिसँ खुशीक नोर झड़ऽ लगलन्हि। कथा स्थिर भऽ गेल।

नारद देवता लोकनिकेँ हकार देलन्हि। चारिम दिन बरियाती लागल।

गन्धर्वराजकेँ देखि मैना नारदकेँ पुछलन्हि तँ ओ कहलन्हि जे ई तँ देवताक गबैया छी।

फेर धर्मराज, इन्द्र सभ एला। नारद सभक परिचए देलन्हि। मैना सोचलन्हि जे ई सभ एतेक सुन्दर अछि तँ महादेव कतेक सुन्दर हेता। महादेव मैनाक मोनक गप बुझि किछु तमाशा केलन्हि। महादेव आ हुनकर गण, भूत-पिशाचकेँ देखि मैना बेहोश भऽ गेली।

बाह रे बाह...

मैनाकेँ जखन होश एलन्हि तँ ओ नारद-गौरी सभकेँ बहुत रास बात कहलन्हि आ विवाहसँ मना कऽ देलन्हि। तखन महादेव अपन भव्यरूप देखेलन्हि, तँ मैना देखिते रहि गेली। विवाहक कार्य शुरू भेल। परिछनि, अठोंगर, गोत्राध्यायक बाद कन्यादान सम्पन्न भेल आ ताड़कासुरकेँ मारबाक बाट सोझाँ प्रतीत भेल।

परिछनि, अठोंगर सभटा मिथिलेबला...

हौ सुनै जा, खिस्सा छिऐ..

बेटी-जमाएकेँ पुष्ट भार साँठि बिदा केलन्हि, से सठबे नै करन्हि। छुलाहि

जखन धुरखुर सटि ठाढ़ भेल, तखन सभटा भार बिलाएल।

एकबेर महादेव बहिन अशावरीकेँ बजेलन्हि। हुनका बेमाय फाटल छलन्हि, ओ बेमायमे गौरीकेँ नुका लेलन्हि।

हे, से कोना हेतै..

सुनै जाउ, खिस्सा छिऐ..

गौरी कानथि तँ क्यो सुनबे नै करन्हि। महादेव पुछाड़ि केलन्हि तँ ओ पएर झाड़लन्हि। गौरी भटसँ खसली।

तहिना ननदि लेल माँछ रान्हलन्हि। सभटा माँछ ननदि खा गेलखिन्ह। गौरी अकछ भऽ ननदिकेँ बिदा केलन्हि।

गौरी गंगा जल भरऽ गेली तँ पुरबा आ पछबा दुनू भागिन जोरसँ बहऽ लागल।

हे से कोना हेतै.. पुरबा-पछबा तँ बियाहमे बान्हल जाइ छै..

सुनै जाह.. खिस्सा छिऐ ..

गौरी हाथ जोड़ि हँसी बन्न करऽ लेल कहलन्हि।

गौरी महादेवकेँ कहलन्हि जे छिनारिक माथपर सिंह आ चोरनीकेँ नाङरि दऽ दियौ।

महादेव तथास्तु कहलन्हि। गौरी माछ आनऽ गेली तँ धारक कातमे महादेव भेष बदलि माँछ बेचबा लेल ठाढ़ भऽ गेला। गौरीकेँ माँछ बेचबासँ ओ मना कऽ देलन्हि, कहलन्हि जे हँसी-ठट्ठा करब तखने हम अहाँकेँ माँछ देब। गौरीकेँ महादेव लेल माँछ लेब जरूरी छलन्हि से ओ हँसी कऽ कऽ माछ आनि, रान्हि महादेवकेँ खुआबए बैसली तँ माथपर सिंघ उगि गेलन्हि। दोसर दिन महादेव गौरीकेँ जल्दीसँ खेनाइ बनाबऽ लेल कहलन्हि, तखने गौरीकेँ दीर्घशंका लागि गेलन्हि। ओ दीर्घशंका कऽ ओकरा पथियासँ झाँपि

देलखिन्ह, जखन महादेव उम्हर एला आ पुछलखिन्ह तँ ओ लजा गेली आ गप चोरा लेलन्हि आ हुनका नाङरि भऽ गेलन्हि। गौरी छिनारि आ चोरनीक चेन्ह मेटेबाक अनुरोध केलन्हि। तहियासँ ई चेन्ह मेटा गेल।

सभटा चेन्ह मेटा गेल।
नीक अधलामे भेद करब कठिनाह भऽ गेल।

किए तोहर आहो लाला मुँह मलिन भेल,
किए मन लागैए उदास।

लालबन बाबा, चर्म्मकारक लोकदेवता, मिथिलाक चर्मकारक लोकदेवता।

बाघिनसँ हथियारसँ नै हाथसँ युद्ध केलन्हि, स्त्रीजातिपर हथियार कोना उठबितथि।

किए तोहर आहो लाला मुँह मलिन भेल,
किए मन लागैए उदास।
पान बिना आगे मैया, मुँह मलिन भेल
गाँजा बिना लागैए उदास।
गाँजा चढ़ौलऽ लाला पान मुँह धेलऽ
चलि गेलऽ बिजुवन शिकार।
हरिणो नै मारैए लालाजी तितिरो नै मारैए,
बिछि-बिछि मारैए मजूर।
हकन कानैए लालाजी वन कऽ मजूरनी,
वारी बएस हरल सेनूर।

कोसी सेहो मजूर मारैए आ लालबन बाबा सेहो। मुदा मिथिलामे मजूर तँ होइते नै छै।

होइत हेतै पहिने, सभ मारि कऽ खतम कऽ देने हेतै।

बाघो तँ नहिये ने छै तँ लालबन बाबा बाघिनसँ लड़लै किने महीस बचाबऽ लेल।

हथियार कोना उठबितै स्त्री बाघिनपर लालबन बाबा। से ओहिना लड़लै आ मारल गेलै। दुश्मनपर एतेक सोच विचार? एतेक ममता? मुदा मजूरपर कोनो ममता नै? बलगरी देखबैमे गेला हमर लालाजी!

रघुवरन.. गन्धर्वराज.. देवताक गबैया.. आइ किछु गाएत..

-नै ई गीत अझुका लेल नै अछि आ अहाँ सभ बुझबो नै करब, तमिलमे छै..

-तँ टीका आ भाष्य तँ करब ने अहाँ...

-ठीक छै.. सुब्रह्मण्यम भारतीक बच्चाबला गीत अछि ई...

ओडि विळैयाडु पाप्पा-नी
ओयन्दिरुक्कल आगादु पाप्पा
कूडि विळैयाडु पाप्पा- ओरु
कुळन्दैयै वैयांदे पाप्पा।

बौआ बुच्ची, खूब दौगू आ खेलाउ। करवनो अलसा कऽ समै खराप नै करू। सभ मिलि-जुलि कऽ खेलू-धूपू आ अपन संगी संग झगड़ा नै करू।

चिन्नंज चिरु कुरुवि पोले-नी
तिरिन्दु परन्दु वा पाप्पा
वन्नपरवैगळै कण्डु-नी
मनदिल मगिळ्चि कोळ्ळु पाप्पा।

छोटका पौड़की सन उड़ू आ हवामे उड़ियाउ आ अपन चारू दिस रंग-बिरंगक चिड़ै देखि कऽ आह्लादित होउ।

कालै एळुन्द वुडन पडिप्पु- पिन्बु
कनिवु कोडुक्कुम नल्ल पाट्टु
मालै मुळुदुम विळैयाट्टु- एन्रु
वळक्कप्पडुत्तिकोळ्ळु पाप्पा।

भोरे सकाले उठि अपन सबक यादि करू आ तकर बाद फ्रफुल्लित करैबला गीत गाउ। साँझमे खूब खेलाउ। ऐ सभ नीक वौस्तकेँ अपन आदति बनाउ।

पादगम सैभवरैक कण्डाल- नाम
भयं कौल्ल लागादु पाप्पा
मोदि मिदित्तु विडु पाप्पा- अवर
मुगत्तिलुमिळ्न्दु विडु पाप्पा।

खराप काज करैबलाकेँ देखि कऽ करवनो नै डराउ। ओकरा पिचड़ा कऽ दिअ आ ओकरा जड़िसँ उखारि दिअ, ओकर मुँहपर थुकरू, बौआ बुच्ची।

ई रघुवरन तँ जागेश्वरे बुझाइए।

खराप काज करैबलाकेँ देखि कऽ करवनो नै डराउ। ओकरा पिचड़ा कऽ दिअ आ ओकरा जड़िसँ उखारि दिअ, ओकर मुँहपर थुकरू, बौआ बुच्ची।

खराप काज करैबला, समाजकेँ तोड़ैबलासँ एहने आकि अहूसँ बेशी घृणा करै छल जागेश्वर।

मुदा खराप काज करैबला सभ केना कऽ आगाँ बढ़ि गेलै। अंग्रेजक शासन रहै तेँ ने.. मुदा आब तँ फिरंगी सभ गेलै... आ ई देशी फिरंगी सभ!

एगारहम कल्लोल

उक्खड़ि सन सन बीट, समाठ सन सन शीस, सेर बरोबड़ि, सेर बरोबड़ि

महादेव आ गौरीक संभोगसँ जे बच्चा हएत ओ पृथ्वीक नाश कऽ देत, देवता लोकनि हल्ला मचा देलन्हि आ महादेवक अंश पृथ्वीपर खसि पड़ल। गौरी देवताकेँ सरापलन्हि जे आइ दिनसँ हुनका लोकनिकेँ सम्भोगसँ सन्तान नै हेतन्हि।

पृथ्वी अंशकेँ आगिमे आ आगि सरपतवनमे भार सहन नै हेबाक कारण दऽ देलन्हि।

ओतऽ छऽ मुँहबला बच्चा भेल, ओकरा कृत्तिक सभ पोसलन्हि तेँ नाम कार्तिकेय पड़ि गेलै।

कैलाशमे गौरी-महादेव रमण करऽ लगला। विष्णु तपस्वीक भेष बना एला आ भूखसँ प्राण रक्षाक गप केलन्हि। ओछाओनपर अंश खसि पड़ल आ गणेशक जन्म भऽ गेल। शनिकेँ गौरी देखऽ लेल कहलन्हि, मुदा हुनका देखलासँ गणेशक गरदनि कटि कऽ खसि पड़ल। विष्णु एकटा हाथीक गरदनि काटि लगा देलन्हि आ अमृत छीटि जिआ देलन्हि। गणेशक विवाह दक्षप्रजापतिक बेटी पुष्टिसँ भेलन्हि, गणेशक जन्मक बाद महादेव कार्तिकेयकेँ बजा लेलन्हि, देवता लोकनि हुनकर अभिषेक कऽ अपन सेनाध्यक्ष बना लेलन्हि। ओ ताड़कासुरकेँ मारि इन्द्रकेँ राज्य घुरा देलन्हि ।

आह..

चलू, शिव भेला संहारक तेँ गौरी आ महादेवक संतति विश्वक करत नाश; आ स्रापित भेला देवगण, से मामिले खतम। आब जे करत से मनुक्खे करत।

सएह तँ कहै छल जागेश्वर, जे करत से मनुक्खे करत, जे जकरा चाही ओ से करए, दोसराक भरोसे नै रहए।

एतऽ किछु आर होइ छै। आसिन पूर्णिमा कोजगरा राति, भरि राति पचीसी आ चौपड़ि खेलाउ, राति जगरनासँ लक्ष्मी प्रसन्न हेती।

दियाबाती, कार्तिक अमावस्या राति।

भोरे स्त्रीगण सूप बजा कऽ–- अनधन लक्ष्मी घर आउ, दुख दालिद्र दूर जाउ- कहि दरिद्राकेँ बैलबै छथि।

सुखराती छबे छठि।

परखेब पाबनि, जकरा सुकरतिया सेहो कहल जाइ छै, खास कऽ मिथिलामे बड़दक पाबैन होइए। कतौ कतौ अखराहापर कुश्ती प्रतियोगिता होइए। ई दिवालीक दोसर दिन होइ छै, ऐ दिन बड़दक खूब सेवा किसान करैत अछि। मैथिल समाजमे जे बड़द, महीस, गाए रखैए से मालकेँ पोखरि लऽ जाइए आ नीक जकाँ घसि-घसि कऽ नहाबैए। तकर बाद ओकर सिंघमे तेल लगाबैए, पचाबैए। तकरा बाद ओकरा नव गर्दाम, ठेका-लटकन-घण्टी पहिराओल जाइए। नबका बड़का गड़दाम बड़दकेँ देल जाइत अछि। तेल मरीच बड़दक नाकमे देल जाइए। किछु एहेन जड़ी-बूटी होइए जकरा ऊखड़ि समाठसँ कूटि कऽ पानिमे घोरि कऽ सोन्हल बना कऽ बड़द आ महीसकेँ काँड़मे दऽ पिया कऽ फेर ओकरा मुँहमे पान पीस कऽ लोक लगाबैए, किए तँ मिथिलामे पान खुएनाइ शुभ मानल जाइए। देहपर लाल-लाल थप्पा देल जाइए। खेतसँ धान काटि बालक दोसरसँ पुछै छै, ऐँ यौ फलना भाइ हमर बड़द खाइ छै आकि नै, तखन ओ जबाब दै छै, खूब खाइए। तखन गाइ आ महीसक स्त्रीगण पूजा करैए। फेर महीस सभकेँ मैदानमे लऽ जाइए, एकटा आदमी सुगरक बच्चा ठेंगामे लपेट कऽ कहै अछि, हूड़ा-हूड़ी। जबर्दस्त खेला होइए।

आ किसान अपन-अपन खेतपर जा कऽ कहै अछि, फलना खेतमे

अरबड़ हमरा खेतमे छुच्छे चाउर सेर बराबरि। सेर बराबरि।

दिनमे हर नै जोतू, जोतब तँ पितर पन्द्रह बर्ख भुखले रहता। गाछ नै काटू।

कातिकमे गबहा संक्रान्तिक अरिपन पारब आ मेटाएब। कुमारि दस टा थुम्हा पाड़ै छथि, सिनूर-पिठार लगा कऽ कुम्हरक फूल साटै छथि। आब ई गोइठा नवान्न दिन आगि पजारबामे प्रयोग हएत। पुरुख पात खेतपर कोनियाँमे हाँसू दूभि सभ लऽ कऽ जाइ छथि आ आरिपर बजै छथि-
उक्खड़ि सन सन बीट, समाठ सन सन शीस, सेर बरोबड़ि, सेर बरोबड़ि।
उक्खड़ि सन सन बीट, समाठ सन सन शीस, सेर बरोबड़ि, सेर बरोबड़ि।
उक्खड़ि सन सन बीट, समाठ सन सन शीस, सेर बरोबड़ि, सेर बरोबड़ि।

कातिकमे इजोरिया एकादशीमे सहस्रशीर्षा पढ़ि देवताकेँ उठाएब।

-देवता सूतल छथि?

-आब लगैए सुनाएत सहस्रशीर्षा।

-हौ सुनै ने जाह।

सभसँ सनगर अरिपन कहियौ वा जे से देवौठान एकादशीयेक चित्र सभ होइ छै, घरक, भनसाक, खेतीक सभ समान पाड़ल जाइ छै।

गरीब गुरबा लेल हरिवासर। एकादशी द्वादशी दुनू दिन व्रत कऽ त्रयोदशी दिन पारण। जँ एकादशी आ द्वादशी एक्के दिन माने बुध दिन भेल तँ आश्चर्ये आ तेँ कहल जाइए देव दुन्दुभी। अखाढ़, भादव आ कातिक इजोरियाक बुध दिन जँ क्रमसँ अनुराधा, श्रवणा वा रेवती नक्षत्र हुअए तँ भेल हरिवासर। कतेक जना हरिवासर ठानल भात बहुत कै सपना.. गरीब-गुरबा तँ जहिये घरमे अन्न नै रहै छै तहिये हरिवासर ठानि लैए।

कातिक पूर्णिमा दिन सामाकेँ फोड़ि जोतल खेतमे मिला देल जाइए, भऽ

गेल भसान। सामा सप्तमीकेँ नैहर एली आ पूर्णिमाकेँ चलि गेली। छठिक खरना दिनसँ आ कतेक गोटे परना दिनसँ सामा बनबै छथि, भदवा पड़ि गेलापर पूर्णिमे दिन बनबै छथि आ भसबै छथि। सामा नैहरमे रहै छथि तेँ भदवामे नै। भार-भरिया, झाँझी कुकुर, सतभैयाँ, बाटो-बहीन, सामा-चकेवा, हाँस (उन्टा मुँह), वृन्दावन, चुगला।

सामचक सामचक ऐहऽ हे, ऐहऽ हे
जोतला खेतमे बैठिहऽ हे, बैठिहऽ हे
ढेपा फोड़ि फोड़ि खैहऽ हे, खैहऽ हे
ऐ पटियापर कए कए जनी, कए कए जनी
छोटे बड़े नब्बे जनी, नब्बे जनी
हमरा भैया कऽ सोना झड़ी, सोना झड़ी

अगहन शुक्लपक्षमे नवान्न होइए मुदा शनि वा मंगलकेँ ई नै भऽ सकैए। गबहा संक्रान्तिक गोबरक थुम्हासँ आगि पजारल जाइए, धानक शीस काटि कऽ चूड़ा कूटल जाइए, नवका चूड़ा, दही आ गूड़क स्वादे किछु आर अछि।

सभ काज दिन तका कऽ सभ किए करत। से डाक वचन काज अबैए।

रविकेँ पान सोमकेँ दर्पण
मंगल किछु-किछु धनियाँ चर्वण
बुधकेँ गुड़ बृहस्पति राइ
शुक्र कहए जे दही सोहाइ
शनि कहए मोरा अदरख भाउ
सकल काज कऽ घरकेँ आउ।

चर्मकारक उत्पत्तिक सम्बन्धमे कथा अछि जे चारि भाइ ब्राह्मण छला, कोनो माल मरि गेल से ओकरा हटबै लेल सभसँ छोटकेँ कहल गेलै। ओ

जनौ बेलक गाछपर राखि माल हटेलक, घुरैए तँ देखैए जे जनौ बिला गेलै, अमरलत्ती बनि गेलै। अमरलत्तीक जड़ि तेँ नँ नै होइ छै। सभ ओइ भाइकेँ बारि देलकै आ ओ चमार जातिक भऽ गेल। आब तँ ऐमे मारते रास पंघत भऽ गेलैए।

डोमोक उत्पत्ति एनाहिये छै। चारि भाँइ जे पोखरि नहाए गेल तँ घाटपर मरल गाएकेँ हटेबाक जिम्मा छोट भाएकेँ भेटलै।

आ गाए तँ आदरक बौस्तु ने यौ ..

तखन ओ घुरल तँ सहोदर सभकेँ ओकरा बाड़बाक तँ नै ने चाही छलै।

मुदा बाड़ि देल गेल आ ओ डोम भऽ गेल!!

जे करत से मनुक्खे करत।

गढ़ नारिकेल एकटा गणतंत्र बनि गेल छलै।

बेहटवालीक बेटी सुगन।

समिया बियाह ठीक भेल रहै।

मटकोर..

पनिकट्टी.. जागेश्वर सभमे ई विध उपनयनमे होइ छै। हाँसूसँ पानि चारि खण्ड काटि भगवती घरमे हाँसू राखल जाइ छै। पाँचटा खरही, खीर-पूरी खिखिरक बीअरिमे वरुआसँ उसरगबा कऽ हूड़ि दै छै।

उपनयनक चारिम दिन, रातिम दिन। साँझमे।

लगनबट्टी..

धनबट्टी..

परिछन...

डालाहारा...

बेहटवाली परेशान छै।

बौधा मलिक आ बेहटवालीक बेटी सुगन।

दुनियाँ एम्हरो छै, मुदा शेष गामक शेष टोल लेल मात्र खगता पड़लापर, डाला-बीअनि लेल ऐ टोलक आवश्यकताक अनुभव होइ छै। ऐ टोलमे सेहो बियाह दान होइ छै, जन्म मृत्यु होइ छै।

तखन जहिना ऐ टोलक सोह शेष गामकेँ नै होइ छै तहिना अहू टोलक लोककेँ शेष गामक सोह नै छै।

समानान्तर दुनियाँमे मुदा बिध-बाधक ताग एक दोसराकेँ सालमे कएक बेर बान्हियेटा दै छै। गीतनाद, आ संस्कृति मुदा एक्के; जन्म मृत्यु आ बियाह दानक बिध-बाध एक्के रंग; कोनो रहस्य छै!

मुदा जागेश्वर तँ ऐ तागक कतेक भत्ता बान्हि देलकै जे दुनू समानान्तर दुनियाँक बीच असंख्य रस्ता खुजि गेलै, जइपर लोकक, संस्कृतिक, गीतनादक आनजान होइते रहै छलै। दुनू मुख्य समानान्तर सड़कसँ बेशी आबाजाही ऐ असंख्य रस्तापर होमए लगलै।

मुदा पुछलापर शेष गामक शेष टोलक बुढ़ो बुढ़ानुस कहता जे एकर सभक संख्या नै ने बढ़ै छै, बियाहक बाद सासुर जा कऽ घरजमाए बनि सासुरेमे बसि जाइ जाइए। मुदा तहिना जमाए सेहो तँ आबि कऽ गढ़ नारिकेलमे बसि जाइत हेतै।

मुदा घर ठीके नै बढ़ै छै।

कखनो प्लेग, रद्द-दस्त तँ कखनो मियादी बोखार लोकक जान लऽ लै छै।

ऐ टोलक खिस्सा...

श्याम सिंह....।

बौधा मलिकक बेटीक बियाह, बरियाती समियासँ आएल रहै।

यावत बिध-बाध हेतै तावत समियाक सोमन बैसल थोड़े रहतै..

सोपच डोम श्याम सिंह, सिंघियाक...

सरो खेलाथि आ पहलमानी करथि, बलगर रहथि तेँ दाबी सेहो रहन्हि। चौरासी मोनक लाठी संगे रहै छलन्हि।

मुदा अखराहाक पहलमान सभमे एक दोसरासँ भिड़बाक खूबे सख होइ छै।

वंशीधर ब्राह्मण, देवधाक, जब्बर-जब्बर सुग्गर संगे सभ दिन कुश्ती लड़ै छला।

वंशीधर ब्राह्मणसँ कोनो गप लऽ कऽ माटि फेका फेकावलि भऽ गेलनि।

बिदा भेला श्याम सिंह। आगाँ बढ़लापर ठेहिएला।

सवा सेर गाजा चिलममे धऽ कंसारसँ आगि मांगैले गेला।

कनूनियाँ मना कऽ देलकन्हि। छोट जाति छी तेँ?

अस्सी मोनक गुदरासँ सवा सेर गाँजा लटौलाक बाद बिनु आगिक गाजा नै पीब?

मुदा गाजाक अम्मल जकरा जागल छै से कोना रुकतै? कनूनियाँकेँ कंसारमे भकसी झोका देलन्हि आ आगि निकालि लेलन्हि।

रस्तामे संगी हरिराम आ संगी चुन्नीराम ऐठाम ठहरला। मुदा ओतौ अपमान भेटलनि, सभकेँ ओ जन्मल सुगरक मौस पाहुर परसलक मुदा हुनका दू साल बूढ़ सुगरक मौस डहरा परसलक। मुदा परताप रहै श्याम

सिंहक। डहराक मौस निमनगर चर्बीसँ भरि गेलै आ पाहुरमे पानि छुटि गेलै। अजब योद्धा, अजब परताप।

हरिरामक बहिन मनियाँसँ दूटा सुग्गर छीनि, काँखतर दाबि कऽ मारि, मनियाँक माथपर पटकि ओ आगाँ बिदा भऽ गेला।

आगाँ ढुनमुन गुआर आ अहीमन तेलीक दूटा पाराकेँ मारि, धारक ओइपार गाछीमे पचास हाथक समेना गाड़लन्हि। मुदा ऐमे रहबामे सिकस्त भेलन्हि, पएर मोरऽ पड़ै छलन्हि।

-देखा चाही बौधा मलिक की परसैए, पाहुर आकि डहरा।

पाथरक अखराहापर वंशीधर आ श्याम सिंहक युद्ध भेलै। मुदा दुर्गा वंशीधरक संग रहथिन्ह से ओ जीति गेल।

मुदा श्याम सिंहक बेटा बालाराम गहिलक भक्त। बापक हारि ओकरा बर्दास्त नै भेलै। आ ओ दुर्गाजीक सेहो स्मरण केलक आ वंशीधरकेँ ललकारा देलक। गहील दुर्गासँ बालारामक जीत लेल सत करा लै छथि। बालाराम वंशीधरक दुनू सुग्गरकेँ काँख तर दबा लेलक, आ मोहिनी काँटी फेकि वंशीधरक दुनू जब्बर सुग्गरकेँ ओ मारि दैए। फेर वंशीधरसँ युद्ध शुरू भेल, दुनू गोटे नौ-नौ मोन माँटि देहमे लगेलन्हि। दुनूक हाथमे हाथ, जाँघमे जाँघ आ छातीमे छाती टकरेलै, कियो टससँ मस नै होइ छलै। फेर ओही काँटीसँ वंशीधरक पेट फारि दैए।

अंगनामे बिध बाध शुरू छै। सुगनक बियाहक बिध-बाध।

सभैती भोज हेतै, दुअरापर सोमनक गाथा चालू छै।

सोपच डोम मलिक आ मगहिया डोम एक्के नै बुझि लेब। मगहिया डोम तँ बंजारा-गिदरमारा सभकेँ कहल जाइए। ई समिया आ गढ़ नारिकेलक तिरहुतिया डोम सभ छथि।

मुखदेव बाजि उठैए- हे सोमन जी, बड धरफड़ीमे खिस्सा खतम कऽ

देलिऐ। वर-कनियाँकेँ लाठीसँ नापि कऽ बियाह स्थिर भेल अछि, तखन यएह होइ।

सोमन- तुषरपात किछु दैये नै रहल छिऐ, आ छुच्छे..

मुखदेव- ई की बाजि देलौं... अहाँक कलाकारीमे विघ्न नै पड़ए तेँ रुकल छलौं.. दहो-बहो कऽ देब।

भूजल करेजीक *सतघरा* आनल जाइए।

-गजार कदबा कऽ देब खाउ ने कतेक खाइ छी। -कियो बाजि उठैए।

आब हएत छत्तीसो देवी आ चौदहो देबानक कथा।

सरदार आ माइंजनक चेहरापर मुस्की आबि जाइए।

सोमन अङैठी-मोड़ करैए।

-औ जी, छत्तीसो देवी आ चौदहो देबान देहपर नै आनि लेब। रोग ब्याधि हरबा लेल कारनीकक अखन काज नै छै।

-*सतघरा* खेलाक बाद किछु तँ हेबे करतै। सोमन करमान छिऐ, माइंजनक दहिना हाथ। की बुझै छिऐ सस्ता?– फेर कियो टोन देलकै।

सोपचटोली। बिनु लबनीक पंचैती नै होइ छै। पंच सभ आ सभ लोकक सोझाँ बासन राखल रहै छै। बिनु नशाक पंचैती नै। जे पंचैती कराबऽ चाहै छथि से ने सोचथु। ततेक खर्चा हेतन्हि जे। बगलेमे एकटा पानक दोकान खुजल छै। पंचैती दिन खुजल रहै आ आइ बियाहक दिन सेहो बिक्री लेल खुजलै।

चारि गोटे सोपचटोलीसँ जाइए आ कहैए, हे पचीसटा पान लगाबऽ। आ दूरेसँ ठाढ़ भऽ कऽ पान लगाएल जेबाक बाट जोहैए। पानबला पान लगेलाक बाद सोर करैए। एक गोटे दोकानपर जाइए, दोकानबला दूरेसँ बिनु छुएने पान ओकरा गमछामे धऽ दैए।

आ सभ घुरि आबै छथि।

आसपासक गाममे धोबि, मलिक, चर्मकार आ दूधवंशी ऐ चारि जातिमे अपन-अपन पुरहित होइ छलै। आन सभ जातिमे ब्राह्मण पुरहित होइ छल। मुसलमानमे मौलवी-काजी। अखनो आसपासक गाममे धोबि, मलिक, चर्मकार आ दूधवंशीक अपन-अपन पुरहित होइते छै मुदा आन सभ जातिक पुरहित ब्राह्मणे टा होइ छै। मुदा गढ़ नारिकेलमे आब ब्राह्मण छोड़ि सभ जातिमे गएर-ब्राह्मण पुरहित भऽ गेल छै। आ ओ पुरहित सभ सेहो सभ जातिमे बियाह, दान आ श्राद्ध करबै छथि, छट्ठी-छिल्ला स्त्रीगण सभ अपने कऽ लै छथि।

गुरुक बड्ड मान्यता छै, अपन श्रेष्ठसँ मंत्र लिअ आ जपू। गुरुक आदर सम्मान खूब छै।

मुदा पुरहित श्राद्धमे खूब खर्चा करबै छै।

तेराति, सतलहान, दुधमुँह, नह-केश, सभैती भोज।

आ इम्हर मानरिपर थाप पड़ि रहल छै।

धारु मलिकक सरदार आ हारु मलिकक माइंजन बनलापर सभ आगाँ मुँहे ताकऽ लागल अछि। सोमन मलिक अछि हारु मलिकक करमान। पुरुखक गरदनिमे उक्खड़ि धऽ दौगेबाक आ स्त्रीक झोँट कटबाक विरोध केलन्हि हारु मलिक आ लोक कहैए जे से ओ धारु मलिकक कहलापर केलन्हि।

मुदा पर-पंचैतीमे दारू-गाँजा चलिये रहल अछि, से नै रोकल भेलन्हि हिनका सभकेँ।

तारी-दारू, खैनी-पीनी खूब चलै छै।

बड कसि कऽ समधी मिलान केने अछि बौधा मलिक।

सोमन मानरिक थापपर शुरू अछि...

डोम जातिक लोकदेवता छेछन महराज...

बड्ड बलगर.....

हुनकर संगी साथी सभ बाँसक टोकरी, चङेरा, दौरा, बेना, डाला-डाली, साजी कोनियाँ, चंगेरा, मेघडम्बर, साजी, लिली-डाली, पेटार, छत्ता आ पटिया बेचबा लेल सहिदापुर आ आसपास जाइ छल...

ओतुक्का डोम सरदार मानिक चन्दक वीरता देखलक।

मानिक चन्द एकटा अखराहा बनेने रहथि आ ओतऽ एकटा पैघ सन डंका राखल रहए।

जे डंकापर चोट करै छल ओकरा मानिकचन्दक पोसुआ सुग्गर, चटियासँ लड़ऽ पड़ै छलै।

मानिकचन्द प्रण केने रहथि... जे क्यो चटियासँ जीतत से हमरासँ लड़त आ जे हमरा हराएत से बहिन पनमासँ विवाह करत।

चटिया सभकेँ हरा दै छलै।

पाँच पसेरीक कत्ता लऽ छेछन महराज सहिदापुर दिस विदा भेला। डंकापर चोट करबासँ पहिने छेछन महराज एकटा बुढ़ीसँ आगि मांगलन्हि आ अपन चिलममे आगि आ मेदनीफूल भरि सभटा पीबि गेला आ झुमैत डंकापर चोट देलन्हि।

मानिकचन्द छेछनकेँ देखलन्हि आ चटियाकेँ शोर केलन्हि।

चटिया दौगि कऽ आएल मुदा छेछनकेँ देखि पड़ा गेल।

तखन पनमा आ मानिकचन्द चटियाकेँ ललकारा देलक तँ दौगि कऽओ छेछनपर झपटल।

छेछन ओकरा दुनू पएर पकड़ि चीरि देलखिन्ह।

फेर मनिकचन्द आ छेछनमे दंगल...

छेछन मानिकचन्दकेँ बजारि देलन्हि। तखन खुशी-खुशी मानिकचन्द पनमाक बियाह छेछनक संग करेलन्हि।

दिन बितैत गेल...

हँसी खुशीसँ दिन बितैत गेल...

छेछन दोसराक बसबिट्टीसँ बाँस काटऽ लगला।

यादव लोकनिक लोकदेवता कृष्णारामक बसबिट्टीसँ छेछन बहुत रास बाँस काटि लेलन्हि।

कृष्णाराम अपन सुबरन हाथीपर चढ़ि एला ...

आमक कलममे छेछनकेँ पनमा संग सुतल देखलन्हि कृष्णाराम ...

सुबरन पाँच पसेरीक कत्ताकेँ सूढ़सँ उठेलक आ छेछनक गरदनिपर राखि देलक ...

सुबरन अपन भरिगर पएर कत्तापर राखि देलक ..

छपाक ...

सभक आँखिसँ नोर चुअ लगलै।

मटिकोर, पनकट्टी, लगनबट्टी, परिछन, बियाह, सभ भऽ गेलै।

भोज भात सेहो।

अगिला दिन सभैती भोज छै।

अगिला दिन बेटी विदा भऽ गेलै।

उक्खड़िमे पानि राखि पएर डुबा भोज प्रारम्भ। जरूरी नै रहै मुदा मुखदेव कहलकै जे करू, सभैती भोज करू।

खूब जमलै भोज सुगरक हरही-सुरही भतसमैया नै रसगर कोहरा-कोहरी आ हड्डीबला सहरीक हरपुसरिया माँसु रान्हल गेलै।

आसपासक गाम बाँटल छै, कतेको गामक गाम आपसेमे ई सभ बिक्री कऽ दै छथि, कीनि लै छथि। बिकनिहारकेँ बुझलो नै रहै छन्हि।

मृत्युक बाद डोमक आगि, ई बिनु पेने उद्धार कतऽ...

-आ सभक उद्धार? जिबैत उद्धार मुखदेव, जिबैत के करैए ककर उद्धार? मरलाक बाद के देखऽ अबैए मुखदेव?

मुखदेवक अबाज जहलक कोठरीमे घुमऽ लगलै। आइ तँ घनानन्द, हलधर, नोने, दौलति जहाँ, भट्ट भूषण आ रुद्रमतिकेँ सेहो सुना पड़लै। खाली रघुवरनकेँ ई अबाज नै सुना पड़लै।...

चलू आजुक खिस्सा खतम...

बारहम कल्लोल

लोभेलै छौड़ा बभना रे दैव ना रे/
रौ पूछऽ जब लगलै बभनमा रौ/
जतिया रौ ठेकनमा रौ दैव ना रे

गौरीसँ छोट आ हिमालयक पाँचम बेटी संध्यासँ विवाहक लेल महादेव चोरा कऽ चलि गेला। गौरीकेँ दहो-बहो नोर चुबऽ लगलन्हि। घामे-पसीने भऽ गेली। देहसँ मैल छुटऽ लगलन्हि तकरा ओ जमा केलन्हि आ एकटा साँप बना बाटपर छोड़ि देलन्हि।

महादेव जखन संध्याक संग विवाह कऽ एला तखन ओइ साँपमे प्राण दऽ देलन्हि। गौरीकेँ कहलन्हि जे ई साँप, लीली, अहाँक बेटी छी आ एकरासँ खेलेबाक लेल संध्याकेँ अनने छी।

गौरी भभा कऽ हँसि देलन्हि।

नाहर राजा आ ताँती रानीक सए बेटामे सभसँ पैघ बेटा बैरसी महादेव लग नोकरी करऽ गेला। महादेव हुनका कहलखिन्ह जे लीलीकेँ धर्मकुण्डमे स्नान करा दियौन्ह आ सोहागकुण्डमे औँठा डुबा दियौन्ह। मुदा ओ उनटा कऽ देलन्हि। सोहागकुण्डमे डुबलाक कारण सोहाग बड़ पैघ भऽ गेली। मुदा धर्मकुण्डमे मात्र औँठा डुबलन्हि से ओकर लेशमात्र रहलन्हि। से ओ बेरसीसँ विवाह करबाक गप कहलन्हि आ हुनकेसँ हुनकर विवाह भेल।

बाह..

मुखदेव रामक टोल। चर्मकार लोकनिक टोल।

अहू टोलक लोकक आ शेष गामक शेष टोलक लोकक बीच बड्ड कम सरोकार छलै।

मुदा तखन गीतनाद आ संस्कृति,जन्म-मृत्यु आ बियाह दानक बिध-बाध

एक्के रंग कोना छै? शेष गामक शेष टोलक लोक हिनकर सभक अनुकरण केलक आकि ई लोकनि शेष टोलक लोकक अनुकरण केलन्हि; आकि दुनूक जड़ि एक्के छै; आकि बहरबैया सभ आएल आ हिनका सभकेँ बसबिट्टीक ओइ पार ठेलि देलक; आकि बहरबैय्या सभ अपन किछु लोककेँ भतबरी कऽ ऐ टोल पठा देलन्हि आकि...

नौहट्टामे दू टा संगी रहथि मनसाराम आ लालमैन बाबा। दुनू गोटे संगे-संगे महीस चरबथि। ओइ समयमे नौहट्टामे बड्ड पैघ जंगल रहए, ओतै एक दिन लालमैनक महीसकेँ बघिनिया घेरि लेलकन्हि। लालमैन महीसकेँ बचबऽमे बाघिनसँ लड़ऽ तँ लगला मुदा स्त्रीजातिक बाघिनपर अपन सम्पूर्ण शक्तिक प्रयोग नै केलन्हि आ मारल गेला। मनसारामकेँ ओ मरैत-मरैत कहलन्हि जे मुइलाक बाद हुनकर दाह संस्कार नीकसँ कएल जाइन्हि। मुदा मनसाराम गामपर ककरो ई गप नै कहलन्हि। ऐसँ लालमैन बाबाकेँ बड्ड तामस चढ़लन्हि आ ओ मनसारामकेँ बका कऽ मारि देलन्हि। फेर सभ गोटे मिलि कऽ लालमैन बबाक दाह संस्कार केलन्हि आ हुनकर भगता मानल गेल, अखनो ओ भगताक देहमे पैसि मनता पूरा करै छथि।

लालमैन चर्मकार आ मनसाराम ब्राह्मण।

दुनूकेँ पूजै छथि लोक, खस्सी, तारी, गाँजा, पान चढ़बै छथि, लालमैन गाँजा लै छथि मुदा मनसाराम गाँजा नै लै छथि।

रकतमाला, लुकेसरी, जलपा, गोरैया, ई सभ चर्मकारक गृहदेवता छथि।

जलपा, लुकेसरी ई बौद्ध धर्मक अवशेष नै बुझाइए? -कहै छल मुखदेव।

पता नै। बौद्ध धर्म गेलापर चर्मकारक जनौ अमरलत्ती बनि गेल हेतै!

गै लुखेसरीक सूरति देखि
लोभेलै छौड़ा बभना रे दैव ना रे

हे लऽ गेलौ रे बभना देश कऽ ओर
आब सिया ना रे
लऽ रौ गेलौ बभना देश कऽ ओर
रौ लुखेसरीक सूरति देखि
लोभेलै छौड़ा बभना रे दैव ना रे
रौ पूछऽ जब लगलै बभनमा रौ
जतिया रौ ठेकनमा रौ दैव ना रे
रौ जाति की छिऐ ना रे
जाति केर हीनमा रौ
माइ-बाप हमरा धेलकै
लूखा रे नाम रे
रौ जाति की छिऐ बभनमा रौ
जाति कऽ हीनमा रे
देव रौ छौड़ीयोमे छौड़ीयो बभनमा रौ
हमरौ रौ अँचरबा रौ
हमर रोवैत हेतै गोदीक बलकवा
बभना ना रे
गै काँचे छौ उमेरिया गै लूखा देवी
गै काँचे छौ बएसवा गै केओ जे देलकौ
लूखा गोदीक बलकवा गै तोरा
केओ जे देलकौ ना रे
आ रौ गेलिऐ जनकपुर बभना रौ
पूजलौं श्री जानकी बभनमा रौ
सेहो देलकौ ना गोदीक बलकवा बभना रौ
देलकौ ना रे

सभ गाममे चर्मकारेक पत्नी गढ़ुआरि महिलाक मार्गदर्शन करैए, चमैन

आ दगरिन लोक कहैए। आब तँ हस्पताल सभ खुजल छै, ओतऽ केरलक नर्स रहैए, ओकरो लोक चमैन कहैए!

आउ आउ दगरिन गोर लागै छी
दरद पीड़ा छुटि गेल टांगमे लै छी

मुदा चामक व्यवसाय तँ कला भेल।

हाथसँ काजकेँ अपना समाजमे प्रतिष्ठा किए नै देल जाइए।

रघुवरन खिस्सा सुनबै छथि। टॉमस बाटाक परिवार कएक खाढ़ीसँ चर्मकार छल। पहिल विश्वयुद्धमे सैनिक सभक जुत्ताक ततेक मांग भेलै जे आइ ओ पैघ व्यवसायी बनि गेला। बंगालमे बाटानगरमे मारते रास चर्मकार लोकनिकेँ नोकरी भेटल छै। बाटामे चेक देशवासी चर्मकार सेहो छै, मुदा ओतऽ ओकरा खराप आ छोट कहाँ मानल जाइ छै यौ? एतुक्के लोकक कला, आ चामक प्रयोग तँ करैए बाटा। चाम खलि कऽ पकेनाइ सिखेबा लेल चेक विशेषज्ञ आएल रहथि मुदा ओ सभ सिखेथिन्ह की, सीखि कऽ गेला।

नव्य न्यायक जनक करियनक उदयन आ फेर ब्राह्मण तत्त्वचिन्तामणिकारक गंगेश। गंगेशकक विवाह चर्मकारिणीसँ भेलन्हि। दार्शनिक वर्धमान गंगेश आ हुनकर चर्मकारिणी पत्नीक पुत्र।

उदयन बौद्धकेँ मिथिलासँ भगेलन्हि, वाद-विवादमे हरा कऽ।

बौद्ध धर्म गेल आ चर्मकार शिल्पी निम्न कोटिक भऽ गेला?

आ गंगेशक विवाह चर्मकारिणीसँ! कोन रहस्य छै ऐमे?

जागेश्वरकेँ बुझल हेतै ई रहस्य।

मुदा हमरा ई बुद्धि ओइ समएमे रहबे नै करए। खाली ओ जे कहए से केने जाइ छलौं।

घनानन्द, हलधर, नोने, दौलति जहाँ, भट्ट भूषण आ रुद्रमतिक संग रघुवरन सेहो सोचमे पड़ि जाइ छथि।

ई तँ रघुवरन सेहो नै पढ़ने छथि।

तेरहम कल्लोल

कुशक डेफसँ नथबौ गे धमिआइन
तोहरो पनियादराध/ अस्सी मनक पत्थल
छेदि कऽ हेबै गे बहार

एकटा राजा- आ चारिटा हुनकर रानी...
छोटकी रानीटासँ एकटा बचिया सुकन्या..

एक दिन राजा सुकन्या संगे टहलै छला तँ सुकन्या एकटा दिबड़ाक भीड़ देखलन्हि। ओइमे दूटा चमकैत वस्तु सेहो छल।

ओ ओइमे कटकीसँ भूर करऽ चाहलन्हि, तँ ओइमे सँ शोनित बहार भऽ गेल आ कियो चीत्कार कऽ उठल।

एकटा मुनि तपस्या कऽ रहल छला आ हुनकर दुनू आँखि फूटि गेल छलन्हि। राजा हाथ जोड़ि क्षमा मांगलन्हि तँ ओ सुकन्याकेँ सेवा लेल मांगि लेलन्हि।

राजा कुमोनसँ सुकन्याक विवाह ओइ बूढ़ ऋषिसँ करबा देलन्हि। फेर एक दिन अश्विनीकुमार सुकन्याकेँ भेटलखिन्ह आ हुनका लोकनिक संग पतिकेँ गंगा स्नान करेबा लेल कहलखिन्ह। जखने तीनू गोटे स्नान कऽ कए निकलला तँ एके रंग-रूपक युवा आँखि सहित बाहर आबि गेल। आब सुकन्या हुनका चिन्हतथि कोना। तखने ओ देखलन्हि जे दुनू देवताक पिपनी तँ खसिते नै छन्हि से ओ अपन पतिकेँ चीन्हि गेली। राजा बेटी-जमाएक खुशीमे भोज देलखिन्ह। देवता सभ सेहो एला मुदा देवता सभ अश्वनी कुमारकेँ पाँतीमे बैसि कऽ खाए नै देमए चाहै छला मुदा राजाक कहलापर हुनका सभकेँ एके पाँतीमे बैसऽ देलखिन्ह।

ओहो..

मुसहर..

चंगेज खाँ बौद्ध धर्मक रहए,

की ओकरे वंशज छथि ई सभ...

नेपालक मिथिलांचलमे अछि जोगियानगर जतऽ रहै छला दु भाइ- दीना आ भदरी। मुसहर जातिक रहथि आ खेती करै छला।

पाँच-पाँच मोनक कोदारि छलन्हि आ बिगहा भरि जमीन तामि लै छला दिन भरिमे।

जोगियानगरक बगलमे जाँजर गाम छल। ओतुक्का जमीन्दार छल कनक सिंह आ ओकर पत्नी रहए बुधनी। बड़ बदमाश दुनू टा। बोनिहार कें देखऽ नै चाहै छल।

कनक सिंहकें पता लगलै जे दीना-भदरी लग पाँच-पाँच मोनक कोदारि छै आ ओ सभ बिगहा-बिगहा भरि जमीन तामि लै छथि दिन भरिमे। ओ जोगियानगर गेल आ दीना-भदरीकें अपन गाम बजेलकै खेती करबा लेल। दीना-भदरीकें कनक सिंहक बोनिहारपर कएल जा रहल अत्याचार बुझल रहै। मारि-मारि कऽ छुटला ओ दुनू गोटे कनक सिंहपर। भागल कनक सिंह।

बुधनीकें पता चललै।

ओ सलहेस थान गेल। कठोर तपस्या केलक। सलहेस प्रकट भेला।

-माँग की चाही!

-दीना-भदरीक प्राण।

-आह।

सलहेस मूर्छित भऽ गेला। मुदा वचनक हारल। की करता?

रातिमे दीना-भदरीकें सपना देलन्हि सलहेस।

-कटैया बोन मे आउ। बड्ड शिकार भेटत।

रातिएमे बिदा भेला दीना-भदरी, तीर-धनुष लेने। संगमे मामा बहुरन। रस्तामे नंगड़ागोड़िया गाम, ओतऽ रहै छला हुनकर सभक दोस जीतन यादव। हुनको शिकार लेल चलबा लेल कहलन्हि।

अमावस्याक राति! अन्हार गुज्ज।

मुदा शिकार एक्को टा नै। बादुर घुमैत। दीना असगरे जंगलक बीचमे चलि गेला। ओतऽ ठाढ़ि छलि बुधनी, सलहेस सेहो संगमे छला।

बुधनी बाजल:

-बोनक जानवरक देवता सलहेस अपन खुनीमा बाघ बजाउ।

दीना बाण चलेलन्हि मुदा बाण रस्ता बिसरि जाइ छल। मल्ल युद्ध भेल। दीना सलहेसक नाम लऽ आक्रमण केलन्हि, बाघकें मारि देलन्हि।

बुधनी बाजलि- भेष बदलैवाली अपघात भेलि बाघिनकें बजाउ।

सलहेस दीनाक वीरतासँ प्रसन्न छला मुदा करथि तँ करथि की?

बगराक भेष बना कऽ बाघिन आएल आ दीनाकें अपन बिखाह चांगुरसँ मारि देलक।

तखने भदरीक मोन बिखिन्न सन भेलै।

-बहुरन मामा। हम जा रहल छी भैया लग। अहाँ गाछपर बैसि कऽ प्रतीक्षा करू।

लहास लग पहुँचला भदरी मुदा ओ बहुरुपिया बगरा हुनको मारि देलकन्हि।

बुधनी घर घुरि गेलि।

दीना आ भदरीक आत्मा दु गोटेक शरीरमे पैस गेल। बहुरन लग पहुँचला दुनू गोटे।

-अहाँक दुनू भागिन मारल गेला। गाम खबरि करू। लहास लऽ जाउ। श्राद्ध करबाउ। तावत जीतन सेहो पहुँचि गेला। जीतन गाम लऽ गेला दुनू गोटेक लहासकेँ आ स्वयं अग्नि देलन्हि दुनू गोटेकेँ।

दीना-भदरीक माए निरसो। श्राद्ध लेल पाइये नै। की करती?

सपना देलन्हि दीना-भदरी।

-माए। घरमे तूर अछि। बनीमा लग लऽ जाउ। ओकर बदलामे ओ जे देत तइसँ हमर श्राद्ध भऽ जाएत।

बनीमा जोखलक तूरकेँ- हँसैत। एक दिस तूर आ दोसर दिस बताशा। मुदा ई की? भरि दोकानक समान तौला गेल मुदा तूरबला पलड़ा नै उठल। दीना-भदरी बैसि गेल रहथि ओइपर।

बनीमा हाथ जोड़ि कऽ ठाढ़ भऽ गेल, निरसो संग बोनिहार आ समान पठा देलक। जेवार देलन्हि निरसो। दीना-भदरी रूप बदलि बारिक बनला। सभकेँ पड़सि कऽ खुएलन्हि।

तखने दीना असल रूपमे आबि गेला। हुनकर कनियाँ हंसा हुनका देखि लेलन्हि। निरसोकेँ ओ ई गप कहलन्हि- मुदा ओ गप नै मानलन्हि।

-अपन छाती सात तह कपड़ासँ बान्हि लिअ आ ओकरा लग चलू जे दीना बनि गेल छल।

निरसो ओतऽ गेली। दूध निकलि कऽ दीना-भदरीक मुँहमे चलि गेल आ ओ दुनू गोटे बिला गेला।

फेर दीना-भदरी बिदा भेला मोरंग। जोरावरसिंह केँ मारि मुसहरक उत्थान केलन्हि। फेर ताहिरकेँ मारलन्हि। फेर सुनरियाकेँ मारलन्हि। फेर

धारक कातमे मारलन्हि डैनियाही बुधनीकेँ। डेढ़ सए दुष्टक नाश केलन्हि दीना-भदरी।

सलहेस बजला:

-जतऽ–जतऽ हमर पूजा हएत, ततऽ–ततऽ अहाँक पूजा सेहो हएत।

सलहेस आ दीना-भदरीक गहमर संगे रहए लागल तहियासँ।

फेर दीना-भदरीकेँ मुक्ति भेटि गेलन्हि। परलोकमे सलहेस आ दीना-भदरी संगे रहऽ लगला।

अखनो मनुखदेवा बनि लोकक मदति करै छथि।

मुसहर..
चंगेज खाँ बौद्ध धर्मक रहए,
की ओकरे वंशज छथि ई सभ...

मुदा चंगेज सभ गोर होइ छल, ई सभ होइ छथि कारी।

बिचकुन सदाय।

मूसक बिल होइ वा बिसाँढ़, कमलघट्टा, वा अन्हइ माँछ। सभमे स्वाद छै, सभ पौष्टिक छै।

आ तेँ ने मुसहर टोलीमे सभ छरेछाँट।

कियो ककरो उखराही नै करैए।

शबरीक सन्तान, लक्ष्मण बूटी..

बुढ़ बुढ़ानुस कहै छथि जे मुसहरमे जे टेबैता छथि से बंजारा जकाँ घुमैत रहै छथि मुदा झोलैता एक्के गाममे कए खाढ़ीसँ रहै छथि।

जेठियाहीवालीक बेटी भुरकुरी।

बिचकुन सदाय, पाँखू सदाय आ जगतू सदाय। खेत तामैमे बिरनल।

भीत आ फूसक घर, केरा डोपरि भीतक देबालमे दऽ भुरकी सभ बनल।

जेठियाहीमे टेबैता सभकेँ बसेने रहए अंग्रेज बहादुर। आ गढ़ नारिकेलक बिचकुन सदायक बियाह भेलै जेठियाही।

गढ़ नारिकेलक मुसहर मूस नै पकड़ै छथि, मुदा जेठियाहीक मुसहर अखनो मूस मारै छथि।

जखन ब्रह्मा मुसहर बनेलन्हि आ ओकरा चढ़ैले घोड़ा देलन्हि तखन ओ मुसहर सोचऽ लागल जे घोड़ापर चढ़ब तखन पएर कतऽ राखब? से ओ घोड़ाक पेटक बीचोबीच पएर रखबा लेल भूर कऽ देलक। ब्रह्मा तमसा कऽ ओकरा भूर बनबैत आ ताकैत रहबाक स्राप दऽ देलन्हि, आ मूस मारि कऽ खेनाइ मुसहरक आजीविका भऽ गेल।

मुसहरीमे सुग्गर सेहो भेटि जाएत। पाँखू सदाय आ जगतू सदाय राधामोहन राय आ पीअर बच्चा लेल बोनिहारक बेबस्था करै छथि।

पाँखू सदाय भगैत छथि, ताड़ी आ सुगरक खून पीबि बघेसरिक पूजा करै छथि, दीना भदरी गाबै छथि।

गामक पछिम कोड़ौलनि एगो नव पोखरिया
ओही पोखरिया गे धमिआइन रोपलैं पुरइन
ओइ जनि पैसिहऽ हो दीनाराम धरतऽ तोरा पनियादराध
ओइ जनि पैसिहऽ हो भदरी धरतऽ तोरा पनियादराध
घुरमी सहैते गे धमिआइन तोरो हम सधबौ
कुशक डेफसँ नथबौ गे धमिआइन तोहरो पनियादराध
अस्सी मनक पत्थल छेदि कऽ हेबै गे बहार

मुदा बिचकुन सदाय जागेश्वरक संगी बनि गेल छला। किछु खेतीबारी करऽ लागल रहथि। घर सेहो चिक्कन-चुनमुन बना लेलक।

भुरकुरी तँ घेंघी आ जागेश्वरक स्कूलमे पढ़ऽ लागल छलि।

बिचकुन जेठियाहीमे सेहो खेतीबारी करबा आ मजूरीसँ आगाँ बढ़बा लेल लोककेँ प्रोत्साहित करै छला।

भुरकुरी लोक सभकेँ मधुमाछी पोसब सँ लऽ कऽ सिलाइ-फड़ाइ सिखबऽ लागलि रहए। के कहैए जे मुसहरक बेटीकेँ ने नैहरे सुख ने सासुरे सुख। देखै जाहीं जेठियाहीवाली आ भुरकुरीकेँ।

मुसहरीमे दीन-दुनियाँ बदलल सन बुझाइत रहए।

जागेश्वर कहैत रहै छल जे किछु तँ बात छै। उदयन बौद्ध सभकेँ शास्त्रार्थमे पराजित केलन्हि। गंगेशक चर्मकारिणीसँ बियाह। उदयन पुरीमे भगवानकेँ माटि देलन्हि आ दीना भदरी सेहो पुरीमे भगवानकेँ माटि देलन्हि।

किछु तँ रहस्य छै।

नै जानि मुसहरीक की हाल हेतै।

पाँखू सदाय आ जगतू सदायक लेल नै मुदा बिचकुन सदाय, जेठियाहीवाली आ भुरकुरी लेल मोन टाङल रहैए।

चौदहम कल्लोल

ब्रह्माक देल कोदारि/ विष्णुक चाँछल बाट

एकटा ब्राह्मणीक सात टा बेटा छलन्हि। छोटकी पुतोहु गरीब घरक छली से सासु-ससुर नै मानै छलन्हि।

हुनका गर्भ भेलन्हि तँ खीर पूरी खेबाक इच्छा पतिकेँ कहलखिन्ह।

पति कहलखिन्ह जे माय हम खेत जाइ छी, हमरा पनपिआइमे आइ खीर-पूरी कनिआक हाथे पठा दिअ। मायकेँ बुझेलन्हि जे हो नै हो, ई अपन कनिआकेँ खीर-पूरी खुआएत। से ओ पुतोहुक जीहपर लिखि कहलन्हि, जे घुरि कऽ आबी तँ ई लिखल रहबाक चाही। पुतोहु खीर-पूरी लऽ खेत पहुँचली तँ पति आधा-आधा खा लै लेल कहलखिन्ह। मुदा ओ जीह देखा देलखिन्ह। तखन ओ पीपरक धोधरिमे खीर-पूरी राखि कहलन्हि जे जाउ, मायकेँ जीह देखा कऽ घुरि आउ। जखन ओ घुरली तँ ओइ धोधरिक बीहरिमे रहऽबला बासुकी साँपक कनियाँ, जे गर्भवती छलि, से सभटा खीर-पूरी खा गेल।

ओइ सापिनकेँ बाल आ बसन्त दूटा पोआ भेलै। एक दिन चरबाहा सभ ओकरा सभकेँ मारऽ लेल दौगल तँ छोटकी पुतोहू ओकरा बचेलक। फेर एकर उत्तरमे बाल-बसन्त हुनका वर मंगबा लेल कहलखिन्ह। पुतोहू वर मंगलन्हि जे एहन कऽ दिअ जे हमरो नैहरक आस रहए। सएह भेल। बाल-बसन्त विदागरी करेबा लेल पहुँचि गेला, मनुष्यरूप धारण कऽ कए।

बाल-बसन्त अपन परिचए दऽ कहलन्हि जे हमरा सभक जन्म बहिनक द्विरागमनक बाद भेल छल। बिदागरी करा कऽ रस्तामे बीहरिमे पैसि कऽ जे निकलला तँ घर आबि गेल। बासुकीनि स्वागत कऽ साँझमे सुआसिनक काज साँझमे दीअठिपर दीप जरेनाइ अछि- से कहलन्हि। बासुकीनागक

फनपर ओ दीप जरबथि तँ ओ खौँझा कऽ पत्नीकेँ कहल जे एकरा हम डसि लेब। पत्नी मना केलन्हि जे अजश हएत, से बिदा करऽ दिअ। सासुर चलि जाएत तँ जे मोन हुअए से करब। बसुकिनी नूआ-लहठी दऽ बिदा करैत काल धरि ई केलन्हि जे साँप रक्षकमंत्र कनिआकेँ सिखा कऽ बाल-बसन्तक संग बिदा कऽ देलन्हि। कहलन्हि जे ई मंत्र सूतऽ काल पढ़ि सूतब।

दीप-दीपहरा आगू हरा मोती मानिक भरू धरा।
नाग बढ़थु, नागिन बढ़थु, पाँचो बहिन विषहरा बढ़थु।
बाल बसन्त भैय्या बढ़थु, डाढ़ि-खोढ़ि मौसी बढ़थु।
आशावरी पीसी बढ़थु, खोना-मोना मामा बढ़थु।
राही शब्द लऽ सुती, काँसा शब्द लऽ उठी।
होइत प्रात सोना कटोरामे दूध-भात खाइ।
साँझ सुती, प्रात उठी, पटोर पहिरी कचोर ओढ़ी।
ब्रह्माक देल कोदारि, विष्णुक चाँछल बाट।
भाग-भाग रे कीड़ा-मकोड़ा, ताहि बाटे आओत।
ईश्वर महादेव, पड़ए गरुड़केँ ठाठ।
आस्तीक, आस्तीक, आस्तीक।

बासुकी डसए लऽ आबथि मुदा ई मंत्र सुनि घुरि जाथि। चारिम दिन सासुकेँ डसि तीन बेर नाङरि पटकि घर सोना-चानीसँ भरि देलखिन्ह।

ई भेल ने...

भुमिहार..

बौद्ध मठ लग जमीन रहै, जे ब्राह्मण बौद्ध बनि गेल से जखन बौद्ध धर्म खतम भेलाक बाद घुरल तँ ओकरा ब्राह्मण लोकनि भुमिहार आ पछिमा कहऽ लगला।

मुदा ई सभ अपनाकेँ ब्राह्मण कहै छथि, दान लै बला नै, दान दैबला ब्राह्मण..

मंगोल मुसहर सभ बौद्ध धर्म गेलाक बाद मूस मारऽ लगला मुदा ई सभ बौद्ध मठक जमीनक बदौलति खेतिहर भऽ गेला...

कियो गोटे जैन सेहो बनल हेता की? महावीर मिथिलामे सेहो खूब घुमल रहथि।

आइ काल्हि तँ कियो नै अछि।

मिथिलाक बाहर तँ जैन मे मात्र वैश्य अछि।

मगध देशमे अशोकक पिता बिम्बिसारक राज्य छल। संपूर्ण शांति व्याप्त छल मुदा एकटा डाकू रौहिणेयक आतंक छल। ओकर पिता रहए डाकू लौहखुर। मरैत-मरैत ओ ओकरा कहि गेल जे महावीर स्वामीक प्रवचन नै सुनए आ जौँ कतौ प्रवचन हुअए तँ अप्पन कान बन्द कऽ लिअए, अन्यथा बर्बादी निश्चिते। रौहिणेय मात्र पाइ बलाकेँ लुटै छल आ गरीबमे बाँटै छल, तइ द्वारे गामक लोक ओकर मदति करैत रहए आ ओ पकड़ल नै जा सकल छल। एक बेर तँ ओ अप्पन संगीक संग वाटिकामे पाटलिपुत्रक सभसँ पैघ सेठक पुतोहु मदनवतीक अपहरण कऽ लेलक, जखन ओकर पति फूल लेबा लेल गेल रहै। जखन ओकर पति आएल तँ रौहिणेयक संगी ओकरा गलत जानकारी दऽ भ्रममे दऽ देलकै। ओकरा बाद सुभद्र सेठक पुत्रक विवाह रहै। बराती जखन लौटि रहल छल तखन रौहिणेय सेठानी मनोरमाक भेष बनेलक आ ओकर संगी नर्त्तक बनि गेल। नकली नर्त्तक जखन नाचऽ लागल, तखन रौहिणेय भीड़मे कपड़ाक साँप छोड़ि देलक। रौहिणेय गहनासँ लदल वरकेँ उठा निपत्ता भऽ गेल। राजा शहरक कोतवालकेँ बजेलक। ओ तँ रौहिणेयकेँ पकड़बामे असमर्थता व्यक्त केलक आ कोतवाली छोड़बाक बातो केलक। मंत्री अभयकुमार पाँच दिनमे डाकू रौहिणेयकेँ पकड़ि कऽ अनबाक बात कहलक। राजा ततेक तामसमे छल जे पाँच दिनका बाद डाकू रौहिणेयकेँ नै अनला उत्तर अभयकुमारकेँ गरदनि काटि लेबाक बात कहलक।

डाकू रौहिणेयकेँ सभ बातक पता चलि गेल छलै। अभयकुमार जासूस

सभ लगेलक। रौहिणेयक मोनमे एलै जे सेठ साहूकार बहुत भेल, आब किए नै राजमहलमे डकैती कएल जाए। ओ राजमहलक रस्तापर बिदा भेल। रस्तामे वाटिकामे महावीरस्वामीक प्रवचन चलि रहल छल। रौहिणेय तुरत अपन कान बन्द कऽ लेलक। मुदा तखने ओकरा पैरमे काँट गरि गेलै। महावीर स्वामी कहि रहल छला- “देवता लोकनिकेँ कहियो घाम नै छुटै छन्हि। हुनकर मालाक फूल मौलाइत नै अछि, हुनकर पएर धरतीपर नै पड़ै छन्हि आ हुनकर पिपनी नै खसै छन्हि।”

-देवताक पिपनी नै खसैबला खिस्सा तँ मधुश्रावणीओ मे रहै मुखदेव!!

तावत रौहिणेय काँट निकालि कान फेर बन्न कऽ लेलक आ राजमहल दिशि चलि पड़ल। राजमहलमे सभ पहरेदार सुतल बुझाइत छल। मुदा ई अभयकुमारक चालि रहए। ओकर जासूस बता रहल रहए जे डाकू नगर आ महल दिशि आबि रहल अछि।

जखने ओ महलमे पैसैत रहए तँ पहरेदार ललकारा देलक। ओ छड़पि कऽ कालीमंदिरमे चलि गेल। सिपाही सभ मंदिरकेँ घेरि लेलक। ओ जखन देखलक जे बाहरसँ सभ घेरने अछि तँ सिपाहीक मध्यसँ मंदिरक चहरदिवारी छड़पि गेल। मुदा ओतौ सिपाही सभ छल आ ओ पकड़ल गेल। राजा ओकरा सूलीपर चढ़ेबाक आदेश देलकै। मुदा मंत्री कहलन्हि जे बिना चोरीक माल बरामद केने आ बिना चिन्हासीक एकरा कोना फाँसी देल जाए। रौहिणेय मौका देखि कऽ गुहारि लगेलक जे ओ शालि गामक दुर्गा किसान छी, ओकर घर परिवार ओइ गाममे छै। ओ तँ नगर मंदिर दर्शन हेतु आएल छल, ततबेमे सिपाही घेरि लेलकै। राजा ओइ गाममे हरकारा पठेलक मुदा ग्रामीण सभ रौहिणेयक पक्षमे छल। सभ कहलकै जे दुर्गा ओइ गाममे रहैत अछि मुदा तखन कतौ बाहर गेल छल। अभयकुमार सोचलक जे एकरासँ गलती कोना स्वीकार करबाबी। से ओ डाकूकेँ नीक महलमे कैदी बना कऽ रखलक। डाकू महाराज ऐश आराममे डूमि गेला।

अभयकुमार एक दिन डाकूकेँ खूब मदिरा पिया देलन्हि। ओ जखन होशमे आएल तँ चारू कात गंधर्व-अप्सरा नाचि रहल छल।

ओ सभ कहलकै जे ई स्वर्गपुरी थीक आ इन्द्र रौहिणेयसँ भेँट करबा लेल आबऽ बला रहथि। रौहिणेय सोचलक जे राजा हमरा सूलीपर चढ़ा देलक। मुदा ओ सभ तँ मंत्रीक पठाओल गबैया सभ छल। तखने इंद्रक दूत आएल आ कहलक जे रौहिणेयकेँ देवताक रूपमे अभिषेक हेतै मुदा तइसँ पहिने ओकरा अपन पृथ्वी लोकपर कएल नीक-अधला कार्यक विवरण देमऽ पड़तै। तखन रौहिणेयकेँ भेलै जे सभटा पाप स्वीकार कऽ लिअए। मुदा तखने ओ देखलक जे देव लोकक जीव सभ घामे-पसीने अछि, माला मौलाएल छै, पएर धरतीपर छै आ पिपनी उठि-खसि रहल छै। ओ अपन पुण्यक गुणगाण शुरू कऽ देलक। अभयकुमार राजाकेँ कहलक जे अहाँ जौँ ओकरा अभयदान दऽ देबै तँ ओ सभटा गप्प बता देत। सएह भेलै। रौहिणेय नगरक बाहरक अपन जंगलक गुफाक पता बता देलकै, जतऽ सभटा खजाना आ अपहृत व्यक्ति सभ छल। राजा कहलन्हि जे किएक तँ ओकरा अभयदान भेटि गेल छै तइ हेतु ओ सभ संपदा राखि सकैत अछि। मुदा रौहिणेय कोनोटा वस्तु नै लेलक। ओ कहलक जे जइ महावीर स्वामीक एकटा वचन सुनलासँ ओकर जान बचि गेलै, तकर दीक्षा लेत आ ओकर सभटा वचन सुनि जीवन धन्य करत।

महावीर स्वामी विदेहमे छह टा वस्सावास बितेलन्हि।

घनानन्द, हलधर, नोने, दौलति जहाँ, भट्ट भूषण आ रुद्रमति एक्के संगे पूछि बैसै छथि- वस्सावास।

मुदा रघुवरनकेँ से बुझल छन्हि। तीन मास बर्खा मासमे थाल-कीचमे एक्के ठाम निवास करै छला महावीर। महावीर छहटा वस्सावास विदेहमे बितेलन्हि आ बारहटा वस्सावास वैशालीमे बितेलन्हि।

मुदा बुद्ध एक्कोटा वस्सावास विदेहमे नै बितेलन्हि।

बुद्ध वर्ण व्यवस्थाक कट्टर विरोधी रहथि, मुदा महावीर ब्राह्मण, क्षत्रिय आ वैश्यक त्रिवर्णकेँ मान्यता देलन्हि। तेँ उदयनाचार्य सहित सभ मैथिल विद्वान बौद्धक जतेक निर्दयतासँ विरोध केलन्हि ततेक जैन महावीरक नै।

महावीर रहथि २४ म तीर्थंकर, वैशालीमे जन्म भेल रहन्हि, माता वैदही त्रिशला रहथिन्ह आ हुनको विदेह सुकुमार कहल जाइ छलन्हि। जैन ओइसँ पहिनहियो मिथिलामे रहथि, २१ म तीर्थंकर नेमिनाथ सेहो मिथिलेक रहथि।

कर्मकाण्डक विरोध उपनिषदमे भेलै, मुण्डक उपनिषदमे तँ बड्ड गम्भीर भऽ कऽ। मुदा ज्ञानपर जे प्रतिबन्ध रहै, किछुए लोक धरि जे ओ सीमित रहै, बीस-पच्चीस सालक जे विशाल कालावधि ज्ञान प्राप्ति लेल निर्धारित रहै, सामान्य ज्ञान लेल छोट कालावधिक जे कोनो पाठ्यक्रम नै रहै, तखन ई विरोध, कर्मकाण्डक ई विरोध सफल होइतए कोना?

मुदा विदेहमे कर्मकाण्डक विरोध नै रुकल। जनक सेहो क्रान्तिकारी रहथि, आ बुद्ध, नेमिनाथ आ महावीर सेहो। तेँ ने मनु तमसा कऽ विदेहवासीकेँ व्रात्य कहै छथि।

हरिहर क्षेत्रमे बौद्धसंघ मैथिलक अपमान केलन्हि। से ओ सभ परमार विक्रमादित्य लग गेला आ तखन ओ बौद्ध लोकनिकेँ हरा मिथिलामे शासन स्थापित केलन्हि। मिथिलाक गंधवरिया राजपूत लोकनि अपनाकेँ हुनके वंशज कहै छथि। ओना ई गंधवरिया राजपूत लोकनि मिथिलाक कर्णाट वंशक संस्थापक नान्यदेवक पुत्र मल्लदेवकेँ अपन बीजीपुरुष मानै छथि।

मुदा मिथिलाक लोक ने बुद्धक अनादर केलन्हि, ने महावीरक। बुद्धक विरोध बेशी तीव्रतासँ भेल, मुदा बौद्धसंघक पराजित भेलाक बाद बुद्धकेँ विष्णुक नौम अवतार मानि लेल गेल। बौद्ध शाखा महायान गीतासँ प्रभावित भेल छल, महायानसँ मिथिलामे तंत्र पसरल, पागक फेँच, अरिपन सभमे तंत्र

सिद्धांतक प्रयोग होइए।

उदयन आ गंगेश नव्य न्यायक जन्मदाता छथि।
मुदा न्यायमे ऐसँ पहिने जैन सेहो योगदान देलन्हि।
रघुवरन बाजैए नै आ जखन बाजैए तँ खूब बाजैए।

पंद्रहम कल्लोल

गहना रे जटा तड़बाक धूर/
घरे रहु रे जटा नयना हजूर

मधस्थ राजाक एक सए एक बेटीक विवाह नाहर राजाक एकसए एक बेटासँ भेलन्हि। सभसँ पैघ भाए बैरसीक विवाह सभसँ पैघ कान्या गोसाउनीसँ भेलन्हि।

विवाहकालमे बैरसीक पागसँ पहिल कनियाँ महादेवक पुत्री लीली खसि पड़लन्हि।

लीली लाबा बिछि खाए लागलि। गोसाउनिक पिता मधस्थ सरापलन्हि जे बैरसी डेग पाछाँ पानक बिड़िया खेता आ कोश पाछाँ तिरियासँ गप करता तँ जीता, नै तँ मरि जेता।

मुदा बैरसी लीलीकेँ मानथि। सासुरमे गोसाउनि अपन व्यथा दिअर चनाइकेँ कहलन्हि। ओ भाइकेँ कहलन्हि जे बाहर घुमि फिरि आउ।

तँ बैरसी ससुरक सरापक कथा कहलन्हि। मुदा चनाइ सभटा व्यवस्था कऽ भौजीकेँ कहलन्हि जे हम पाँच-पाँच कोसपर ठहरबाक व्यवस्था करब, अहाँ भायसंगे भेष बदलि रहब आ संगमे पासाक गोटी लऽ तकरा प्रमाण रूपमे गाड़ैत जाएब। सएह भेल।

पाँच विश्रामक बाद जखन सभ घुरि एला, तखन गोसाउनिकेँ ओधु, काछु, महानाग, श्रीनाग, आ नग्नश्री, पाँचटा पुत्र भेलन्हि। लीली बैरसीकेँ कहलन्हि जे ई चनाइक सन्तान छी। मुदा गोसाउनि पासाक गोटी देखेलन्हि। तखन बैरसी लीलीकेँ मालभोग चाउर आ खेड़हीक दालि आ गोसाउनिकेँ लोहाक चाउर आ पाथरक दालि सिद्ध करऽ कहलन्हि। मुदा तैयो

लीली बुते सिद्ध नै कएल भेलन्हि, मुदा गोसाउनि सुसिद्ध कऽ देलन्हि। ई देखि कऽ गोसाउनिक शरीर गौरवे फाटि गेलन्हि।

गौरवे फाटि गेलन्हि..
हँ हौ खिस्सा छिऐ..

महाराज शिव सिंह (१४१२-१४४६) मिथिलाक राजा रहथि। विद्यापति ठक्कुर, संस्कृत आ अवहट्टबला, हुनके शासनकालमे भेल छला आ राजा शिव सिंह आ हुनकर रानी लखिमा रानी हुनकासँ बड़ प्रेम करैत रहथि। एक टा जयट वा जट नाम्ना बड़ पैघ संगीतकार सेहो छला ओइ समएमे। राजा शिव सिंह हुनकासँ ज्योतिरीश्वर पूर्व बिस्फीक नौआ ठाकुर महेश ठाकुरक पुत्र मैथिल कोकिल विद्यापतिक गीतकेँ राग-रागिनीमे बन्हबा लेल कहने रहथि। वएह जयट जट-जटिन नाटकक रचना केलन्हि आ जटक भूमिका सेहो केने छला। साओन-भादवक शुक्ल-पक्षक रातिमे ई नाटक स्त्रीगण द्वारा होइत अछि। इन्द्र भगवान लेल, साओन भादवमे पानि नै भेलापर बेङ पकड़ि कऽ उक्खरिमे कूटै छै।

जट छथि पहिरने पुरुष-परिधान आ जटिन पहिरने छथि छीटबला नूआ। आ देखू दुनू गोटे अपना संग अपन-अपन संगीकेँ लऽ आबि गेल छथि।

बियाहक पहिल सालक साओन, जटिन जाए चाहै छथि नैहर मुदा धारमे बाढ़ि छै, हे माय कोनो नौआ-ठाकुर-ब्राह्मण आकि पैघ भाए केर बदलामे छोटका भायकेँ पठबिहँ बिदागरी लेल नै तँ सासुर बला सभ बिदागरी आपिस कऽ देत। जइ नवकनियाँकेँ नैहर नै जाए देल गेल ओ अपन पतिकेँ कहै छथि जे जट-जटिनक नृत्यमे तँ भाग लेबऽ दिअ। मुदा वर झूमर खेलेबासँ मना कऽ दै छथि, तखन ओ घामक बहन्ना बना दूर भऽ जाइ छथि।

जट-जटिन बीचमे छथि आ दुनूक संगीमे बहस चलि रहल अछि।

-चलू झूमर खेलाए।

-कोन पातपर चढ़ि कऽ।

-पुरैनीक।

जट-जटिनमे बिआह हुअए बला अछि, मुदा जट किछु बातपर अड़ि गेल, जेना धानक शीस जकाँ लीबि कऽ चलत जटिन, किछु देखावटी विरोधक बाद जटिन सभटा गप मानि जाइ छथि। फेर दुनू गोटे बिआह कऽ लै छथि। फेर भोर होइत अछि, जटिन कहै छथि जे जाए दिअ, अंगना बहारबाक अछि, मुदा जटा कहै छथि जे अंगना माए-बहिन बहारि लेत।

फेर दिन बितैत अछि तँ जटिन कहै छथि जे गहना किए नै बनबा रहल छी हमरा लेल, आर बहन्ना करब तँ हम सोनारक घर चलि जाएब।

जटिन ततेक खरचा करबै छन्हि जे जटाक हाथी तक बिका जाइ छन्हि आ हाथीक सिक्कड़ि मात्र बचल रहि जाइ छन्हि।

जटिन कहै छथि जे हमरा नैहर जेबाक अछि, तँ जटा कहै छथि जे धानक फसिल तैयार अछि, तकरा काटि कऽ जाउ। जटिन नै मानै छथि, कहै छथि जे ऐबेर जे हम जाएब तँ घुरि कऽ नै आएब। मुदा सौतिनक गप सुनि कऽ डरा जाइ छथि। बीचमे स्वांग जेना कोनो रोगीक इलाज आदि सेहो होइत रहैत अछि।

जट मोरंग बिदा भऽ जाइ छथि कमाए। जटिनकेँ सोनार प्रलोभन दै छन्हि गहनाक, मुदा जटिन जटाक सुन्दरताक वर्णन करै छथि।

फेर जटा घुरि अबैत अछि। एक दिन दुनू गोटेमे कोनो गप लऽ कऽ झगड़ा भऽ जाइ छन्हि। जट छौँकीसँ जटिनकेँ छूबि दै छथि। जटिन रूसि कऽ घर छोड़ि दै छथि। जटा गोपी, मनिहारिन आ आन-आन रूप धरि ताकै छथि हुनका। मुदा जटाक घरमे झोल-मकड़ा भरि जाइ छन्हि आ अंगनामे दूभि उगि जाइ छन्हि। तखन जटिन हुनका लग आबि जाइ छथि। फेर स्त्रीगण लोकनि बेंगकेँ एकटा खद्धा खुनि कऽ ओइमे दऽ दै छथि आ ऊपरसँ

ओकरा कूटै छथि आ मरल बेंगकेँ झगराहि स्त्रीक दरबज्जापर फेकि अबै छथि। ओ स्त्री भोरमे मरल बेंगकेँ देखला उत्तर जतेक गारि पढ़ै छथि, ततेक बेसी बरखा होइत अछि।

जाए दहिन गे जटिन देश रे विदेश
तोरा लऽ लएबौ जटिन गहना सनेस
गहना रे जटा तरबाक धूर
घरे रहु रे जटा नयना हुजूर
दरबारे रहु रे जटा नयना हुजुर
जाए दहिन गे जटिन देश रे विदेश
तोरा लऽ जे लएबौ जटिन साड़ी-सनेस
साड़ी तऽ रे जटा तड़बाक धूर
घरे रहु रे जटा नयना हुजूर
दरबारे रहु रे जटा नयना हुजुर
जाए दहिन गे जटिन देश रे विदेश
तोरा लऽ लएबौ जटिन सिनुर-सनेस
सिनुरा रे जटा मांगक सिनूर
घरे रहु रे जटा नयना हुजूर
दरबारे रहु रे जटा नयना हुजुर
जाए दहिन गे जटिन देश रे विदेश
तोरा लऽ लएबौ जटिन नथिया सनेस
नथिया तँ रे जटा तड़बाक धूर
घरे रहु रे जटा नयना हुजूर
दरबारे रहु रे जटा नयना हुजुर

घेंघीकेँ बुझलो छै जे ओकर जटा विदेश चलि गेलै, घुरि कऽ घर नै एतै।

गंगेश उपाध्यायक पुत्र वर्धमान झूठ गवाही देनिहार, तांत्रिक आदिकेँ

समाज लेल अहितकर प्रकाश तस्कर कहै छथि, मुदा पीअर बच्चा... बहलमानी करू, खबासी करू, बोनि करू..

सभ जमीन्दारे बनल फिरैए। बड़का जमीन्दार, मझोलबा जमीन्दार, छोटका जमीन्दार। जोंकही पोखड़िमे बड़का जमीन्दार छोटका जमीन्दारकेँ धऽ दैए मुदा बहलमानी, खबासी, आ बोनिसँ निस्तार दियो नै देत। सभ छोटका-बड़का जमीन्दार तइ बेरमे मिलि जाइए। अंग्रेजोसँ मिलि गेल ई सभ.. आ तकर विरोध जँ जागेश्वर करैए तँ ई प्रकाश तस्कर सभ......

सोलहम कल्लोल

छाती लात, झोँटा हाथ आ सौतिनक पोखड़िमे अढ़ाइ झाक माटि उघब

राजा श्रीकरक कन्याक टीपणिमे छाती लात, झोँटा हाथ आ सौतिनक पोखड़िमे अढ़ाइ झाक माटि उघब लिखल छल।

हुनकर मुइलाक बाद हुनकर बेटा चन्द्रकर जंगलमे एकटा सोन्हि बना कऽ एकटा चेरी संगमे दऽ राजकुमारीकेँ ओतऽ राखि देलन्हि। जंगलमे सुवर्ण राजाकेँ ओ भेँट भेली तँ दुनू गोटे जाए लगला तँ राजकुमारी मधुश्रावणी पाबनिक लेल सासुरक अन्न खेबाक आ वस्त्र पहिरबाक प्रथाकेँ मोन पाड़ि कहलन्हि जे ई दुनू वस्तु अवश्य पठाएब।

राजा राज्य जा कारीगरकेँ वस्त्र लेल कहलन्हि तँ बड़की रानी सुनि लेलन्हि आ वस्त्रमे छाती-लात आ झोँटा हाथ लिखि देबा लेल कहलन्हि।

कौआकेँ जखन ई वस्त्र पहुँचेबाक भार राजा देलन्हि तँ ओ रस्तामे कतौ भोज-भात खाए लागल आ सनेस पहुँचेनाइ बिसरि गेल। राजा सेहो सभटा बिसरि गेला। मधुश्रावणी दिन राजकुमारी गौरीक पूजन उज्जर चानन-फूलसँ केलन्हि आ कहलन्हि जे जहिया राजा भेँट होथि तहिया हम बौक भऽ जाइ।

जखन चन्द्रकरकेँ पता चलल जे राजकुमारी विवाह कऽ लेलन्हि तँ ओ खरचा बन्द कऽ देलन्हि। आब दुनू गोटे राजकुमारी आ चेरी, सुवर्ण राजाक बड़की रानी द्वारा खुनाओल जा रहल पोखड़िमे माटि उघऽ लगली।

सुवर्ण एक दिन हिनका लोकनिकेँ देखलखिन्ह तँ हुनका सभटा मोन पड़ि गेलन्हि। ओ हुनका राज्य लऽ अनलन्हि। मुदा राजकुमारी बजबे नै करथि।

चेरी सभटा गप बुझेलन्हि तँ राजा कहलन्हि जे ई कौआक गलती

अछि। तखन रानी अगिला मधुश्रावणीमे लाल चाननसँ गौर पुजलन्हि आ हुनकर बकार घुरि गेलन्हि आ सुखसँ जीवन बिताबऽ लगली।

श्रीगणेशजी मधुश्रावणी दिन माए गौरीसँ कहलन्हि जे आइ हम सोहाग मथब आ बाँटब। धन-धान्य, काठक तामा, नीम बेल आ आमक काठीसँ ओ सोहाग मथि सभकेँ बँटलन्हि।

बाह...

मुखदेवक खिस्सा चलिते रहै छै।

जेल तँ निन्नक समान छै। निन्नमे सभ चिन्ता-फिकिर-हर्ष-उल्लास खतम भऽ जाइ छै। निन्नसँ जागू तँ फेर सभ हर्ष-उल्लास-चिन्ता-फिकिर सोझाँ आबि जाइ छै। जेलक हर्ष-उल्लास-चिन्ता-फिकिर निन्नक सपना हर्ष-उल्लास-चिन्ता-फिकिर सन...

कतेक रास गप बाजै छल जागेश्वर...

जे आर्य छथि से भारतक पच्छिम भागसँ मिथिलामे एला, आ हुनका सभक एबासँ पूर्व वेदक किछु अंश विद्यमान छल, तेँ ने बहुत रास शब्द जे मैथिलीमे अछि, बहुत रास उच्चारण जे मैथिलीमे अछि ओ वैदिक संस्कृतमे अछि, मुदा लौकिक संस्कृतमे नै अछि। अविद्या, कर्मसिद्धान्त, जन्म आ पुनर्जन्मक आवाजाही आ मोक्ष ई सभ अनार्यसँ आर्यकेँ भेटलै। तेँ ने उपनिषदमे मोक्ष प्राप्तिक मार्ग छै, स्वर्ग प्राप्तिक नै। मोक्ष भेटत केना? यज्ञ केलासँ? नै, ई भेटत ज्ञानसँ आ मनन-चिन्तन आ समाधिसँ। राजा जनकक संरक्षणमे याज्ञवल्क्य बृहदारण्यक उपनिषदक तिरहुतक अनार्य क्षेत्रमे रचना केलन्हि।

वाचस्पति मिश्र सांख्यकारिकाक सन्तावनम सूत्रक व्याख्या करैत कहै छथि जे की ई कहि सकै छी जे अचेतन दूध केर पोषणसँ परु पोसाइए आ अचेतन प्रकृतिक संचालनसँ जीवकेँ मुक्तिक ज्ञान भेटैए? ईश्वर तँ स्वयंमे पूर्ण

छथि तँ ओ कोन उद्देश्ये विश्वक सृष्टि करता आ जीव लेल जँ ओ सृष्टि करता तँ सृष्टिक बादे तँ जीव बन्हाइए आ सृष्टिसँ पूर्व तँ बन्हेबाक प्रश्ने नै अछि, तखन जीवक प्रति कथीक दया? से प्रकृति द्वारा सृष्टि होइए आ जीव अपन प्रयाससँ अपवर्गक प्राप्ति करै छथि। आ विवेकसँ होइए प्रलय।

से ईश्वरवाद नै निरीश्वरवाद अछि वाचस्पतिक व्याख्या।

प्रकृति संचालनमे जँ ईश्वर भाग लै छथि तँ ओ चेतन प्रक्रिया हएत जे कोनो उद्देश्येसँ हएत आ तकर कोनो खगता ईश्वरकेँ छन्हिये नै। न्यायसूत्रक रचना केनिहार मिथिलाक गौतम सोलह पदार्थक ज्ञानसँ जीवक निःश्रेयस प्राप्त करबाक चर्च करै छथि, मुदा ऐ सभमे ईश्वरक कतौ चर्च नै अछि जे हुनको द्वारा मुक्ति सम्भव अछि। वैशेषिक सूत्र कहैए जे वेद विद्वान लोकनि द्वारा रचल गेल अछि नै कि ईश्वर द्वारा। कुमारिल भट्ट कहै छथि जे सृष्टिक पूर्व ईश्वरक विषयमे कोनो विश्वसनीय चर्चा असम्भव अछि।

डाइन-जोगिन, रैयत-लगान..
ईश्वर, मोक्ष.. प्रकृति...

हहाइट। दूटा धार मिलि रहल अछि। ओकर अवाज हृदयमे उद्वेग उत्पन्न कऽ रहल अछि। भमरासँ बनल मोइनमे मुखदेव पैसि गेल छथि। नचैत भाउर मोइनकेँ आर गहींर करबाक प्रयासमे अछि।

निशाभाग करनिनियाँ राति, मुखदेव काजरकेँ मोसिहानि बना किछु लिखऽ चाहै छथि...

सतरहम कल्लोल

गविया बाँझिन, बड़द बियाय,
बूँदमे देखहुँ समुद्र समाय

काठक झूला। आङी, टोपी, चद्दरि, रेशमी डोरीसँ सजावट कऽ झूला गाउ सभ..

झूला लगै कदम्बक डारि झूलथि कृष्ण मुरारी ना
कोने काठक बनै हिलोरा कथिएक डोरी ना
ओइपर झूलत कृष्ण मुरारी संगमे राधा प्यारी ना
चन्दन काठ बनल हिलोरा रेशम डोरी ना
ओइपर झूलथि कृष्ण मुरारी संगमे राधा प्यारी ना
राधा झूले राधिका झुलाबे बेरा-बेरी ना
ओइपर झूलथि कृष्ण मुरारी संगमे राधा प्यारी ना

बाह..
लचका पुल, झूला, अंग्रेजक झूला...
जटमलपुरक लचका पुला उड़ि गेल।

मुखदेव भोरे भोर बहार भऽ गेल रहथि। धनेसरक कामतपर पहुँचला मुखदेव।

लचका। ऐ लचका पुलक विशेषता होइ छै जे बाढ़ि-बर्खामे पानि पुलक ऊपरसँ बहि जाइ छै। जँ कही तँ ई पुल होइते नै छै जे नीचाँमे जगह खाली रहतै आ नीचासँ पानि बहतै।

माछी रोमैयोक शक्ति नै छै गरीबमे, दशा ततेक खराप छै। समाजमे हरमाज उठा दैतै गरीब सभ मिलि कऽ। मुदा ओ तँ प्रेम करै छै समाजसँ, देशसँ।

धनेसरक कामतपर जागेश्वरक संग किछु लोक बैसल रहथि। मधेपुरक कुञ्जन, तारसरायक चेथरू, बहेरीक मुसाइ, बिरौलक ढिनाइ, दलसिंहसरायक भत्तू, ताजपुरक पिचकुन, बेनीपट्टीक छुतहरू; आ मेंहथक घोंघाइ आ धनेसर। आ संगमे जागेश्वरक किछु कॉमरेड, चारिटा। लचकाकेँ तोड़बा लेल बम कोना राखल जाए, बमकेँ गंतव्य स्थान धरि कोना पहुँचाएल जाए। बम विस्फोटक बाद सभ गोटे सुरक्षित कोना बहराइ जाइ, ऐ सभ गपपर चर्चा भेल।

जटमलपुर लचका..

-मुदा पुल टुटलासँ लोककेँ तँ सेहो असुविधा हेतै। - पुछने रहै मुखदेव।

जागेश्वरक संग बैसल कॉमरेडमे सँ एक गोटे उत्तर देने रहै- देखू, हमर सभक मूल उद्देश्य की अछि?

आ वएह कॉमरेड जवाब सेहो देने रहए- हमर सभक मूल उद्देश्य अछि अंग्रेजी राज आ जमीन्दारी राजक समाप्ति। ई पुल आ रस्ता जतेक सुविधा लोक सभकेँ दै छै ओइसँ बेशी ई सहायक होइ छै ओइ जमीन्दारक आ अंग्रेजी राजक यथास्थितिवादी व्यवस्थाक यथास्थिति बनेबामे।

यथास्थिति माने जेहने छी तेहने, माने परिवर्तन शून्य।-- मुखदेवक मुँहसँ बहार भेल रहै।

पहिल दल बनल कुञ्जन, चेथरू, मुसाइ आ पहिल कॉमरेडक; ढिनाइ, भत्तू, पिचकुन आ दोसर कॉमरेडक बनल दोसर दल; छुतहरू, घोंघाइ, धनेसर आ तेसर कॉमरेडक बनल तेसर दल; आ मुखदेव, जागेश्वर आ चारिम कॉमरेडक बनल चारिम दल।

अगिला दिन रातियेमे बिदा हेबाक अछि। बलेसरी काँटी, बारूद आ की की। अलगे सुगन्ध रहै...

चारू कॉमरेड आ जागेश्वर भिरल रहथि, डिब्बा बना बना कऽ रखने जा रहल छला।

एक गोटे खेनाइ दऽ गेलन्हि, धनेसर बाहरेसँ खेनाइ लऽ भीतर एला।

फेर रातिमे सभकेँ कटही गाड़ीपर अलग-अलग रस्तासँ बहरेबाक रहै।

जटमलपुरसँ बेसी दुरस्त धनेसरक कामत नै रहै।

चारू दल पहुँचि तँ गेल रहए मुदा हमर सभक दल आ कुञ्जन, चेथरू, मुसाइ आ पहिल कॉमरेडक दलकेँ आक्रमण करबाक रहए। दूटा दल सुस्ताएत, जँ हम सभ पकड़ेलौं तखन अंग्रेज सरकार बुझत जे मामिला सुनझा लेल गेल। आ तखने ओ दुनू दल कने बिलमि कऽ आक्रमण करत आ लचकाकेँ तोड़ि देत। आ जँ पहिल दुनू दलमे बेशी घाएल होइ छै तँ आसपासमे घुमैत ओ दुनू दल सोझाँ आएत आ जँ एकाधे टा घाएल होइ छै तखन ओ दुनू दल सोझाँ नै आएत।

मेंहथक घोंघाइ कथा शुरू केलक:-

सतयुगमे केदार राजा परम्परानुसार वृद्धावस्था प्राप्त भेलापर पुत्रकेँ राज्यभार दऽ तपस्याक लेल बोन चलि गेला। केदारक एकेटा पुत्री छलन्हि वृन्दा। ओ भरि जिनगी यमुना तटपर घोर तपस्या केलन्हि। अन्तमे भगवान प्रकट भऽ वर मँगबा लेल कहलखिन्ह।

वृन्दा कहलखिन्ह जे अहाँ हमर वर बनू। ओ बोन जतऽ बृन्दा तपस्या केलन्हि, वृन्दावन नामसँ प्रसिद्ध भेल। यमुना नदीक निचुलका दक्षिण तटपर मधुपुरी नगर बसल। शत्रुघन ओइ दैत्यकेँ मारि मधुपुर माने मथुरा जितलन्हि।

किछु तुषरपात भेल आ तकर बाद दलसिंहसरायक भत्तूक संग ताजपुरक पिचकुन कहै छथि:

सुरजापुरी सभ भारतमे बिहारक किशनगंज आ पूर्णियाँ आदिमे गामे-गाम रहैए, राजबंशी महादलित जाति द्वारा ई भाषा बाजल जाइत अछि। किशनगंजमे मुस्लिममे स्वामी जाति खोट्टा आ सेवक जाति कुल्हिया कहल जाइ छथि। कुल्हिया जाति सेहो सुरजापुरी भाषा बजै छथि। राजबंशी आ जे आन जाति सभ कुल्हियाक आसपास रहै छथि से सुरजापुरी बजै छथि। ई भाषा मैथिली आ बांग्लाक मिश्रण अछि। कियो कियो बंगालक कूच बिहारक बाहे बंगाली आ नेपालक राजबंशी भाषाकेँ सेहो सुरजापुरी भाषा कहै छथि। किछु गोटेक मत छन्हि जे बांग्लादेशक लोकक भाषाक क्षेत्रीय भाषासँ मिश्रणक परिणामस्वरूप सुरजापुरी भाषा निकलल। पूर्णियाँ आ किशनगंजमे एक्के गाममे कुल्हिया आ राजबंशी लोकनि सुरजापुरी बजै छथि, संथाल लोकनि संथाली बजै छथि, बंजारा लोकनि बंजारा भाषा बजै छथि जखन कि शेष सभ गोटे मैथिली बजै छथि।

मुखदेव दिस ताकि जागेश्वर बाजै छथि:-

खण्डेबलासँ सुरपतिसुत दूवे सुत चन्द्र पतिक पुत्रीक विवाह, आसामक कोच राजवंशी राजा सँ छलन्हि पुत्रीक नाम सोहागो।

ताजपुरक पिचकुन फेर बजैए:

जँ राज्यमे ऐ क्षेत्र सभकेँ लेल जाए तँ हुनका सभकेँ हुनकर भाषाक विकासक गारन्टी देबऽ पड़त। की नव देश-राज्य राज्य अभियानकर्मी सभक सोच एतऽ धरि पहुँचलनि अछि?

जागेश्वर बजै छथि, यौ ई विभिन्न तरहक जाति- जन- विस् आदिक खेरहा बड्ड पुरान छै। ओ आगाँ कहै छथि:-

प्राकृतसँ वैदिक संस्कृत बहार भेल आकि वैदिक संस्कृतसँ प्राकृत? वेदमे नाराशंसी नाम्ना जन आख्यान यएह सिद्ध करैत अछि जे दुनू समानान्तर रूपेँ बहुत दिन धरि चलल। ई समानान्तर परम्परा दुनूकेँ प्रभावित केलक।

आब ऋगवेद देखू- ओतऽ दुर्लभ लेल- दूलभ, (ऋगवेद ४.९.८) प्रयोग की सिद्ध करैत अछि? अथर्ववेदमे पश्चात् लेल पश्चा (अथर्ववेद १०.४.१०) की सिद्ध करैत अछि? गोपथ ब्राह्मणमे प्रतिसन्धाय लेल प्रतिसंहाय की सिद्द करैत अछि? (गोपथ ब्राह्मण २.४)। आ वैदिक आ लौकिक संस्कृतकेँ ओइ कालमे संस्कृत नै वरन क्रमसँ छन्दस (वैदिक संस्कृतकेँ यास्क आ पाणिनी छन्दस कहै छथि) आ भाषा (लौकिक संस्कृतकेँ पाणिनी भाषा कहै छथि) कहल जाइ छल। आ जकरा आइ प्राकृत कहै छिऐ से पालिक बाद ओइ रूपमे बुझल गेल (साहित्य लेखन सम्बन्धमे)। भरत नाट्यशास्त्रमे ७ टा आ वररुचि ४ टा प्राकृतक चर्चा करै छथि।

ओना तँ महावीरक वचन अर्ध-मागधी प्राकृत आ बुद्धक वचन मागधी-प्राकृतमे देल गेल मुदा ई दुनू मूलतः जनभाषा रहए।

मुदा जखन विभिन्न क्षेत्रक लोक जुमला तँ बुद्ध सभकेँ अपन क्षेत्रक भाषामे बुद्धवचन सिखबा लेल कहलन्हि: अनुजानामि भिक्खवे, सकायनिरुत्तियाबुद्धवचनं परियापुणितं- माने भिक्षु लोकनि, अपन-अपन भाषामे बुद्धवचन सिखबाक अनुमति दै छी। आ बुद्धवचनमे प्रधान तत्व जनभाषा मागधीक रहल मुदा आन आन भाषाक तत्व सेहो फैंटाएल; आ से भाषा पालि भऽ गेल। ओना मूल बात यएह अछि जे सभ प्राकृत शब्दक संस्कृत रूप नै अछि।

निकलबाक बेर भऽ गेल अछि।

संघर्ष, जन संघर्ष।

माछी रोमैयोक शक्ति नै छै गरीबमे, दशा ततेक खराप छै। समाजमे हरमाज उठा दैतै गरीब सभ मिलि कऽ। मुदा ओ तँ प्रेम करै छै समाजसँ, देशसँ।

ई संघर्ष तँ लोकक प्रतिष्ठा बचेबा लेल छै।

कुञ्जन, चेथरू, मुसाइ आ कॉमरेडक बहार भेलाक किछु बाद जागेश्वर, मुखदेव आ कॉमरेड बहराइ छथि। डिब्बा सभ झोरामे लेने, कान्हपर भिरखा लेने, आ बोरामे कोदारि, खन्ती लऽ कऽ सभ गोटे विदा भेल। निर्गुण शुरू केलक जागेश्वर:-

बघवाक बच्चा बिलैया लेने जाइ रे, बाबू कियो नै पतियाय
धरती बरिसय सुरुज नहाय, ओलतीक पानि बरेड़ी ठेकल जाय
चलत मुसाफिर थाकल बाट, तर सुतवैया उपर लागे खाट
नौका डूबय, लोहा उपलाय, कुदु-कुदु मछरी बगुलवेकेँ खाय
जरए बुढ़िया गोइठा तापै आगि, रिन्हल रसोइया भनसियेकेँ खाय
गविया बाँझिन, बड़द बियाय, बूँदमे देखहुँ समुद्र समाय
कहत कबीर सुनू साधु भाय, ईहो पढ़ि अर्थ केयो बिरले लगाय

लचकाक एक दिस मुखदेव आ दोसर दिस चेथरू खधाइ खुननाइ शुरू कऽ देलन्हि। कुञ्जन भिरखा पसारि कऽ लचकाक एक दिस आ मुसाइ भिरखा पसारि कऽ लचकाक दोसर दिस सड़कपर बैसि जाइ छथि आ ससरफानी बनबऽ आ उघारऽ लगै छथि।

जागेश्वर दुनू कॉमरेडक संग लचकाक बीचमे दुनू कात खधाइ कऽ दै छथि आ ओइमे बारुद आ बम फोड़ै छथि फेर बेरा बेरी लचकाक दुनू कात अबै छथि। मुखदेव दिसुका लचका सेहो टूटि जाइए।

मुदा चेथरू... ओकर पएरमे कोनो लत्ती ओझरा जाइ छै।

जागेश्वर ओकरा भागैले कहै छै मुदा ओ खसि पड़ैए आ...

बलेसरी काँटी सभ चेथरूक देहकेँ शोनितामे केने छै। आसपास अन्हार पसरल छै। लोकक कोनो आवाजाही नै छै।

चेथरूकेँ कोनाहु कऽ उठा कऽ धनेसरक कामतपर आनल जाइए।

ओकर छातीक धुकधुकी बन्न नै भेल छै।

अठारहम कल्लोल

मारबौ आरे कोइली, फोड़ब दुनू अँखिया/ तोर बोली सुनि पिया गेल परदेस/ तोरे बोली सुनि ना

चेथरूकेँ धनेसरक कामतपर राखल गेल।

कॉमरेड सभक संग धनेसर बहरा गेला। फेर भोर होइसँ कने पहिने धनेसर एकटा वैदकेँ लऽ कऽ एला। कॉमरेड सभ घुरि कऽ नै आएल छला।

सुसुम पानिमे लत्ता भिजा कऽ मुसाइ, जागेश्वर आ मुखदेव चेथरूकेँ साफ कऽ देने छथि। मुदा धँसल काँटी उखारबाक प्रयास विफल होइ छन्हि, कुहड़ि उठै छथि, कामतमे अगरमस्तक गाछ छै, छोट आ मोटपातमे पानि भरल, मुखदेवकेँ सुनल छलन्हि जे कटलापर एकर रस लगेलासँ खून बहनाइ रुकि जाइ छै। मुखदेव अगरमस्तक पात तोड़ि कऽ आनै छथि, रस बहार कऽ काँटी सभक ऊपर गाड़ै छथि।

खून रुकल सन लागि रहल अछि।
मुसाइ कथा कहै छथि...

पार्वती शिवसँ शिवसन वरप्राप्तिक व्रतक विषयमे पुछै छथि..

...तँ ओ उत्तर दै छथि जे हिमवान पहाड़पर अहाँ बारह वर्ष उल्टा टांग मात्र धुँआ पीबि कऽ, माघमे जलमे बैसि, साओनमे वर्षामे आ बैसाख दुपहरियामे पंचाग्निमे बैसि तप केलौं। मुदा अहाँक पिता नारदकेँ कहलन्हि जे ओ पार्वतीक विवाह विष्णुसँ करेता।

ई सुनि अहाँ सखीक घरपर कानऽ लगलौं जे हम तँ पात्र शिवकेँ अपन पति बनाएब आ अपन सखीक संग गंगाकात खोहमे चलि गेलौं आ भादवमे

हमर बालूक प्रतिमाक पूजा केलौं, तखन हम आबि अहाँकेँ पति हेबाक वर देलौं।

बाह...

चेथरू पानि माँगैए..

फेर बाजैए...

आ किछु कहए चाहैए चेथरू, राष्ट्रीयता, ओकर कतेक प्रकार, बाइमे अछि... माछी रोमैयोक शक्ति नै छै गरीबमे, दशा ततेक खराप छै। समाजमे हरमाज उठा दैतै गरीब सभ मिलि कऽ। मुदा ओ तँ प्रेम करै छै समाजसँ, देशसँ।

मुदा वैद आबि जाइ छै...

तारसरायक चेथरू। बम फुटलै आ घाएल भऽ गेल।

धनेसरक कामतपर आनल गेल छै।

की सभ पीसि कऽ वैदा खुएलकै।

बाजै छल वैदा, असली बेटा मऽर नै, असली सोना जऽर नै।

जेलसँ बहरेलाक बाद कतऽ जाएत मुखदेव?

तंत्रमंत्र सीखि जीवित करत ओइ लोककेँ? धुर.. ततेक बहसा-बहसी जागेश्वर आ कॉमरेड सभ संगे केने अछि जे ऐ तंत्र-मंत्र सभक भितरिया गप बुझि गेल अछि। मुदा जँ जिआ नै सकत ओकरा सभकेँ तँ ओकर विचार तँ जिआ सकत।

बहुरा गोढ़िनक पुत्री।

छलि ओहो तांत्रिक।

कमला-बलानक कातक केवटी छलि बहुरा, बखरी, बेगूसरायक रहनिहारि।

हकलि छलि ओ, कमरू सँ सिखलक जादू।

दुलरा दयाल छल मिथिला राज्यक भरौड़क राजकुमार, ओकरे नाम छल नटुआ दयाल।

नृत्य जे ओ बहुरासँ सिखलक तँ सभ नामे राखि देलकै ओकर नटुआ।

नटुआ दयालक गुरू छला मंगल।

सिद्ध पुरुष।

अकाशमे बिन खुट्टीक धोती टंगै छला, सुखला पर उतारै छला।

बहुरा गाछ हँकैत छलि, जकरासँ झगड़ा भेल ओकरा सुग्गा बना पोसि लै छली।

कमला कातमे रहै छला आ भजै छला-

कमलेक आसन, ओहीमे बास हे कमला मैय्या...

बहुरा वरकेँ मारि सीखने छलि जादू। राजकुमारक विवाहक प्रस्तावकेँ नै ठुकरा सकलि मुदा। बरियाती दरबज्जा लागल तँ भऽ गेलै कहा-सुनी आ सभकेँ बना देलक ओ बत्तू।

मंत्री मल्लक एक आँखिक रोशनी खतम। आहि रे बा।

व्यापारी जयसिंह छल मोहित, बहुराक बेटी पर। ओकरे खडयंत्र। आहि रे बा।

गुरू लग गेल राजकुमार आ आदेश भेलै, जो कामाख्या, सीखऽ लेल षट् नृत्य, आ जादू।

चण्डिका मंदिरमे योगिनीसँ षट्नृत्य सिखलक आ आदेश भेलै- सरैया ग्रामक भुवन मोहिनीसँ षट् नृत्यक एक अंग सिखबाक।

ओइ गामक सिद्ध देवी रहथि वागेश्वरी।

नरबलि चढै छल ओतऽ। दैत्य अबै छल ओतऽ।

सिखलक राजकुमार सिद्ध नृत्य अनहद आ आज्ञा चक्र।

करिया जादूकेँ काटए बला मंत्र फुकलक राजकुमारक कानमे।

कमला बलानमे आएल राजकुमार।

बहुरा सुखेलक धारक पानि।

राजा पता लगेलक जूकियासँ, अनलक बहुराकेँ, मुदा ओ तँ लगा देलक दोष राजकुमारपर। यज्ञ भेल तैयो कमलामे पानि नै आएल, नटुआ पठेलक सभटा पानिकेँ पताल?

नटुआकेँ पकड़ि कऽ आनल गेल। ओ अपन नृत्यसँ जलाजल केलक कमलाकेँ। मुदा कहलक बहुराकेँ माफी दियौ।

बहुरा कहलक आब तोँ भेलह हमर बेटीक योग्य।

आबह बरियाती लऽ कऽ।

नटुआ बरियाती लऽ कऽ पहुँचल।

तीटा पान एलै, एक कमलाक पानिक हेतु, दोसर बहुराकेँ माफ करबाक हेतु।

आ तेसर ओकर बेटीसँ बियाह करबाक हेतु।

तीनूटा पान उठेलक नटुआ आ शुरू भेल गीत-नाद।

पियास लगलै नटुआकेँ, शिष्य झिलमिलकेँ पठेलक इनार पर।

डोरी छोट भऽ गेलै। अपने गेल नटुआ, डोरी पैघ भऽ गेलै।

फूलमती छलि ओतऽ, पतिक प्रतिभासँ प्रसन्न छलि ओ।

मल्लक आँखि ठीक केलक बहुरा।

कमला कात पहुँचल कनियाँक संग नटुआ, मुदा आहि रे बा।

नटुआकेँ चक्कू मारलक, बहुरासँ तमसाएल शिष्य।

मुदा नटुआ चढ़ेने छल पटोर कमला मैय्याकेँ।

कमलाक धार खूने-खुनामे।

मुदा कामाख्याक जदूगरनी एली, आजीवित केलन्हि नटुआकेँ।

दुश्मनक बलि चढ़ेलक कमलाकेँ।

आ बलि चढ़ि गेल चेथरू.. तीन दिनुका बाद..

आ मरि गेल जागेश्वर जेलमे...

बाजै छल वैदा, असली बेटा मऽर नै, असली सोना जऽर नै।

चेथरू आ जागेश्वरक बलि तँ चढ़ि गेलै, देशसँ अंग्रेजकेँ ससम्मान विदा कऽ देल गेलै। माउन्टबेटन गवर्नर जेनेरल बनि गेलै। देशक नव राजा मुखदेवकेँ जेलमे रखने छै। मुखदेवकेँ बनिसार भेटि गेल छै। ककर चढ़ाएत बलि। आपसेमे झगड़ा छै, खीराक तीन फाँक, ऊपरेसँ टा एक छै।

जाँत पिसै कालक लगनी मोन पड़ै छन्हि मुखदेवकेँ:-

घर पछुवरिया नीम केर गछिया
वएह तरनमा कोइली बोलै अधिरतिया
वएह रे तरनमा
आन दिन बोलै कोइली, भोर रे भिनसरवा
आजुक दिन कोइली बोलै अधिरतिया
आजुक दिन ना
मारबौ आरे कोइली, फोड़ब दुनू अँखिया
तोर बोली सुनि पिया गेल परदेस

तोरे बोली सुनि ना
गछिया बैठल वृन्दावनमे
बँसुरिया किनकर बोलै ना
किनकर बोलै ना
करु-करु आहो भौजो सोलहो शृंगार
बँसुरिया वृन्दावनमे भैयाक बोलै ना
भैयाक बोलै ना
तोरा देबौ ननदो गलाक गिरमल हार
तोहीं दिलक बतिया कहलीं ना
तोहीं दिलक बतिया कहलीं ना

उन्नैसम कल्लोल

सूतलिमे छलिऐ रे सुगना एके संग रे सेजिया/ सपनेमे देखलौं रे सुगना हंसा गेलै रे चोरिया

गढ़ नारिकेलक मुखदेव आ जागेश्वर, मधेपुरक कुञ्जन, बहेरीक मुसाइ, बिरौलक ढिनाइ, दलसिंहसरायक भत्तू, ताजपुरक पिचकुन, बेनीपट्टीक छुतहरू आ मेंहथक घोंघाइ आ धनेसर।

तारसरायक चेथरू गेल...

किछु दिनुका बाद मुखदेव आ जागेश्वर लग दूटा कॉमरेड आएल।

पंडौलक तार काटि देलक सभ मिलि कऽ।

नौताल आ धनहरक पुला सेहो बारूदसँ उड़ा देल गेल। मधेपुरक कुञ्जन नौताल पुला उड़बै घड़ी स्वाहा भऽ गेला आ बहेरीक मुसाइ धनहर पुला उड़बै घड़ी।

फुलपरास थानाक दरोगाकेँ उड़ा देल गेल। बिरौलक ढिनाइ थानासँ चलल गोलीमे मारल गेला।

मुखदेव आ जागेश्वर बचि गेल।

की कोनो त्रुटि रहि गेल जे ओ दुनू गोटे नै मरला।

आ मुखदेवक खिस्सा शुरू...

कृष्ण मिथ्या आरोपसँ दुखित भऽ गणेश आ चन्द्रमाक पूजा केलन्हि। पृथ्वीक भार उतारऽ लेल बलराम, कृष्ण आ कमलनाभ उत्पन्न भेला। कंसक वध कृष्ण केलन्हि। मुदा कंसक ससुर जरासन्धक आक्रमण संकट देखि छप्पन करोड़ यदुवंशी आ सोलह हजार आठ स्त्रीवर्गक संग ओ द्वारका एला।

संत्राजित सूर्यक उपासना द्वारका तटपर कऽ स्यामन्तक मणि- जे सभ दिन आठ भरि सोना उत्पन्न करै छल- प्राप्त केलन्हि। ओ एकरा अपन भाइ प्रसेनकेँ दऽ देलन्हि। राजा उग्रक ई दुनू सन्तान छला- संत्राजित आ प्रसेन। एक दिन कृष्ण आ प्रसेन शिकार खेलाइ लेल बोन गेल तँ एकटा सिंह प्रसेनकेँ मारि मणि लऽ विदा भेल तँ जाम्बवान भालु ओइ सिंहकेँ मारि मणि अपन पुत्रकेँ खेलाइ लेल दऽ देलक। कृष्ण जखन असगरे आपिस भेला तखन सभ हुनकापर प्रसेनक हत्या मणिक लोभमे करबाक आरोप लगेलक। तखन कृष्ण सभकेँ लऽ बोन गेला तँ सिंह आ प्रसेनकेँ मुइल देखलन्हि आ जाम्बवानक पुत्र सुकुमारक झूलामे लटकल मणि देखलन्हि। जाम्बवानक पुत्री कृष्णकेँ मणि लऽ भागऽ कहलन्हि, मुदा कृष्ण शंख फूकि खोहमे युद्ध कएल। सात दिन बाद द्वारकावासी द्वारका घुरि कृष्णक अन्तिम संस्कार मृत बुझि कएल, मुदा २१ म दिन जाम्बवान हारि मानि अपन पुत्रीक विवाह हुनकासँ करा मणि उपहारमे देलन्हि। कृष्ण ओइ मणिकेँ संत्राजितकेँ दऽ देलन्हि। संत्राजित हुनकापर मिथ्या आरोपसँ दुखी भऽ अपन पुत्रीक विवाह कृष्णसँ कराओल आ स्यामन्तक मणि कृष्णकेँ देल मुदा कृष्ण नै लेलन्हि।

फेर कृष्ण-बलराम जखन बाहर छला तखन शतधन्वा संत्राजितकेँ मारि मणि लऽ लेलक आ अक्रूर यादवकेँ दऽ अपने भागि गेल। सत्यभामाक कहलापर कृष्ण-बलराम ओकरा खेहारलन्हि, कृष्ण ओकरा मारल मुदा मणि नै भेटल, ई कथा सुनिते बलरामकेँ ई शंका भेल जे कृष्ण कपट करै छथि, से कृष्ण द्वारका एला मुदा बलराम विदर्भ चल गेला, अक्रूर तीर्थयात्रापर निकलि गेल, मणि धारण कऽ काशीमे सूर्यक उपासना करऽ लागल। ब्रह्मा-विष्णु-महेश निर्विघ्नदेवक अष्टसिद्धि पूजा कएल आ जखन ओ घुरि रहल छला तँ चन्द्रमा हुनकर हाथी बला मस्तक, पैघ पेट देखि कऽ हँसि देलन्हि। रूपक गर्व लेल चन्द्रमाकेँ गणेशजी श्राप देलन्हि जे एक दिन हुनकर दर्शन करऽ बलाकेँ कलंक लागत।

बाह..

मुदा ई आरोप तँ कियो लगेनहियो नै रहै तखन किए दुखी भऽ रहल छल जागेश्वर।

गरीबक समाजसँ प्रेमक ईएह परिणाम हएत जे ओकरा खतम कऽ देल जाए, आन्दोलनमे स्वाहा कऽ देल जाए। ओकर बाल-बच्चा बिलटि जाए।– -जागेश्वर बजै छथि।

-मुदा गरीबक बच्चा तँ ओनाहितो बिलटले रहै छे जागेश्वर, बाप रहौ वा नै रहौ।– बाजल रहथि मुखदेव।

आ हँसि देने रहए जागेश्वर...

आ जखन अंगरेजबा आ ओकर भारतीय सिपहिया जागेश्वरकेँ बारुद आ कॉमरेड सभक विषयमे पुछलकै तँ ओ उत्तर नै देलक। मरबाक मौका भेट गेलौ रौ भजार तोरा, आन बुझौ नै बुझौ हम बुझि गेलियौ रौ जागेश्वर..

मुखदेवक स्वरसँ घनानन्द, हलधर, नोने, दौलति जहाँ, भट्ट भूषण रुद्रमति आ रघुवरन व्यथित भऽ जाइ छथि।

सूतलिमे छलिऐ रे सुगना एके संग रे सेजिया
सपनेमे देखलौं रे सुगना हंसा गेलै रे चोरिया
ई हम जनितौं रे सुगना हंसा जेतै रे चोरिया
कसि-कसि बन्हितौं रे सुगना रेशमक रे डोरिया
रेशमक रे डोरिया रे सुगना टूटि फाटि रे जेतै
कसि-कसि बन्हितौं रे सुगना प्रेम के रे डोरिया
कायापुर मायापुर लागल छै ने बजरिया
सोचि समझिए सौदा कइ लिअ हे सखिया

बीसम कल्लोल

मैयाजी हे राखि लियौ अरज केर लाज/
जगदम्बा सेवक कल जोड़ैए हे

मेंहथक घोंघाइक नाम परशुराम रहै। परशुराम आ धनेसरक बहिन झंझारपुरमे मल्लिकजीसँ पढ़ैले जाइत रहथि आ तेँ धनाढ्य सभ द्वारा बारि देल गेला। परशुरामजीक बहिनक पढ़ाइमे बाधा पड़लन्हि। मुदा धनेश्वरजी जे कनेक उमेरमे सेहो पैघ रहथि, अड़ल रहला। अंग्रेजी पुलिससँ हुनका पकड़बाएल गेल आ जे पीअर बच्चा पकड़बेलन्हि से आब स्वाधीनता पेंशन पाबि रहल छथि, रघुवरन ई सूचना मुखदेवकेँ दै छथि। १९४२ ई.मे धनेश्वरजी झंझारपुर थानासँ अंग्रेज पुलिसकेँ भगा देने रहथि आ फेकन मुन्शीकेँ थानेदार बना देने रहथि।

पीअर बच्चा सुनलिऐ १९५२ ई. मे एम.एल.ए. बनि गेल। गाम बगलक विद्यार्थी कृपानन्दक स्कॉलरशिपबला फॉर्मपर साइन करबासँ मना कऽ देने रहथिन्ह एम.एल.ए. साहेब मुदा तैयो चन्दासँ एम.आइ.टी. मुजफ्फरपुरमे रॉल नं.१ लऽ सर्वोच्च अंकक संग अभियन्त्रणमे नाम लिखबा लेलन्हि कृपानन्द। एक बेर धनेश्वरजी, परशुरामजी, कृपानन्द सभ गोटे गोपेशजी ऐठाम जा कऽ खेने छला, कारण गोपेशजी केँ बारल गेल छलन्हि कारण ओ अंडा खेने रहथि आ पीअर बच्चा आ ऐ गामक धनाढ्य सभक नेतृत्वमे हुनका बारल गेल छल।

रघुवरन नव सूचना सभ दैत रहै छन्हि मुखदेवकेँ। स्वतंत्रता दिवसपर नै जानि कोना ई सभ चर्च शुरू भऽ जाइ छै आ स्मरण आबि जाइ छै मुखदेवकेँ सभ गप।

फेर खिस्सा शुरू...

जुआमे हारल युधिष्ठिरकेँ बोनमे कृष्ण एकटा व्रत करबा लेल कहलन्हि आ कथा सुनेलन्हि। सत्ययुगमे सुमन्त नाम्ना ब्राह्मण भृगुक कन्या दीक्षासँ विवाह केलन्हि। मुदा शीलाक जन्मक बाद दीक्षाक मृत्यु भऽ गेल। फेर सुमन्तक विवाह कर्कशासँ भेलन्हि, ओ शीलाकेँ कष्ट देमऽ लागलि। फेर शीलाक विवाह कौण्डिन्यसँ भेलन्हि। दुनू गोटे अनन्त चतुर्दशीक दिन यमुना तटपर घुरै जाइ छला तँ स्त्रीगण लोकनि हुनका बाँहिपर अनन्तक ताग बान्हि देलन्हि जइसँ हुनकर सभक घर गृहस्तीमे समृद्धि आएल। घरमे माणिक्य रहितो ई ताग देखि एक दिन पति ओकरा तोड़ि आगिमे फेकि देलन्हि। शीला जड़ल डोरकेँ निकालि दूधमे राखि लेल। आब विपत्ति शुरू भऽ गेल आ घरमे आएल दरिद्राकेँ देखि कौण्डिन्य बोन चलि गेला। ओतऽ अनन्त भगवान हुनका विष्णु लग लऽ गेलखिन्ह। ओ हुनका अनन्त व्रत चौदह बरख धरि करबाक लेल कहलन्हि।

बिपति तँ शुरू भैए गेलै घेंगही लेल।
आ मुखदेव रामक व्रत कहिया खतम हएत।
आकि व्रत शुरू हएत।
जेलसँ बाहर भेला दिनसँ शुरू हएत व्रत।
मुदा ओ दिन कहिया आएत।

कहिया आएत जे गाछमे खेनाइ-पिनाइक समान फड़तै, कियो ककरोसँ नै जड़तै। घेंगही सुनबैत रहै रहथि खिस्सा पिहानी, गामक शिष्या सभकेँ....

घेंगहीक खिस्सा सुनैले के अबैत हेतै।
पीअर बच्चा एम.एल.ए. बनि गेल अछि।
देश स्वतंत्र भऽ गेल अछि।
स्वतंत्रता सेनानी जेलमे बन्न अछि। बाँकीपुर कैम्प जेल।

आ गढ़ नारिकेलमे भगता, मुखदेव आ जागेश्वर लेल, गोहारि कऽ रहल

अछि, कहलन्हि रघुवरन। मुदा जागेश्वर तँ गेल। मुदा से बुझल नै छै गढ़ नारिकेलक लोककेँ:-

अरही जे बोनसँ मैया खरही कटेलिऐ हे
मैया खरही कटेलिऐ हे
मैयाजी हे बिजुवन कटेलिऐ बिट बाँस
जगदम्बा रचि-रचि महल बनेलिऐ हे
गोड़ लागूँ पैयाँ पड़ूँ मैया जगदम्बा
आइ मैया मैया गहबर अबियौ हे
मैया जी हे राखि लियौ भगत केर लाज
जगदम्बा कलजोरि पैयाँ पड़ै छी हे
जहिना बलकबा खेलै माताक गोदिया हे
भवानी माताक गोदिया हे
मैया जी हे तहिना खेलाबहु जग बीच जगदम्बा
आब मैया गहबर अबियौ हे
नामो ने जनै छी मैया पदो नै बुझै छी हे
मैया पदो ने बुझै छी हे
मैया जी हे सेवक बीच कण्ठ लियौ बास
जगदम्बा आब मैया लाज रखियौ हे
गोड़ लागू पैयाँ परूँ आद्या जोलामुखी हे
मैया आद्या जोलामुखी हे
मैयाजी हे राखि लियौ अरज केर लाज
जगदम्बा सेवक कल जोड़ैए हे

एक्कैसम कल्लोल

बछड़ूले कुहकै छै धेनु गाय

ब्राह्मणमे पीअर बच्चा आ हुनकर पुत्र इन्द्रकान्त मिश्र। दछिनबारि टोलमे मिश्र सभ आ शेष सभ टोलमे झा सभ।

रमण किशोर झा आ अरुणा झा।

सुखराती दिन हूड़ा-हूड़ीक खेल जे ऐ महिसबाड़ ब्राह्मण सभक देखब तँ गुम्म पड़ि जाएब, बौधा मलिकसँ कीनल सुग्गरकेँ भाँग पीबि मातल महीस द्वारा हूड़ा लेब।

एकटा जागेश्वर झा रहथि, स्वतंत्रता चाही छलन्हि, देशोक आ लोकोक। मुखदेव राम संगी रहन्हि। मुदा पीअर बच्चाक धोखा देलासँ अंग्रेज पकड़ि कऽ धऽ देलकन्हि जेलमे आ ओतै मारि देलकन्हि।

मेदिनी लोकमे अहंकाल पसरि रहल अछि....
गढ़ नारिकेल गाममे ब्राह्मणक अतिरिक्त आनो जाति अछि।

दुनू बान्हक बीचमे उँचका भीरपर गुअरटोली तँ अछिये। बाढ़ियोमे ओ टोल नै डुमैत अछि। नाहसँ आबाजाही होइए। सत्यनारायण यादव एम्हुरका सभटा खेतक आरि-धूरक जानकारी राखै छथि।

बियाह दिन उपनयन संस्कारमे यादवजी ऐठाम गीत गाओल जाइए:

बकलेल बभना मधु चाटय एला हमर अंगना
चाउर देलियनि दालि देलियनि धेलनि अंगना
एक रत्ती नोन लेल करै छथि खेखना
बकलेल बभना मधु चाटय एला हमर अंगना

धोती देलियनि तौनी देलियनि धेलनि अंगना
एकटा गमछा लेल करै छथि खेखना
बकलेल बभना मधु चाटय एला हमर अंगना
सोना देलियनि रूपा देलियनि धेलनि अंगना
एकटा पैसा लेल करै छथि खेखना
बकलेल बभना मधु चाटय एला हमर अंगना

सत्यनारायण यादव, राउतजी आ गुआरसँ आब यादव। बाभनक गाम छिऐ, बनोतरी बनबऽ दियौ। दुग्धक व्यापारसँ खेतीबारी आ गामक सड़कक माँटि भराइ, सभ काज हाथमे छन्हि।

कालिदासक यादवजी सभ पूजा करै छथि। मिथिलाक लोकदेवता कालिदास, मनुखदेवा...।

कालिदास। मिथिलेक रहथि कालिदास।

कमलदहमे पड़ल अनाथ शिशु, अमरीता देखलनि ऐ बालककेँ।

आनि कऽ पोसलन्हि। मुदा ओ पैघ भेल आ महामूर्ख भऽ गेल।

सभ क्षेत्रमे विद्वानक विषयमे एहेन कथा भेटिते अछि। भट्टोजि दीक्षितक शिष्य वरदराज, जे लघु आ मध्य सिद्धान्त कौमुदी सन श्रेष्ठ संस्कृत व्याकरणक रचना केलन्हि, हुनको मानल जाइ छलन्हि जे ओ मूर्ख जड़मति रहथि, बड़दक राजा सन। मुदा ओ इनारक लहराक पाथरपर रस्सी द्वारा बेर-बेर घर्षणसँ पड़ल निशान देखि निश्चित केलन्हि जे ओ विद्याक बेर-बेर अभ्यास करता, आ से ओ केलन्हि आ विद्वान बनि गेला।

गंगेश उपाध्यायक विषयमे सेहो एहने कहल जाइए, ओ मिथिलेक रहथि।

मुदा ओ तँ कालिदासक बाद भेला।

नै ओ कालिदास नै, ई कालिदास दोसर छथि।

ई कालिदास सेहो जइ ठाढ़िपर बैसल रहथि, तकरे काटि रहल रहथि। तिरहुतिया राजा सुबाय सिंहक बेटी बहुरा..

बखरीक बहुरा गोढ़िन हौ.. जकर बेटीसँ गोनू झाक गौँआ दुलरा दयाल बियाह केने रहए।

नै ई दोसर बहुरा.. राजा सुबाय सिंहक बेटी बहुरा विदुषी रहथि। मुदा राजदरबारक ब्राह्मण आ नौआ ठाकुर हुनकापर कनखरल रहथि से ओ सभ अही बालकक चयन केलन्हि आ बहुरा संग अमरीताक पुत्रक विवाह भऽ गेल। मुदा पत्नी शीघ्र पतिक मूर्खताकेँ चीन्हि गेली आ पतिकेँ दसटा गप सुनेलन्हि।

आब पतिक आत्मसम्मान जगलन्हि आ ओ घर छोड़ि विद्या प्राप्तिक लेल एकटा चौपाड़ि पहुँचि गेला।

गुरुजी हुनका उच्चैठ भगवतीक पूजा लेल पठेलन्हि आ देवी हुनकर पूजासँ प्रसन्न भऽ हुनका वरदान देलन्हि। आ ओ चौपाड़िक सभटा पोथी घोंटि गेला.. विद्वान भऽ गेला। गुरुजी हुनकासँ प्रसन्न भेला आ प्रसिद्ध विद्वान कालिदासक नामपर हुनकर नाम कालिदास राखि देलन्हि। गुअरटोलीक अमरीताक बेटा कालिदास।

कालिदास इन्द्र लोक धरि घुमि आबै छलथि।

देवता सभ हुनका नागराजक कमलदहसँ पाँच टा कमलक फूल अनबा लेल कहलखिन्ह।

नागराज कालिदासकेँ काटि लेलन्हि आ ओ मरि गेला। मुदा देवता सभ हुनका जिआ देलखिन्ह आ ओ कमल लऽ कऽ इन्द्रलोक पहुँचला।

देवता सभ हुनका पृथ्वीलोक पठा देलखिन्ह, धर्म आ सत्यक प्रचार लेल।

दूध लेल बछड़ू कुहकै हौ, बाबू हौ बछड़ूले कुहकै छै धेनु गाय।

दह लेल हंसा चकेवा कुहकै हौ, बाबू हौ जोड़ी लेल कुहकै छै मजूर।

बृच्छ लेल कारी कोइली कुहकै हौ, बाबू हौ पूत लेल कुहकै छै अबला तिरिया नारि।

आब तँ मिथिलाक भगताक देहमे कालिदास आबऽ लागल छथि।

सत्यनारायण यादव पहिने दछिनबारि टोलमे रहै छलथि मुदा आब गुअरटोलीमे बसि गेल छथि, पीअर बच्चाक उछन्नरसँ तंग आबि कऽ गुअरटोलीमे बसि गेल छथि। पीअर बच्चाकेँ शंका रहै जे सत्यनारायण यादव जागेश्वर आ मुखदेवक संगी छथि।

मुदा ऐ सँ सत्यनारायण यादवकेँ सुविधे भेलन्हि। बौआचौरीक लग घर भऽ गेलन्हि आ ओइसँ माल जाल चराबैमे सुविधा भेलन्हि।

रघुवरनक कॉमरेड सभ सूचना अनने अछि। नव संविधान लागू भेलै। बिहारमे चुनाव भेलै, वोट खसलै। अपन अपन जोगार लगेबाक ब्योँतमे सभ कियो अछि। कियो कोनो पार्टी तँ कियो कोनो पार्टी, समाजवादी बनि गेल कम्यूनिस्ट, कम्यूनिस्ट बनि गेल कांग्रेसी आ कांग्रेसी बनि गेल समाजवादी।

अगिला बेर राधामोहन राय समाजवादी पार्टीसँ ठाढ़ हेता आ पीअर बच्चा कांग्रेससँ।

सत्यनारायण यादव मुदा एकटा शक्ति बनि कऽ सोझाँ आएल छथि।

“जे देश लेल जान देलक से जागेश्वर आ मुखदेव जेलमे बन्द अछि आ जे किछु नै केलन्हि, जे ओइ दुनू गोटेकेँ पकड़बेलन्हि, से जन प्रतिनिधि!! स्वतंत्र देशक जन प्रतिनिधि जँ एहेन लोक बनता तखन देशक की हएत? आ वोटक अधिकार आब स्त्री-पुरुष, छोट-पैघ सभकेँ देल जाएत। आब संख्या बल महत्वपूर्ण भऽ जाएत। आब समए आबि गेल अछि जे हम सभ अपन

अधिकारक मोल बुझी। ओकर नीक जकाँ प्रयोग करब, तखने अधिकारक मोल बुझाएत, आ नै जँ अपन अधिकारक मोल नै बुझी तँ ई वोटक अधिकारो निरर्थके जाएत।"- सत्यनारायण यादव बाजि रहल छथि।

"देश भऽ गेल रहए स्वतंत्र, आ ई आब बनि जाएत गणतंत्र। देशक नव संविधान लागू हएत। कोना कऽ वोट खसेतै यौ..."

"माने हम कहबै जे ई बनए जमीन्दार तँ से बनत जमीन्दार आ जँ ओ नवका जमीन्दार नीकसँ काज नै करत तँ अगिला चुनावमे दोसर जमीन्दार चुनल जाएत?"

हँ, चुनल जेबाक बाद सभ जमीन्दारे बनत, से बनत तखने ने पुरना जमीन्दारसँ लड़ि सकत, ओकरा दबा सकत।

मुदा पीअर बच्चा तँ जीत गेल तखन? तखन तँ जमीन्दारे जमीन्दार बनल! आ अगिला बेर...

राधामोहन रॉय इनार खुनबेने छथि आ जमाहिरलाल आ महात्मा गाँधी देशसँ अंग्रेजकेँ भगेने छथि, आकि ओ सभ मेल-पेँचसँ स्वयं भागि गेल अछि।

सुनै छिऐ स्त्री-पुरुष, गरीब-धनिक सभसँ पुछल गेलै ओकर विचार। विचार जे ऐ चुनावमे ओकरा दिससँ के बजतै। के बनतै ओकर प्रतिनिधि, ओकर इलाकाक जमीन्दार। मुदा जमीन्दारे बनि गेलै जमीन्दार!!

पीअर बच्चा सत्यनारायण यादवक जनतासँ उद्बोधनसँ प्रसन्न नै छथि। राधामोहन रॉय जागेश्वर आ मुखदेव रामक मामिला इम्हर-उम्हर उठा रहल छथि। सत्यनारायण यादवक दलानपर कएक खेप गेल छथि राधामोहन।

बा झाक मृत्युक बाद जे लठैत सभ सञ्च-मञ्च भऽ गेल रहथि से आपस अपन रंगमे घुरि रहल छथि।

पीअर बच्चा मुखदेव आ जागेश्वरक संघर्षकेँ फूसि बता रहल छथि आ सत्यनारायण यादवकेँ ओइ दुनू फुसियाहाक संगी कहि रहल छथि। स्वतंत्र भारत-सरकार पीअर बच्चाकेँ स्वतंत्रता सेनानी मानि लेने अछि आ हुनका स्वतंत्रता सेनानी पेंशन दऽ रहल अछि।

मुखदेव आ जागेश्वरक मादे ढेर रास उड़न्ती-उकबा उड़ि रहल छै। कियो कहैए जे दुनू गोटे बाँकीपुर जेलसँ बिला गेला आ फिरंगी देश दिस उड़ि कऽ चलि गेला। मुदा सत्यनारायण यादव ऐ सभ गपकेँ उड़न्ती कहै छथि। दुनू गोटे घुरि कऽ एता, गढ़ नारिकेल हुनका सभक बाट जोहि रहल अछि।

देखै छी की होइए आगाँ-आगाँ... रघुवरनकेँ कहैए कॉमरेड, आ कॉमरेड कहैए मुखदेवकेँ...

बाइसम कल्लोल

हर ने बड़द, ढोढ़ाय मड़र

राधामोहन राय गाममे सभ टोलमे एक-एकटा इनार कोरबेने रहथि। जोतखीसँ दिन तका कऽ सभ टोलक लोक कोदारि खंती लऽ कऽ जुमि गेल रहथि। डोमी मिआँ आ लछमी ततमाक राजमिस्त्रीबला काज लोक देखलक। गौँआ सभ अछि मुदा कलामी, जागेश्वर आ मुखदेवरामक बारूद तेहेन बड़का खधाइ कऽ दै छलै जे की कही।

बेचारा जागेश्वर..मारल गेल.. पीअर बच्चा आ राधामोहन रायक झगड़ामे।

पुलिससँ पकड़बाइये देलक ई पीअर बच्चा।

पुलिस दरोगा सभसँ जान-पहिचान रहबे करै पीअर बच्चाकेँ, राधामोहन रायकेँ यश हेतै से कोना बर्दास्त होइतै। इनार सभसँ पानि बहार हेबऽ लगलै, लोक सुखितगर भऽ गेल आ इज्जतिक संग जीबऽ लागै गेल, तँ राधामोहन रायक प्रशंसा तँ हेबे करितै आ से..।

बारुद कतऽ सँ आएल.. पुछै छलै अंग्रेजक भारतीय दरोगा..

मुखदेवराम घुरि कऽ आओत की नै, से नै जानि!.. लोक सभ निर्णय केने अछि जे इनारक लहरा-जगत सहित इनारकेँ लोक कहियो भथम नै हेबऽ देत।

बड़का आन्दोलन भेल छलै गाममे। पानिक आन्दोलन, सभ टोलमे इनार!

बंजारा सभ सुखेँतसँ आएल रहए आ गीत गेने रहए..

उंड़ो कूवो उंड़ी वावूड़ी, निर्मल पाइ रो टो टो

मारो ईरा तरसो जाइ,
हाथेधड़ी वालो माइ,
मारो बापू तरसो जाइ
हाथ चेला वालोये, निर्मल पाइ रो टो टो...

बोधा मल्लिकक टोलक इनार खोदैमे बड्ड सहयोग केने रहए ई बंजारा सभ। पाँचटा बंजारा हाथक थप्पा दऽ कऽ स्थान घेरने रहए आ गैंती खन्तीसँ खोदनाइ शुरू भेल छल। देवारक काते-काते सीढ़ी बनेनाइ शुरू भऽ गेल, देवारक काते-काते गोलाइ लैत। जखन खधाइ गहींर भेल तँ लोक ओइ सीढ़ी दऽ कऽ उतरथि आ खुनथि आर गहींर खधाइ। देवारकेँ झाड़ि कऽ गोल कएल जाइ छलै। बेशी गहींर भेलापर पाथरक बड़का-बड़का चेका आबि जाइ छलै, आ तखन काज अबै छल मुखदेव राम आ जागेश्वर झाक बारूद।

बोधा मल्लिकक टोलक इनारक पानि सभसँ मीठ बहरेलै.. कहै छला मुखदेव..

हिरनी आ बिरनी दूटा बहिन, दुनू नटिन रहथि। ओ सभ पोसन सिंहकेँ नट बनबऽ चाहै छलथि। ओइ दुनू बहिन लग एकटा बड़का पारा छलन्हि, भयंकर। ओ दुनू बहिन पोसन सिंहकेँ कहलन्हि जे जँ पोसन सिंह ओइ पाराकेँ नाथि देत तँ दुनू बहिन हुनकर नोकरनी बनि जाएत आ जँ नै तँ पोसन सिंहकेँ नट बनऽ पड़तै। पोसन सिंह ओइ पाराकेँ नाथि देलन्हि।

गढ़ नारिकेल गामक लोक सभ, सभ जातिक मुँहपुरुख आ सामान्य लोक सभमे मेल-पेँच रहै छै मुदा नै जानि ऐ गपपर किए रुष्ट भऽ गेल पीअर बच्चा।

मुखदेव आ जागेश्वर नै जानि कतऽ चलि गेल। पीअर बच्चा घबड़ा गेल अछि। नै जानि कतऽ सँ घुरि कऽ आबि जाएत ई दुनू। पंद्रह साल भऽ गेल

छै ओना। ई एम.एल.ए.क चुनाव भऽ जाए कहुना। जमाहिरलालक आ महात्मा गाँधीक नामपर जीत तँ जेबे करत पीअर बच्चा आ ई लठैत सभ कोन दिन काज आएत। आ फेर जाति आ धर्म.. मुस्लिम वोट अछिये, ब्राह्मण सभ सेहो हारि थाकि कऽ वोट देबे करत, दलित आ स्त्रीगण सभक वोट छापिये लेब।

मुदा ई मुखदेव आ जागेश्वर ने आबि जाए बिच्चेमे। जँ नै आएल तँ जितलाक बाद फेर पीअर बच्चा सप्पत खाइ लेल पटना जेबे करत आ जहलमे पता लगाएत जे की केना भेलै ओत्तऽ।

ई सप्पत की होइ छै हौ।

रौ, ई जे नवका नेता जीति कऽ जमीन्दार बनलै से सप्पत खेलकै, सप्पत जे नीक काज करब, ककरो अधला नै करब..

आ सप्पत खेलासँ पुरनका माफ भऽ जेतै हौ।

रौ, से किए ने जानऽ गेलिऐ।

ई संसार...

की हएत, की भेल, सभटा अन्दाजे छै।

की पीअर बच्चा केलकै, की मुखदेव आ की जागेश्वर। से पसरलै नै। पसरितै तँ जमाहिरलाल पीअर बच्चाकेँ अप्पन पार्टी सँ ठाढ़ करितै रौ। पीअर बच्चा खादी पहिरै छै, टोपी पहिरै छै। बण्डी पहिरै छै।

बड़का-बड़का गप दै छै पीअर बच्चा।

मुदा ऐ नवका स्वतंत्र भेल देशमे की हेतै, कोन भविष्य हमरा सभक इन्तजारीमे अछि?

कोना कही.. जागेश्वर रहितए तँ कहितए..

पीअर बच्चा कहैए-.. बिसरि जाउ सभटा। लोक हमरा अनेरे बदनामी दैए। ऐबेर जँ हम जीति कऽ जाएब तँ पटनामे पता करब जे की भेलै जागेश्वरक, की भेलै मुखदेवक। जिबैत तँ नहिये होइ जेता, मुदा पता करब की कोना भेलै।

मुदा पछिला बेर...

मुदा गढ़ नारिकेलसँ बाहर पीअर बच्चा मुखदेव आ जागेश्वरक नामो नै लैए।

घेंघीकेँ पेंशन भेटबाक चाही, स्वतंत्रता सेनानीक विधवाक रूपमे..

ऐपर पीअर बच्चा कहैए जे से पहिने देखऽ पड़त जे कोन अपराधमे ओकरा बन्द केलकै फिरंगी।

फेर गप तँ लिखियाक मानल जेतै नऽ यौ लोक सभ, मुँहसँ जत्ते बाजि ली।

आ फेर मृत्यु प्रमाण-पत्रक बिनु किछु नै हएत।

मुदा स्थिर रहै जाउ, सभटा भऽ जेतै.. पहिने ई चुनाव तँ खतम हुअए..

राधामोहन रॉयक सोच सीमित छै, मात्र ओ गढ़ नारिकेल धरि सीमित अछि। गामक बाहर ओ की केलन्हि?- गढ़ नारिकेलक बाहर देल भाषणमे बजैए पीअर बच्चा। गामसँ, क्षेत्रसँ ऊपर उठै लेल कहैए पीअर बच्चा। देशसँ मुदा ऊपर उठै लेल नै कहैए पीअर बच्चा।

सम्भावना छै जे देश आगाँ बढ़तै, मुदा से तखने जखन पीअर बच्चा जीतत। यौ पीअर बच्चासँ कैन अछि, मुदा तइ लेल जमाहिरलालक हाथ काटि देबै। कटल हाथसँ की कऽ सकत जमाहिरलाल!!

राधामोहन रॉय गरबड़ा रहल छथि।

ई कांग्रेस मानि लिअ स्वतंत्र कराइए देलकै, जे ई नै केलकै, तँ की राज ओकरे फेर लगातार देल जाए। तँ की राजक लोभमे देशकेँ ओ स्वतंत्र

करेलक? समाजवादी लक्ष्य मात्र देशक भविष्य छी। समाजवादी लक्ष्य अछि समाजवादी सोच। समाजक लेल इनार, समाजक लेल पानि, समाज मिलि कऽ करए काज।

पीअर बच्चा बजैए, हे लिअ। सुना ने देलक। आब ओइ राधामोहन रॉयक इनारक पानि ठोंठसँ नीचाँ जाएत? आबऽ दियौ सरकार फेरसँ। तेहेन-तेहेन ने बोरिंग गारत सरकार जे पानिक बमकोला छुटत। तेहेन तेहेन ने बान्ह बान्हत सरकार जे कोसी, कमला सभ मनुक्खक दासी बनि जाएत। आ सरकार जे काज करत तइ लेल ओ किछु नै सुनाएत। मात्र काज लेल काज, श्री भगवद्गीतामे भगवानो सएह कहै छथि। गाँधी बाबा सएह कहै छथि। घेंघी दाइक गुजर वएह गाँधीजीक चरखासँ चलैए भाइ लोकनि, ऐ समाजवादी सभक सोच छै धनिककेँ गरीब केनाइ, हौ गरीबकेँ धनिक बनेबह तखन लोक कलामी कहतऽ..

हे भाइ सभ। चरखा गाँधीजीक नै छी। ई मिथिला समाजमे पहिनहिये सँ अछि, चरखकट्टीक विध उपनयनमे होइ छै आकि नै होइ छै यौ लोक सभ? ई कांग्रेसिया सभ एक्केटा खेती करैत अछि आ ओ खेती अछि फूसिक खेती।

मुदा जँ जागेश्वर आ मुखदेवक लहासो आबि जैतए गाम तँ ओकरा घुमा दैतिऐ गाम आ इलाकामे आ असल चेहरा सोझाँ आबि जैतए कांग्रेसिया सभक, जे पीअर बच्चा सन लोककेँ फेर टिकट देबाक घोषणा देलक।

सत्यनारायण यादव ऐठाम राधामोहन रॉयक खूब आन जान भऽ गेल छन्हि मुदा पीअर बच्चा हुनकर हँसी करैए.. हर ने बड़द, ढोढ़ाय मड़र..

प्रचार, बाजा, नेता, गाड़ी। लोक सभ अकासमे फेर छोट-छोट हवाइ जहाज देखऽ लागल। नै ई जर्मनीक हवाइ जहाज नै छी। ई अपने देशक नेता सभक हवाइ जहाज छी..

लोक बिसरि गेल...
लोक नै बिसरल........

मुखदेव आ जागेश्वरकेँ लोक नै बिसरल आ बिसरियो गेल, आ तेँ पीअर बच्चा पहिल बेर चुनाव जीति गेल छल....

देखै छी की होइए आगाँ-आगाँ... रघुवरनकेँ कहैए कॉमरेड, आ कॉमरेड कहैए मुखदेवकेँ...

तेइसमकल्लोल

सात पाँच घर तन्हि सजि देल।
पिआ देसाँतर आँतर भेल।

देश स्वतंत्र भेलै आ संविधान सेहो बनि गेलै। मुदा लागू भेलै २६ जनवरी १९५० ई.सँ। सभ कहै छल.. शासन जेलक, प्रबन्ध धरमसालाक हेतै, आबऽ दियौ २६ जनवरी १९५०।

२६ जनवरी, ऐ दिनक महत्व छै, भारतक पूर्ण स्वतंत्रताक लक्ष्य एकटा राजनैतिक पार्टी घोषित केने रहै ओइ दिन तेँ, झण्डा फहराएल गेल रहै ओही दिन, तेँ।

१५ अगस्तक कोनो महत्व नै रहै, मुदा ओ तँ अंग्रेजक निर्णय छलै, आ सत्ता लेबाक हरबड़ीमे के नीक दिन आकि ऐतिहासिक दिनक बाट देखैए।

नोने मुखदेव रामकेँ कहै छलन्हि जे संविधान लागू भेलापर भारत सरकारकेँ मुखदेव रामकेँ छोड़ैए पड़तै। स्वतंत्र भारतक स्वतंत्रता सेनानीकेँ नबका कानून आतंकी कोना मानतै?

घनानन्द मुखदेव रामकेँ कहै छलन्हि जे सरकार भने हुनका अखन नै छोड़ैए, कारण असल स्वतंत्रता तँ संविधान लागू भेलाक बादे भेटतै। अखन ततेक मारापीटी भऽ रहल छै जे जेलक भीतरे रहबामे नीक रहत।

मुदा संविधान लागू भेलाक बाद देशक असल विकास हेतै।

घनानन्द, हलधर, नोने, दौलति जहाँ, भट्ट भूषण आ रुद्रमतिक संग मुखदेव राम स्वतंत्र भारतक बाँकीपुर जेलमे स्वतंत्र भारतक सूर्य देखऽ लगला। आ रघुवरन सेहो। ओहो कैदी छल, स्वतंत्रता संग्रामक कैदी।

स्वतंत्र भारतक राति, स्वतंत्र भारतक चन्द्रमा। किछुओ नै बदललै। हँ, अंग्रेज जेलरक बदलामे देशी जेलर आबि गेल रहै, आर सभ किछु ओहिना।

फेर एलै २६ जनवरी १९५० क हल्ला, जेलक बाहर फेर महात्मा गाँधी आ जमाहिरलालक गुणगान भऽ रहल छै, लगैए सरकारी स्कूलक बच्चा सभ अछि।

हँ, आब शुरू भेलैहें खेला।

हलधर कहलकन्हि जे विनोबा भावे भूदान आन्दोलन शुरु केलन्हि। भूदान, माने सभ अपना मोनसँ अपन जमीन दानमे देतै।

भट्ट भूषण टिपलक- जयप्रकाश नारायण सेहो ऐ आन्दोलनमे शामिल भेला।

दौलति जहाँ सूचना देलकन्हि- १८ अप्रैल १९५१, आंध्राक पोचमपल्ली गाममे पहिल भूमिक दान सम्पन्न भेल।

रघुवरन, एकटा कैदी, जे बेशी काल चुप रहै छल, सएह ई सूचना दौलति जहाँकेँ देने छल।

पहिने मास बीतल, फेर बर्ख आ आब छह बर्ख, संविधानबला स्वतंत्रता भेलाक बादो मुखदेव राम जेलेमे रहला। स्वतंत्र भारतक बाँकीपुर, पटना जेलमे अपन समए बिता रहल छथि मुखदेव राम। रघुवरन आन लोक सभसँ कने आर खुजए लागल छल, मुखदेवसँ तँ रघुवरन खुजल छलैहे।

मुखदेवक खिस्सा पिहानी ओ खूब सुनने छल। ओहो मुखदेवकेँ खिस्सा-पिहानी सुनबै छल। आ मुखदेवसँ जानकारी प्राप्त करै छल, आ मुखदेवकेँ जानकारी सेहो दै छल।

अंग्रेजक एलासँ पहिनहियेसँ नीलक खेती होइ छलै, एतुक्का लोक अपने खेती करै छला। बादमे तिरहुतक कलक्टर ग्रैण्ड, नीलक खेती यूरोपीय

पद्धतिसँ शुरू केलन्हि, पहिने स्थानीय पद्धतिसँ ई खेती होइ छल। अंग्रेजक पहिल नील फैक्ट्री ओना ऐसँ पहिने हाजीपुर लग सिंघिया आ लालगंजमे रहै। तिरहुत कलक्टरीमे बारह गोट यूरोपीय रहथि आ ओइमे सँ दस गोटे नीलक खेती करैत रहथि मुदा तइमे अंग्रेजक ईस्ट इण्डिया कम्पनीक एकोटा कर्मचारी नै छला। जेम्स जेंटिल, जान मिलर, फ्रांसिस रोज, ई सभ नीलक खेती प्रारम्भ केलन्हि। फ्रांसिस रोज जबर्दस्ती तिरहुतमे राजवल्लभक जागीरमे नीलक खेती शुरू केलक। १७९३ मे तिरहुतक जज नीवकेँ बाध्य भऽ डोनबल फ्रेंच आ टोमस पार्ककेँ तिरहुत छोड़बाक आदेश देबऽ पड़लै।

तिरहुत माने, माने मैथिली बजनिहारक क्षेत्र। ओइ समयमे दरभंगा आ मुजफ्फरपुर जिलाक क्षेत्रकेँ प्रशासन तिरहुत क्षेत्र कहै छल।

टोमस पार्क सरैया आ सिंघियामे बिना कोनो लाइसेंसक बसि गेल छल।

ढोलीक जेम्स आर्नल्डकेँ सेहो जज स्थानीय लोकक आचारपर ध्यान रखबाक आ तकर विरूद्ध काज नै करबाक आदेश देलन्हि, कारण जेम्स आर्नल्ड एकटा ब्राह्मणकेँ मारने रहथि, अनका जतेक मारू.....

प्रारंभिक नीलक कोठी सरायमे विलियम औरवी हण्टर, अथरमे जेम्स जेंटिल, शाहपुरमे रिचार्डसन परविस, काँटीमे अलेकजेण्डर नामेल, दयोरियामे फिंच, बनारामे ल्युयिस किक आ शुमानक छल। किछु आर कोठी दाउदपुर, ढोली आ मोतीपुरमे छल।

नीलक कारखानाक संख्या बढ़ैत गेल।

चीनीक कारबार छोड़ि सभ नीलक खेतीपर उतरि गेला। दलसिंहसराय, तिवारा आ जितवारपुरक कारखाना सभसँ पुरान नीलक कारखाना छल आ तिरहुतमे नीलक सभसँ पैघ कारबार पण्डौलमे होइ छलै। *बिहार इण्डिगो प्लांटर्स एशोसियेशनक* मुख्यालय मुजफ्फरपुरमे छलै जकरा सरकारी मान्यता भेटल रहए।

मुंगेर, भागलपुर, पूर्णियाँ, बेगूसराय, सहरसा, पूर्णियाँ, कटिहार सौँसे निलहा कोठी छल........ मंझौल, बेगूसराय, भगवानपूर, बेगमसराय, दौलतपुरमे......; सहरसामे चपराम, सिंहेश्वर, पथरघट, राघोपुर; .... पुर्णियाँ, कटिहार, प्रतापगंज, भवराहा माने भौर, मुहम्मदपुर, बेलसर, पिपराघाट, दलसिंहसराय, जितवारपुर, तिवारा, कमतौल, चितवारा, पुपरी, शाहपुरूण्डी..

.... सौँसे।

तिरहुतक निलहा यूरोपियन सैनिक टुकड़ी सेहो बनौने छला। १८५७ क विद्रोहक समयमे सैनिक संगठन करबाक अधिकारक आवेदन ओ सभ देने रहए जे बादमे ओकरा सभकेँ भेटलै आ ई सभ 'सूबा बिहार माउंटेड राइफिल्स' संस्था बनेलक जे बादमे 'बिहार लाइट हार्स' आ आर बादमे 'आक्जिलियरी फोर्स' बनि गेल।

रघुवरन बजै छथि- "जर्मनीमे एकटा सिंथेटिक सस्त नीलक आविष्कारसँ नीलक दाम २५० सँ घटि कऽ १५० टके मन भऽ गेल। हँ आ तकरा बाद नीलक बदला तमाकू आ फेरसँ कुसियारक खेती शुरू भेल। सन् १९१४ मे विश्वयुद्धक कारण जर्मनीसँ नील एनाइ बन्द भऽ गेलै, तखन फेर नीलक खेत शुरू भेल मुदा किछु दिनमे नीलक खेती समाप्त भऽ गेल।"

मौर्यकालक माइटक मुरुत पुर्णियाँ, सहरसा, दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर, बेगूसराय, हाजीपुर, मुजफ्फरपुर आ वैशालीमे भेटैए। फेर दिल्लीक तुगलक राजवंशक फिरोज तुगलक गोरखपुर, खरोसा आ तिरहुतक बाटे बंगाल दिसि गेल छला, राजविराज लग कोसी नदी टपल छला। आ पिरूजगढ़ गाम बाटे गेल छला।

राजबिराज लग उतरल बनिजार करैबला सभ।

ओइसँ पहिने घियासुद्दीन तुगलक आएल रहथि मिथिला आ

हरसिंहदेवकेँ हरेने रहथि।

हँ, वएह हरसिंहदेव जे कोसीकेँ बन्हबाक प्रयास केने रहथि, हुनकर मंत्री वीरेश्वर ओइ वीर बान्हकेँ पूरा नै कऽ सकला। बिच्चेमे ई आक्रमण भऽ गेल।

वीरेश्वरक नामपर अछि वीरपुर नग्र।

तुगलकक सेनाकेँ यएह बंजारा सभ अन्न-पानि दै छलै, किछु कमाइयो होइ छलै।

कटही गाड़ीपर ई बनिजार करैबला सभ अन्न पानिक व्यवसाय करए लागल।

मुदा फेर ई सभ गिदरमारा कोना बनि गेल? भीख मांगऽ लागल?

कोन-कोन अबाज निकालऽ लागल, जइसँ सभ बनैय्या जानवर ओकरा लग आबि जाइए आ ओ तकर शिकार कऽ लैए?

मुदा ओकर स्त्रीगण अखनो चोली, घघरा आ तइपर शीसाक जड़ी कएल वस्त्र पहिरै छथि, महरानी सन।

ऐ कोसी कमलाक इलाकामे अंग्रेज ओकर बनिजार खतम कऽ देलकै मुदा ओ बंजारा भाषा बजिते अछि।

मिथिला अंग्रेजक समयमे लोकक सोझाँ फेर आएल आ सेहो की तँ कोकटी लेल। कोकटी लेल प्रसिद्ध मिथिलाक मधुबनी अखिल भारतीय खादी कार्यालयक मुख्यालय बनल, स्वदेशी आन्दोलनक बुझू धुरी बनल।

सौराठ, परतापुर, सुखसेना आदिमे ब्राह्मण वरक सभा गाछी आ मधुबनी आ जगतपुरमे कायस्थ वरक सभागाछी लगै छल। आन जातिमे बियाह कोनो समस्या नै रहै।– बजै छथि मुखदेव।

रघुवरनकेँ ई नै बुझल छलन्हि।

सभागाछी, हँ, कन्यागत ओतऽ सँ लड़का ताकि कऽ आनै छला। वर सभ चानन-ठोप-काजर लगा कऽ तैयार रहै छला। कन्यागत, घटक आ वरागत सभ एक्केठाम, सालमे एकबेर।

संग्राम देवक जयनगर।

ताम्रपत्रमे कोलाञ्च ब्राह्मणकेँ दान देबाक बेबस्था, पञ्जी प्रबन्ध नै शुरू भेल रहै तावत आ मैथिल ब्राह्मण नै बनल छल तावत। आ सभागाछी सेहो तकर बादे शुरू भेल हेतै।

मिथिलामे सत शूद्रकेँ सोलकन्ह आ असत् शूद्रकेँ अछोप कहल जाइए।

मुखदेव राम ....

दिमागमे खेला भेल छै।
कोलाञ्च ब्राह्मण..
मैथिल ब्राह्मण..
सोलकन्ह..
अछोप..

हँ, आ बाढ़ि आ बान्हक राजनीति सेहो मिथिलामे शुरू भऽ गेल।

परिहार आ बाजपट्टी-सीतामढ़ी-क बीचमे मेयर बान्ह।

आ बेनीपट्टीक किंग्स बान्ह आ नहर। आहर आ पाइन..

शिवनगरक निलहा गोरा एन्डरसनक नामपर एन्डरसन बान्ह आ क्रॉफ्टक नामपर केरापट्टी बान्ह अछि। निलहा यूरोपीयन सभ बान्ह आ बाहा शुरू केलन्हि। बादमे बान्ह बनाबै जाइ गेल मुदा बाहा बनेनाइ बिसरि गेल, बिसरै नै गेल, ई बाहा ओकरा सभकेँ समएक, स्थानक अपव्यय बुझेलै। माने पानिक निकासी बन्द। माने आवजाही बन्द।

आवाजाही तँ सभ चीजेक बन्द भऽ गेलै।
विचारक आवाजाही, विमर्शक आवाजाही...
.... सभ बन्द।

बान्हक भीतरक लोक एकरा काटऽ चाहै छथि- बाहरक लोक नै, अही निकासीक समस्याक कारणसँ।

धनजइया, परमाने, घोड़दह, पाँची, खड़ग, तिलजुगा, खाँरो, बलान, भुतही बलान, बिहुल, गहुमा, सुपेन, कमला, जीबछ, गंडक, बुढ़ी गंडक, बागमती, धरौड़ा, अधबारा, धोकरी-धोकरा, गंगा, सोन, कोसी, मेची, कन्कै, पनार, महानन्दा, परमान, करन दिघी, बारसोइ, बरारी, कोढ़ा, कदवा, मनिहारी, कटिहार, महानन्दा, कारी कोसी, सौरा, गंगा, बरण्डी, करेह, सुगरबे। बाप रे। कतेक रास धारक नाम मोन छन्हि मुखदेव रामकेँ।

बागमती धार काठकेँ अँकुरा दै छलै, मुदा तइ बागमतीक एकटा धार १९३४ क भूकम्पमे बिखाह भऽ गेलै। मनुषक लेल काल भऽ गेलै, *मनुस्मारा* भऽ गेलै। मनुस्मारा, बागमतीक पुरान धार। १९३४ ई. क भूकम्पक बाद एकर गुणमे परिवर्तन भेल आ ई मनुस्मारा भऽ गेल।

बागमतीक पाँक आ खाद ऐ दुनूमे चुनबाक होइ छलै तँ लोक आनै छल बागमतीक पाँक। मुदा से बिखाह भऽ गेलै।

मुदा पूर्णियाँ इलाकाक पानि ऐ भूकम्पक बाद सुनै छिऐ नीक भऽ गेलै।

बड़का बान्हसँ बान्हल छलै धार, सिंचाइ भेल, तोड़लौं बान्हकेँ।

फेर छोटका बान्हसँ बान्हल रहै छलै बान्ह। फेर सिंचाइ केलौं आ फेर तोड़ि कऽ आगाँ बढ़लौं।

बाढ़िक पानि एनाइ बन्न भेल नै आकि जमीनक ताकति खतम भऽ जेतै।

अधवारा समूहक हरदी, कन्टावा, रातो, मादा, जमुने, शिकाओ,

खिरोइ, सोइली, जमुरा, बुढ़नद आ बागमती घाटीक पुरान धार, कोला धार आ लखनदेइ। ऐ सभ इलाकाक कोन गाम छुटल छै मुखदेव रामसँ?

बागमतीक पानि जखन झझाइए आ आन झझाइत धार सभमे मिज्झर होइए, तखन?

अधवारा समूह बागमतीक सहायक नदी अछि। एकर धार लेने मध्य बागमतीमे दरभंगा बागमती मिलैए आ करेह बनि जाइए, हायाघाट लग आगाँ खोरमार घाट लग ई कोसीमे मिलि जाइए।

ढेर रास गप बुझल छै मुखदेव रामकेँ।

पीअर बच्चा एक दिन टेबैत सभ गप पता करैत जेल आएल।

-मुखदेव। हमरा बूझल अछि जे आब बेसी दिन तूँ जेलमे नै रहमे। मुदा जागेश्वरक हाल की भेलै से तँ तोरा बुझले छौ। ओकर हाल तूँही कहियियहैं गाम जा कऽ। मुदा आब तोहर आ जागेश्वरक टोकना माथमे लऽ कऽ बान्ह तोड़ैबला करतब काज नै करतौ। लोक सभकेँ पैघ बान्ह चाही छलै, से बनि रहल छै। खूब पैघ। कमला-कोसी दासी बनि जेतै मुखदेव। तूँ स्थिरसँ रहिहें... गाममे.. मुदा जतेक स्थिरसँ एतऽ छेँ ततेक निश्चिन्ती गाममे तोरा नै भेटतौ। से रह किछु दिन आर। एलेक्शन अगिला साल १९५७ ई. मे छै। तावत तँ रहबे कर..

की बाजैए पीअर बच्चा? कोसी-कमलाकेँ दासी बना लेत? बड़का बान्हसँ घेरि कऽ दासी बना लेत? किछु नै बुझल छै ओकरा रघुवरन। किछु नै बूझल छै ओकरा। रघुवरन, अबेर भऽ रहल अछि। ऐ जेलमे बड्ड अबेर भऽ गेल। किछु गलत ने भऽ जाए रघुवरन। आब एतऽसँ छूटब आवश्यक अछि।– मुखदेव रघुवरनकेँ कहै छथि।

किछु दिनमे रघुवरन जेलसँ छुटि गेला आ मुखदेव राम असगर भऽ गेला।

फेर कम्यूनिस्ट पार्टीक एकटा मानव अधिकार समिति जेल आएल।

कम्यूनिस्ट पार्टीक नेता श्री रघुवरन, जे किछु दिन पहिनहिये जेलसँ छुटि कऽ गेल छला, ओहो संगमे रहथि!

जेलक कर्मचारी आ मुखदेव रामक बीचक सभ गप ओ सुनैत रहैत रहथि। मुदा बाजथि किछु नै। मुदा ओ मुखदेव रामकेँ टेब लेने रहथि। टेब लेने रहथि जे ई गब्बैय्या कम्यूनिस्ट आन्दोलनमे किछु ने किछु करत। आ से ओ मानव अधिकार समितिक संग मुखदेवकेँ छोड़ेबा लेल आबि गेला।

आब के अछि चोर-पॉकिटमार आ के अछि स्वाधीनता सेनानी से कोना पता लागत। अंग्रेजक नजरिमे तँ सभ आतंकी छल। चोर-उचक्का सभ अपनाकेँ सेनानीये कहए।

घनानन्द, हलधर, नोने, दौलति जहाँ, भट्ट भूषण आ रुद्रमतिक मुदा संग भेटलै मुखदेव रामकेँ। जेलर बाबू सेहो मदति केलखिन्ह।

आ छुटि गेला मुखदेव।

स्वतंत्र भारतक जेलसँ भारतकेँ स्वाधीनता दियाबैबलाकेँ संविधानबला स्वतंत्रता प्राप्त भेलाक छह बर्ख बाद छोड़ि देल गेल।

घनानन्द, हलधर, नोने, दौलति जहाँ, भट्ट भूषण आ रुद्रमतिसँ बिदा लेलन्हि मुखदेव। प्रसन्नता आ बिछुड़ि गेनाइ.. जेल सन जेल नै.. पाठशाला बना देने रहथि भारतक स्वतंत्र जेलकेँ मुखदेव राम। घनानन्द, हलधर, नोने, दौलति जहाँ, भट्ट भूषण आ रुद्रमति ई सभ हुनकर शिष्य रहन्हि। चोरो-उचक्का सभ स्वाधीन भऽ गेल, छुटि जाइ गेल जेलसँ। मुदा मुखदेवकेँ जाइ काल सभ वचन देलकन्हि जे आब ओ सभ मेहनतिक बाटपर चलता। मुखदेव ने हँसिते छथि आ ने अप्रसन्न होइ छथि। बाँकीपुर कैम्प जेल.. कहै छलि रुद्रमति.. बाहरक दुनियाँ बड्ड खराप। एतऽ जे पानि पीबै छी अहाँ मुखदेव ओ अछि निर्मल जल, गंगाजल। कतेक खिस्सा आ गीत सुनेलौं

मुखदेव, एकटा गीत हमरो मोन अछि... अहाँ सभक विद्यापतिक..

बड़ सुखसार पाओल तुअ तीरे। छाड़इते निकट नयन बह नीरे।

कर जोड़ि बिनमञो विमल तरङ्गे। पुन दरसन होअ पुनिमति गङ्गे।

एक अपराध छेँओब मोर जानी। परसल माए पाए तुअ पानी।

कि करब जप तप जोग धेआने। जनम सुफल भेल एकहि सनाने।

-भनइ विद्यापति समन्दञो तोही । अंत काल जनु बिसरह मोही। हँ रुद्रमति। देखल अछि बाहरक दुनियाँ। आ आब बिनु जागेश्वरक... मुदा बड्ड रास काज बाँकी अछि। युवावस्था खतम जकाँ भऽ गेल अछि। सुनै छिऐ बड़का निकहा चीज सभ आबि रहल छै गाममे। बाहरक दुनियाँ नीक छै रुद्रमति, बड्ड नीक। बसात, फूल, पात, गाछ, खेत, डबरा...

आ घेंघी...

कोन विद्यापतिक गीत गबैत हेती घेंघी... ओकर पिआ देसाँतरकेँ तँ हम गंगा तटपर छोड़ि कऽ जा रहल छिऐ। फिरंगी सभ जरा कऽ छाउर गंगामे बहा देलकै। निर्मल भऽ गेली गंगा ओ छाउर पाबि कऽ..

...निर्माल..

........स्वतंत्रताक पुजेगरीक निर्माल पाबि कऽ निर्मल भऽ गेली गंगा।

कोन विद्यापतिक गीत गबैत हेती घेंघी...

उचित बसए मोर मनमथ चोर। चेरिआ बुढ़िआ करए अगोर।

(कामदेव रूपी चोरक लेल हमर अवस्था ठीक अछि। बुढ़िया चेरी पहरा दऽ रहल छथि।)

बारह बरख अवधि कए गेल। चारि बरख तन्हि गेलाँ भेल।

(बारहम बरखक रही, तखन ओ गेला आ आब चारि बर्ख तकर भऽ गेल।)

बास चाहैत होअ पथिकहु लाज। सासु ननन्द नहि अछए समाज।

(सास आ ननदि क्यो संग नै छथि आ पथिक सेहो डेरा देबासँ लजाइ छथि।)

सात पाँच घर तन्हि सजि देल। पिआ देसाँतर आँतर भेल।

(ओ कामदेव लेल घर सजा कऽ देशान्तर चलि गेला आ हमरा सभक बीचमे अन्तर आबि गेल।)

पड़ेओस वास जोएन सत भेल। थाने थाने अवयव सबे गेल।

(पड़ोसक बास जेना सय योजनक भऽ गेल सभ सर-सम्बन्धी जतऽ ततऽ चलि गेला।)

नुकाबिअ तिमिरक सान्धि। पड़उसिनि देअए फड़की बान्धि।

(लोकक समूह अन्हारमे विलीन भऽ गेल, पड़ोसिन फाटकि बन्न कऽ लेलन्हि।)

मोरा मन हे खनहि खन भाग। गमन गोपब कत मनमथ जाग।

(हमर मोन क्षण-क्षण भागि रहल अछि। कामदेव जागि रहल छथि गमनकेँ कतेक काल धरि नुकाएब।)

चौबीसम कल्लोल

अंडीक कोरो बघंडीक बाती, केहन घर छारलैं रे पोदिनमाक नाती

रघुवरनक कॉमरेड मुखदेवकेँ लऽ कऽ निकलि जाइ छथि।

पीअर बच्चाकेँ पता चलै छन्हि, मुदा दू दिनुका बाद। गाम खबरि करै छथि, जागेश्वर तँ मरि गेल छल, फिरंगी मारलक जागेश्वरकेँ। फिरंगी, जकरा कांग्रेस भगा देने अछि। मुदा बड्ड मोश्किलसँ मुखदेवकेँ छोड़बा लेल गेल अछि।

ओना ओकरापर बड्ड पैघ आरोप सभ लागल छलै, मुदा गौँआ लेल एतबो नै करितथि पीअर बच्चा!!

लोक आशाबाटी ताकऽ लागल, मुदा मुखदेव गढ़-नारिकेल पहुँचबे नै केला।

कॉमरेड, रघुवरनक कॉमरेड गढ़ नारिकेल आ आसपासमे काज कऽ रहल छला। इलाकाक पूरा जानकारी छलन्हि हुनका लग। लोक सभ की बाजै छल, की करै छल।

लोक की बाजै छल..

अंग्रेजक सिपाही जागेश्वर आ मुखदेवकेँ पकड़ि कऽ लऽ गेलै। पीअर बच्चा पकड़बेलकै। किए पकड़बेलकै? गामक लोककेँ इनार भेटलै तैँ? आकि तकर यश राधामोहन रायकेँ भेटलै तैँ? आकि पीअर बच्चा बारूदक प्रयोगकेँ गलत मानै छल तैँ, जेना पीअर बच्चा कहैए? ओ तँ यएह कहैए जे आइ ने अहाँ सभकेँ ई बारूद नीक लागि रहल अछि, काल्हि भेने सिंघ कटबाक बदला बारूदसँ उड़ा कऽ डकैती शुरू भऽ जाएत। अरे झुट्ठे कहैए, कोनो स्वतंत्रता सेनानी तेनानी नै अछि ई जागेश्वर आ मुखदेव। आतंकी अछि

आतंकी। ई राधामोहनराय हमर अतिवृद्ध प्रपितामहक बरोबरि करऽ चाहैए। बुचिया पोखरिमे जाइठ गारबा लेल हुनका भेटल प्रतिष्ठा कएक खाढ़ीसँ ओकरा सभक आँखिमे गड़ि रहल छलै। इनार.. हुँह.. आ ई मुखदेव राम, हम्मर टोलमे रहैए, बुचिया पोखरिक मछैरिक माँछक बखरा भेटै छै आ संग देत ओइ आतंकी जागेश्वरझाक।

मुखदेवक भाए दयारामपर आफत आबि गेलै। इम्हर भाएक शोक तँ उम्हर पीअर बच्चाक अन्ट-शन्ट निर्देश आ उछन्नर सभ। मुदा घेंघीक शोकक कोनो कथे नै। नैहरबला सभ हुनका लऽ जाए चाहलन्हि मुदा ओ नै गेली। अंग्रेज लऽ गेल छन्हि। मुदा ओ ओइ जहलकेँ तोड़ि जँ आबि जाथि आ घरमे कियो नै रहए, तखन?

पीअर बच्चा अपना मोने पैघ भऽ गेल।

कांग्रेस बुलेटिन संख्या तीन पढ़ि कऽ सुना रहल छथि राधामोहन राय।

२० सितम्बर १९४२

अहिंसा हमर अस्त्र अछि!

गाँधीजीक अन्तिम संदेश।

करू वा मरू।

फिरंगी फौज लग बत्तीस फीट खधाइ पार करबाक समान रहै छै.. से चालीस फीट खदाइ कऽ दियौ जइसँ फिरंगी ओकरा पार नै कऽ सकए।

सभसँ हड़ताल करबाक अनुरोध छै मुदा डोम-मल्लिककेँ हड़ताल नै करबाक अनुरोध छै।

फिरंगी रहौ वा देशी, की अन्तर पड़ै छै डोम-मल्लिककेँ।

बहेड़ा, बेगूसराय, बेतिया, भागलपुर, दरभंगा, देवघर, ढोली, गोरौल, मधुबनी, मुजफ्फरपुर, पण्डौल, समस्तीपुर ऐ सभ ठाम कांग्रेसक खादी भण्डार छै।

विधवा सभ लेल ई काज तँ कांग्रेसे केलकै बाबू।

कुसमावतीक इन्तजाम कऽ दै छिऐ। सूत काटैत रहती चरखापर तँ मोनो बहटरल रहतन्हि। सभ मास खादी भण्डारबला एतन्हि आ तूर दऽ जेतन्हि। खेत पथारक कोन कमी छन्हि। मनखपोपर दऽ देती तँ नीक जकाँ गुजर चलतन्हि।

ऐ दछिनबारि टोलबला सभक की हेतै से नै जानि।

पटवा जगदीश माइल, कुम्हार भोला पण्डित, सत्यनारायण यादव, बासू चौपाल, चलित्तर साहू आ लड्डूलाल साहू, दयाराम, ई सभ ऐ पीअर बच्चाक चपेटमे छथि। चिन्तित छथि राधामोहन राय।

किछु दिन धरि जागेश्वर आ मुखदेव रामक संगी सभ घुरि-घुरि कऽ अबैत रहल। रातिमे आबए आ दयाराम आ कुसुमावतीसँ जागेश्वर आ मुखदेवक समाचार पूछए।

मुदा फेर आस्ते आस्ते ओहो सभ नै जानि कतऽ चलि गेल।

मरा गेल हएत वा बन्द हएत कोनो जहलमे।

इम्हर अंग्रेज सभक कोनो युद्ध चलि रहल छलै जर्मन सेनासँ।

अकासमे छोटका-छोटका हवाइ जहाज गौँआ सभकेँ देखा पड़ै छलै।

पीअर बच्चा भितरे भितरे समाजवादी पार्टीमे आबि गेल रहथि, कारण राधामोहन राय कांग्रेस पार्टीमे रहथि।

साल बीति गेल। कुसुमावती खादीक झण्डा बनेलन्हि, त्रिवार्णिक झण्डा। आ फहरा एली दयारामक घरक आ अपन घरक सोझाँ।

राधामोहन राय आ पीअर बच्चा, दुनू गोटे विरोध केलन्हि। नै, ई नै करबाक चाही।

चलू सत्यनारायण कामत तँ अपने लोक, चौकीदार छथि तँ की सभ गप दरोगाकेँ जा कऽ कहता गऽ। मौगी-मेहरिबला गप छै। बेचारी कुसुमावती, की जानि जागेश्वर आ मुखदेव जिबितो छै आकि नै।

इम्हर सरकारक घोषणा भेलै जे बारह आना एक मोनक दरसँ सरकार कुसियार कीनत। दर ओना कम रहै। पीअर बच्चा खूब कुसियारक खेती करै छलथि।

मुदा कांग्रेस किसान सभसँ आग्रह केलकै जे कुसियारक खेती बन्द कएल जाए। राधामोहन राय एकर खूब प्रचार केलन्हि।

पीअर बच्चा कहलन्हि जे ईहो प्रस्ताव राधामोहने राय पास करबेने हएत। बड्ड पटना गाम कऽ रहल अछि आइ-काल्हि। यौ, एतेक बेर गेल अछि तँ मुखदेव आ जागेश्वर कोन हालमे पटनाक बाकीपुर जेलमे छथि से ने पता लगबितए। झुट्ठो कऽ हमरा बदनाम करैए।

बिहार प्रान्तक मुस्लिम लीग समितिमे डोमी मियाँ सेहो छल। कराँची गेल। देश दू भागमे बटबाके चाही। कराँचीसँ एलाक बाद बिहार प्रान्तक मुस्लिम लीग खूब जोशमे छल। डोमी मियाँ लीगी अखबार “न्यू लाइफ”क पुरान अंक खूब मोन लगा कऽ पढ़ै छथि।

४ फरबरी १९४४ केँ डोमी मियाँ उर्दू दिवस मनेलन्हि, जैनुल ओकर विरोध केलन्हि। ई उर्दू आ हिन्दुस्तानीक झगड़ामे देशकेँ किए बाँटै छेँ, मैथिलीकेँ किए नोकसान पहुँचाबै छेँ?

राधामोहन राय खूब दिवस मना रहल छथि। आइ कतऽ जा रहल छी तँ कांग्रेसक ई दिवस छिऐ, काल्हि कतऽ जा रहल छी, तँ कांग्रेसक ओ दिवस छिऐ।

कोसी धार अपन रस्ता बदलैत रहैए, अनुग्रह नारायण सिंह ऐपर चिन्ता

देखेलन्हि। हैजा आ मलेरियासँ लड़बा लेल कांग्रेस किछु करत।

लोक खादी पहिरैये नै चाहैए। बात बुझऽ पड़तै लोककेँ।

पीअर बच्चा भितरे भितरे समाजवादी पार्टीमे रहथि। १२ अप्रैल १९४६ ई., अंग्रेज समाजवादी पार्टीपर सँ प्रतिबन्ध उठेलक आ तखन जयप्रकाश नारायणकेँ छोड़ि देल गेलन्हि। आ तखन पीअर बच्चा छाती तानि कऽ समाजवादी पार्टीमे आबि गेला।

मुदा बिहार मुस्लिम लीग पूर्णियाँ, दछिनबरिया भागलपुर, दछिनबरिया मुंगेर, जहानाबाद, आ नवादाकेँ बिहारसँ अलग कऽ मुस्लिम पाकिस्तान वा मुस्लिम राज्य बनेबाक विचार देलक। डोमी मियाँ "न्यू लाइफ" मे ई समाचार देखि दौगि कऽ लीगक सम्मेलनमे किशनगंज गेला आ राजा गजनफार अलीसँ भेँट केलन्हि। ई कोन गप भेल। ई कोन पाकिस्तान बनत जइमे गढ़ नारिकेल नै रहत। ऐसँ तँ गढ़ नारिकेलक डोमी मिआँक टोलकेँ सेहो ओइ छोटका छोटका पाकिस्तान जकाँ बना देल जाए। मुदा राजा गजनफार अलीकेँ सेहो असल पाकिस्तानक स्वरूप नै बुझल छलन्हि।

दिन बितलै, मुदा ई स्पष्ट भऽ गेल जे छोट छोट पाकिस्तान नै बनत।

डोमी मिआँ आ लछमी ततमा, गढ़ नारिकेलक इनार सभक राजमिस्त्री।

डोमी मिआँ पटनाक शिविरमे चलि जाइ छथि। एकटा शिविर बनि गेल छै मुस्लिम लोकनिक। सभ तँ जा नै सकै छथि पाकिस्तान। रस्तेमे फँसि जाइ जेता। शिविरमे शरण लेने छथि। हल्ला छै जे नोआखालीमे हिन्नूकेँ मारै गेल छै तकर बदला बिहारमे लेल जेतै। बिहारक मुस्लिम पाकिस्तान बनेबा लेल बेशी हल्ला केने रहथि। आब लिअ, बिहारक कोनो क्षेत्र पाकिस्तानमे गेबे नै कएल।

आजाद हिन्द फौजक मेजर जेनरल शाहनवाज पुनर्वासमे लागल छथि, पटनामे।

डोमी मिआँ अपन पत्नी आ बच्चाकेँ लऽ कऽ पाकिस्तान लेल बिदा भऽ जाइ छथि। जैनुलकेँ, टोलक आनो गोटेकेँ, ओ कहै छथि चलै लेल। स्वर्ग बनतै पकिस्तान। मुदा कियो तैयार नै होइए। एतऽ तँ सभटा रेहल-खेहल अछि, ओतऽ की-केहेन हएत के जानै गेल।

कुसुमावतीक लेल स्वतंत्रताक कोन अर्थ?

आ दयाराम, ओहो अपन काजमे लागल रहै छथि।

आ डोमी मिआँक स्वतंत्र देश ई नै अछि, ओ अछि पूब दिस, जतऽ सुरुज उगै छै कए घण्टा पहिने।

मुदा जैनुल कहै छथि जे ओतऽ साँझो होइत हेतै पहिने। मुदा डोमी किए मानत।

जेना-तेना गंगा पार कऽ कए पटना पहुँचैए। मुदा किए कियो *बिहार मुस्लिम लीगक* लोक कतौ भेटतै। पाइबला सभ अपन इन्तजाम केने छल सीमा पार होइ लेल। रस्तामे तरह-तरहक उकबा उठै, मारि देलकै, काटि देलकै..

आजाद हिन्द फौजक दूटा सिपाही भेट जाइ छन्हि डोमी मिआँकेँ आ लऽ जाइ छन्हि शिविरमे।

मारि देलकै, काटि देलकै..

शिविरमे जतेक लोक, ततेक तरहक गप्प।

गढ़ नारिकेलमे सभ अपने ताले नाचि रहल अछि। स्वतंत्रताक सभ अलग-अलग अर्थ लगा रहल अछि।

मुदा लछमी ततमा।

ओकर संगी डोमी मिआँ बिना ओकरासँ पुछने बहार भऽ गेलै।

ओ पटने गेल हएत।

से कोना? कनियाँ पुछै छथिन्ह।

“न्यू लाइफ” अखबार पढ़ि कहि रहल छल, जे पटनासँ सभ बेबस्था *बिहार मुस्लिम लीग* करतै। कोन भूत सबार भऽ गेलै से नै जानि।

पढ़ला लिखलासँ आर झमेला होइ छै। कियो कोनो सम्मेलनमे ओकरा कहि देलकै जे अंग्रेजी पढ़ऽ अबैए आ राजमिस्त्री छी? पाकिस्तान बनतै तँ ओकरा कलक्टर बना देतै। आ आब ओही पाकिस्तानमे कलक्टर बनै लेल बिदा भेल अछि बुरबक।

लछमी ततमा बिदा भऽ जाइ छथि पटना। रस्तामे सगरे पाकिस्तान आ शिविरक चर्चा छै। शिविरमे भेँट भऽ जाइ छन्हि डोमी मिआँ। तरह तरहक समाचार सुनलाक बाद डोमी मिआँकेँ गढ़ नारिकेल आ ओकर लोक मोन पड़ि जाइ छन्हि। इनारक पलस्तर, बौधा मल्लिकक इनारक पानि आ बंजाराक गीत रो टो टो...

डोमी मिआँक कनियाँ आ चारू बच्चा सेहो अनभुआर लोक सभकेँ देखि कऽ चौंकल रहै छथि। लछमी ततमाकेँ देखि कऽ सभ निश्चिन्त भऽ गेला। घुरबाक मोन तँ रहबे करन्हि, लाज होइ छलन्हि जे कोन मुँहे घुरि कऽ जेता। आब लछमी आबि गेल, सभ सम्हारि लेत।

लछमी ततमा घुरा कऽ आनैए डोमी मिआँकेँ।

बिहार मुस्लिम लीग भारतक स्वतंत्रता समारोहमे भाग लेबाक निर्णय लैए।

डोमी मिआँ मुस्लिम लीगक आब नामो नै सुनऽ चाहै छथि।

सभटा गप सुनि रहल छथि मुखदेव।

आ राधामोहन राय समाजवादी आ पीअर बच्चा कांग्रेसी कोना भऽ गेला?

-पीअर बच्चाक कोनो जोगार छलै। दिल्ली आकि पटनेसँ टिकट भेटि गेलै। कांग्रेसक टिकट..

आ पीअर बच्चा समाजवादीसँ कांग्रेसी भेला तँ राधामोहन कांग्रेसमे कोना रहितथि... से ओ समाजवादी भऽ गेला।

आ सत्यनारायण यादव...

कम्यूनिस्ट संगठन कमजोर छै मुदा मुइल नै छै। देखू की होइए..

अंडीक कोरो बघंडीक बाती, केहन घर छारलेँ रे पोदिनमाक नाती ...

गढ़ नारिकेल..

स्वतंत्र भारत....

पच्चीसम कल्लोल

बैसने पहर चलने कोस

हाइ रे हाइ मुखदेव। कम्यूनिस्ट पार्टी मुखदेवकेँ छोड़बेलकै। आ रघुवरन हुनका अपना भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टीक कार्यालय लऽ गेल, मदुरैमे।

मदुरै अधिवेशनक चर्च होइ छलै।

१९५३ मे भेल रहै मदुरै अधिवेशन। मदुरै घरो छै रघुवरनक। भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी मानै छल जे भारत स्वतंत्र नै भेल अछि। मुदा ऐ सम्मेलनमे भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी मानलक जे भारत स्वतंत्र विदेश नीतिक पालन कऽ रहल अछि।

मुदा अखन अछि १९५६ ई..
मुदा मदुरैमे रघुवरनक घरक सोझाँ बड़का भीड़ अछि।
बड़का-बड़का नेता सभ छथि..
भाषण चलि रहल छै....
मुखदेव रामक बेर एलै..
बजबाक बेर एलै...

बाजू मुखदेव.. स्वतंत्रतापर.. मानव अधिकारपर..
बाजू? बाजू!

-गाबि कऽ बाजू?

-गाबि कऽ बाजू।

पोलिटब्यूरोक अध्यक्षक कहबाक देरी छलै आकि शुरू भऽ गेल मुखदेव राम।

गांगोदेवी के अंगनामे अरहुल के गछिया
फर-फूल लोधल ठाढ़ि यै
..राजा
सुगा एक आएल बैसल सूगा यै अरहुल फूल गाछ हे
बैठल सूगा अरहुल फूल गाछ हे

डाढ़िपात केलक क-कचून हे
नीक नीक फूलबर सुगबा
चुनि चुनि खाय डाढ़ि पात देलक कचून हे
कहाँ गेल कियर भेल
गाम के बहेलिया
मारू सूगा के धनुष चलाइ हे
घर से एकसर मरल बहेलिया
दोसर मारल
तेसर शर सूगा उड़ि जाइ हे
घर से बहार भेलि गोसाउन
नै मारिय सुगबा के
रहत एना सुगबा
छोट भाइ हे
जौँआ आम दियौ बहेलिया
सूगा के केर कान सुगबा सुगा छिऐ छोट भाइ हे

ओह, पोलिटब्यूरोक अध्यक्ष किछु नै बुझलन्हि

रघुवरन आ ओ कॉमरेड मुदा मैथिली बुझै छला, बुझेलखिन्ह...

पोलिटब्यूरोक अध्यक्ष बुझलन्हि जे कोनो समरसताक गप कहि गेला मुखदेव राम.. बजा कऽ पहिने अर्थ पुछलन्हि द्विभाषियासँ.. आ सोझे मंचपर गरा लगा लेलन्हि मुखदेव रामकेँ.. नाम की छियन्हि..

मुखदेव...
मुदा लोक सुनलक मोहन..
आ नाम पड़ि गेलन्हि मुखदेवक.. मोहन गबैय्या...

गाम घुरि कऽ एला मोहन गबैय्या..
जोश.. लोक सभ आँखि फाड़ि कऽ देखलक

.. अंग्रेजक जहलोसँ खराप भारतक स्वतंत्र जहल..
मुदा भारत स्वतंत्र भेल कहाँ अछि?
हमर पार्टी भारतकेँ स्वतंत्र नै मानैए।

मुखदेव... नै हमर नाम अछि आब मोहना.. मोहन गब्बैय्या..

हाइ रे हइ..

आ मोहना गब्बैय्या तान देबऽ लगला, गाममे, सगरो आसपास। लोक कहै- हौ गाबै तँ पहिनहियो छलथि ई नीक, मुदा जहलसँ घुरलाक बाद तँ कोनो मोकाबिले नै छै हौ, कृष्ण भगवान वास करै छै हौ। तान जे बहराइ छै से दूर धरि जाइ छै हौ। घर द्वारसँ दूर कत्तऽ–कत्तऽ ने सभा समितिमे जाए लगला मोहन गबैय्या, भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टीक सम्मेलन सभमे, सभा सभमे।

इम्हर निर्मली, घोघरडीहा सभ ठाम भारत सेवक समाजक कार्यकर्ता सभ सम्मेलन करऽ लगला। -सत्यनारायण यादव कहै छथिन्ह।

बाढ़ि, विकास..

मुदा बाढ़िक पानि आनैए पाँक..

अबारमे अबैए माँछ...

राजेन्द्र प्रसाद पहिने बान्हक पक्षमे नै रहथि, अनुग्रह नारायण सिंह सेहो धारकेँ बान्हबाक पक्षमे नै रहथि। फेर अनचोक्के ओहो सभ आ गुलजारी लाल नन्दा, ललित नारायण मिश्र आ ई भारत सेवक समाजक कार्यकर्ता सभ, सभ बान्हक पक्षमे आबि गेला!

जड़ताकेँ मेटेता ई भारत सेवक समाजक कार्यकर्ता सभ। ई पोखरि, बाहा, माछ-मखान, चौरी, खत्ता, ई सभ हजार सालसँ बाढ़िकेँ रोकनहिये तँ अछि। अंग्रेज सभ दामोदर नदीपर बान्ह बनेलक आ ओकर विनाशलीला देखि कऽ फेरसँ ओकरा तोड़ि देलक। आ फेर कोनो धारकेँ नै बान्हलक। -सत्यनारायण यादव कहै छथिन्ह।

हँ छोट-छोट बान्ह निलहा कोठीक गोरका सभ बान्हलक।
आर.एस.किंग्सक आहर आ पाइन। बान्ह आ नहरि..

इम्हर १९५४ ई.मे कमला आ बलान पिपराघाट लग मिलि गेल आ आगाँ कमला बलान नामसँ धार बनि गेल। -सत्यनारायण यादव कहै छथिन्ह।

-बान्ह बनतै, आब बनाउ कोना बनाबै छी। कमलापर, बलानपर आकि कमला बलानपर!

बीति गेल बारह बर्ख जेलेमे।..
बैसने पहर चलने कोस..
देखी घेंघी केहेन अछि...

ओहने अछि..
बुधियारि भऽ गेल अछि।
बुझि गेल अछि जे जागेश्वर नै एतै घुरि कऽ...

बुझि गेल जे पीअर बच्चा नै छोड़बेने छै मुखदेवकेँ...
समय रुकि गेल छै।

बैसने पहर चलने कोस..
चरखा मुदा चलि रहल छै...
गुम्म भेल अछि..
गुम्म जागेश्वर आ कुसुमावती..
गुम्म अछि स्वतंत्रता...

बैसने पहर चलने कोस..
देखू की होइ छै आगाँ आगाँ...

छब्बीसमकल्लोल

एतै दुख देलैं हे माइ कोसिका एतै दुख देलैं/
आरी चढ़ि रोबै छै किसान

सत्यनारायण यादव पीअर बच्चाक फूसिक विषयमे सौँसे बाजि रहल छथि।

मुखदेव सुनि रहल छथि।

पटवा जगदीश माइल कान पाथि कऽ सभटा सुनि रहल छथि।

पटवा जगदीश माइलक बेटा महेश ।

भरि दिन कपड़ा बुनबाक लेल खड्डामे पैसैत आ तानी आ भरनी मिला कऽ कपड़ा बूनि पेटलरदीपर लपेटैत जगदीश माइल अपनामे भेर रहै छथि। औंटि कऽ निकालल बाङक बङौरा जगदीश माइलक घरक चारूकात एत्तऽ–ओत्तऽ पसरल रहैत अछि। भदैया कोकटीक बूनल वस्त्रक लेल जगदीश माइल नामी छथि। एक बेर भदैया कोकटीक जगदीश माइल द्वारा बूनल वस्त्र कीनू आ भरि जनम पहिरू। जगदीश आ महेश फिटलूम, किसान चरखा आ अमर चरखा सेहो चलबैत छथि। मुदा जगदीशक सूत घुरिआइत नै अछि, एकदम गफ्स। मुदा महेशक सूतक जोड़मे घुरछी खूबे भेटत। अढ़ाइ हाथ चाकर धोती-साड़ी धनिक आ गरीबक हिसाबे छोट-पैघ भेटैत अछि। से पाइबला लेल दसहत्थी धोती मुदा गरिबहा लेल सतहत्थी धोती। तहिना साड़ी सेहो धनिक गरीबक हिसाबे बनबै छथि जगदीश माइल। बहुआसीन लेल बिसहत्थी तँ गरिबनी लेल नओ हत्थी। हँ, मुदा नओहत्थीसँ छोट साड़ी आ सतहत्थीसँ छोट धोती कहियो नै बनेलन्हि जगदीश माइल। मुदा ई खादी-भण्डारबला सभ आब पहिने जकाँ हृदएसँ सेवा नै कऽ रहल अछि। मारते रास दलाल सभ राखि लेने अछि आ जगदीश माइलक बेटाकेँ

कोनो ठाम नोकरी करबा लेल पोल्हा रहल अछि।

देश स्वतंत्र भेलाक बाद बड़बरिया रॉय कतेको बेर प्रयास केलन्हि जे हुनकर लगान वसूली गढ़ नारिकेलमे चलैत रहए। एक-आध साल चलबो केलन्हि।

हाथी लऽ कऽ आबथि आ डेरा-डंटा राखि देथि।

मुदा ऐ हाथीकेँ खुऐबेमे लोक परेशान भऽ जाइ छल। -कहै छथि सत्यनारायण यादव।

मुदा एक बर्ख ओ सभ एला तँ गढ़ नारिकेलक दछिनबारि टोलमे डेरा-डंटा लगेलन्हि। पीअर बच्चाक बेटा धीरेन्द्र। छोटे रहै, योग मन्तर सभ सिखै छलै, दस-बारह बर्खक हेतै। हाथीकेँ की नै की कऽ देलकै, ओ हाथी बताह भऽ गेल। बड़बरिया रॉयक टेन्टमे हड़कम्प मचि गेल।

आ इम्हर छबारी सभ ढेपा फेकऽ लागल।

फेर घुरि कऽ बड़बरिया रॉय नै एला। -कहै छथि सत्यनारायण यादव।

दछिनबारि टोलेमे छथि पटवा जगदीश माइल।

बड़बरिया रॉयक भागिन..

बड़बरिया रॉयक भागिन महेशकेँ पटियाबैमे लागल रहथि।

जगदीशकेँ बुझेबो करथिन, महेशकेँ अही काज सभमे जोतने रहबै। बेचाराक जिनगी सेहो खद्धेमे पैसैत आ बहराइत खतम भऽ जेतै। महेश सेहो कान पाथने सभ गप सुनैत रहै छला। मुदा खादी भण्डारबला सभ तँ नीके काज करै छल, बड़बरिया रॉयक भागिन सेहो नीके लोक लगैत रहथि। मधुबनीमे अखिल भारतीय खादीक कोनो केन्द्रक मुख्यालय तँ रहबे करै।

मुदा आस्ते-आस्ते जखन जगदीश कखनो काल महेशकेँ खादी भण्डार

साड़ी-धोती पहुँचाबैले आकि पाइक तगेदाले पठाबऽ लगला तखन ओतऽ महेश किछु आर चीज-बौस्तु सभ देखऽ लगला। कहियो कोनो प्रदर्शनी लागल देखा पड़ि जाइन्ह तँ कहियो किछु आर, नव जमानाक नव वस्तुजात। फिरंगी सभ मिथिला चित्रकलाबला छपाइ देखि कऽ आँखि चोन्हराबै छल। धुर, ओकर आँखि ओइ छपाइकेँ देख कऽ थोड़बे चोन्हराइ छै, ऐ फिरंगी सभकेँ एतेक इजोत थोड़बे देखबाक हिस्सक रहै छै। ठंढी इलाकाक छिऐ ई सभ, से मिनट-मिनटपर आँखि घोकचेबाक आदति रहै छै एकरा सभकेँ।

बड़बरिया रॉयक भागिन महेशक ततेक ने बड़ाइ केलन्हि, ततेक ने बड़ाइ केलन्हि, जे ओ फिरंगी हिनकासँ काज सिखबा वा देखबाले हिनकर गाम जेबापर बिर्त भऽ गेल। आब बड़बरिया रॉयक भागिन पछताए लगला, बेकारे एकर एतेक बड़ाइ कऽ देलिऐ।

फिरंगीक गाम अबिते देरी जगदीशक कान ठाढ़ भऽ गेलन्हि। मुदा ओ फिरंगी बुझाइए कोनो कलाकार छल। गाममे जे देखए, जे सुनए तकरा लिखने जाइ छल, फोटो बनेने जाइ छल। पिनसिनसँ कागचपर एन-मेन। खधाइमे पैसै छल आ तानी आ भरनी मिला कऽ कपड़ा बूनि पेटलरदीपर लपेटैत छल, जगदीशकेँ ओ जतेक आदर देलकन्हि, ततेक आइ धरि हुनका कियो कहाँ देने छलन्हि। जगदीश आ महेशकेँ ओ विश्वकर्मा कहऽ लागल छल, ओकर उच्चारण किछु तेहने सन रहै- भिस्वकरमा- मुदा सुनैत-सुनैत सभ आब ओकर भाषाक उच्चारण बुझऽ लागल रहथि।

ओइ फिरंगीक कोनो संस्था चलै छलै, इटलीमे। आ ओइ इटलीबला संस्थाक एकटा शाखा छलै दिल्लीमे सेहो। ओ फिरंगी चाहै छल जे महेश आ जगदीश दुनू गोटेकेँ दिल्ली लऽ जाए आ ओतुक्का राजकाज हिनका दुनू गोटेकेँ दऽ दए। जगदीश तँ ओइ फिरंगी द्वारा देल आदरसँ अभिभूत भऽ गेल छला। महेशकेँ गामसँ बाहर पठेबाक पक्षमे ओ नै रहथि मुदा ऐ फिरंगीक

गपकेँ काटब हुनकासँ सम्भव नै रहलन्हि। आब उनटे महेश दिल्ली जाइ लेल तैयार नै छल। कोनाकेँ ओ पिताकेँ छोड़ि कऽ जाएत। महेशकेँ लागै छलै जे ओकर पिता महेशक भविष्य वा ओइ फिरंगीक अहसानक बदलामे महेशकेँ दिल्ली पठेबा लेल तैयार भेल छथि, अपना मोने नै। मुदा ओ की करितए, बड़बरिया रॉयक भागिन जगदीशकेँ आबि बुझेबो केलन्हि जे महेशकेँ लग-पास दरभंगा-मधुबनी धरि पठाउ मुदा दिल्ली नै। मुदा जगदीश कहलन्हि जे आब तँ ओ गछि लेने छथि आ अहीं ने कहै छलौं जे हम महेशकेँ किए नै बाहर जाए दै छिऐ। आ बाहर तँ बाहरे होइ छै, से ओ दरभंगा-मधुबनी हुअए वा दिल्ली।

फिरंगी तँ कोनो कलाकार छल, कलाक पारखी छल। गढ़ नारिकेलक दछिनबारि टोलक भोला पण्डित ऐठाम जाइए। चाक कोना चलैत अछि, चलैत की अछि, ई तँ बहैत अछि। चक्र सिद्धान्तपर भोला पण्डित गढ़ैत छथि। माटिक मुरुत आ मारिते रास बासन गढ़ैत छथि ओ। पृथ्वीक ब्रह्मा भोला पण्डित झोंकुआ आबामे पका कऽ बौस्तु बनबै छथि। मटकूड़, छाँछ, कौरना, कसतरा सँ लऽ कऽ अथरा आ मसल्लाक लेल लगजोड़ी धरि। लबनी, रीझम, सोबरना, भरुका, फुच्ची, तेलहण्डा, खोला, सिरहर, पुरहर, लगहर, अहिबातक पातिल, दीयठि, बौरकी सभ एकपर सँ एक। भोला पण्डितक हाथ लगला सन्ता कोनो बासन ने नोनिया कऽ झरत आ ने टुनकाह हएत।

गढ़ नारिकेलक दछिनबारि टोलक सत्यनारायण यादवक कटियामे दूध दुहनाइसँ लऽ कऽ कुढ़ियामे दूध रखनाइ धरिक सभ लीला ओ फिरंगी देखैए। पाओ भरिक फुच्ची, तीन पाओक तिनपइ आ सेर भरिक चपइ, सभ अपन जरूरतिक हिसाबसँ दूध लऽ जाइ छथि, आ ओ फिरंगी सभटा वर्णन लिखि रहल अछि।

गढ़ नारिकेलक दछिनबारि टोलक खतबे बासू चौपालक भार आ माँछ उघबासँ लऽ कऽ कहार बनि महफा उघबसँ रतुका रामलीलामे रावण बननाइ धरिक सभटा खिस्सा..

गढ़ नारिकेलक दछिनबारि टोलक चलित्तर साहू आ लड्डूलाल साहू, हलुआइ। तरौनीपर खोंइचा राखि मिठाइ बेचबासँ लऽ कऽ सीराकेँ गर्म करबाक क्रममे निकलैत फेनयुक्त काही मैलकेँ अलग केनाइ धरिक सभटा काज करै छथि। चिक्कसमे तेल माने मैन दऽ सानबासँ लऽ कऽ सीरामे डुबा कऽ पागब धरि सभ काजमे चलित्तरक जोड़ा नै। चाशनी कड़ा भेने मिठाइ रोड़ाह भऽ जाइए, लड्डूलालक संग ई बेशीकाल होइए। मुदा पाँच मधुरक पँचमेर लड्डूलाल बेशी बेचि लै छथि। मुदा चलित्तर जे चीनीक लड्डू माने सिरनीमे तिल फेँट कऽ गुलाब रेउड़ी बनबै छथि तकर जोड़ा नै। जमीनपर कोड़ि कऽ भमकौला चूल्हि बनबै छथि आ मधुर थकिया कऽ रद्दा लगबै छथि।

गढ़ नारिकेलक दछिनबारि टोलक मुखदेव राम माने मोहन गबैय्या। मुइल मालक चाम माने मुरदारी लेल चमरखल्ला धरि सङरैठापर टाङि कऽ मालकेँ आनै छथि मुखदेव, फेर चाम खलै छथि। चामकेँ छूरीसँ बनछोलै छथि। मोम राखै छथि तिजमन माने बकरीक सिंघमे।

सुग्गरक चमड़ासँ बनैबला जुत्ता पहीरि कऽ किछु वैदिक यज्ञक क्रिया कएल जाइ छलै- मोहन गबैय्याकेँ ओ फिरंगी कहै छन्हि।

गढ़ नारिकेलक दछिनवरिया टोलक मोहन गबैय्यासँ सेहो भेँट होइ छन्हि ओइ फिरंगीकँ!

पुरना गीत नै, बनौआ गीत गाबै छथि मोहन गबैय्या।

गढ़ नारिकेलक शिवनारायण सूरीक दोकान; कलवार सीताराम चौधरी आ शिवनाथक गोला, लछमी दासक तूर आ सूतक काज; सत्यनारायण किओटक चौकीदारी; रामदेव भण्डारीक भानस; कपिलेश्वर राउत आ रामावतार राउतक पानक बरेब; बौधा मलिकक सुग्गर; दुखन महतोक सवा कट्ठाक तरकारीक बारी; मोहम्मद शमशूलक तरकारीक व्यवसाय; अशोक ठाकुरक टुमटाम गहना; रामचन्द्र साव आ बौकू सावक कोल्हु; जीवछ मुखियाक पानिक विरुद्ध उठल हवासँ उठल नगदामे हेलब; मुसहर बिचकुन सदायक बिसाँढ़ खा कऽ जिअब; भगवानदत्त मण्डल आ अधिकलाल मण्डलक कृषि सम्बन्धी चमत्कार; कोरैल, बुधन आ डोमी साफीक कान्हपर लटकाओल बकुचा आ लतमारापर ठाढ़ भऽ पाटपर कपड़ा पटकब; जयराम, लक्ष्मी आ माले ठाकुरक नहरनीसँ कारी खून निकालब; जोगिन्दर ठाकुरक हर पालो; सभटा जानकारी लेलक ओ फिरंगी।

गढ़ नारिकेलक दछिनबारि टोलक मोहन गबैय्याक गीत आ खिस्सा सेहो लिखै अछि फिरंगी..

कोसीक भित्तापर रानू सरदार अपन अस्सी मोनक कोदारि लऽ कऽ जकर बेंट बिरासी मोनक छै, चलि रहल अछि। चलि रहल अछि आगाँ आगाँ रानू सरदार आ कोसी लेल रस्ता बनबैए।

गाममे कटनियाँ लगैए आ खेतमे भरना।

धरमपुर कऽ तारलैं माइ कोसिका कबखंड कैं बोरले
सिंहेश्वर थान कइले पयान
एतै दुख देलैं हे माइ कोसिका एतै दुख देलैं
आरी चढ़ि रोबै छै किसान
अखनी देबौ मैया पोसल पठिया
चढ़तै अगहन दूध घर हे
बखसुमे बखसु माइ कोसिका करै छी गोहार हे

भारत सेवक समाज जड़ताकेँ मेटाओत?

सभ नेता इंजीनियर सभ हो-हल्ला कऽ रहल छल।

पूना मे कोनो प्रयोगशाला छै। कतेक पानि एतै, कतेक पाँक एतै सभटा ओ जानि लैए?

भारतक सभ धारकेँ जोड़ि देत सरकार?

मुदा पाइ छैहे नै सरकार लग।

नेपालक सप्तरी जिलामे सेहो ढेर नोकसानी भेल छै।

हिमालयमे बान्ह बनतै, तखन तँ आर झमेला हेतै।

कोसीक पूब आ पच्छिम दिस नेपालसँ शुरू भऽ कऽ भारतमे बान्ह बनलै। मुदा कतौ जा कऽ तँ ई खतम भेलै, तकर बादक इलाका? आ दुनू बान्हक बीचक इलाकाक हाल? भारतमे भीमनगर बराज बनलासँ पुबरिया कोसी नहरि आ बीरपुर लग नेपालमे बराज बनलासँ पछबरिया कोसी नहरिक रूपरेखा बनलै। नेपालोमे कतेक गामक जमीन लेल गेलै। ओतुक्का जमीनक दाम भारत सरकार बेसी लगेलकै मुदा इन्द्रकान्त मिश्रक जमीनक दाम कम लगेलकै। आ से इन्द्रकान्त मिश्र बुझै छै जे राधामोहन रायक किरदानी छै।

कांग्रेसी एम.एल.ए. माने पीअरे बच्चाक सरकार।

कोनो बात नै, ई राधामोहन रॉय आ सत्यनारायण यादव मुखदेव आ जागेश्वरक कथाक प्रयोग हुनका विरुद्ध कऽ रहल छन्हि।

छी तँ ई राधामोहन कांग्रेसीये।

के विरोध करतै? सभ चीजक जवाब लेने ठाढ़ छै पूनाक प्रयोगशाला!

मुदा मोहन गबैय्याक ज्ञानसँ बेशी ज्ञान छै ऐ पूना प्रयोगशालाकेँ?

जोमक नाह सभसँ नीक।

जिलेबी आ शीसोक नाह सेहो नीके होइए।

हथियामे बर्खा भेने बाढ़ि अबै छै, अरदरामे पानि भेने कलकतिया आम पाकै छै। चहटी, आइसबर्ग जकाँ, बलान द्वारा आनल माटिसँ निर्मित होइए, कखनो डुमल गाछसँ ई सटि जाइए, कखनो ओनाहिते रहैए, कखनो देखा पड़ैए, कखनो नै। वेगसँ अबैत धार ऐसँ टकरा कऽ आर वेग पकड़ि लैए।

नाह नै भेटलापर बाँस सभकेँ बान्हि कऽ बेड़, आ केराक थम्ह सभकेँ बान्हि कऽ गेरुलिया बना कऽ धारपार कएल जाइ छै।

हौ, ई बलानक पानि मटिहौन छै, बर्खा भेलैहेँ ऊपर दिस।

केसरिया गेरुआ रंग छै बलानक पानिक, तँ बर्फ पिघलि रहल छै हौ।

साओन-भादवक इजोरिया पखमे नाहपर झिल्हरि खेलाइत लोक..

काटबै सामर हे सीकिया बेढ़बै गेरूलिया
सासु जइबै हे नैहरबा ओइ चढ़ि ना
एक चेहरि खेबलैं रे मलहा दुइ चेहरि खेबलैं
तेसर चेहरि डूबलूँ भइया ते-ने-रे बहिनियाँ
बाबा जे सुनतै रे मलहा धरती लोटि रे जएतै
भइया जे सुनतै रे मलहा जाल बाँस रे खिरतै
आमा जे सुनतै रे मलहा कोसी धँसि रे मरतै
भौजो जे सुनतै रे मलहा भरि मुँह रे हँसतै।
आब तँ जिनगी झिल्हरि खेला रहल छै।

सीता अबै छथि, कमला धार पार करऽ चाहै छथि। मुदा मलाह कहै

छन्हि जे हमरा इनाम चाही, आ इनामो की तँ सीताक ननदि।

सीता कहै छथिन्ह, देलौं, भोग कर, युग-युग धरि।

सीताक ननदि रहन्हि यौ?

हौ, मिथिला नैहर छियन्हि सीता मैय्याक। मलाह एतबो हँसी ठट्ठा नै करत।

गोढ़ि-मलाहक कमला पूजा। अंगनामे धूजा। देहपर कमला। पीड़ीपर पानक पात।

मिथिलामे सभ मिलि जुलि कऽ रहैए।

तखन ई कहबी किए छै यौ?

भाइ भैयारी महिसी सिंघ
जखने जन्मल तखने भीन

आ ईहो कहबी किए छै?

दियाद आ राहड़िक दालि
जत्ते गलए तत्ते नीक

हौ, जागेश्वर आ हमरा अंग्रेज पकड़ि कऽ लऽ जाए सकितै?

अपने लोकक चलते ने हौ?

कम्मे मुदा तेहेन लोक रहिते ने छै हौ, सभ कालमे आ सभ ठाम।

....

कांग्रेस १९५७ ई. क चुनावमे पीअर बच्चाकें टिकट नै देतै। मुखदेवकें बेशी दिन जेलमे रखबा लेल सरकार दुखी छलै, माफी मंगने छलै। अखबारमे कांग्रेसक मुख्यमंत्री कहि देने छलै।

पीअर बच्चाक बड़का बेटा इन्द्रकान्त मिश्र तँ नै मुदा पीअर बच्चाक छोटका बेटा धीरेन्द्र सहमेलू अछि। बरबड़िया रॉयक हाथीकेँ वएह भगेने रहै। समाजसँ लागि छै धीरेन्द्रकेँ। मुदा घरक लोक ओकरा बुरबक कहै छै। -कहै छथि सत्यनारायण यादव।

सत्ताइसम कल्लोल

उत्तर दक्खिनसँ एलै नटनियाँ रे जान/
जान बैसि गेलै चनना बिरिछिया रे जान

कोसीक उत्पात.. हँ मुखदेवक जेलसँ बाहर एबा धरि कोसीक बान्ह छेक करबाक गप शुरू भऽ गेलै..

धार सभक उत्पात आकि कोसी बान्हक उत्पात? पालघाट अधिवेशनक एक साल पहिने सभ फसिल खतम भऽ गेल छलै। इलाकाक धान-पान खतम।

१९५६ ई. मे पालघाट अधिवेशन भेलै भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टीक।

बड़का बहस भेलै। कम्यूनिस्ट पार्टी भारतक लोकतंत्रक एकटा पार्टी बनि गेल अछि, फेर कोन अन्तर रहलै ऐ पार्टीमे आ दोसर पार्टीमे। ओकर विचारधारा तँ वएह भऽ गेलै। मुदा बहस मोड़ लेलक, मोहन गबैय्याक समरसता बला गीत काज केलकै। आ

पार्टी मानि लेलक जे भारत १९४७ ई. मे स्वतंत्र भऽ गेल छल। १५ अगस्त १९४७ क दस साल बाद पार्टी मानि लेलक जे भारत दस साल पहिने स्वतंत्र भऽ गेल!

मोहन गबैय्या, हाइ रे हइ।

घुरि एला मोहन गबैय्या गाम।

कांग्रेस पीअर बच्चाकेँ १९५७ ई. मे बिहार विधान सभाक एम.एल.ए. बनबा लेल टिकट नै देलकै। राधामोहन रॉय कांग्रेस घुरि गेला आ पीअर बच्चा राजनीतिसँ संन्यास लऽ लेलन्हि।

सत्यनारायण यादव समाजवादी पार्टीसँ टिकट लऽ कऽ ठाढ़ भेला।

आ जीति गेला।

आ मोहन गबैय्या १९५८ मे अमृतसर गेला। अधिवेशन शान्तिपूर्ण भेलै कम्यूनिस्ट पार्टीक; आ संसदीय रस्ता चुनलक समाजवाद लेल ई पार्टी।

देखा चाही की होइ छै आगाँ आगाँ।

घुरती काल रघुवरन आ मोहन गबैय्या कैँ भेँट होइ छन्हि ढेर रास लोकसँ, ट्रेनमे बसमे। माने रस्तामे।

-सभ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्रमे दीप्ति भरि दियौ आ ओही दीप्तिसँ हमरो भरि दिअ। यजुर्वेदमे छै।

-मुदा लोकक संस्कृतिक विषयमे तँ सेहो विवरण हेतै।– पुछै छथि मोहन गबैय्या।

-ऋगवेदमे गीत, वाद्य आ नृत्यकलाक वर्णन अछि। सामूहिक नृत्यसँ उठैबला गर्दाक वर्णन ऋगवेदमे अछि। ऋगवेदमे लोकनृत्यक उल्लेख सेहो अछि। महाव्रत नाम्ना सोमयागमे दासी सभक सामूहिक नृत्यमे तीनसँ छह टा नर्तकी होइ छली। ऋगवेदक शांखायन ब्राह्मणक अनुसार गीत, वाद्य आ नृत्य ऐ तीनटा विधाक उल्लेख अछि। अहीमे वर्णित अछि जे विवाहमे चारिसँ आठ टा सोहागवतीकैँ सुरा पिआओल जाइ छल आ चतुर्वार नृत्यक लेल प्रेरित कएल जाइ छल। वैदिक साहित्यमे वधु द्वारा विवाह विधिमे गायनक उल्लेख अछि। ऐतरेय ब्राह्मणमे नृत्य, गीत आ वादनक गणना दैवी शिल्पमे अछि, जइसँ यजमानक व्यक्तित्व सुसंस्कृत भऽ जाइ छलै। अथर्ववेदमे वसा नाम्ना देवताक नृत्यक वर्णन अछि, ऋक्, साम आ गाथासँ सम्बन्धित।

-गाथासँ।

-हँ गाथासँ, नाराशंसीसँ। सोमपानक ऐ नृत्यमे प्रयोग होइ छल आ गन्धर्व सेहो ऐमे सहभागी होइ छला। अथर्ववेदमे गीत, वाद्य आ नृत्यक सम्मिलित ध्वनिक प्रयोग होइ छल। वैदिक कालमे साम संगीतक अलाबे गाथा आ नाराशंसी नाम्ना लौकिक कथा-संगीतक प्रयोग सेहो होइ छल। सीमन्तोन्नयन विधिमे पति वीणावादककेँ सोमदेवक सम्बन्धमे वादनयुक्त गान लेल प्रेरित करैत अछि। नवोदित उषाक स्वर्णिम आभाकेँ देखि कऽ वैदिक ऋषिकेँ सजल-धजल ऋषिक अनुभव होइ छन्हि।

सभटा नटकिया सभ।

-रघुवरन, वैदिक साहित्यमे नाटकक कोनो चर्चा छै?

-चर्चा छै। यजुर्वेदमे नाटकक किछु पारिभाषिक शब्द जेना सूत, शैलूष, चित्रकारिणीक प्रयोगसँ लगैए जे नाट्यमंडपक कल्पना छल।

-अच्छा। मुदा ऐसँ लगैए जे वेदमे सामान्य जन उपयोगी आ निरपेक्ष साहित्य छल।

-हँ, से तँ छल।

-फेर कट्टरता कतऽसँ आएल। वेद प्रमाण, वेद प्रमाण किए करैत रहै छलथि इन्द्रकान्त मिश्रक पिता पीअर बच्चा। जखने कोनो गप उठबै छी तँ वेदं प्रमाणम्!!

-मन्त्रार्थमे महर्षि पतंजलिक वैज्ञानिक मन्तव्य “यच्छब्द आह तदस्माकं प्रमाणम्” अर्थात् जे शब्द आकि मंत्रक पद कहैए, सएह हमरा हेतु प्रमाण अछि- एकर अर्थ बादमे जा कऽ वेदे प्रमाण अछि- से कोना भेल से नै जानि।

रघुवरन चुप भऽ अकास दिस ताकऽ लगै छथि।

सभटा नटकिया सभ।

रघुवरन, हमरा ई बता दिअ जे वंचितक संग सभ किए छोड़ि देलक, जयप्रकाश नारायण बिड़लाक संगी बनि गेला आ मीनू मसानी टाटाक। श्रीकृष्ण सिंह बिहारक राजा बनि गेला आ अचुत् पटवर्धन बनारसमे स्कूलक मालिक?

सभटा नटकिया सभ।

रघुवरन चुप भऽ अकास दिस ताकऽ लगै छथि।

-हँ संसद देखलिऐ दिल्लीमे, पटनाक विधानसभा ओकर पासंगो नै छै। एम.एल.ए. साहेब जे पेरोलपर जेलसँ छुटि कऽ आएल छथि, सेहो अभियन्ता लोकनिकेँ यएह गप कहि रहल छथि। ट्रेनेमे।

-रघुवरन जी, पृथ्वी पश्चिमसँ पूर्वक अलाबे सूर्यक चारूकात सेहो घुमैत अछि जइ कारण विभिन्न ऋतुमे विभिन्न तरेगणक मण्डल देखल जाइत अछि। ई हम सभ अकासकेँ देखि कऽ बुझै छी। मुदा पोथी पढ़ि कऽ छाहकेँ, ग्रहणकेँ पवित्र-अपवित्रक खेल कोना बना देल गेल? ओइ पोथीकेँ पढ़ि कऽ की फाएदा?

-कोनो फाएदा नै। किछु कट्टर तत्त्वक कारण शिक्षामे दोष आएल।

एकटा स्टेशनपर किछु फैक्ट्रीक मजदूर सभ चढ़ल।

-फैक्ट्रीमे निअम छै कान जाम करैबला मशीन धऽ कऽ जाउ।

-नेता जी तूर-तेल यौ। -मोहन बिच्चेमे टोकारा दै छथि।

-तूर नै यौ, ई निकहा होइ छै। सभ शानसँ रहै छै। ड्रेसबला स्कूलमे कहियो नै पढ़ने छै एको गोटे, मुदा ड्रेस पहीर कऽ नोकरी करै छै यौ।

-अच्छा।

एकटा स्टेशनपर घुमन्तु सभ चढ़ैए।

-गिदरमाराक अलग भाषा होइ छै हौ, लोक सभ ओकरा सभकेँ गिदरमारा आ मगहिया डोम कहै छै मुदा ओ सभ अपनाकेँ बंजारा कहैए, अपन भाषाकेँ बंजारा भाषा कहैए। मुँहपर गिदरमारा कहि कऽ देखियौ, झगड़े कऽ लेत।

.. निर्मल पाइ रो टो टो...

मोन पड़ि गेलन्हि मोहनकेँ, सुखेँतक बंजाराक गीत, ओ गीत जे ओ सभ गओने रहथि गढ़ नारिकेलक इनार सभक उद्घाटन काल। पहिने बनिजार लेल यएह सभ टा अबै जाइ छला।

सुखेँतसँ ओ सभ आएल रहथि गढ़ नारिकेल।

झंझारपुर बजारक मारवाड़ी सभ बंजारा सभसँ ओकर भाषामे बाजि लैए। दुनू समाज राजस्थानसँ मिथिला आएल। मारवाड़ी सभसँ धनीक भऽ गेल आ बंजारा सभसँ गरीब भऽ गेल आ बनिजार छोड़ि गिदरमारा बनि गेल, से केना?

पुरुख सभ सामान्य मुदा स्त्रीगण सभ बड्ड लहक-चहक चोली, घघरा, गहना सभ पहिरै जाइए।

जेना मारवाड़ी सभ अपन भाषा बाजैए, सतार सभ संथाली बाजैए, तहिना ई बंजारा सभ अपन भाषा बजैए।

मुदा ई बंजारा सभ अलग होइए। सिमरा लग बड़का टेण्टबला बस्ती छै बंजारा सभक, सुखेंतमे। बनैए उजरैए।

जखन ओ सभ अबै छलथि तँ कुकुर, बड़का कानबला बकड़ी- बागड़ि, मुर्गा, घोड़ा, गदहा; बड़का-बड़का हँसिया आ लग्गा; चुल्हा बनबैले ईँटा, बड़का टोपिया, सभटा अनैत रहथि। खीर जे बनबै छै ओ सभ से अद्भुते।

घेंघीक पितियौत दियादनीक गोदना गोदने रहए नट्टिन सभ। नट्टिन सभ

सातगो नौ गो सुइया बान्हि कऽ बच्चाक माएक दूध गारि कऽ ओइमे कारी मिला कऽ गोदना गोदै छलि, बड्ड दुखाइ..

खोधपाड़नी गीत गबैत सौंसे गोधऽ लगलै..

उत्तर दक्खिनसँ एलै नटनियाँ रे जान
जान बैसि गेलै चनना बिरिछिया रे जान
झिहरि झिहरि वसय शीतल बतसिया रे जान
जान घरसँ बहार भेली सुन्दरि पुतोहुआ रे जान
निहुरि निहुरि झारय नामी नामी केशिया रे जान
जान पड़ि गेल नटिन मुख दिठिया रे जान
मैया बैसल सासु बरैतिन रे जान
जान दिअ सासु कोसल कौड़िया रे जान
हर फार जोइत अएला प्रभु पहसल अंगनमा रे जान
जान बैसि गेल देहरि झमाय रे जान
सभकेँ तिरिअबा अमा देखिऐ अंगनमा रे जान
जान हमर तिरिया कतए चलि गेली रे जान
तोहर तिरिया गोदना विरोगल रे जान
जान चलि गेल नटवा सिरिकिया रे जान
पीसू अम्मा झिलमिल सतुआ रे जान
जान हम जाएब धनिक उदेसबा रे जान
एक कोस गेला प्रभु दोसर कोस गेला रे जान
जान तेसर कोस नटवा सिरिकिया रे जान
कतए गेली किए भेली नटिनी रे जान
जान सुन्दरि जोगे गोदना गोदह रे जान
गोदना गोदाइ भैया किए देब दनमा रे जान
जान गोदना गोदाइ छोट सरहोजिये रे जान

हे एकटा गीतमे नै ने गोधऽ देलक, बड्ड दुलारू.., उचिते किने..

आ दोसर गीत शुरू भऽ गेलै...

अङना बहारैत सुनरी पुतहुआ रे जान
पड़ि गेलै नटनिये मुख दीठि रे जान
जान कहाँ गेलै किए गेलै सासु बरैतिनि रे जान
दियौ सासु गोदनाक कौड़िया रे जान
जान हम नै जनियौ पुतहु गोदनीक कौड़िया रे जान
पुछू गऽ अपन गोतिनियाँ रे जान
जान कहाँ गेली किए गेली गोतनी बरैतिन रे जान
दियौ गोतनी गोदनाक कौड़िया रे जान
जान हम नै जनियौ गोतनी गोदनाक रे जान
कौड़िया पुछ गे अपन भैंसुरे रे जान
जान हम कोना पुछबै गोतनी भैंसुरे बरैतवा रे जान
कहाँ गेली किए भेली छोटकी ननदिया रे जान
जान पुछू गे छोटका भैया गोदनाक कौड़िया रे जान
हम नै जनियौ भौजी गोदनाक कौड़िया रे जान
जान अपनहि पुछि लेहु अपन भतरवा रे जान
हम कोना पुछब अपन भतरवा रे जान
जान हमहूँ जेबै ननदी नटिनियेक सधवा रे जान
कहाँ गेलैं किए भेलैं छोटका दियरबा रे जान
जान तोरो छाती जाइ छौ नटिनीक उदेशवा रे जान
हम नै जनलियौ भौजी तोहूँ सभ हेबैं मुद्दैया रे जान
जान कहाँ गेलैं किए गेलैं हमरो धनियाँ रे जान
लियौ ओहे धनि गोदनाक कौड़िया रे जान
जान जनि जैयो नटिनी के देशवा रे जान

बंजारा सभ ऐ विश्वकेँ नीक आ खराप द्वारा संचालित मानै छथि।

बंजारा सभ अपनामे बंजारा भाषामे आ मोहनसँ मैथिलीमे गप्प करैए।

मोहन बंजारा सभक बोली बाजऽ चाहै छथि, मुदा हुनकर उच्चारण सुनि कऽ बंजारा सभ हँसऽ लगैए।

गढ़नारिकेलमे ई सभ अबिते रहै छथि। टेण्ट खसबै छलथि पहिने ओ सभ, सिमरा लग सुखैंतमे टेण्टबला बस्ती रहै। बनै उजरै।

नग्र सभमे कंगला-भिखमंगाक मोहल्ला बसि गेल छै, ऐ मोहल्लामे जाति-पाति नै छै।

सतार सभ मधेपुरसँ पूब दक्षिण दुआलकक दक्खिन करहरामे आ टढ़ियामे रहैए। तीर-धनुषमे माहिर संथाल सभ।

संथाल वा सतार। ओ सभ कोना आबि गेल मिथिला। सुनू खिस्सा..

ओ सभ दू दिस चारबला घर बंगला ओड़ाक, आ चारि दिस चारबला घर चातोम ओड़ाक मे रहै छथि।

हिहिड़ी-पिपड़ी हुनकर सभक जनक आ चाय-चम्पा जन्म स्थल छियन्हि।

एक बेर बाँसकरिल अनबाले किछु संथाल युवती गेली, ओइमे सँ एकटा कुमारि गढुआरि छली, ओतै एकटा बौआक जन्म भेलै, ओकरा ओ पातसँ झाँपि देलन्हि।

राजा किस्कू जखन शिकार लेल गेल तँ ओइ बच्चाकेँ आनि लेलक आ नाम राखलक माधो सिंह।

आब ओ बच्चा पैघ भेल तँ ओकरासँ बियाह के करत?

बिटलाहा माने जातिसँ बहिष्कृत अछि ओ?

ओ बाजल- जँ कियो अपन बेटी नै देत तँ ओ अपनहियेसँ ककरोसँ बियाह कऽ लेत।

ओकरा डरे संथाल सभ विभिन्न दिशामे भागि गेला।

आ मिथिलोमे एला।
आ फेर स्त्री-पुरुख वसन्त एलापर वएह गीत फेरसँ गाबऽ लागै गेला।

स्त्री:

गुलाब फुला गेल

चम्पा फुला गेल

पवन माँति रहल

मुदा तूँ कोन सुगन्ध सूंघि कऽ माँतल छँ रे

पुरुष:

जकर सुगन्धिक समुद्रमे हमर जिनगी हेलि रहल अछि

ओ हमर रातिक रानी पूछि रहल छथि- ई सुगन्ध ककर?

मोन डरा जाइत अछि जे अदहा रातिक बाद रातिक रानी सन झहड़ि तँ नै जाएब?

स्त्री:

प्रीत कऽ कए बताह नै बनू

प्रीत अछि नागफेनीक बिछौन

अट्ठाइसम कल्लोल

कटबै सोना सुतरिया बिनबै झुमरि जाल हे

सौँसे दरारि फाटल, बरखाक कोनो आस नै।

गढ़ नारिकेलक मुसहर बिचकुन सदाय। पोखरि सुखाएल, थलथल करैत दलदली भूमिसँ बिसाँढ़ कोरि-कोरि कऽ मुसहर सभ खाइ छथि। अकालमे जखन सभटा पोखरि, गड़खै सुखा जाइए तखनो ई डकही पोखरि मुदा नै सुखाइए। भारतक महिला प्रधानमंत्री आएल रहथि तँ हुनका देखेने रहन्हि सभ, जे कोना एतऽसँ बिसाँढ़ कोड़ि कऽ मुसहर सभ खाइ छथि आ ऐ अकालोमे जीवित छथि।

इम्हर धार सभक ऊपरमे बान्ह बनि रहल छल आ बाढ़िक नव रूप सोझाँमे आबि रहल छल, तीनिये साल पहिने तँ...

बड़का कोला, धूरपर, भोरहा आ पुर्णाहा बाधक अतिरिक्त आइ काल्हि किछु गोटे छहरक ढलानपर सीढ़ी बना कऽ सेहो खेती-बारी शुरु कऽ देने छथि, सीढ़ी बना कऽ खेती केनिहारक विषयमे भूगोलक पोथीमे भलहि ई पहाड़पर मात्र देखाएल गेल अछि, एतऽ धारपर बनाएल ऐ कृत्रिम पहाड़ सभपर सेहो ऐ तरहक खेती शुरू भेल अछि !

आ आब ई अकाल। लिअ अहाँ बान्ह-छहर बनाउ, बर्खामे धारकेँ रोकबा लेल आ इम्हर बर्खे बन्न भऽ जाएत। पछिले साल जमाहिरलालक बेटी अमेरिका गेल रहथि, ओत्तौ अपने देश जकाँ वोट-तोट होइ छै आ सरकार चुनल जाइ छै। मुदा रूस तँ सुनै छिऐ गरिबहा लेल बड्ड नीक देश छै। तखन जमाहिरलालक बेटी किए गेली अमेरिका? आ जमाहिरलालक बेटी रूस सेहो गेली, अमेरिकासँ घुरलाक किछु दिनुका बाद। बादमे ओ वियतनामपर बम खसेबा लेल अमेरिकाक विरोध सेहो केलन्हि। अमेरिका

भारतक वियतनाम नीतिपर तामसमे छल आ भारतकेँ अन्नक छोट-छोट खेप पठा कऽ अपमानित करै छल। तैँ लिअ ई अकाल आबि गेल। धुर, तँ तइसँ पहिने जे बाढ़ि आएल रहै से... तैयो अकालसँ बाबू बाढ़िये नीक... हँ अखन अकाल छै तेँ एना लगैए... बाढ़ि आएत तखन अकाले नीक लागत।

कथी बिनु आ हे कोसिका मुँहमा मलिन भेल
कथी हे बिनु गुरमै शरीर
पान बिनु आ हो सेवक मुँहमा मलिन भेलै
मधुर हो बिनु गुरमै शरीर
पान हो खेलियै सेवक मुँहमा रंगेलियै हो
लड्डु जे देलै रे मलहा हिया जुड़ाएल
पाठी हो बिनु डोलैए शरीर
कर जोड़ि मिनती करै छी मैया कोसिका
देबौ गे मैया पाठी कऽ भोगार
बेरिया पड़लै गे मैया सुनहि गोहारि
गरू बेर होहि नै सहाय

ऐ सभ स्थितिमे चुनाव भेल आ कोनो राजनैतिक दलकेँ अपना बलपर राज्य करबाक अवसर नै भेटलै। सभ मिलि कऽ सरकार बनेलक आ परीक्षामे चोरिक, प्रशासनमे बेइमानीक प्रारम्भ भेल।

सन् १९६७

तेसर बर्ख भेल, बर्खा नहियेक बराबर। गर्जन-तर्जन भेल मुदा लगैए मेघमे पानि रहबे नै करै। इम्हर खेती खतम भेल आ उम्हर महगीकेँ नै पुछू। १९६२ ई. मे भारत चीनसँ हारल आ १९६५ ई. मे पकिस्तानसँ तेना भऽ कऽ नै जीतल।

मुदा ई तीन बर्ख... बाढ़िमे दहेलाक बादक रौदी।
कमला-कमला सुनै छलौं कमला बड़ दूर हेऽऽ

गहबर पहसैत कमला भए गेल कसहूर हे,
अन देलौं धन देलौं लक्ष्मी बहुत हे
एकेटा जे माइ बिनु लागै यऽ सुन हे।

कोयल-कोयला सुनै छलौं कोयला बड़ी दूर हेऽऽ
गोबर पहसैते कोयला भऽ गेल मसहूर हे
अन देलौं धन देलौं लक्ष्मी बहुत हे
जे भातिज बिनु लागै यऽ सुन हे
कोयला-कोयला.....।

मातैर-मातैर सुनै छलौं मातैर बड़ी दूर हे
अन देलौं धन देलौं, लक्ष्मी बहुत हे
एकेटा जे स्वमी बिनु लागै यऽ सुन हे
मातैर-मातैर.....।

ससिया-ससिया सुनै छलौं, ससिया बड़ी दूर हे
अन देलौं धन देलौं, लक्ष्मी बहुत हे
एकेटा जे बालक बिनु लागै यऽ सुन हे
कमला-कमला......।

बिताइ ठाकुरक विवाह छै। ऐ अकाल समएमे। हौ बाबू... सोनारेक तँ चलती छै। सभ गहना-गुड़िया बन्हकी लागल छै लोकक...

मुदा बरियाती किए नै बहराएल छै...

...हौ बाबू.. तारा निकलतै तखन ने सोनारा बहरेतै, बुझले तँ छहु फकरा।

चलै चलू, चलै चलू। दू साँझक भोजक इन्तजाम भेल ऐ अकालमे।

मुदा काल्हि बियाह छै तँ आइये किए बरियाती बहराइ छै यौ। हौ बाबू... कोनो कोठिया-पट्टीटोलमे कुटमैती हेतै।

..तँ कत्तऽ हेतै यौ ..

...औ बाबू... वएह रानीगंज पहसारा.. कत्तऽ हौ... खुएतै ने कसि कऽ। ..हँ से तँ बुझाइए। जे कन्यागत आएल अछि से सुखितगर लगैए।

कमला मैया बसत बड़ी दूर
गमक लागे गेंदा फूल
कथी डालि लोरहब बेली-चमेली
कथी डालि लोरहब अरहूल हे
गमक लागे गेंदा फूल कमला मैया.....
किनका चढ़ाएब बेली-चमेली
किनका चढ़ाएब अरहूल
गमक लागे गेंदा फूल
कमला चढ़ाएब बेली-चमेली
कोयला चढ़ाएब अरहूल,
गमक लागे गेंदा फूल हे
कमला...किनका सँ मांगब अन-धन सोनमा
किनकासँ मांगब सोहाग गे, सोहाग गे
मलहिनयाँ देखै मे फूल वर लाल हे
ससिया सँ मांगब अन-धन सोनमा
मातैर सँ मांगब सोहाग गे
मलहिनयाँ देखै मे फूल वर लाल....।

दरारि फाटल धरतीक ओर-छोड़ नै देखबामे अबै अछि। इनार सभमे सँ अधिकांश सुखा गेल छै। रस्ताक पोखड़ि सभ सेहो लजबिज्जीक गाछ जकाँ घोंकचि गेल छै। मुदा पहसारामे तँ अजबे लीला छै। खाद-यूरियाक चर्चा

छै। ई नलकूप की होइ छै हौ, वएह करिनाल, वएह इनार.. नै हौ, कोनो हरियरका क्रान्तिक चर्चा होइ छै औ।... रौ पातपर जे हरियर माँछ सभ पड़ल छौ, सएह ने हरियरका क्रान्ति भेलै रौ। ... नै रौ, कहै जाइ छै जे बान्ह बान्हि कऽ धार रोकतै, बाढ़ि रोकतै आ नलकूप गारि कऽ बर्खा नै भेलापर पटौनी करतै।... धुर, कत्तऽ छैं? दू साल पहिने जे बाढ़ि एलै देखलहीं नै। कमला मैयाकेँ सम्हारि सकलै बान्ह। ...पहिने बाढ़ि आबै तँ पसरि जाइ छलै।.. आब बान्हक बीचमे पानि भरल रहै छै, फाटक देने पोखरि सभ, बाड़ी सभ पानिसँ भरि जाइ छै। पानि हटलापर बालु सभ चमकऽ लगै छै। रौ ई पहसारा ने कोसिकन्हा छलै, आब ई ठीक भऽ गेलै मुदा आब तँ अपन गाम कोसिकन्हा बनि गेलौ। ...कत्तऽ छैं, ई हरियरी सोझाँमे छौ तकर स्वाद ले ने।

किनका बाड़ी रोपबै कोसी माइ एली फूल चमेलिया हे
किनका हे बाड़ी कोसी माइ अढ़हुल फूल हे
बाबा बाड़ी रोपबै कोसी माइ एली फूल चमेलिया हे
भइया बाड़ी रोपबै कोसी माइ अढ़हुल फूल हे
कौने डाला तोरब कोसी माइ एली फूल चमेलिया हे
हे मैया कौने हे डाला तोड़ब अढ़हुल फूल हे
सोने डाला तोरब कोसी माइ एली फूल चमेलिया हे
रुपा हे डाला तोड़बै कोसी माइ अढ़हुल फूल हे
कोन सूत गूथब हे कोसी माइ एली फूल चमेलिया हे
हे मैया कौन सूत गूथबै अढ़हुल फूल हे
लाले सूता गूथब हे कोसी माइ एली फूल चमेलिया हे
हे मैया पीअर सूतकोसी माइ गूथबै अढ़हुल फूल हे।

लखनदेइक पूबमे बान्ह, पश्चिम ओहिना खुला, कहियो कोनो जमीन्दार एकरा बनेने रहै वा लोक सभ अपने बनेने रहै आ जमीन्दार तकर यश लऽ लेलकै। १९६० ई. सँ लोक सभ ओइपर माटि देबऽ लगलै, १९६७ ई. मे

सरकार सेहो ऐ मे सहायता देलक।

अंग्रेज इन्जीनीयर सभ पैघ बान्हक पक्षमे नै रहथि मुदा स्वतंत्रताक बाद गुलजारी लाल नन्दा घोंघड़डीहामे आबि कैम्प लगा देलन्हि। राजेन्द्र प्रसाद सेहो पहिने ऐ बान्ह सभक विरोधमे रहथि मुदा ओहो ऐ बान्हक पक्षमे बादमे भाषण देमऽ लगला।

मोहनक गीत सुनैत सुनैत आबि गेलै रानीगंज पहसाराक बरियात भोज।

गेनहारी साग सोझाँ छै, आ कटहरक बड़ सेहो।

आ बहस से चलि रहल छै। रानीगंज पहसारा सभक लोक लेल तँ जिनगी स्वर्ग भऽ गेलै। कोसीक बाढ़ि एकदम्मे बन्न भऽ गेलै।

मुदा एम्हरो कने आर आगाँ सर-कुटुमक गाम दिस से भाग नै भेल।

महानन्दाक बारसोइ शाखाकेँ गहींर आ चाकर कएल जा सकै छल, मुदा से नै कएल गेल।

गंगापर काढ़ा गोला बान्ह, कुरसेला-जौनिया-बरण्डी बान्ह, बरण्डी नदीक दुनू कात बनल बान्ह। कारी कोसी नदीक पूब कात बान्ह। कारी कोसीक पश्चिमी तटपर बान्हकेँ आगाँ काढ़ागोला बान्हसँ मिलेबाक लेल बान्हपर स्थानीय लोक आन्दोलन करैबला छथि।

महानन्दाक पश्चिमी तटपर खाजा हाटसँ चौकिया पहाड़पुर तक, जतऽ महानन्दा गंगासँ मिलैए, एकटा बान्ह छल। महानन्दाक पूबमे बागडोबसँ दिल्ली दीवानगंज धरि बान्ह, महानन्दाक बारसोइ शाखापर बागडोबसँ कुशीदह धरि बान्ह, गंगाक उत्तर चौकिया पहाड़पुरसँ टोपरा धरि बान्ह।

कटबै सोना सुतरिया बिनबै झुमरि जाल हे
जाल फरि-फरि कमला एलखिन
सन-झुन लागै गोहबरिया

कहाँ गेली परलोभिया सेवक
सुन लगै गोहबरिया हेऽऽ
कटबै सोना सुतरिया बिनबै झुमरि जाल हे
जाल फरि◌ि-फरि गांगो एलखिन
रून-झुन लगै गोहबरिया हे
कहाँ गेली परलोभिया सेवक,
सुन लगै गोहबरिया हे
कटबै सोना सुतरिया बिनबै झुमरि जाल हे
जाल फरि-फरि मातैर एलखिन
रून-झुन लगै गोहबरिया हे
कहाँ गेली परलोभिया सेवक
सुन लगै गोहबरिया हे
कटबै सोना सुतरिया बिनबै झुमरि जाल हे
बिनबै झुमरि जाल हे।

नहरि धरातलक स्लोपक अनुसारे बनाओल नै जाइए। कच्ची बान्ह सभकेँ तोड़ि कऽ हटा देल जाए आ पक्की बान्हकेँ गाड़ी चलबा योग्य बनाओल जाए, बान्हक दुनू कात पर्याप्त गाछ-वृक्ष लगाओल जाए। स्थानीय गबैय्या छितन ई बाजि रहल छथि। स्थानीय गबैय्या छितन आ मोहन गबैय्याक सुरताल...

कमला नदीपर १९६० ई. मे जयनगरसँ झंझारपुर धरि छहरक निर्माण भेल आ ऐसँ सम्पूर्ण क्षेत्रक विनाशलीलाक प्रारम्भ सेहो भऽ गेल, १९६५ ई. सँ छहरक बीचमे रेत एतेक भरि गेल जे एकर ऊँचाइ बढ़ेबाक आवश्यकता भऽ गेल आ ई माँग शुरू भऽ गेल जे छहरकेँ तोड़ि देल जाए ! - मोहन गबैय्या ई सूचना दै छथि।

जग मग जग मग ज्योति जलै मंदिरमे

देखियौ कमला के श्रृंगर कमला के
लट मे तेल सोभे हुनका सेंदुर के
अधिकार जग मग जलै मंदिर मे
देखियौ मातैर के नाक मे नथिया सोभे
हुनका झुमका के अधिकार
जग मग जलै मंदिर मे ससिया के मांग मे
टिका सोभे हुनका होसली के अधिकार
जग मग जग मग ज्योति जलै मंदिर मे
कमला श्रृंगार.....।

झंझारपुरसँ आगाँक क्षेत्रक की हाल भेल, कारण बान्ह एतऽ खतम भेल आ पानि एकबैग छिरिया गेल, आ सम्पूर्ण क्षेत्र द्वीप बनि गेल।

सएह इम्हर रानीगंज पहसारासँ आगाँ सेहो हएत।

देखैत रहू आगाँ-आगाँ।

एक्केटा कोसी बान्ह थोड़बे अछि, ई बान्ह सभ सेहो बान्ह-छहर बनि जाएत। ऊँच करैत रहू बान्हकेँ, दुनू बान्हक बीच रेत भरैत रहत। आ बान्ह कतऽ जा कऽ अन्त करबै? धारक दुनू काते गंगा धरि बान्हकेँ लऽ जेबै?

गाम सभकेँ रिंग बान्हसँ बान्हबै?

तखन पुरनका छोटका बान्हपर घुरलौं ने!

बड़का बान्ह सभक बीचक गामक की हाल हेतै से बुझल अछि?

सगर परबत से नाम्हल कोसिका माता

भोटी मुख कयले पयाम

आगू आगू कोइला वीर धसना खभारल

पाछू पाछू कोसिका उमरल जाए
नाम्ही नाम्ही आछर लिखले गंगा माता
दिहलनि कोसी जी कऽ हाथ
सात रात दिन झड़ी नमावल
चरहल चनन केर गाछ यै
चानन छेबि छेबि बेड़ बनाबल
भोटी मुख देव चढ़ि आइ यै
गहिरी से लदिया देखहुँ भेयाओन
तहाँ देल झौआ लगाए
रोहुआक मूरा चढ़ि हेरए कोसिका
केती दूर आबै छै बलान
मार-मार कऽ घर बहिये गेल
कामरू चलल घहराय
पोखरि गहींर भौरए माता कोसिका
कमलाकेँ देल उपदेस
माछ काछु सभ उसरे लौटाबए
पसर चरए धेनु गाय
गाबि जगत कऽ लोक कल जोड़ि
आजु मइया एबु ने सहाय

गढ़ नारिकेल सेहो आबि रहल अछि दुनू बड़का बान्हक बीच, दुनू बड़का की चारू बड़का! कमलाक पूबक पूब आ कोसीक पच्छिमक पच्छिम?

कमला जे पुछे छै सुन बहिन कोसिका हे
केहेन छथिन रानू सरदार हे
भैंसा सन मनुख गे बहिनो बजर सन गात हे
मोँछ रानू कऽ बहिंगा सन सन आब हे

कोसिका जे पूछै सुन बहिन कमला हे
केहन छै कोइला देव आब हे
ताड़ सन मनुख गे बहिना
बजर सन गात हे
मोंछ जइसन भमरा गुलजार हे
गाड़ल जे खुटबा से कोइला देव
जाल जे पसारल हे
भीत चढ़ि भऽ गेल ठाढ़ हे

कोसीक प्रेमी बाँतर जातिक लोक देवता रानू सरदार।

रानू सरदार अस्सी मोनक कोदारि लऽ कऽ जकर बेंट बिरासी मोनक छै, आगाँ आगाँ कोसी लेल रस्ता बनबैए।

आ कोसीक प्रेमी रैय्या रणपाल।
उत्तर दिशासँ अबैए रणपाल आ कोसीकेँ देखि कऽ मुग्ध भऽ जाइए।
झिमला मल्लाह आ बैदला चमार सेहो कोसीसँ बियाह करऽ चाहैए।

हमेँ तोरा पुछियौ रे बैदला जतिया तँ ठेकान रे
तोहूँ मांगे हमरो सँ बियाह रे
हमहूँ जे छिकियै गे कोसिका ओइछ जाति चमार हे
हमेँ मांगियौ तोरे सँ बियाह हे
कथी ले खियोलियौ रे बैदला दूध भात कटोरबा रे
पोइस-पाइल केलियौ जबान रे
तोहूँ जे केलेँ रे बैदला जातियो कुल हरण रे

कोसीपर एकटा राक्षस सेहो मुग्ध भेल रहए।

कोसी डेरा गेली मुदा राक्षसकेँ कहलखिन्ह जे ओ जँ राति भरिमे

हिमालयसँ गंगा धरि कोसीक दुनू कात बान्ह बना दिअए आ तकर दुनू दिस सगरे पोखरि खुनि दिअए तखने ओ ओकर वशमे एती।

राक्षस शुरू भऽ गेल बान्ह बन्हबामे, अदहा रातिक बाद कोसी डेरा गेली जे ई रकछसबा तँ हमरा वशमे कऽ लेत।

महादेव लग गेली कोसी।

ओ महादेव मुर्गा बनि कुकड़ू-कू करऽ लगला, राक्षस डेरा गेल जे भोर भऽ गेल आ भागि गेल।

कोसी प्रसन्न भऽ मयूर सभकेँ मारऽ लगली आ ओइ राक्षसक अपूर्ण बान्ह सुपौल शिवनगरक राक्षसक अपूर्ण वीर बान्हक बगलक पोखरि मयूरनी खत्तामे फेकऽ लगली। बचल मयूरनी सभ कोसीकेँ नाच देखेबाक लालच देलन्हि, तखन कोसी सभ मयूरकेँ जिआ देलन्हि आ बचल राति भरि ओकर सभक नाच देखलन्हि।

एक कोस गेलै हे कोसी माइ
दुइ कोस गेलै हे
तेसर कोस बिजुबन सिकार हे
बघबो नै मारै हे कोसी माइ
हरिणो नै मारै हे
चुनि-चुनि मारै छै मजूर हे
सात सय मजुरबा हे कोसी माइ मारि एलै हे
सात सय मजूरनी केलें राँड़ हे
हकन कानै छै कोसी माइ बन कऽ मजूरनी
कोसी मैया बारी बेस हरले सिन्दूर
नै हम खेलियौ कोसी मैया खेत खरिहनमा
नै हम केलियौ लछ अपराध

बखसु बखसियौ कोसी माइ सिर कऽ सिन्दूरिया
मैया बखसि दियौ सिर के सिन्दूर
जब तोरा हम बखसबो सिर कऽ सिन्दुरिया
हमरा की देबे इनाम मजूरनी
जब तुअ बखसबे कोसी माइ सिर कऽ सिन्दूरिया
भरि राति नाचब देबौ देखाय
राति नाचब देखायब
हएत भिनसरबा बोलिया देबौ सुनाय
चुटकी बजाय कोसी माइ मजूर के जियाबै
खुसी गे भैलो मैया बन कऽ मजुरनी
भरि राति आगे मजुरनी नचबा देखाबै
हएत भिनसरबा बोलिया देय सुनाय
गाबल सेवक जन दुहु कल जोड़ि
बिपति कऽ बेरिया मैया होहु ने सहाय।

मिथिलाक राजा हरसिंहदेव कोसीकेँ बन्हबाक प्रयास केने रहथि, हुनकर मंत्री वीरेश्वर ओइ वीर बान्हकेँ पूरा नै कऽ सकलाह, बिच्चेमे एकटा आक्रमण भऽ गेल, दिल्लीक सुल्तान घियासुद्दीन तुगलक एलथि आ मिथिलाक राजा हरसिंहदेवकेँ हरेने रहथि आ ई कार्य बन्न भऽ गेल छल। हरसिंहदेव चलि गेल रहथि उतरबरिया बोनमे।

कोसी देवन ऋषिक बेटी रहथि, एक बेर पूजा सामग्रीमे केस चलि गेलापर ऋषि हुनका धार बनि बहऽ लगबाक स्राप दऽ देलन्हि।

देवना डीह ओही ऋषिक आश्रम छल।

कोसी बान्ह नै मानै छथि, वशमे नै आबै छथि, कारण कुमारि छथि। से लोक हुनकापर सिनूर फेकैए, ओ डेरा कऽ पाछू हटि जाइ छथि। लोकक डीह कटनियाँमे बचि जाइए।

बाढ़िक बादक ई अकाल।

कोन मुलुक से एलै मोगलबा
बान्हि जे देलकै कमला माइ कऽ धार
एहेन बान्ह जे बान्हलें रे मोगलबा
सिकियो ने मझाबे मोगला कऽ बान्ह
हिनुओ नै बुझै मोगला तुरको नै बुझै
सभसँ चेकरी उगहाबै मोगला
राजा शिवसिंह बैठल छलै मचोलबा
ओकरोसँ चेकरी ढुआबै
एहेन बान्ह बान्हलक मोगलबा
सिकियो नै मझाबै मोगलाक बान्ह
काइन काइन चिठिया लिखै मैआ कमला
दहु ने गे गंगा बहिनो हाथ
गंगा बहिनो चिट्ठी पढ़ै माटी भीजि गेलै
हमरो सक नै टूटतै मोगलाक बान्ह
काइन काइन चिठिया लिखैए मैया कमला
दहु ने कोसिका बहिनो हाथ
कोसिका बहिनो चिट्ठी पढ़ैते सोचऽ जे लागलै
हमरो सक नै टूटतै मोगलाक बान्ह
एहन बामी माछ बनबैए बहिन कमला
भेदि देलकै मोगलाक बान्ह
फोँड़ी करैत कोसी मैया हुलि देलकै
केलकै सनमुख धार
राजा शिवसिंह सिर नबाबै
हे मैया तोहर महिमा अपरमपार
गावल सेवक जन माता दुहू कलजोड़ि

जुग-जुग जपब तोहर नाम

ओइ राक्षस जकाँ बान्हू बान्ह, हिमालयसँ गंगा धरि!! स्थानीय गबैय्या छितन आ मोहन गबैय्याक सुरताल...

बाढ़िक बाद गढ़ नारिकेलक दसटा परिवारकेँ निर्मल्ली-लछमिनियाँमे पुनर्वासक जमीन देल गेलै। एक तँ खेतसँ दस माइल दूर आ जखन ओ सभ ओतऽ गेला तँ देखै छथि जे ओतऽ निर्मली कॉलेज छै। कामत नन्दलाल बाबाक देल जमीनपर निर्मली कॉलेज खुजल छलै। हाइ रे नन्दलाल बाबा।

पुनर्वास कार्यालयमे धरणा देलन्हि ओ सभ।

तखन इन्द्रकान्त मिश्रक किछु जमीन सरकार अधिग्रहण केलक आ हिनका सभकेँ बसेलक।

-ई सत्यनारायण यादवक काज छी, आन ककरो नै। -इन्द्रकान्त मिश्र सगरे कहि रहल छथि।

-कहने रहथिन्ह बाबू (पीअर बच्चा) राधामोहन रायकेँ, आपसमे लड़मे तँ ई सत्यनारायण यादव फाएदा उठेतौ।– बजै छथि इन्द्रकान्त मिश्र।

सरकार जे मुआवजा देलकन्हि से मामूली। ठीक छै, समै समैक गप छै। पीअर बच्चाक घरमे शोक पसरि गेल अछि।

कोसी आ कमलाक पानि जखन मिज्झर होइ छलै तखन जा कऽ माटिमे जान अबै छलै, खेत लहलहा जाइ छलै।

राधामोहन राय मोँछ पिजा रहल छथि। पीअर बच्चाकेँ आब होश आएल हेतै। अंग्रेजक सरकार गेलै, आब लोकक चलती हेतै।

गाममे ओ एलान कऽ रहल छथि, आइ मुखदेव आ जागेश्वरक बदला राधामोहन राय लऽ लेलक। पीअर बच्चासँ बदला.. सत्यनारायण यादवकेँ मुदा ओ कांग्रेसी टिकट भेटलोपर हरा नै सकला।

उनतीसम कल्लोल

भगता कहलकै अकास बान्हब पताल बान्हब/ बौहु कहलकै-पहिने घरक कोनटा जे टूटल छै से ने बान्हौ

खूब घुमै छै मोहन गबैय्या आ घुरि कऽ आबै छै गाम।

सुनबै छथि ओ खिस्सा।

बागमतीक दहिन किनारपर सोरमार हाटसँ हायाघाटक बीचमे एकटा पँचफुटिया बान्ह अछि। धारमे बेसी पानि भेलापर एकर ऊपरसँ पानि बहि जाइ छल, मुदा एकरा ऊँच कऽ देल गेल, बाहा सभकेँ सेहो बान्हि देल गेल। पानि निकासी बन्न भऽ गेल।

बान्हमे स्लुइस गेट भेने किछु तात्कालिक राहत भेटल।

विद्यापतिक मृत्यु दिवस सन कर्मकाण्डक रूपमे ऐ बान्ह सभक स्थापना दिवस हम सभ मना रहल छी। मिथिला... मैथिली...

मिसिसिपी बान्हसँ लऽ कऽ बूढ़ी गंडक आ कोसी नदीक पच्छिम बान्हमे मूस, खरहा, नढ़िया, छुछुन्नरि सभक बीहरि सभ अछि। जल संसाधन विभागक बान्ध खलासी प्रति तीन किलोमीटरपर मूस आ नढ़ियाक बीहरि मुनै छल। ओकर नोकरी गेलै कारण आब ई काज बाढ़ि निरोधक दस्ताकेँ दऽ देल गेलै।

अधवारा आ धौस धार भरि गेल तँ दरभंगा लगक बागमतीसँ पानिक निकासी रुकि गेल।

इम्हर इन्द्रकान्तक भाए धीरेन्द्र मिश्र नै जानि कोना घरसँ एक दिन बहरा गेलै। गामपर रहबो करै छलै तँ मारते रास साधु महतमा सभक संग।

पोखरिसँ गछारल गढ़ नारिकेल गामक एक दिस बड़का बाहा सभ रहै, कने हटि हटि कऽ।

कमलाक भगता अबै छलै उम्हर। एकटा तँ सभ बरिख अबै छलै। एकटा खिस्सा सुनबै छल धीरेन्द्रकें ओ।

इन्द्रलोकमे रहैवाली कमला। तेँ ने सभ धारक वर्णन इतिहास-पुराण मे छै मुदा कमला धारक नै। इन्द्रलोकमे रहै छली कमला महरानी तेँ।

जखन ओ मिथिलामे एली तावत देरी भऽ गेलै। सभ ब्राह्मणकें ब्रह्मा कोनो ने कोनो धारक अभ्यर्थनाक भार दऽ देने रहथिन्ह आ से कोनो ब्राह्मण बचबे ने केलै हिनकर अभ्यर्थना करबा लेल।

इम्हर मिथिलाक मलाहक जिनगी कमला धार एलासँ सुखितगर भऽ गेलै। ओ सभ खूब माछ मारथि आ बेचथि। से हुनका सभकें कमला मैय्यासँ बड्ड सिनेह भऽ गेलन्हि। तखन ब्रह्माकें फुरेलन्हि जे किए नै कमलाक अभ्यर्थनाक भार मलाह लोकनिकें दऽ देल जाए। से ओ कमलाकें कहलखिन्ह जे सिंहवाड़ा लग जे भरौड़ा गाम छै, ओतुक्का बिसम्भर सरदार आ ओकर कनियाँ रानी गजवन्तीकें पुत्र हेतै, जकर नाम राखल जेतै दुलरा गर्भी दयाल, सएह भरौड़ाक राजकुमार बनत। ओ तंत्र आ नृत्यमे पटु हएत आ लोक ओकरा नटुआ दयाल कहत। वएह शुरू करत कमलाक अभ्यर्थना।

दुलरा दयालक बियाह भेलै बेगूसराय लग बखरीक दुखहरन सरदार आ तंत्र-नृत्य साधिका बहुरा गोढ़िनक बेटी फूलमती धानीसँ। तिलयुगा लग कमला धारक पूजा शुरू केलक नटुआ दयाल। मुदा बहुरा गोढ़िनक किछु पुरान विद्रोही शिष्य मारि देलक नटुआ दयालकें। मुदा कामाख्याक योगिनी जिआ देलक नटुआकें।

कमला पैघ हेबऽ लगली तँ किसान आ मलाह सभक जिनगी सुखितगर हेबऽ लगलन्हि।

इम्हर उगला बैदला चमारक मोनमे खोट एलै। ओ कमलासँ बरजोड़ी बियाह करबाक मोनसूबा बान्हलक। मलाह लोकनि भोला बाबाक तपस्या केलन्हि आ कमलाक सतीत्व बचेबाक गोहारि केलन्हि। भोला बाबाक वरदानसँ शिवरा गामक मलाह परिवारमे अमर सिंहक जन्म भेल।

कमला पैघ हेबऽ लगली। मलाह कोइलाबीर जकर कुरहड़ि अस्सी मोनक आ कुरहड़िक बेंट चौरासी मोनक रहै, से माटि काटि-काटि कमला लेल रस्ता तैयार करथि।

कमला पैघ भऽ गेली।

उगला बैदला कमलाकेँ बान्हि देबाक प्रण केलक। बान्हल कमला जखन ऊपर उठती तँ ओ हुनका घीच लेत आ हुनकर सीथमे सिनूर धऽ देत आ बियाह कऽ लेत।

कमला ई गप कोइलाबीरकेँ सुनेलन्हि। कोइलाबीर माटिक बान्ह काटि देलक आ कमलाक रस्ता साफ भऽ गेल।

मुदा उगला बैदला तँ चामसँ हड्डी निकालबाक कारबार करै छल से ओ सभटा हड्डी मोरंग लग एकट्ठा केलक आ हड्डीक बान्हसँ कमलाकेँ घेर देलक। अपवित्र हड्डीकेँ कोइलाबीर कोना छुबितए। से ओ घुरि गेल।

इम्हर अमर सिंह राजा बनि गेला, ओ बाल-ब्रह्मचारी रहथि। हुनकर सात तल्लाक गढ़ छलन्हि जकर दक्षिणमे चाननक गाछ लग सात कोसक घेराबाबला अखराहा छल। कमला ओतऽ गेली आ चाननक गाछपर बैसि गेली। अमर सिंहकेँ लगलन्हि जे कोनो स्त्री अखराहा लग छै कारण ओ बाल-ब्रह्मचारी रहथि आ तेँ हुनका अपन शक्ति घटल बुझना गेलन्हि। ओ तमसेला जे ई स्त्री जँ भेटत तँ ओकरा एक्के घुस्सामे अस्सी हाथ नीचाँ गाड़ि देबै। कमला मुदा नीचाँ आबि गोहारि केलन्हि आ अमरसिंह सत केलन्हि जे ओ कमलाक रक्षा करता नै तँ अस्सी कोस नरकमे खसता।

नौ हाथ नाम आ छह हाथ चाकर रहथि अमर सिंह।

अमरसिंह अखराहामे माटि देलन्हि आ उगला बैदलाकेँ मारलन्हि। उगला बैदलाक कनियाँ गढ़ुआरि छलि, ओकरा अमर सिंह मारि देलन्हि। मुदा तखने जन्मल उगला बैदलाक बेटा बड्ड बलगर छल। कमला अमर सिंहकेँ किछु भेद बतेलन्हि आ तखने ओ उगला बैदलाक बेटाकेँ मारि सकला।

मुदा जखन अमर सिंह बान्ह दिस बढ़ला तँ ओइ हड्डीक बान्ह देख कऽ ठमकि गेला आ कमलाकेँ मीरन फकीरकेँ बजा कऽ अनबा लेल कहलखिन्ह। ओ एला आ हड्डीक बान्हकेँ तोड़लन्हि।

जीबछ मुखिया जे सुनेने रहथिन्ह खिस्सा, ओइ खिस्सा आ ऐ खिस्सामे कनियो अन्तर कहाँ रहै।

घाट परक घटहा नाहपर सुनबै छथि खिस्सा जीबछ मुखिया धीरेन्द्रकेँ। धीरेन्द्रो मुदा अलबत लोक छल।

धीरेन्द्र ओइ जोगीसँ खूब खिस्सा पिहानी सुनथि आ ओ हुनका योग सीख अकासमे उड़बाक कला सिखाबऽ लागल।

पढ़ाइ-लिखाइसँ बेसी मोन धीरेन्द्रकेँ अतीन्द्रीय खिस्सा पिहानी सुनैमे लागै छलै। ओ सोचै छल जे कोना योग आ जप-तप केलासँ ओहो अतीन्द्रीय शक्ति प्राप्त कऽ सकत। स्कूलपर बला मन्दिरमे ओ भगता आबि कऽ डेरा दै छलै आ स्कूलक बदलामे धीरेन्द्र ओही मन्दिरक दरबज्जापर साँस फुलबैत रहै छल। भगताक गपसँ धीरेन्द्रकेँ पता लगलै जे ऋषिकेषमे बड़का योगी सभ रहै छथि जे साँस रोकि कऽ अकासमे उड़ि जाइ छथि आ सभ तरहक सिद्धि क्षणमे प्राप्त कऽ सकै छथि।

माए बुझाबै...

भगता कहलकै अकास बान्हब पताल बान्हब,

बौहु कहलकै-पहिने घरक कोनटा जे टूटल छै से ने बान्हौ

बाप हँसै...

मुदा पन्द्रह बरखक उमेर भेल हेतै आकि कने कम्मे, ओ भगता धीरेन्द्रकें लऽ कऽ ऋषिकेष चलि गेल, गामपर सभ बुझलक जे धीरेन्द्र तंत्र-मंत्र सिखबा लेल योगी संगे कतौ भागि गेल छथि। किछु दिन धरि इन्द्रकान्त मिश्रक अंगनामे कन्नारोहट होइत रहल। फेर सभ धीरेन्द्रकें बिसरि गेल।

तीसम कल्लोल

भादवक अन्हरियो नामी, इजोरियो नामी, रौदो नामी, गुमारो नामी

गढ़ नारिकेलक जमीन्दारी बान्ह- आ ओकर दछिनबारि टोल, गढ़ अरड़नेबा!

शेष गामेकेँ लोक आब गढ़ नारिकेल कहऽ लागल अछि। मुदा पुरना लोकसँ पुछियौ, ओ कहत जे गढ़ नारिकेलक दछिनबारि टोल अछि गढ़ अरड़नेबा।

रिंग बान्ह अपूर्ण रहल, कहियासँ से नै जानी।

रिंग बान्ह माने गामकेँ घेर कऽ बनाओल जमीन्दारी बान्ह।

धार सभपर निलहा गोरका द्वारा बान्ह बनल। नीलक खेती यूरोपियन सभसँ देशी जमीन्दार कीनि लेलक।

गढ़ नारिकेलमे अलग समस्या आ ओकर दछिनबारि टोल जकरा लोक आब गढ़ अरड़नेबा कहैए, तकर अलग समस्या।

१९६७ ई. मे समाजवादी नेता लोहियाक मृत्यु भऽ गेलन्हि, भारतक पहिल भारतीय गवर्नर जनरल राजगोपालाचारीक मृत्यु सेहो भऽ गेल, हुनकर लिखल संक्षिप्त महाभारत इन्द्रकान्त मिश्र पढ़ने रहथि।

मुदा ई गढ़ नारिकेल टोलक अरुण झा, नै जानि की भऽ गेलै एकरा। बाप दादा जमीन जाल जोगा कऽ नै रखलकै आ ई कहैए जे गरीबक अधिकार! यौ एकर बाबा हमर बाबासँ बेशी जमीन जालबला छलखिन्ह मुदा एकर बाप सभटा बुड़ा देलकै तँ तकर भागी हम यौ? कार्ल मार्क्स कहने रहै एकरा बापकेँ भांग पीबि कऽ सभ दिन रौहुक मूड़ा खाइले यौ।

कदवा, प्राणपुर, मनिहारी, आजमनगर, अमदाबाद सभ ठाम जेना तेना बान्ह बना कऽ लोक आ ओकर बस्तीकेँ घेर देल गेल। पूर्वमे महानन्दापर बान्ह पश्चिममे कारी कोसीपर बान्ह। १९७५ ई. महानन्दाक बेलगच्छी झौआ बान्हकेँ काटल गेल, लोक काटि कऽ अपन मुक्तिक बाट ताकलन्हि।

महानन्दा धार किशनगंज, अररिया, पूर्णियाँ, कटिहार सभ ठाम घेर देल गेल, जेना तेना। नागर, सुधानी, कुलिक आ देवनी नदी, कटिहार, कंकर नदी, महानन्दाक झौआ शाखा, १९८० ई. मे महाकाली नदीपर बराज। ऐमे दूटा नहर, भारत लेल ३.५ मीटर बेसी गहींर, नेपालक लेल बनल नहरक तुलनामे बनल। गंडक बराजमे सेहो पानिक लेवल स्थिर नै राखल गेल। नेपाल सेहो बागमतीपर अपने मोने करमहिया बराज बनेलक आ कमला नदीपर बन्दीग्राम लग गोडार बराज बनेलक। कमला बराजसँ जयनगरक नीचाँक हिस्सामे पानिक कमी। करमहिया बराजक कारण भारतमे बागमती परियोजनामे रमनगरा-गम्हरिया लग बराजक निर्माण नै भऽ सकल। सिंचाइक व्यवस्था नै भऽ सकल।

दिन बितैत गेलै।

गामपर मारते रास उकबा उठै। हे कोनो बान्ह बनतै, धारकेँ रोकतै। एकटा बभनटोलीक छौरा घरसँ भागि कऽ महात्मा बनि गेल छै, कहाँदन अकासमे आसन लगा कऽ उड़ै छै। ओ कहाँदन भारतक प्रधानमंत्रीकेँ योग सिखबै छै। देखा चाही की होइ छै आगाँ आगाँ।

धीरेन्द्र मिश्रक बालसंगी लाल कुमार राय रहथि। हुनका ओ भेटलन्हि दिल्लीमे। कहलकन्हि ढेर रास गप। कहाँदन गामक बाढ़िक निदान करतै ओ।

किछु लोक सत्त बुझलकै तँ किछु लोक फुइस। किछु दिन बितलै तँ बेसी लोक ऐ गप्पकेँ फुइसे बुझऽ लागल।

तकरा बाद राधामोहन रायकेँ सेहो ओकरासँ भेँट भऽ गेलै। ओ कोनो कवि संगे कोनो कवि सम्मेलन गेल रहथि, दिल्लीक बगलमे सूरज कुण्डमे। ओहो कहलन्हि, वएह धीरेन्द्र छलै, दाढ़ी बढ़ा लेने अछि। बड्ड चलतीबला लोक भऽ गेल अछि। नेता सभकेँ योग विद्या सिखबै छै। देखलासँ तांत्रिक बुझाइत अछि। कोनो कारखाना खोलत गाममे, हवाइ जहाजक ईंधन बनाएल जेतै ओइ कारखानामे। गामसँ लागि अखनो छै, से गपशपसँ बुझा पड़ल।

बाढ़ि, अकाल। खेलौना, समदाउन।

भादवक अन्हरियो नामी, इजोरियो नामी, रौदो नामी, गुमारो नामी

देखा चाही की होइ छै आगाँ आगाँ।
गढ़ नारिकेल..
गढ़ अरड़नेबा....

एकतीसम कल्लोल

चिन्नी सेहो आब लगैए जे कम मीठ होइ छै

धीरेन्द्र मिश्र...

सहस्रशीर्षा पुरुषक बलि।

ऐ लोकमे पहिने कियो मरै नै छल।

से ब्रह्मा अपन प्रतापसँ मृत्युकेँ उत्पन्न करै छथि।

ओ *मृत्यु* रहथि एकटा लाल आ पीअर रंगक स्त्री, सोनाक गहनासँ छाड़ल मृत्युक लाल आ पीअर रंग। मुदा स्त्री ककरो वध कोना करती। मुदा ब्रह्मा हुनका जीवनक अन्त करबाक भार देलन्हि। ओ कोसी कात आबि कऽ तप केलन्हि आ ब्रह्माकेँ मनेबाक प्रयास केलन्हि। मुदा ब्रह्मा किए मानता?

धीरेन्द्रकेँ अपन गाम मोन पड़ऽ लगलन्हि, कोसीक खिस्सा सुनि कऽ कमलाक खिस्सा मोन पड़ि गेलन्हि। लाल मोहन रायकेँ ओ वचन देलन्हि जे ओ घुरि कऽ एता गाम।

लाल मोहन राय कहलखिन्ह जे धीरेन्द्रक माए अखनो जिबिते छथि। सभकेँ विश्वास भऽ गेल रहै जे धीरेन्द्र आब ऐ दुनियाँमे नै छथि मुदा धीरेन्द्रक माए से मानैले तैयार नै रहथि।

आ धीरेन्द्रक गाममे आगमन होइए। देशक प्रधानमंत्रीकेँ योग सिखबैत रहथि धीरेन्द्र। ओ एकटा बड़का आश्रम बनेने छथि दिल्लीमे। भाए इन्द्रकान्त मिश्र आ माएसँ भेँट होइ छन्हि।

भरि गामक लोक, की हित की दुश्मन सभ जुमि एलै इन्द्रकान्त मिश्रक दरबज्जापर, पीअर बच्चा तँ बूढ़ झुनकुट भऽ गेल छथि, घरेमे रहै छथि।

मारते रास गप चलै, गामक विकास, फैक्ट्री, हॉस्पीटल।

मुदा ई बाढ़ि। किए नै गामकेँ एकटा ऊँच बान्हसँ घेर देल जाए।

हँ, कोन पैघ गप छै।

राज्यक मुख्यमंत्री मानत? ई अरुणा झा बड्ड सटल अछि श्रीप्रकाश झा, मुख्यमंत्रीक।

किए नै मानत? जखन हमर धीरेन्द्रक मुट्ठीमे भारतक प्रधानमंत्री छै तखन ऐ राज्यक ई मौगियाहा मुख्यमंत्री!

अखन भारतक प्रधानमंत्री तँ स्त्री छथि। भाषण दै लेल अबिते छथि चुनावमे, क्रान्ति पैसि जाइ छै लोकक देहमे।

ई अरुणा झा मुदा। ई अरुणा झा किछु नै छी। असल बदमाश अछि ई राधामोहन राय, सत्यनारायण यादव आ ई जागेश्वरक भूत मुखदेव...।

धीरेन्द्र घुरि जाइ छथि दिल्ली।

पता नै कोन आदेश एलै दिल्लीसँ। राज्य सरकार तुरत्ते योजना स्वीकार कऽ डिवीजनमे काज प्रारम्भ करबाक आदेश दऽ देलकै।

बी.डी.ओ. परमानन्द पासवान आ अभियन्ता कृपानन्द, जकर स्कॉलरशिपक कागजपर पीअर बच्चा दसखत नै केने रहै, एला गामक जायजा लेबा लेल।

आदेश आएल छै जे धीरेन्द्र जी जेना-जेना कहै छथि बस से करैत जेबाक अछि।

मुदा तखने एकटा काण्ड भऽ गेल।

प्रधानमंत्रीक बेटा आएल रहथि कोनो उद्घाटन कार्यक्रममे। स्थानीय विधायक सत्यनारायण यादव हुनकासँ भेँट केलन्हि आ कहलन्हि जे गामक लोकक ढेर रास जमीन बिना मतलबक ऐ मे नोकसान हेतै। प्रधानमंत्रीक बेटा राज्यक दूटा मंत्रीकेँ तहकीकात लेल नियुक्त केलन्हि।

मुदा ओ दुनू मंत्री राज्यक मुख्यमंत्रीक खिलाफ रिपोर्ट दऽ देलन्हि।

आ तकर बाद काज शुरू भऽ गेल।

मुदा अरुणा झा ठिकेदारसँ झगड़ा कऽ लेलन्हि आ जेल गेला।

सत्यनारायण यादव अरुणा झासँ जेलमे भेँट केलन्हि। सत्यनारायण यादवकेँ पुलिस दिससँ आदेश आएल रहए जे ओ अपन गाम, गढ़ नारिकेल गामक आसपास नै जाथि। से जेलसँ निकललाक बाद नेतृत्व अरुणाक हाथमे आबि गेल।

कम्यूनिस्ट पत्र "लाल धार"क सम्पादक एला।

मुदा काज शुरू भऽ गेल।

धीरेन्द्र हवाइ जहाजसँ तीन बेर गामक निरीक्षण केलन्हि।

मुखदेव आ अरुणा झा लेल हवाइ जहाजक टिकट पठेलन्हि धीरेन्द्र।

शानदार आश्रम, जेना लाल बाबू राय कहने रहथि।

मुदा नै मानला मुखदेव।

धीरेन्द्र मिश्रक दछिनबारि टोल, गढ़ अरड़नेबा। गढ़ नारिकेल टोल ककरो किए सुनत, मुदा ओ सभ कहैए जे ओकर सभक गप के सुनत?

प्रधानमंत्रीक बेटासँ फेर भेँट। प्रधानमंत्रीक बेटाकेँ धीरेन्द्र मिश्रक दखलसँ परेशानी रहै, मोनमुटाव भऽ गेल रहै।

केस भेल।

कोर्ट सभटा काज रोकबा देलकै।

धीरेन्द्र सेहो स्थानीय राजनीतिसँ परेशान भऽ गेल। संन्यासी छले, आब काज, कारखाना सभसँ सन्यास लऽ लेलक। एनाइ-गेनाइ बन्द। लोक फेर ओकरा बिसरऽ लगलै।

लगैए स्वतंत्र देशक बर्खमे एक्के मास, माघ मास।

गेल माघ दिन उनतीस बाँकी

लोकक बोलीमे लसि खतम भऽ गेलै। चिन्नी सेहो आब लगैए जे कम मीठ होइ छै।

बत्तीसम कल्लोल

दिनमे कौआ देखि कऽ डेराइ,
रातिमे नदी हेलि जाइ

गढ़ नारिकेलक मोहन गब्बैय्या। बड़का गबैय्या।

गौरीशंकर स्थानमे जखन आस पड़ोसक गामक लोक सभ जुमए लगला तखन सरकार सेहो माटिक सड़क बनबा देलक आ जोन मजूर आसपासक गाम सभसँ एतऽ बोनिपर खटऽ लागल। ने कहियो देखल आ नै सुनल, बजा कऽ काज कियो देने छल आइ धरि, आ पाइ नकद भेटै अछि। बेसी मेन-मीख निकालमे तँ जे भेटै छौ सेहो बन्न भऽ जेतौ।

बड़बरिया बाबू साहेबक हाथी आबि जाइ छै। लोक सभमे हड़कम्प मचि गेल अछि।

हाथीकेँ खुएबाक भार गौँआ सभपर।

हाथीकेँ खुएनाइ आसान थोड़े छै हौ।

बड़बरिया बाबू साहेबक मुंशी हिसाब-किताबक पोथी निकालि लै छथि।

लगान बाँकी छै लोक सभक। नै, नै, ओ जमाना गेल ई तँ अछि बोनिक दस्तावेज। अहाँ...

मुदा मोहन गबैय्या सेहो ओतऽ आबि जाइ छथि। कोन लगानी? जमीन्दारी तँ खतम भऽ गेलै। आब तँ सरकार अछि मालिक।.. नै, नै, ओ जमाना गेल ई तँ अछि अहाँक बोनिक दस्तावेज...

किछु बाजऽ चाहैए मोहन गबैय्या।

ठीके तँ बाजल छथि। एकटा संगठन खुजल रहै झा आ यादव बाबू सभक, से सभ पक्षमे रहै पहिनहियो।

धरना दऽ देने रहै। जमीन्दारी खतम ठीके भऽ गेल छै।

मुदा धरणा असफल रहलै। आकि नै जानि मेल-पेँच कऽ लै गेलै। सभटा आन्दोलन, धरणा जे ई सभ करैए, से सभटा असफल किए भऽ जाइ छै। मुदा धीरेन्द्र हाथीकेँ किछु खुआ देने रहै।

मुदा आब तँ धीरेन्द्रे...

उठला मोहन गबैय्या- ओइ दस्तावेजमे किछु जादू छै- हमरा सभकेँ ओ लेबाक चाही, तखने ठीक मजदूरी हमरा सभकेँ भेटत।

जादू!!

शुरू भऽ गेला मोहन गबैय्या।

वनसप्तो... पाँखिबला गाए, उड़ैवाली गाए। उड़ि कऽ क्षणेमे इम्हरसँ उम्हर चलि जाइ छल। बड्ड परोपकारी, हराएल बच्चाकेँ पीठपर चढ़ा कऽ घर दऽ आबै छल।

ई की शुरू केलक मोहन गबैय्या?

नग्रक बरोबरि गाम करतै हौ?

गाममे छोट-छोट हवाइ जहाज देखाइ पड़ै छै, नगरमे पैघ-पैघ।

नग्रमे कतऽ वनशप्तो आ राकश भेटतह?

आँखिक देखल राकश, लोथ आ गाछ हँकैत डाइन।

झुट्ठे बुझाइ छह, इन्द्रकान्त बाबू, तोहर बाबूक संगे जीपपर अबै छलै इंजीनियर सभ, दू बजे रातिमे। भूत सभ ताल ठोकै छलै। सभ सुनलकै। तोहर बाबू नै कहलखिन तखन, बादमे ओकरा सभकेँ कहलखिन। पहिने प्लेग सभमे बड्डे लोक मरै छलै, से अकाल मृत्युमे भूत बनै छलै।

आब डाक्टर बेसी छै, देखलहक नै १९९४ मे कहाँ कियो मरलै, आ १९६६ मे कतेक मरलै।

१९९४ मे सूरतसँ लोक सभ भागि-भागि एलै। सुनै छिऐ अमेरिका प्लेगक बैक्टीरिया छोड़ने छलै।

धुर, तोहूँ, अमेरिका किए एना करतै?

सुनै छिऐ कोनो दवाइक जाँच लेल करै जाइ छै, भगवान जानए की गप छै। झुट्ठो हेतै।

खाली राकश छै आब बोनमे।

वनसप्तो तँ नहिये।

ई कोन धरणा शुरू कऽ देलक मोहन गबैय्या। लोको सभ गढ़ नारिकेलक... कत्ते फुराइ जाइ छै...

देशक सर्वोच्च सेवाक भर्तीक प्रश्न-पत्र लीक भऽ गेलै। ऐबेर ने पता चलल छै, पहिनहियो की की होइत हेतै, के जानैए। ई इन्टरव्यू-तिन्टरव्यू तँ सेहो गलतकेँ सही करबाक तरीके ने छै हौ।

ईराक देशकक सद्दाम हुसैनक कुवैत देशपर आक्रमण भेलै। हौ, भरि विश्वमे तेलक सप्लाइपर असरि पड़लै मुदा भारतकेँ किछु नै भेलै। किए नै भेलै? हौ अपने सभ तँ लकड़ीपर खापड़ि चढ़ा भुज्जा भूजि कऽ खा लेब। अपना सभकेँ मटिया तेलक कोन खगता। एतुक्का लोककेँ तेलसँ की काज, भानस करबे नै करत। भुज्जा फाँकि कऽ रहि जाएत, साँझ पड़लासँ पहिनहिये लकड़ीपर भानस बना लेत। मुदा कुवैत लग पाइ रहै से अमेरिका ओकरा पक्षमे आबि गेलै। १९९० ई. मे सी.एन.एन. टेलीविजन इराकपर हमलाक रिपोर्ट देमऽ लागल, इराकक कुवैतपर हमलाक रिपोर्ट।

फोन बूथ जकाँ टी.वी. चैनल भऽ गेलै आ सभकेँ प्रचार भेटै छै, ओहीपर ओ अपन खर्चा निकालैए।

हौ, भारत इंग्लैंडकेँ सोना बन्हकी दऽ देलकै, स्थिति नै कोना सुधरतै? सोना तँ घरक स्थिति खराप भेलापर बेचल जाइ छै। मुदा देशक मान बढ़लै,

इज्जत तँ रहलै। हौ, सएमे नब्बै घरमे सोना कियो देखनहियो छै लोक हौ?

ई सड़क चारि लेन बला....

ओना भेलैए काकी? वाजपेयीजी १९९८ ई. मे प्रधानमंत्री छला, सेक्रेटरी सिरी किला ऑडीटोरियम लेल ड्राफ्ट भाषण तैयार केलक, मुदा ओइमे किछु विशेष नै छलै। तखन कहलापर ओइमे कश्मीरसँ कन्याकुमारी धरिक सड़कक चर्च जोड़ल गेल। बिजनेसमेन सभ खुश भऽ गेला, यएह बदलि कऽ स्वर्णिम चतुर्भुज सड़क योजना बनल आ ई फारबिसगंजक सड़क सएह छी ने यै काकी।

लोकक लग पाइ छै जे फोन करतै, गामे-गाम बूथ खोलै छथि। हावर्ड विश्वविद्यालय छै अमेरिकामे। ओकर प्रोफेसर शोध केलकै जे केरलक मलाह लोकनि जे मोबाइलक प्रयोग केलन्हि तँ आमद बढ़लन्हि, संगे माछ सस्त सेहो भेलै। साम पित्रोदा छलै बाबू मुदा... अपने बरही विश्वकर्मा। अमेरिका चलि गेल रहै, घुरि कऽ एलै आ देशकेँ बदलि देलकै।

टुनमुनिया मारुति कार। वएह अम्बेसेडर आ फिएट छलै। वएह प्रिया आ बजाज चेतक। मास्टर साहेबक बेटाक बियाह आगाँ बढ़ि गेलै नै देखलहक। आब ने एलैहें हीरो होन्डा, बुलेट होइ छै, जेना करितो छै बम-बम-बम-बम, नामो छै बुलेट, से नैतक नाम राखि देलिऐहें बुलेट। मास्टर साहेब कहल जे हीरो होन्डा नै आओत तँ बियाह नै हएत। दरभंगासँ ब्लैकमे आएल। तखन बरियातियोकेँ हिस्सक छोड़ेलक कैथिनियाँ बला सभ। सभटा माछ हीरो होन्डाकेँ सुँघा कऽ पोखरिमे फेक दै गेलै।

दत्ता सामन्तकेँ गारि दैत सूती मिलक पूर्व श्रमिक जे आब खोमचाबला, जूता सिबैबला भऽ गेल अछि। मुदा बात किछु आरो छलै। बम्बैमे प्रोपर्टीक

दाम बढ़ि गेल छलै से फैक्टरीबला सभ ओइमे कंस्ट्रक्शन करबामे सुविधा पेलक। फैक्ट्री तँ तारापुर जा कऽ खोलि सकै छी। बम्बैइमे फैक्ट्री कोनो बहन्ने बन्न करेबाक छलै..

आर्यभट्टसँ १९७५ ई. मे भारत बाहरी स्पेसमे पहुँचल। वैज्ञानिक आर्यभट्ट भेल रहै हौ, पन्द्रह सए बर्ख पहिने। हँ हौ, की बुझै छहक जे भारतमे खाली धर्मशास्त्री भेलै हें। बाहरी स्पेस, अच्छा आब बुझलौं, आउटर स्पेसमे गेल सेटेलाइट, आर्यभट्टपर बाजि गेला एतेक गप मोहन गबैय्या।

भाखरा-नांगल- आधुनिक भारतक मन्दिर लेल कोसी बान्हक बलिदान भेल। सभकें ठकि ठकि कऽ माटिक बान्ह बान्हल गेल कोसीपर, हाइ रे हाइ ठकहरा नेता सभ।

ऑपेरेशन शक्ति माने हाइड्रोजन बम- १९९८ ई.। १९७४ मे ओही ठाम परमाणु बमक टेस्ट भेल रहै- बुद्धा मुस्किआयल रहथि। आब की ओ ऑपेरेशन शक्तिक बाद भभा कऽ हँसल छथि।

हर्षद मेहताक देल छिऐ ई झंझारपुरक बौआ बाबूक दुमहला हौ। आब तँ शेयर कम्प्यूटरमे अबै छै। रस्तामे हरेबाक कोनो डर नै। पहिने तँ एक बेर कम्पनीक शेयर हेरा गेलापर कोनो ठौर-ठेकान नै भेटै छलै। ई शेयर की होइ छै हौ मोहन? ई भेलै मलिकाना, माने ओइ कम्पनीक किछु मलिकाना तोरो लग छह। आब बुझलिऐ।

विमलक, खाली विमलक कपड़ा चाही, दोसराक नै। *ओनली विमल*। ई जमाए सभ ससुरकें परेशान केनाइ नै छोड़तै। झंझारपुर बजारमे नकली विमलक कपड़ा सभ खूब आबि गेल छै। आब बुझथुन जमाए सभ।

हिजली कैम्प जेल, खड़गपुर खाली पड़ल छल, ओतै आइ.आइ.टी.

खुजल १९५० ई. मे। १९६१ ई. मे कलकत्तामे पहिल आइ.आइ.एम. खुजल, विश्वविद्यालयसँ बाहर नीक पढ़ाइक आरम्भ।

मुदा अपन मिथिलाक जमीन्दार, हाइ रे हइ। लोक पढ़ि जेतै तँ टहल-टिकोरा के करितै, से कॉलेज-स्कूल खोलबे नै केलक।

सरकारी कम्पनी सभ प्राइवेट हेबऽ लागल।

सरकारी कम्पनीमे दरमाहा बन्द...

प्राइवेट टाटा सीमेन्टकेँ लाफार्ज द्वारा किनलासँ सभ कर्मचारी बमबम भऽ गेल।

डालमियानगर महावीर डल्डाबलाक बेटी जमाए साहित्यिक पुरस्कार खोललक...

मुदा ओ बेटाक मोहमे दोसर बियाह केलक आ बिजनेस आपसी द्वन्द्वमे बन्न भऽ गेलै।

बंजारा सभक टेण्टबला बस्ती सिमरा लग सुखेँतमे बनै उजरै। आब बंजारा सभ सिमरामे घर बसा लेने अछि।

सौँसे इलाकाक बंजाराकेँ जोगनाथ मण्डल प्रशासनक मदतिसँ सिमरामे बसेलन्हि। एकटा नीतिश कुमार मुख्यमंत्री छै अखन। ओकरे प्रशासनक योजनामे धीरेन्द्र राय ओकर सभक शिक्षाक लेल ढेर रास काज केलन्हि। जोगनाथ मण्डल आ धीरेन्द्र राय एक बेर अबाज दऽ दौ सभ बंजारा एकट्ठा भऽ जेतै।

.. निर्मल पाइ रो टो टो...

बंजाराक रज्जो देवी, दोसर जातिमे बियाह कऽ आन्दोलने कऽ देलकै, आब सुनै छिऐ कलकत्तामे रहैए, बंजारा-मगहिया डोम आकि गिदरमारा सभ ओकरा अपन कलंक बुझैए।

ओकर सभक मुख्य महिला रज्जो देवी... कोनो गएर बंजारासँ बियाह कऽ कए कलकत्ता चलि गेल छै। घुरऽ चाहै छै, मुदा के घुरऽ देतै, बंजाराक नाक कटा देलक ओ! कलंक छी बंजारा लेल ओ!! बंजारा सभमे आपसमे एक मूलक लोकक बीच बियाह नै होइ छै, तखन गएर बंजारामे बियाह? कमरबन्दमे लटकल डोरी आ गोली सभसँ बंजाराक एकटा समूह दोसर बंजारा समूहक मूल जानि जाइए।

ललित बाबू तँ बड्ड काज केलक मुदा मारल गेल १९७४ मे, अनुरोध-विरोध दबाबोमे होइ छै। सुनै छिऐ मोँछ बला प्रधानमंत्री मरबेलकै, से १९८४ मे जखन ओइ मोँछ बला प्रधानमंत्रीक हत्या भेल तँ मिथिलाक लोक मिठाइ बँटलक आ ललित बाबूक बेटाकेँ जितबेलकै एम.पी. चुनावमे।

केरलक ६८ बर्खक बूढ़ी आयशा साक्षर भेली आ केरल पूर्ण साक्षर भऽ गेल १९९१ ई. मे।

बाबू, मोहन गबैय्या खाली अधलाहे समाचार नै सुनबैए, निराशा आ आशा मिज्झड़ कऽ दैए।

टाटा- पारम्परिक बिजनेस परिवारमे गनल जाइ छल। मुदा आब अपनासँ चारि गुणा पैघ स्टील फैक्ट्री कोरसकेँ टाटा स्टील किनलक।

२००१ ई. मे कलकत्तामे बिगबजार मॉल, सभ समान एक ठाम, लगिते ने छै जे भारत छै, पहिल एहेन प्रयोग छल।

सरकारी विकासक आ सरकारी बैंकक हिन्दू विकास दर ३-४ प्रतिशत। ई हिन्नू विकास दर की छिऐ हौ। कम विकास दर आकि बिन विकासक विकास! मुदा फेर गाछबला फाइनेन्स आ आन फाइनेन्स कम्पनी सभ सभटा पाइ लऽ कऽ भागल। गाछबला फाइनेन्स बला सभ एकटा गाछ अहाँक नामसँ लगा देत आ बीस सालक बाद ओकर एक करोड़ टकाक गाछ बनि जेबाक भ्रम देत। अहाँक नामसँ कोन बोनमे कोन गाछ रोपल गेल से के कहत जखन आब ओ सभ कम्पनी अपने निपत्ता भऽ गेल।

बोफोर्स १९८७ ई.। स्वेडिश रेडियो, चित्रा सुब्रह्मण्यम आ एन.रामक द हिन्दूक अखबारमे रिपोर्ट। लागल जे भारतमे पहिल आ अन्तिम घोटाला

भेलै ई। घोटालाक पाइसँ बेसी खर्च ओकर जाँचमे भऽ गेलै।

जेनरल टिक्का खानक अत्याचार पूब पाकिस्तानमे शुरू भेल आ अमेरिकन डिप्लोमेट आर्चर ब्लड अपन देशकेँ खूब रास बात सुनेलन्हि। भारतक सेनाध्यक्ष जेनेरल एस.एच.एफ.जे. मानेकशॉक भाषण, जे रेडियोपर अबै छल, से खून खौला दै छल। भारत पच्छिम पाकिस्तान दिस कराचीमे पी.एन.एस. खिबेर आ आर चारिटा पाकिस्तानी जहाजकेँ डुमेलक आ इम्हर पूब दिस बंगालक खाड़ीमे पी.एन.एस. गाजीकेँ डुमेलक। मुदा बांग्लादेश बनल आ फेर ओतऽ चकमा हिन्दूकेँ, दलित हिन्दूकेँ सताओल गेल, पाकिस्तान अलग दुश्मन भऽ गेल। कश्मीर समस्या तकर बादे बढ़ल।

चीनसँ भारतक युद्ध भेल। १९६२क भारत-चीन युद्धमे मात्र २६०० लोक मरल, युद्धमे ३००० सँ ऊपर जँ लोक नै मरल तखन ओ दू देशक युद्ध कोना भेल? पश्चिममे लद्दाख आ पूबमे अरुणाचल-तवांगपर चीन आक्रमण केलक। आ भारत बिन युद्ध लड़नहिये युद्ध हारि गेल!

भारतमे आपातकाल आएल, ट्रेन टाइमसँ अबै छल, सत्ता छिनेलाक बाद लोक सेक्यूलर बनै छथि, आ धार्मिक सेहो। २१ मास आपातकाल रहल आ फेर कांग्रेस हारि गेल चुनावमे, वएह चुनाव जइमे टी. एन. शेषणक चुनाव आयुक्त बनलासँ पहिने बहुत ठाम महिला आ वंचित वर्ग कहियो वोट खसेबे नै केने छल। भारतक सभसँ प्रभावकारी चुनाव आयुक्त रहथि टी. एन. शेषण आ तकर बाद सभ चुनाव आयुक्तकेँ प्रभावकारी हुअए पड़लन्हि।

उत्तर बंगालक दार्जिलिंग नक्सलबारी गाम। ओतऽ गाम बला सभ एकटा जमीन्दार आ पुलिस निरीक्षककेँ मारि देलक, पुलिस नौ टा युवाकेँ मारलक आ दूटा बच्चाकेँ सेहो। खेतिहर-बोनिहारकेँ जमीन देबाक मांग छल ई, आ ई भरि भारत पसरि गेल। नेपालोमे पसरल।

बाबरी मस्जिद १९९२ क दिसम्बर। गामे-गाम ईँटा लऽ कऽ घुमैत लोक,

बाबरी मस्जिदकेँ ढाहि रामललाक मन्दिर बनबैले अपस्याँत लोक। एतेक जोश छुआछूत, जाति भेद आ असमानता मेटेबामे जँ लगबितौं!!

१९९९ई.मे गीता हरिहरन, एकटा लेखिका, केस जितलन्हि आ अपन बच्चाकेँ अपन उपाधि देलनि, पिताक नै, ऐ लेल हुनका केस जीतऽ पड़लन्हि आ १९८६ मे शाहबानो केस जितियो कऽ हारि गेली। आरिफ मोहम्मद खान विरोध केलन्हि, भारत सरकारक मंत्री रहितो भारत सरकारक कट्टरपंथी तत्वसँ हारि मानबाक विरोध केलन्हि।

आश आ निरास मिज्झड़ रहिते छै सभ ठाम।

१९९८ मे तेरह मास आ फेर कारगिलक बाद १९९९ मे भारत पार्टी पाँच साल सत्तामे रहल। हजारो सैनिक मरलै। कोन जिला छै जतुक्का लोक नै मरलै ओइ युद्धमे। हँ मुदा देशमे एकता अनबा लेल बीच-बीचमे युद्ध आ बलि देबैए पड़ै छै। लोकक बलि, सैनिकक बलि। आ जीतत देश तँ सत्ताधारीकेँ फाएदा भेटबे करतै।

अन्नादुरै रहथि तमिल प्रदेशमे। १९६७ ई. मे द्रविड़ पार्टी तमिलनाडुमे जीतल। द्रविड़ पार्टीक नेता पेरियार। हुनकासँ अलग भऽ अन्नादुरैं अलग पार्टी बनेलन्हि। पेरियार स्वतंत्रताकेँ ब्राह्मण आ उत्तर भारतक परतंत्रतासँ जोड़ै छला। १९६५ ई. मे हिन्दी विरोधी आन्दोलन तमिल प्रदेशमे शुरू भेल। आ आब.. सर्वस्वान्त..

आतंकवाद। ईहो एकटा वाद बनि गेल। नक्सलवादसँ विपरीत ई भारत विरोधी वाद छल। नक्सलवाद तँ भारतक तंत्रमे बदली करऽ चाहै छल मुदा आतंकवाद भारतकेँ तोड़ऽ चाहलक, कमजोर करऽ चाहलक। १९९१ ई.मे राजीव गाँधीक श्री पेरम्बदूरमे हत्या भेल। हम डरि गेलौं। डरि गेलौं जे फेरसँ सिखक विरुद्ध ने आक्रमण होमए लागए, जेना १९८४ ई.मे इन्दिरा गाँधीक मृत्युक बाद भेल छल। श्रीलंकाक बाघ सेनाक थेनमोझी राजारत्नम प्रसिद्ध धानु केने छल आत्मघाती हमला, अपनो मरि गेल ओ। ई सभटा घटना

कैमरामे रेकॉर्ड भऽ गेल, कैमरामेन सेहो मरि गेल। १९८४ ई. मे इन्दिरा गाँधीकेँ २५ बुलेट स्टेनगनसँ सतनाम आ ५ बुलेट बेअंत मारने छल। आ तकर बाद दंगा पसरल, सिक्खक विरुद्ध, तेँ हम डरि गेल छलौं।

मण्डल कमीशन बनल। अपन बी. पी. मण्डलक नामपर ई कमीशन बनल। ११ टा आधार पर पिछड़ा वर्गक निर्धारण भेल, सामाजिक आधार ३ अंक, शैक्षिक आधार २ अंक, आर्थिक आधार १ अंक, अहिना कऽ कऽ। ५० प्रतिशत वा अधिकबला जाति बैकवर्ड बनि गेल। गुजरातक राजपूत, मध्य प्रदेशक मराठा आ असमक ब्राह्मण बैकवर्ड बनि गेल।

एक दिना क्रिकेट खेलपर रेडियो क्रिकेट कमेन्टरी शुरू भेल आ फुटबॉल भारतसँ निपत्ता भऽ गेल। पाँच-पाँच दिन खेल होइ छलै, बीचमे एकदिन विश्राम सेहो होइ छलै। एक दिन भोरसँ साँझ कम भेलै हौ, लोक काज-धाज छोड़ि कऽ कान पथने रहैए।

भोपाल, २ दिसम्बर १९८४ क राति। २५००० लोक मुइल। जहर बला गैसक टंकी फूटि गेल। कतेक अपंग भऽ गेल। विदेशीक गरीब देशमे जहरक व्यवसाय। उद्योग चाही, मुदा केहेन उद्योग चाही?

वाइ.टू.के. माने बर्ख २०००, सभटा कम्प्यूटर बन्न भऽ जाएत! विप्रो, इन्फोसिस, टी.सी.एस. ई सभ भारतक कम्प्यूटर कम्पनी खूब बढ़ल। वाइ.टू.के. माने बर्ख २०००=००=१९००; कम्प्यूटर काज बन्न कऽ देत, तकर निदान लेल काज बाहरसँ आएल।

इन्टरनेट माने अन्तर्जाल, भारतमे वी.एस.एन.एल. कम्पनी १५ अगस्त १९९५ केँ इन्टरनेट आनलक। आ वंचित वर्ग लेल ई एकटा बड़का हथियार बनि गेल। मठाधीश लोकनिक गढ़ टुटलन्हि। मुदा वंचित वर्गमे एकर प्रवेश अखनो सीमित अछि।

ग्रामीण रोजगारक कार्यक्रम शुरू भेल। लोकक हाथमे टका एलै। नै तँ पहिने जिनगी बीत जाइ छलै आ कतेक लोक टाका बिनु देखनहिये गुजरि जाइ चल। बेच दऽ कऽ बौस्तु कीनै छल, अखनो किनैए, मुदा टका एलासँ

भुखमरी खतम भेलै।

अमूल कॉपरेटिव दूध व्यवसायीकेँ बिजनेस सिखेलक। मुदा अपना सभ दिस ई देरीसँ आएल। सभ चीज देरिये सँ अबैए।

न्यू योर्कर पत्रिका- १९९७मे भारतक अंग्रेजी भाषाक लेखक सभपर अंक निकाललक। सलमान रस्दी, अमिताव घोष, अब्राहम वर्गीस, जी. वी. देसानी आ रुथ प्रावर झाबवाला। सभ देखलक जे अंग्रेजी आब भारतक भऽ गेल अछि, भारत ओकरा अपन दास बना लेने अछि!

भारतक योगीमे एकटा योगी महेश योगी आ विदेशक बड़का गबैय्याक समूह बीटल्सक काज-धाज छोड़ि हुनकर शरणमे शान्तिक खोजमे एनाइ। ट्रांसेन्डेन्टल मेडीटेशन, ऋषिकेशमे। फेर योगी रजनीश १९७०क दशकमे पुणेसँ शुरू भऽ विश्वमे पसरि गेला। प्रभुपाद शुरू केलन्हि संस्था इस्कोन, भगवान कृष्ण बनि गेला लॉर्ड कृष्ण। भारतक खोजमे, भारतक शान्तिक खोजमे स्टीव जॉब्स भारत एला, हरियाणामे एकटा संन्यासीक आश्रम। मुदा एतुक्का भीड़ आ गरीबी देखि कऽ संन्यासीक आश्रमसँ घुरि गेला, कम्प्यूटरक एपल कम्पनी बनेलन्हि आ कहलन्हि जे ऐ बाबा वा कार्ल मार्क्ससँ पैघ काज तँ लैम्प बनबैबला आविष्कारकक अछि जइसँ हजारक हजार खदान मजूरक जान बचल।

क्रिकेट खिलाड़ी सचिन तेन्दुलकरक अनघोल छै। अहिना एशियाड १९८२ क अप्पू हाथीक अनघोल भेल छलै। अप्पू खेलमे करतब नै देखा सकल कारण जानवरकेँ अधिकार दियाबैबला संस्था ओकरा प्रशिक्षणमे सतेबाक बात उठेलक। मनुक्खक अधिकार अखनो पाछू छै।

ए. आर. रहमान धर्म परिवर्तनसँ पहिने दिलीप रहथि। विश्वमे अपन संगीत पसारलन्हि। राजश्री प्रोडक्शन पारिवारिक फिल्म बनेलक। एम.एफ. हुसैन, तीजन बाइ, आ “अपना उत्सव” कार्यक्रमसँ बहार भेल कलाकार विश्वमे अपन कलाक प्रदर्शन केलन्हि। “नवोदय विद्यालय” देशक जिला सभमे खुजल आ गरीबक बच्चाक प्रतिभासँ विश्व परिचिति प्राप्त केलक।

२१ म शताब्दी छिऐ, आब हमरा सभ दिस राजनीतिज्ञ सेहो जातिक आधारपर वोट नै मांगै छथि, काज करै छथि, ओना साहित्यकार सभमे कतेकोमे घृणा आ जातिवाद भरल छन्हि। किछु साहित्यकार मानै छथि मैथिल माने मैथिल ब्राह्मण, से मैथिलक बदला मैथिली भाषी लोक प्रयुक्त कऽ सकै छी, ई मात्र हमर विचार अछि।

हमरा गाममे एक गोटे बूढ़ छला.. लोक कहैए ....

डाँरपर हाथ राखि ओ जइ आरिपर ठाढ़ भऽ कहथि- केहन सनगर धान छै...

... ओ धान सुड्डाह भऽ जाइ.. आब ऐमे कते सत्य छै आ कते बनोतरी.. के फरिछाएत...

सएह गप छै.. मुदा अन्धविश्वासक संग वैज्ञानिकता सेहो चाही, आदिवासी इलाकामे डाक्टर सभ पेनिसिलिनकेँ मंत्रा कऽ दै छथिन्ह, से लोककेँ विश्वास होइ छै जे मंत्रसँ ठीक भेल अछि....

से आब बाते खतम भऽ गेल किने..

बिलमे जाइ काल ने सोझ भऽ जाइ छै, फेर तँ टेढ़े, केस मोकदमा शुरू भेल, कोर्ट कचहरी, न्यायक दरबारमे अन्याय, केस कऽ कए लोककेँ पैमाल करबैत रहै छथि।

जेठमे पानि भऽ रहल अछि तँ बादमे अषाढ़मे कम हएत से नीक नै।

गन्धवरियाक गन्धवारडीह सकरी आ दरभंगा टीसनक बीचमे अछि, जीवछक पूजा ओ सभ करै छथि।

गन्धवरिया वरूआरी, सुखपुर, परशरमा, बरैल आ यदिया मानगंज पँचमहलामे पसरल छथि।

सौरिया राजक प्रतिनिधि दुर्गागंजमे छथि। माता–पिताक देहांत भेलापर

दुनू अनाथ बालक लखेशराय आ परवेशराय सौरिया गेला। हुनका लोकनिकेँ परासर गोत्र देल गेल जखन कि ओ सभ परमार रहथि आ गोत्र कौण्डिन्य रहन्हि। घरक गोसाओन एक बहुत उत्तम खड्ग देलखिन्ह जइमे समस्त दुर्गा सप्तशती अंकित छल। ई खड्ग दुर्गापुर भद्दीसँ हरिवल्लभ नारायण सिंह सोनबरसा आनलन्हि। खड्गमे बीझ नै लगै छल, पनबट्टामे चौपेतल रहै छल आ झाड़लापर पैघ भऽ खड्ग बनि जाइ छल। युद्धमे लहाश दुर्गन्ध करऽ लागल, तँ जइ गाममे युद्ध भेल से गाम भेल गंधवारि। 'जीवछ' धार हिनकर सभक कुलदेवता छल, गन्धवारि, भीठ भगवानपुर आ सहरसाक आसपासमे गन्धवरिया सभ छथि।

डेढ़ सए साल पहिने पूर्णियाँसँ पूबमे कोसी धार बहै छल।

मिथिलामे कुसियार, तमाकु, पाट आ मिरचाइ उपजै छल। कोकटी आ बादमे खादी कपड़ा बनै छल। नाथपुर, हाजीपुर, लालगंज, बगहा, गोविन्दपुर, सतराघाट, दरभंगा, कमतौल, खगड़िया, रोसरा, पूसा, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, रानीगंज, नबाबगंज, नाथपुर, साहेबगंज, राजगंज, रामपुर, अलीगंज, खबासपुर, दुलालगंज, कलियागंज, देवगंज, किशनगंज, बहादुरगंज, बारसोइ, बेगूसराय, तेघड़ा, दलसिंहसराय सभमे बनिजार सभ अबैत रहथि।

मधेपुरा लग शंकरपुर आ ओतऽ मधेली बजार आ वंसतपुर अछि, ओतऽ खिस्सा सीत–वसंतक अवशेष अछि।

१९८७-८८ क अकाल, १९८७क बाढ़ि आ १९८८क भूकम्पसँ पहिने हरित क्रान्ति आएल। इम्हर तँ कनिये मनिये।

पहिल बेर १९६२-६५मे... ... फेर १९७०-७३ मे नाइट्रोजन-फास्फोरस खाद, कीटनाशक, मेक्सिकोक बौन बीज, ट्रेक्टर, सिंचाइ, गहूम बेशी, जय-जवान जय किसान नारा आर आगाँ बढ़ल आ खेतीक क्षेत्रफल बढ़ल। तेसर हरित क्रान्ति १९८०-८३ आ १९९२-९५ मे धानक नीक बीज सेहो आएल आ ई बिहार, असम, उड़ीसा आ प.बंगालमे पसरल।

मुदा ऐसँ समस्या सेहो आएल, वर्गीय ध्रुवीकरण, धनिक किसान आ किसान-बटाइदारक किराया बढ़ि गेल, मुदा छोट किसान भूमिहीन नै भेल, मुदा अनियमित भूमिहीन मजदूरक मजदूरी बढ़ल।

मुदा तरकारीमे कीटनाशक आबि गेलै।

कैन्सर आ ब्रेन ट्यूमर बढ़ऽ लगलै। आब ई हरियरका क्रान्ति की देलक आ की लेलक से सोचै जाइ जाह।

भूदान आ नक्सलवाद दुनू १९६४-७० मध्य चलल। १९७० दशकमे भूमि कब्जा शुरू भेल। जमीन्दारी उन्मूलन कने भेल कने नै।

भूदानक भूमि प्राप्तिक लक्ष्य ३० करोड़ एकड़मे मात्र ५ करोड़ एकड़ प्राप्त भेल। जयप्रकाश नारायण विनोबा भावेक संग ऐमे शामिल भेला।

१९६० धरि ८.७२ लाख एकड़ भूमि बाँटल गेल, बेसी मोकदमाबला आ बंजर भूमि छल। जून १९९९ मे बिहार सरकार राज्य भूदान समितिकेँ अदहो जमीन नै बाँटबाक कारणे भंग केलक।

दूधमे गुजरातक अमूल आ चिप्स-पापड़मे राजस्थानक सहकारी लिज्जत आएल। मुदा अपना सभ ऐठाम?

लिंगभेदक समस्या कहाँ कम भेल।

टेक्नोलोजी आएल मुदा किछु महानगर धरि सीमित रहि गेल।

इन्टरनेट वंचित वर्ग लेल आस लऽ कऽ आएल, मुदा अखनो ऐ वर्गमे एकर उपयोग सीमित छै।

नग्रमे लोक इन्टरनेटक सदुपयोग कम आ पोर्न देखैमे बेशी करै छथि।

जीवन-प्रत्याशा बढ़ल, बाल मृत्यु दर घटल, जे.पी. सम्पूर्ण क्रान्तिक दलहीन जनवाद नै आनि सकल, मुदा परीक्षामे चोरि शुरू भऽ गेल जकरा लोक जयप्रकाशी बैच कहैए।

राज्य पुनर्गठन १९५६ मे भेल। राजभाषा विवाद बढ़ल, हिन्दीक संग अंग्रेजी सेहो राजभाषा बनल।

मिथिलाक ब्राह्मण लोकनि सामवेद आ शुक्ल यजुर्वेदी रहथि– सामवेदी कौथुम आ यजुर्वेदी माध्यन्दिन। ई दुनू छन्दोग आ वाजसेनयी भेला। जजुआर (यजुर्वेदी शिक्षा), रीगा (ऋग्वेदी शिक्षा), अथरी (अथर्ववेदी शिक्षा), माउबहेट (माध्यनन्दिनी शाखाक शिक्षा), कुथुमा (कौथुमी शाखाक शिक्षा), शकरी (शकारी शाखाक शिक्षा), भट्टसिम्मरि आ भट्टपुर (मीमांसाक भट्ट स्कूलक शिक्षा) आ सामारि सामवेदी शिक्षाक केन्द्र छल।

'मल्ली' मैथिलानी जैन लोकनिक एकटा तीर्थकंर भेली।

बाइसी-बसैटी, अररियाक मिथिलाक्षर शिलालेख, रानी इन्द्रावती (१७८४-१८०२) जे फूड-फॉर-वर्क आ अन्य कल्याणकारी कार्यक प्रारम्भ केलन्हि केर मिथिलाक्षर अभिलेख एतऽ एकटा मन्दिरक ऊपरमे ताम्र-पत्रपर कीलित अछि.. आब जे ई रानी बोनिहार लेल फूड-फॉर-वर्क चलेलन्हि तँ बसैटीक शिव जी कहाँ बिगड़लखिन्ह...

जोड़बामे समए लगै छै, तोड़बामे नै.. खाली एककेँ लऽ कऽ चलब तँ सुविधा हएत, श्रम कम लागत.. लीडरशिप जएबाक खतरा नै रहत.. मुदा सभकेँ जोड़ब तँ दूरगामी हएब..

आब ब्राह्मण समाजकेँ लिअ, सौराठसँ जे लड़का अनै छथि तिनका हेय दृष्टि सँ देखल जाइ छै, सौराठ आब जँ ब्राह्मण समाजक हेबो करतै तँ कतेक गोटेक हेतै..

पंजीकारजीक बेटा पी.ओ. छथिन्ह ओ नोकरी छोडि कऽ पंजीकारी करता आकि हुनकर बेटा करथिन्ह..

राज्यसत्ता दलितक लेल आवास सौराठमे देमए चाहलकै आ ओ सफल नै भऽ सकलै तँ महादेव ठाढ़ छथि??? महादेव स्वयं लोक देवता माने आदिवासी देवता रहथि, इतिहास फेरसँ पढ़ू, से ओ जे ठाढ़ हेबो करथिन्ह तँ अपन भाइक पक्षमे वा विरोधमे?

गौरीशंकर स्थान.... ओतऽ पंडित जी बी.डी.ओ. साहेब परमानन्द पासवान जी सँ गप कऽ रहल छला

..परमानन्द पासवान ईमानदार अफसर... एक गोटे पासवानजीकेँ कहलखिन्ह जे अभियन्ता कृपानन्द, जकर स्कॉलरशिपक कागजपर पीअर बच्चा दसखत नै केलकै, बताह छथि तँ ओ कहलखिन्ह जे हँ हमर हाकिम पाइ नै कमाइए तँ बताह आ ओ फलना पाइ कमाइए तँ काबिल। ओही परमानन्द पासवान जीक बदौलत मिथिलाक एकमात्र बिना सरकारी सहायताक स्थल छिऐ ई.. गौरीशंकर स्थान .. पुजेगरीजी हुनका कहि रहल छलखिन्ह जे ऊपरमे जे कनेक मूर्ति फूटल छै तै सँ कताक सप्ताह धरि खून बहि रहल छलै... ओकरा तेलसँ ससारि कऽ कताक सप्ताहक बाद पुजेगरीजी खून बहनाइ रोकलन्हि!!!

मुदा असल गप की छै, ओ मूर्ति बोनमे छलै आ ककरो कोदारि लगलै आ फूटि गेलै तँ वएह खोज केलकै..... ई परमानन्द पासवान जीक उद्धार कएल.. आब गजेन्द्र डाक्टर साहेबक योगदान छन्हि, झंझारपुरमे दस टका फीस लै छथि, ५ टका अपन गुजर लेल रखै छथि आ ५ टका गौरीशंकर लेल...

गौरीये शंकरमे देखू ने पुजेगरीजी कहलखिन्ह जे गौरीशंकरक माथसँ एक सप्ताह धरि खून बहैत रहलन्हि, पुजेगरीजी मालिस करैत रहलखिन्ह आ एक सप्ताहक बाद जखन गौआँ सभ एला तँ देखलखिन्ह जे महिनाथपुरक ई

बतहा पुजेगरी की कऽ रहल अछि, आ लोक सभ सेहो जुमलै... भगवान मदति केलखिन्ह से तँ हमरा नै बुझल अछि मुदा लोक सभकेँ ऐ बातसँ जोश एलै..

आ लोककेँ लीडर भेटि जाए तँ की नै कऽ जाइए.. परमानन्द पासवान एला आ की कऽ गेला कहिये चुकल छी...

तीन सए पोखड़ि, पाँच सए इनार, मुदा दलित लेल एक्कोटा इनार नै, मुदा गढ़ नारिकेलमे से राधामोहन राय देलन्हि। गौरीशंकरक कैंपसेमे स्कूल छै, जइमे बगलक दलित बस्तीक नेना सभ पढ़ै छै... हाइ रे परमानन्द पासवान...

बगलेमे वैदिक स्कूल सेहो छलै.. सभ हस्त संचालनसँ वैदिक मंत्र पढ़बाक विधि सीखि जर्मनी चलि जाइ गेला.. ताला लागल छै, एक्के कैम्पसमे दुनू भेटत... मुदा तैयो डेवेलपमेंट तँ भेबे केलै..

आ सभ जमीन जाल आसपासक जे रहै, से मन्दिर परिसरमे दलित बच्चा सभक स्कूल लेल स्वतंत्रता सेनानी जागेश्वरक विधवा घेंघी दऽ देलकै। वएह स्वतंत्रता सेनानी जे बाँकीपुर जेलमे अंग्रेज द्वारा मारि देल गेला, हमर संगी।

उठला मोहन गबैय्या- ओइ दस्तावेजमे किछु जादू छै- हमरा सभकेँ ओ लेबाक चाही, तखने ठीक मजदूरी हमरा सभकेँ भेटत।

जादू!!

जादूबला दस्तावेज...

दिनमे कौआ देखि कऽ डेराइ, रातिमे नदी हेलि जाइ

तैंतीसम कल्लोल

अगहन उपास कालक कोन डर

गढ़ नारिकेलक मोहन गब्बैय्या। बड़का गबैय्या।
सरकारी कार्यक्रम शुरू होइ छै कने देरीयेसँ।

गौरीशंकर स्थानमे जखन आस पड़ोसक गामक लोक सभ जुमऽ लगला तखन सरकार सेहो माटिक सड़क बनबा देलक आ जोन मजूर आसपासक गाम सभसँ एतऽ बोनिपर खटऽ लागल। आ बोनि एकदम्मे भेटै। मुदा कतेक लोककेँ कतेक बोनि भेटत से ककरो नै पता रहै। ठेकेदार सभ धाँइ-धाँइ एक्के औँठासँ कतेको लोकक बोनिपर दस्खत कऽ दै। नव-नव कार्यक्रम सभ आएल छै सरकारक। जे भेटै छौ बड्ड भेटै छौ। मोहना- दलित गबैय्या। मजदूरी न्योन दरसँ, सरकारी स्कीममे मजदूरीक दरमे अन्तर किए? कागज नै भेटत, किए नै भेटत?

ने कहियो देखल आ नै सुनल, बजा कऽ काज कियो देने छल आइ तक, आ पाइ नकद भेटैए। बेसी मेन-मीख निकालमे तँ जे भेटै छौ सेहो बन्न भऽ जेतौ।

एकटा संगठन खुजल छै झा आ यादव बाबू सभक, से धरना देने रहै। असफल रहलै।

सभ पोथी पतरामे किछु ने किछु जादू छै।
सभ दस्तावेजमे किछु ने किछु जादू छै।

हे किछु गप छै। जादू!! मोहन गबैय्याक गप छिऐ बाबू।

हमर अधिकार- हमरा की भेट रहल अछि वा भेटबाक चाही, की हक अछि?

मोहन गबैय्याक गप छिऐ बाबू, आब जादूसँ आगाँ बढ़ल छै।

जीबाक साधन आ ओकर सुरक्षा लेल जन सुनबाहीक प्रारम्भ केलन्हि परमानन्द पासवान, झंझारपुरक बी.डी.ओ. साहेब।

सुनबाहीमे तँ सभ मानिये जाइ छलै, ठेकेदार, दलाल सभ। मुदा बादमे फेर वएह होइ छलै।

बहन्ना शुरू...

आइ कम मजूर चाही।

आइ बच्चा मजूर नै चाही।

आइ जनी-जाति मजूर नै चाही।

आइ पुरुखोमे कम्मे मजूर चाही।

ई ठिठरा कमजोर अछि, ई नै चाही।

ओ फुलेसरा मजगूत अछि मुदा कोढ़िया अछि, ओहो नै चाही।

एतेक काज बाँकीए छै आ मजूर चाहबे नै करी!
फेर जन सुनबाही बजेलन्हि परमानन्द पासवान।

सभ नेता, ठिकेदार, दलाल; सभ जुटल। बड़ा मारुख सभ। एह परमानन्द पासवान जी, की कहि देलिऐ। अहाँक गप के उठाएत?

आहि रे बा!!

मुदा फेर वएह; जनी-जाति, कमजोर, बच्चा, कोढ़िया।

छोड़; ऐ मोहन गबैय्याक फेरामे पड़ि कऽ भुक्खे मरि जाएब गऽ।

मुदा मोहन गबैय्या जे कहलक जे कागज सभमे छै जादू, से!

नबी बकस आ ओकर माए।

पहिने ईहो सभ धुनियाँ आ जोलहागिरी करै जाइ छल मुदा आब नै।

आब नबी बकस राजमिस्त्री बनि गेल अछि।

गबैया धरि दुनू गोटा....

मुदा तें की, मोहन गबैय्या सन के गाएत ? प्रसिद्ध मोहना- चर्मकार टोलक पिपहीबला। लोक पिपहीबलाक बदलामे गबैय्या कहै छै। हाइ रे हइ। बापो एहने गाबै छलै। तोँ कोना बुझलहीं ? बुढ़ा सभ कहै छथिन्ह। हाइ रे हइ।

ई गाम गढ़ नारिकेल, हाइ रे हइ। घर सभ बुझू सुगरक खोभारीये सन। मुदा कोनो खोभारी नै छै जतऽ कोनो ने कोनो कलामी नै रहैत होथि।

ई मोहन गबैय्या ।

बड़का चकरका बान्हपर जे माटि पड़ि रहल छलै तँ ठिकेदार सभ मजदूरी न्यून दरसँ कम सरकारी बोनि दऽ रहल छलै, आने ठाम जकाँ।

एह, कहलकै जे। दस्खत आ औंठा। घुटराक औंठा रोशनाइमे भिजले रहै छलै। दे औंठा, दे औंठा, धाँइ- धाँइ घण्टामे तीन सए मजूरक बोनिपर एक्के औंठाक चेन्हासी।

सरकारी स्कीममे मजदूरीक दरमे अन्तर किए? मोहन गबैय्या उठा देलकै तान।

बड्ड देखलिऐ सरकारी इजलास गौरीशंकर थानपर।

मोंछबला सभ ने कनफुसकी करऽ जानै जाइए। ई मोहन से ने तान उठेलन्हि जे की कियो बुझबो केलकै फरिछा कऽ।

सभकेँ भेलै जे गबैय्याक तान छिऐ। मुदा ओइ तानमे जे बाबू तागति रहै से परमानन्द पासवान बी.डी.ओ. साहेबकेँ लऽ अनलकै गढ़ नारिकेल।

कागज नै भेटत, आहि रे बा। बी.डी.ओ. साहेब तँ तैय्यारे छथि मुदा एस.डी.ओ. तँ जुलुम केलक।

मोंछबला सभ कोन कोन झण्डा लऽ कऽ आबि गेल, भूख हड़ताल आ धरना। "मजदूर, किसान, गरीब, भूमिहीन आदि-आदि संघर्ष संगठन"- बाबू बड़बरिया रॉयक धरना असफल।

उठला मोहन गबैय्या।

दादाके दुअरपर बाजैए बजना

उतारब सजना

हाइ रे हाइ मोहन ।

मैया के आसन डोललै हे

नबी बकसक माए कत्तऽ सँ नै, हरलै ने फुरलै, आबि गेलै।

अम्मा रोबे रोबे ला बहिनियाँ रोबे
दुलहिन रोबै
हय हाय
खटिया के पौवा
सैयद जाइ छै आजु दिन लड़ैले हो हाइ हाइ
गाछ के रिरितिया रोबै
डारीके कोइलिया
कुहकै मयुरनी हो हाइ हाइ

एकर दिस लड़ै दुनु भैयैं हो हाय हाय.....

गामक स्त्रीगण सभ आबि गेली... बिना तारतमक गीत सभ शुरू, फुसियाहींक घोल फचक्का शुरू भेल। मुदा फुसियाहींक कहाँ रहल ओ..

घर पछुअरबामे बसए मा
मलमल सारिया बिसाइ हे
सेहो सरिय खरीदऽ गेल बौआ दुल्हा
पेहेनिये चललि ससुरारि हे
दादा अलारी
दादी दुलारु
सारी रात हे
भरि दिन गमेलियौ दादी
रातो चलल ससुरारि हे
....
पलंग उछाय हे

-ओइ दस्तावेजमे किछु जादू छै।

ई की बाजि गेल फेर मोहन गबैय्या। ओइ कागचमे जादू होइ नै होइ, ऐ गपमे बड्ड जादू छै।

बाजि गेल कहाँ, बाजिये रहल अछि।

-हमरा सभकेँ ओ दस्तावेज लेबाक चाही, तखने ठीक मजूरी हमरा सभकेँ भेटत।

कोनो फुसियाहींक जादू-टोनाक गीत फेर शुरू करत ई। काली, बन्दी, गौरैया, बरहम आ बिसहाराक गीत शुरू करत।

बिजुबोन शिकार हे
एक पूत गेल हे भैरव
दुइ कोस गैल

बाबू केकर बिजूबोन शिकार हो
एक कोस गैल भै
दुइ कोस गेलहो बाबू तेसर कोस बिजू बोन शिकार हो
एक बोन झोरलओ हो भैर
तेसर बोन झोरल हो
बाबू तेसर बोन उठल शिकार हो
एक बोन झरलहो हे भैरऽ
दुइ बोन झोरललऽ ह तेसर बोन उठल शिकार हो
कारिया कुकुर हो बिसहर
गेलऽ
बाबू खोरियेलऽ तेसर बोन
एक बोन खोजलहो बिसहर
दुइ बोन खोजलह
तेसर बोन उठल शिकार हो
हरिण हो मरल हो भैरव
तितिरो ने मारलऽ हो
बाबू बिछि बिछि मारलऽ मयूर हो
कहाँ गेल बोन के मयूरनी दाइ
कहर ले सेन्दूर गए
तितिरो ने मारलऽ हो भैर
बिछि बिछि मारलऽ मयूर हो
एकबे उमेले भैर सेनूर जे हरि लेल
बाबू भेल हो

हे, ई गोरिलक गीत गबैत-गबैत मजूरीक गप करवन शुरू कऽ देता से कहब मोश्किल। आ फेर गप उठबे करत, गप अधिकारक। परमानन्द पासवान बी.डी.ओ. साहैब, हाइ रे हइ।

बभनीकें पुत्र तोहें बाल गोरैय्या,
पोथी नेने पढ़न जाइ हे
पोथिया नेरौलनि गोरिल जार बिरिछ तर
हलुआइ घर पैसल धपाइ हे
किछु मधुर खेलनि गोरिल किछो छिरियौला
किछु देल लंका पठाइ हे
बभनीक पुत्र तोहें बाल गोरैय्या
ग्वालिन घर पैसल धपाइ हे
किछु दूध पीलनि गोरिल किछु ढ़रकओला
किछु देल लंका पठाइ हे
बभनीक पुत्र तोहें बाल गोरैय्या
बड़इ घर पैसल धपाइ हे
किछु पान खेलनि गोरिल किछु छिड़िऔला
किछु देल लंका पठाइ हे
बभनीक पुत्र तोहें बाल गोरैय्या
डोमिन घर पैसल धपाइ हे
नीक नीक पाहुर गोरिल अपने चढ़ाओलऽ
काना पातर देल हड़काइ हे
बभनीक पुत्र तोहें बाल गोरैय्या
ब्राह्मण घर पैसल धपाइ हे
नीक-नीक जनौ गोरिल अपने पहिरलनि
औरो देलनि ओझराइ हे
हकन कनै छै गोरिल ब्राह्मणीक बेटिया
ब्राह्मण बाबू बड़ दुख देल हे
भनहि विद्यापति सुनू बाबू गोरिल
गहवर पैसिये जस लेल हे

-हमर अधिकार। हमरा की भेट रहल अछि वा भेटबाक चाही, की हक अछि।

परमानन्द बाबू गपकेँ बुझलन्हि। औ बाबू- "ई अरदराक मेघ ने मानत, रहत बरसि कै" आरसी प्रसाद सिंह आ मोहन गबैया किछु खेला हेबे करत।

उम्हर मुसहर टोलीसँ दीना भदरी बाबा आ सलहेस महराज पूजब शुरू भेल। फेर परमवीर, काली, भगवती, कमला, गांगोक गीत शुरू भऽ गेल।

हे परमवीर, काली, भगवती, कमला, गांगोकेँ घरमे पूजल जाइ छै, एतऽ कतौ ई गाओल जाइ। दीना भदरी बाबा आ सलहेस महराजक गीत गाबऽ ने, जे बाहरमे गाओल जाइ छै।

गांगो गहिल आ जन सुनबाही आ मजूरी!

गांगोदेवी के अंगनामे अरहुल के गछिया
फर-फूल लोधल ठाढ़ि यै

..राजा

सुगा एक आएल बैसल सूगा यै अरहुल फूल गाछ हे

बैठल सूगा अरहुल फूल गाछ हे

डाढ़िपात केलक क-कचून हे
नीक नीक फूलबर सुगबा
चुनि चुनि खाय डाढ़ि पात देलक कचून हे
कहाँ गेल कियर भेल
गाम के बहेलिया
मारू सूगा के धनुष चलाइ हे
घर से एकसर मरल बहेलिया
दोसर मारल

तेसर शर सूगा उड़ि जाइ हे
घर से बहार भेलि गोसाउन
नै मारिय सुगबा के
रहत एना सुगबा
छोट भाइ हे
जौँआ आम दियौ बहेलिया
सूगा के केर कान सुगबा सुगा छिऐ छोट भाइ हे

जीबाक साधन आ ओकर सुरक्षा लेल जन सुनबाही एस.डी.ओ. शुरू केलन्हि, मोने-मोन तमसाइत। एस.डी.ओ. कहाँदन आइ.ए.एस. छथि, मुदा परमानन्द पासवान, हाइ रे हइ। एस.डी.ओ. हुनका कहबो केलखिन्ह जे अहाँ स्थानीय छी तैं जखन जे होइए कऽ दै छी, जखन जकरा होइए भड़का दै छी।

जन सुनबाहीक प्रारम्भ भेल।

मजूरी सभकेँ नीक-नहाँति भेटऽ लगलै। आ ई तखन भेलै जखन सूचनाक अधिकार एतुक्का लोककेँ नै भेटल रहै।

२००५ ई. मे सूचनाक अधिकार भेटलै मुदा मोहन गबैय्या जे जन सुनबाही शुरू करबेने रहथि, ओ तँ ऐ सँ पहिनहिये। ओहो तँ सरकारी हाकिमे सभ द्वारा शुरू करबेने रहथि। ई जे सभ ठामक हाकिममे भाव रहितै तँ की दिक्कत रहै। कतेक ठाम कतेक मोहन गबैय्या भेल हेतै आ परमानन्द पासवान सेहो, हाइ रे हइ। आ तखन ई २००५ ई. मे सूचनाक अधिकारमे बदलल अछि।

की चाही, समस्त संसार।
की छौ जे हेरा जेतौ, गुलामी, जिंजीर, जहल...
अगहन उपास कालक कोन डर...

चौंतीसम कल्लोल

सेर भरि गहूम बरिख दिन खेबै/
पिआकेँ जाए नै देबै हे

पहिल पल्लव

गढ़ नारिकेल।

किशनगढ़मे बसि गेल गढ़ नारिकेल।

किशनगढ़ गाम। दिल्लीक पौश एरिया वसन्तकुँजक बगलमे। पाइबला सभ सेक्टरमे रहै छथि आ गरीब सभ किशनगढ़ आ मसूदपुरमे।

सेक्टरमे ओतुक्का बसिन्दा सभ कम्युनिटी हॉलमे खैराती हॉस्पीटल खोलने अछि। सेक्टरक पता देलापर फीस देमऽ पड़ै छै। गामक पतापर फीस तँ नहिए देमऽ पड़ै छै, दवाइयो मंगनीमे भेटै छै।

बगलमे मॉल अछि। दू तरहक। एकटा सामान्य लोक लेल। आ दोसर डी. एल. एफ. क इम्पोरिया... वसन्तकुँजक नेल्सन मंडेला मार्गपर। असमानता आ अपार्थेइड- छुआछूतक विरुद्ध संघर्ष करऽबला नेल्सन मंडेला। मुदा हुनकर नामपर बनल ऐ मार्गपर बनल ऐ इम्पोरिया मॉलमे लाख रुपैयासँ कममे कोनो समान भेटब असंभव। सभसँ सस्त अछि लाख रुपैयाक स्त्रीगणक लेडीज पर्स। बंगलोरक कस्तूरबा गाँधी मार्गपर शराबक फैक्ट्री आ महात्मा गाँधी मार्गपर बीयर बार सभ। गाइड लोक सभकेँ कहैत अछि- वर शराब बनबैत अछि आ कनिया बेचैत अछि, कारण महात्मा गाँधी मार्ग स्थित ओइ बीयर बार सभमे शराबक बिक्री होइत अछि। तेहने सन कथा अछि नेल्सन मंडेला रोडक। मुदा समाजवाद अछि एतऽ। से पाइ अछि तँ सेक्टरमे रहू आ नै अछि तँ गाममे, दुनु सटले-सटल। जमीनक दलाल एतुक्का सभसँ पाइबला लोक अछि। अपन बिजनेस कार्ड छपबैए ई सभ- रिअल एस्टेट एजेन्ट कऽ कऽ। बगलमे मेहरौली गाम सेहो अछि। माछ मुदा

किशनगढ़ आ मेहरौली दुनू ठाम भेटत। दिल्लीक लोक माँछ कम खाइए। अपने दिसुका लोक एकरा सभकेँ माँछ खेनाइ सिखेने छै।

आ अही बसन्तकुंज, मेहरौली, किशनगढ़ आ आसपासमे गढ़ नारिकेलक बहुत रास परिवार आबि गेल अछि।

ब्राह्मणमे इन्द्रकान्त मिश्रक बेटा उपेन्द्र बसन्तकुञ्जमे अछि।

कुञ्जड़ा टोलीक मोहम्मद शमशूलक बेटा इकबाल मेहरौलीमे अछि।

धनुख टोलीक भगवानदत्त मंडलक बेटा राजा किशनगढ़मे अछि।

धानुक अधिकलाल मंडलक बेटा सुखीलाल डॉक्टर छथिन्ह, रहै छथि बसन्तकुञ्जमे, काज करै छथि कैकटा हॉस्पीटलमे, जेना बत्रा हॉस्पीटल, फोर्टिस, रॉकलैण्ड आ अपोलोमे। मुदा सप्ताहमे एक दिन सोसाइटीक खैराती हॉस्पीटलमे मुफ्त इलाज करै छथि।

धोबियाटोलीक डोमी साफीक बेटा ललन बसन्तकुँजमे ठेलापर कपड़ापर लोहा दैत अछि। ओकर कनियाँ बुधनी सेहो घरे-घर कपड़ा बटोरि आनैत अछि आ तकरा लोहा कऽ घरे घर दऽ अबैत अछि। ई सभ मुदा रहै जाइए बसन्तकुँजेमे। कोनो बसिन्दाक दूटा स्कूटरक गैराज किरायापर लऽ लै गेल अछि, एकटामे काज करै जाइए आ दोसरामे रहै जाइए।

नौआटोलीक जयराम ठाकुरक माझिल बेटा बसन्त बसन्तकुञ्जक एकटा सेक्टरक सोझाँ गाछक तरमे सैलून खोलि लेने अछि। एकटा कुर्सी लगा देने अछि आ एकटा अएना लटका देने अछि। सोझाँक बजारमे केश कटाइ पचास टका लेत, तँ मुक्ताकाशक ई सैलून पन्द्रह टाकामे केश काटि देत। रहैए मुदा किशनगढ़मे। बीचमे पुलिस तंग केने रहै तँ तीन मास गामसँ घुरि आएल छल। आब मुदा पुलिससँ सेटिंग कऽ लेने अछि।

दयाराम रामक बेटा उमेश सेहो ओही मुक्ताकाश सैलूनक बगलमे अपन असला-खसला खसा लेने अछि, रहैए मुदा किशनगढ़मे। चप्पल, जुत्ताक मरोम्मतिक अलाबे तालाक डुप्लीकेट चाभी बनेबाक हुनर सेहो सीखि लेने अछि। कुञ्जी अछि तँ तकर डुप्लीकेट पन्द्रह टकामे। कुञ्जी हेरा गेल अछि तँ

तकर डुप्लीकेट सए टकामे। आ जे घर लऽ जेबन्हि तँ तकर फीस दू सए टका अतिरिक्त।

बड़ही-कमार टोलक जोगिन्दर ठाकुरक बेटा नमोनारायण अंसल बिल्डर्समे नोकरी करै छथि। किशनगढ़मे मकान कीनि लेने छथि। मुदा ओतुक्का वातावरण देखि दुखी रहै छथि, कारण ओतुक्का वातावरण गामोसँ बत्तर छै। जोगारमे छथि जे कतौ अपार्टमेन्टमे जगह भेटि जाए। आ से कनेक दुरगरो, जेना गाजियाबाद धरि, जेबा लेल तैयार छथि।

डोमटोलीक बौधा मल्लिकक बेटा श्रीमन्त सेक्टरक मेन्टेनेन्सक ठेका लेने छथि। हुनका लग दू सए गोटे छन्हि जे सभ क्वार्टरक कूड़ा सभ दिन भोरमे उठेबाक संग रोड आ पार्किंगक भोरे-भोर सफाइ करै जाइ छथि। ऐमे सँ किछु गोटे, विशेष कऽ नेपालक, भोरे-भोर लोकक कारक शीसा महिनबारी दू सए टाकामे पोछै छथि आ अखबारक हॉकर सेहो छथि। रहै छथि किशनगढ़मे मुदा अपन मकानमे।

कोइर दुखन महतोक बेटा लखन ठेलापर तरकारी बेचै छथि आ रहै छथि किशनगढ़मे।

भुमिहार राधामोहन रायक बेटा बसन्तकुञ्जमे रहै छथि, कन्सल्टेन्ट छथि, डोनेशन बला मेडिकल-इन्जीनियरिंग कॉलेजमे नाम लिखबाबै छथि।

सोनार अशोक ठाकुरक बेटा महानन्द सोनाचानीक दोकानमे कारीगर छथि आ रहै छथि किशनगढ़मे ।

तेली रामचन्द्र सावक बेटा मोहन गुड़गाँवमे फैक्ट्रीमे काज करै छथि, आ रहै छथि किशनगढ़मे।

मलाह जीबछ मुखियाक बेटा रवीन्द्र किशनगढ़मे माँछ बेचै छथि आ रहितो छथि किशनगढ़मे ।

मुसहर बिचकुन सदायक बेटा रघुवीर ड्राइवरी सीखि लेने अछि, बसन्तकुञ्जक एकटा व्यवसायी ऐठाम ड्राइवरी करैए आ रहैत अछि किशनगढ़मे।

बसन्तकुंज, मेहरौली आ किशनगढ़ आब गढ़ नारिकेल गामक एकटा छोट-छीन रूप बुझना जाइत अछि।

सत्यनारायण यादवक बेटा बिपिन बसन्तकुञ्जक फ्लैटमे रहै छथि। रेलबीक ठिकेदारीमे खूब जथा बना लेने छथि। सत्यनारायण यादव सालमे एक बेर दिल्ली भऽ आबै छथि। बिपिन कताक बेर पिताकेँ एतै रहबा लेल कहनहियो छथिन्ह, माएकेँ सेहो असगरमे कष्ट होइत हेतै। मुदा ने माइये आ ने सत्यनारायणे एक माससँ बेशी दिल्लीमे टिकि सकल छथि। बेटा कहितो छन्हि जे माए, बाबू एम.एल.ए. विधायक बनलाक बादो कटिया, कुढ़िया, फुच्ची आ तिनपइमे लागल छथि।

यादव जी ऐठाम उपनयन पहिने जकाँ अलगसँ नै होइए। यादव जी ऐठाम आब उपनयन बियाहे दिन कान्या पक्ष ऐठाम निरीक्षणक बाद होइए।

भोला पासवान आ मुकेश पासवान।

मुकेश पासवानक समधि बिन्देश्वर पासवानक ददा गढ़ नारिकेलक पुरान बसिन्दा। बिन्देश्वर पासवानक ददाकेँ रोसड़ामे दोखतरी भेट गेल छलन्हि। से ओ ओतै पलायन कऽ गेल छला। भोला पासवान आ मुकेश पासवानक ददा कुशेश्वरस्थानसँ गढ़ नारिकेल आबि गेल छला। मुदा दुनू गोटे एखनो दर्शन करबा लेल सालमे एक बेर कुशेश्वर जाइते छथि। गेना हजारीक वंशजक रूपमे हुनकर ओत्तऽ मानोदान होइ छन्हि।

मुकेश पासवानक बेटी मालती आ जमाए मथुरानन्द बसन्तकुञ्ज लग फार्म हाउस लेने छथि आ ओतै रहै जाइ छथि। मथुरानन्द मैथिलीक नीक लेखक छथि आ बसन्तकुञ्जक डी. पी. एस. स्कूलक प्रिंसिपल छथि। मालती बैंक अधिकारी छथि। भोला पासवान आ मुकेश पासवान गामेमे रहै जाइ छथि।

गढ़ नारिकेलसँ किशनगढ़ आएल दूटा चिट्ठी।

मुकेश पासवानक समधि बिन्देश्वर पासवानक ददा गढ़ नारिकेलक पुरान बसिन्दा रहथि। मुदा फेर ओतऽसँ रोसड़ाक लेल पलायन कऽ गेल रहथि।

हुनकर पत्नी अपन बेटाक दिल्ली बसलासँ बड़ दुखी छथिन्ह। आ तकर दोष अपन समधिकैं सेहो दै छथिन्ह। बिन्देश्वर अपन पत्नी द्वारा पुत्रक नाम लिखल चिट्ठी मुकेशकैं पठबै छथि। डाक सेवापर हुनका भरोस नै छन्हि। गढ़ नारिकेलक ढेर रास लोक दिल्लीमे रहै छथि, से हथौटी ई चिट्ठी बेटा लग पहुँचि जेतन्हि, तइ द्वारे। दोसर चिट्ठी सत्यनारायण यादवक पत्नी अपन बेटा बिपिनक नामे लिखने छथिन्ह। बरइ कपिलेश्वर राउतक बेटा पालन दुनू चिट्ठी गढ़ नारिकेलसँ किशनगढ़ अनलन्हि अछि।

१

पहिल चिट्ठी

शुभाशीष।

हम एतऽ कुशल छी। अहाँ सबहक कुशलक हेतु सतत् भगवानसँ प्रार्थी रहै छी। आगाँ समाचार ई जे अहाँ सभ हमर खोज खबरि लेनाइ बिल्कुले बिसरि गेल छी। फोन तँ छोड़ू, चिट्ठीयो सँ गप्प केना महिनो बीति जाइत अछि। कमसँ कम सप्ताहमे नै तँ महिनोमे एको बेर तँ माएक लेल गप्प करबाक समए निकालू। एतेक मोटका-मोटका किताब अहाँ लिखै छी, किन्तु माएसँ गप्प करबाक फुर्सत नै अछि। अहाँक किताबक खिस्सा आ कविता सभ दीदी सुनेलक अछि। बहुत मार्मिक लगैत अछि। परन्तु अपन माँक प्रति कोनो जिज्ञासा नै होइत अछि, जे कतऽ रहैत अछि आ कोना अछि। भाएसँ अहाँ अपने समए-समएपर गप्प करू जे हम कतऽ कतेक दिन रहब। गाममे आब हमरा नै रहल हएत, कारण एतऽ कोनो व्यवस्था नै अछि आ कियो जवान पुरुख-पात नै रहै छथिन्ह। अहाँ सभ भाए-बहिनमे छोट छी किन्तु घरमे अहींकैं घरक व्यवस्था आ इन्तजामक भार शुरुहेसँ अछि। किन्तु इम्हर अहाँ ध्यान नै दै छिऐ। फोनपर अहाँसँ गप्प करबाक बड्ड मोन होइत रहैत अछि। बच्चा सभसँ सेहो गप करबाक मोन होइत रहैत अछि। बच्चा सभकैं दू-तीन दिनपर *बा* सँ गप करबा लेल कहबै। जमाएकैं देखैत रहै छियन्हि जे

सभ दू-तीन दिनपर अपन माँ सँ गप करै छथिन्ह, से हमरो सौख लगैत अछि जे हमर बेटा सभ केहेन अछि जे कहियो माँ सँ गप्प करबाक मोन नै होइ छै। सभ कहैत अछि जे अहाँकेँ कोन चीजक कमी अछि, से हमरो चीजक कमी तँ नै अछि मुदा धिया- पुताक प्रेमक हम भूखल छी।

पुतोहु अहाँकेँ एखन घरक सभटा काज करऽ पड़ैत हएत। बड्ड मेहनति होइत हएत, मुदा तैयो हमरोपर ध्यान राखब। हम बड्ड घबराएल रहै छी तेँ जे फुराएल से हम चिट्ठीमे लिखा देलौं। अहाँ सभक प्रेमक भूखल- अहींक माँ।

२

दोसर चिट्ठी

“बेटा,

-महींस दूध दऽ रहल अछि, मुदा टोलबैय्या सभ जड़ि रहल अछि।”..

बिपिन चिट्ठी पढ़िते रहै छथि आकि कपिलेश्वर राउतक बेटा पालन बीचेमे बाजि उठै छथि-

“अएँ यौ, अहाँक दूध होइये तँ टोलबैय्या सभ किए जड़त? आ से ओ कोना बुझै छथि से पुछियन्हु”।

मुदा बेटा —बिपिन- केँ देखू; ओ आगाँ बजै छथि- “अएँ यौ, सएह ने हमहूँ पुछै छी। हमरा दूध होइये तँ लोक सभ किए जड़ैए”?

माएपर बेटाकेँ कते विश्वास छै?

बिपिन फेर बजै छथि- “से जे ओ सभ मोने-मोने जड़ैए, से हम सभटा बुझै छिऐ”।

चिट्ठीमे आर बहुत रास गप छै।

"-हमर नैहराक हालति बड्ड खराप। बड़का भाएक बच्चा सभ तँ तैयो ठीके छै, छोटकेक हालत बड्ड दब। मिदनापुरमे क्रेन चलबै छलै। मोन खराप भेलै तँ छह मास गामेमे रहि गेलै। फेर घुरि कऽ गेलै तँ क्रेनपर हाथ थरथराए लगै। हियाउ नै होइ छै। बच्चा सभ टुग्गर जकाँ करै छै। जे कोनो जोगार हुअए तँ देखबै। नै, भाए लेल नै। ओकर तँ आब बएस भेलै, गामेमे रहथि सएह नीक हेतन्हि। ओकर दूमे सँ एक्को टा बेटाक जे जोगार लागि जाइ तँ। बड़का भाउज पहिने माएकेँ देखऽ नै चाहै आ आब छोटकाक सिरपर लागल छै। साझ-सझियामे चौठारी फसिल दैत रहै से तँ बुझलिऐ मुदा आमक मासमे तँ छोटकोक बच्चा सभ कलम ओगरै छै। मुदा आमो चौठारी दै छै, छोटकी भाउज तामसे सेहो नै लेलकै। हम नै किछु बजलिऐ, हमरा तँ सभ कहिते अछि जे छोटकाक पक्ष लै छिऐ, तेँ।

-सभ दिल्लीसँ गाम अबैए तँ अहाँक घरक शानक चर्चा करैए, से नीक तँ लगैए, मुदा डरो लगैए जे नजरि ने लागि जाए। आर सभ ठीके अछि। -अहाँक माए।

मुकेश पासवानक बेटी मालती आ जमाए मथुरानन्द, वसन्तकुञ्ज लग फार्म हाउस लेने छथि। मथुरानन्द नीक लेखक छथि आ वसन्तकुञ्ज डी.पी.एस. स्कूलक प्रिंसिपल छथि। मालती बैंक अधिकारी छथि। बिन्देश्वर पासवान, रोसड़ा, क बेटा मथुरानन्द।

सत्यनारायण यादवक बेटा बिपिन- रेलवे ठिकेदार। सेहो बगलेमे रहै छथि, घरपर आन जान छन्हि।

मथुरानन्दकेँ माएक पत्र भेटै छन्हि।
एकटा माए-बाप कतेक सेहन्तासँ बेटाकेँ पोसैए।

बेटा सेहो पढ़बामे नीक रहै छै। सरकारी नोकरी लेल प्रयत्न करै छै। तैयारीले दिल्ली जाइ छै आ फेर बी.एड. केलाक बाद एकटा एकटा पब्लिक

स्कूलमे शिक्षक बनि जाइ छै।

ओकर पढ़ेबाक कला अद्भुत छै। जीव-विज्ञान विषयक- प्राणि विज्ञान आ वनस्पति विज्ञान दुनूपर- ओकर अद्भुत नियंत्रण छै। ओइ पब्लिक स्कूलमे ओकर कहलापर मेडिकलक परीक्षा लेल अतिरिक्त कक्षा लेल जाइ छै। ढेर रास विद्यार्थी मेडिकल परीक्षामे उत्तीर्ण होइ छै। आन स्कूलक विद्यार्थी सभ मेडिकल लेल दोसर कोचिंग इन्स्टीट्यूटमे पढ़ैले जाइ छै। ओकर समए खराप होइ छै। परिणाम निराशाजनक होइ छै मुदा ऐ जीव विज्ञानक शिक्षकक स्कूल आगाँ बढ़ि जाइ छै। ओइ स्कूलक शाखा दिल्लीक वसन्तकुञ्जमे खुजै छै आ जीव-विज्ञानक शिक्षक ओइ स्कूलक प्रिंसिपल बनि जाइत अछि। प्रिंसिपलक नाम छै मथुरानन्द।

ओकर विवाह नीक घरमे भेल रहै छै। ओकरा संगे रहि ओकर पत्नी सेहो बैंक अधिकारी बनि जाइ छै। मुदा ओ हरा जाइत अछि। माए-बापक सोह बिसरि जाइत अछि। प्रतियोगिताक पाछाँ प्रतियोगी अपन जड़ि बिसरि जाइत अछि आ तखने ई चिट्ठी। माएक चिट्ठी बेटाक नामेँ।

ई कोन उपन्यास अछि, कोन जीवन? ऐ नग्रमे कतेक रास बौस्तु आएल अछि, सीमेन्ट, बालु आ मनुक्ख। मनुक्ख जे फैक्ट्रीमे काज करैए। मनुक्ख जे रोड बनबैए, डाक्टरी करैए आ स्कूलमे पढ़बैए। मनुक्ख जे डकैती करैए, चोरि करैए-करबैए, वेश्यावृत्तिमे लागल अछि। ओइ सीढ़ीपर जे स्त्री पाँच सए ईंटा नीचासँ चारि मंजिल ऊपर छतपर लऽ गेल -पचास साठि खेपमे- ओकरासँ पुछने रहथिन- कतुक्का छी अहाँ।

ओ किशनगढ़मे रहैत अछि, एकटा बेटा पाँच सालक छै आ एकटा बेटा तीन सालक। ऐ नग्रक अर्थव्यवस्थाक एकटा आर रूप बीयर बारमे नोट फेकैत लोक- नर्तकीपर नोट फेकैत लोक। ईंटाउघनीक रूप, ओकरा प्रति श्रद्धानवत करै छन्हि मथुरानन्दकेँ। मनोरंजन झा ईंटाउघनीपर लिखने छथि, कतेक नीक चित्रण, मुदा ऐ ईंटाउघनी आ ऐ मथुरानन्दमे कोन भिन्नता छै?

दुनू दिल्ली आएल अपन रोजगारमे। दुनू अपन गुजर करै जाइ छथि। मुदा ई ईंटाउघनी। कतेक शानसँ रहैत अछि। ककरो रोब-दाब बर्दास्त नै करैत अछि। इज्जत-मान-प्रतिष्ठासँ जीबै अछि। मुदा समाजक व्यवस्थाक चलते ओ दोसर कोनो काज नै कऽ सकत। ओकर बच्चा ठेला चलेतै आकि मथुरानन्द सन बनतै? अवश्य बनतै मथुरानन्द सन... मथुरानन्दक माए-बाप कोन पैघ लोक रहथि!

पटवाटोलीक जगदीश माइलक बेटा *महेश इस्टीट्यूटो इटालिआनो डि कल्चरा,* चाणक्यपुरीमे काज करै छथि। फिरंगी दिल्ली अनलकै आ एत्तै काज धरा देलकै।

भोला पंडित कुम्हारक बेटा नवीन, मेहरौलीमे जैन मन्दिरक सोझाँ अपन कलाकृतिक, अपन माटिक मुरुत, फूलक आधुनिक गमला इत्यादिक प्रदर्शन केने छथि। बगलेमे रहै छथि, मेहरौलीक दूधवाली गलीमे। भोला पंडित गामेमे रहै छथि। ओ एक बेर मास भरि दिल्ली रहि नवीनक चाक सभ सुढ़िया आएल छथि। इहलोकक ब्रह्माक चाक बहैत अछि चक्र सिद्धान्तपर आ झोकुआ आबामे पका कऽ निर्माण करै छथि माटिक मुरुत। हँ परलोकक ब्रह्मा माटिक मुरुतमे प्राण भरि दै छथि मुदा से ने भोला पंडित कऽ सकै छथि आ ने नवीन। मटकूड़, कौरना, छाँछ, कसतरा बनबै छथि। अथरा, मसल्लाक लेल लगजोड़ी, लबनी, रीझम, सोबरना, भरुका, फुच्ची, तेलहण्डा, खोला, सिरहर, पुरहर, लगहर, अहिबातक पातिल, दीयठि, बौरकी सभटा छिड़ियाएल रहै छन्हि घरमे। मुदा एकोटा इम्हर-उम्हर भेने भोला पंडित भनसिया घरवालीकेँ टोकि दै छथि।

मुदा नवीनक प्रति भोला पंडित कनेक सशंकित रहै छथि। ओ एतेक सतर्क रहै छै मुदा तैयो मुरुत टुनकाह भऽ जाइ छै। बासन सभ नोनिआय लगै छै, झरऽ लगै छै।

बासू चौपाल खतबे। भार-माँछ उघै छथि। बेटा सुरेन्द्र गामेमे रहै छथिन्ह। बासू चौपालक डील-डौल बेस भरिगर। तेहने जबरदस्त मोँछ। से

आसपासक सभ रामलीला मंडली रावणक पात्र लेल हुनका लेबा लेल उपरौंझ करैत अछि।

चलित्तर साहू आ लड्डूलाल साहू हलुआइ।

चलित्तर साहूक बेटा सुरेश कुतुबमीनारक सोझाँ पर्यटक सभकेँ किसिम-किसिमक मिठाइ, सिरनी आ गुलाब रेउड़ी बेचै छथि। सुरेश अपन डेरा मेहरौलीमे रखने छथि। भोरे तरौनीपर खोंइचा राखि मिठाइ बेचऽ लगै छथि।

चलित्तर साहू आ लड्डूलाल साहू लेटनामे मैदानी भरि डालडामे खसा जिलेबी बनबैत दुर्गापूजाक मेलामे देखा पड़ि जेता। हँ, डालडामे गाएक चर्बीक हल्ला १९८३-८४ साल भेल, ओइ बेर घीमे जिलेबी छानि सभकेँ देलन्हि। ककरो ओइठाम बियाह-दान, उपनयन, एकादशी उद्यापन आदि जखन होइत अछि तखन चलित्तर साहू आ लड्डूलाल साहू राखल जाइ छथि, भमकौला चूल्हि जमीनपर कोड़ि हप्ता दिन काज करै छथि। कोइयासँ जिलेबी छानैत, झाँझसँ बुनिया आ सचबासँ मारते रास पकमान छानैत।
लछमी दास, ततमाक बेटा रामप्रवेश गामेमे छन्हि।

सूरी शिवनारायण महतोक बेटा प्रशान्त बसन्तकुंज दिल्लीक डी. एल. एफ. इम्पोरियामे काज करै छथि आ अपन दोकान खोलबाक मन्सूबा रखने छथि आ बगलेमे किशनगढ़मे रहै छथि। राति-दिन अपन दोकानक जोगारमे लागल छथि। शिवनारायण गामेमे कनियाँ संगे रहै छथि। घरक दलानबला कोठलीमे दोकान खोलने छथि, गौआँक छोट-मोट दैनिक आवश्यकताक पूर्ति करै छथि।

लाल कुमार राय, कुर्मी। हिनकर बेटा सुमन आइ.ए.एस. परीक्षासँ एलाइड सर्विस उत्तीर्ण छथि आ बसन्तकुंजमे सरकारी क्वार्टर भेटल छन्हि। लाल कुमार गामेमे रहै छथि, नीक चास-बास छन्हि।

सत्यनारायण कामत, किओट। बेटा मदन बसन्तकुंजक बिगबजार मॉलमे गार्ड छन्हि आ किशनगढ़मे रहै छथिन्ह। सत्यनारायण जीक पुरखा दरभंगाक जमीन्दारक ऐठाम रक्षक छला

रामदेव भंडारीक बेटा श्यामानन्द बिगबजार मॉल, बसन्तकुंजक के.एफ.सी. (केनटकी फ्राइड चिकन) दोकानमे काज करै छथि, चिकन एक्सपर्ट छथि। रहै छथि किशनगढ़मे। रामदेवजीक पुरखा दरभंगा जमीन्दारक समएमे ओतऽ भनसियामे काज करै छला।

कपिलेश्वर राउत आ रामावतार राउत, बरइ। । बरइ कपिलेश्वर राउतक बेटा पालन पानक गुमटी खोलि लेने छथि, वसन्तकुञ्जक मुक्ताकाश सैलूनक बगलमे। बिहारक लोकक पान खेबाक आवश्यकताक पूर्ति लेल। रहै छथि किशनगढ़मे ।

कपिलेश्वर आ रामावतार राउत बरेबमे अक्सरहाँ भेटि जेता। सपुराक बगलमे टहलैत। खरहीक इकड़ीपर पानक गछौठौन करैत। मटोरिमे माँटि राखि सपुरामे पानक जड़ि लग माँटि दैत।

नौआटोली तेरह घरक। बड़ बजन्ता सभ। कमाइलक लिस्ट लऽ कऽ भरि साल तगेदा करैत रहै छथि। दुर्गापूजामे जे बाहरी लोक अबै छथि से कमाइल बिना देने घुरि नै पबै छथि। पहिने हप्तामे एक बेर दलाने-दलाने केश काटैले जाइत रहथि मुदा आब जिनका केश कटेबाक छन्हि से आबथु हमर दुअरा। हँ, बर-बरियाती जेबाक हएत तँ से सालमे एकाध बेर टोलक कोनो दलानपर चलि जेता। मुदा सेहो एके ठाम। जिनका कटेबाक हेतन्हि पंक्तिबद्ध भऽ बैसथु। ई नै जे क्यो अखन आबि रहल छी तँ क्यो तखन आबि रहल छी। आब हिनकर सभक घरसँ एक-एक गोटे झंझारपुरमे सेहो सैलून खोलि लेने छथि। सैलून कोन, एकटा प्लास्टिक पटरी कातमे ठाढ़ कऽ देने जाइ गेल छै? नहरनीक प्रयोग तँ बन्ने भऽ गेल अछि। नह अपना-अपनी कऽ काटै जाउ। छुतकामे बौआसीनक आंगुर कनियाँ आबि कऽ काटि देत, बस। आ पिजेलहा अस्तूरासँ दाढ़ी काटबा काल जे खून खसि रहल अछि से कोनो हम छह मारि देने छी। फोँसरी रहए। नै बाबू, टोपाजबला अस्तूरा झंझारपुरक सैलून लेल छै। विद्यापति हिनके सभक रहथिन्ह मुदा बादमे

बाभन सभ ओकरा पाग पहिरा कऽ छीनैक प्रयास कऽ रहल छन्हि, ऐ गपपर सभ एकमत छथि।

इम्हर गढ़ नारिकेलमे कुसियारक खेती शुरू भेल अछि, बलाठ-रामपट्टी बला सभक देखादेखी। लोहट चीनी मिल बन्द भेलापर इलाकाक सभ गाम कुसियारक खेती बन्द कऽ देलक मुदा बलाठ बला सभ नै। रामपट्टीमे सरौता, चक्कू, कत्ता सभक कारीगर तँ बलाठ कोन कम। गौँआ सभ अपना ईलमसँ गुड़ बनेनाइ शुरू कऽ देलन्हि। इलाकामे बलाठक गुड़ बिकाए लागल। आब गढ़ नारिकेलक किछु गोटे ई काज शुरू केने छथि।

सेर भरि गहूम बरिख दिन खेबै

पिआकेँ जाए नै देबै हे

मोहन गबैय्या ओही गुड़क फैक्ट्रीमे आबि गेल छथि। गीत गबैत रहै छथि। लोक सभ अबैए आ देखैए मोहन गबैय्याकेँ।

इनार सभ भथम भऽ गेलै, एकाध टा बचल छै।

चप्पाकल सभठाँ गरा गेलै।

पहिने लोक चप्पाकलक पानिक अछिंजल नै लै छल, कारण चमराक वाशर रहै छलै, इनार पोखरिक पानिये अछिंजल बनै छल, मुदा आब से नै छै। कहाँदनि प्लास्टिकक वाशर लागै छै चप्पा कलमे।

अगरमस्तगाछ छोट आ पात मोट होइ छै आ पानि भरल रहै छै, कटलापर एकर रस लगेलासँ खून बहनाइ रुकि जाइ छै। अण्डी, अड़हुल, अरिकंचन, आक, कटहरी चम्पा, कदली पुष्प, करोटन, कल्पनाथ, कुम्हर, केराक घौर आ केराक कोसा, खोखस गुलदाबदी, घ्यूरा, चन्द्रकला, चिरचिड़ी, जटाधारी, जोम, जिलेबी, तग्गर, तुलसी, कोका, भैँट, थलकमल, धथूर, नेपाली तुलसी, पसीझ, पोरो साग, मलकोका, मोती झाबा, राजा-रानी साग, लक्ष्मण-बूटी, लताम, शनि, संझा, सजमनि, सिङगरहार, हरदि,

अनानास। आम गाछक शीलमे सारील नै होइए। खजूरक गाछक फड़ खाएल जाइए आ रसकेँ ताड़ी कहल जाइए, तारी पीलासँ निशाँ लगैए। खजूर गाछमे तारी चुऔलहा खातल चेन्ह। खजूर गाछमे पीपड़ आ बर जनमि गेल अछि, कहल जाइए जे ई दुनू कतौ जनमि सकैए।

मुदा गढ़ नारिकेलमे एक्कोटा खजूरक गाछ नै भेटत।

कदमक फलसँ तरकारी, अचार, चटनी इत्यादि बनैए आ खाएल जाइए। गुल्लैर गाछ, फड़क तरकारी बनैए, दूधक रबड़ बनैए, नवजात शिशु लेल दूधक दवाइ रूपमे किछु काज अबैए, पात बकरीकेँ बिएलापर खुआएल जाइए, तखन बकरीकेँ जल्दी दूध उतरैए। चाफ बाँस। तीन फेरा आमक गाछ। डोमा बम्बै आमक गाछ नव आएल अछि गाममे। तुईन, एकर फड़ मासिक अनियमितता आ ल्युकोरिया बेमारी पीस कऽ पीलापर ठीक भऽ जाइए। तेतैर गाछ, नारिकेल, नीम। पीठारीक लकड़ीसँ सलाइक काठी बनैए। पीपड़ गाछक छालक उपयोग खुरहा बेमारीमे कएल जाइए आ एकर फड़क दवाइ बनैए। पीपड़ गाछ, बर गाछ।

बर गाछमे फड़ैए बर मुदा खाएल नै जाइए। बरहरक लकड़ी उपयोगी होइए आ फड़ खाएल जाइए। मिरचाइ। मौह गाछ। मौह गाछक लकड़ी बड नीक होइए। एकर फड़क तेल बनैए आ फड़ खाएल जाइए। सरपतक उपयोग टाट-फड़कमे होइए आ ई जारैन सेहो बनैए। सीसोक शीलमे सारिल बहुत होइए। हुरहुर, सीता सोहागो। खरही, टाट-फरक आदिमे उपयोग होइए। पानक लत्ती खरहीयेपर लतरैए, उपयोग बरैबमे देखल जाइए। कदम गाछ, अजमइन, आदी। इंग्लिश बबुल गाछ। ओल गाछ, कटहर गाछ, कदम गाछ, कनैल फूल, कास, कुम्हर, केक्टस, केचली, केरावीर, केसौर, करबीर, खरही। गाछबला सजमनि, टाभनेबो, अरड़नेबा, बेल। गुलाब फूलक नव कलशल डारि। गुलेच। गुल्लरि गाछ आ फड़। गेन्हारी साग, घ्युरा। चाँदनी फूल। चिचोर चौरीमे होइए। छतबन। डारिमे लुधकी लागल

धातरीम। तिलकोर फड़, पकलापर लाल भऽ जाइए, सुग्गाकेँ खाइले देल जाइए। दुधिया गाछ बाबासीरमे फैदा करैए। धथुर गाछ। नीम गाछ, एकर छाल आ पातसँ छनका बना कऽ पीलो जाइए आ घा-घोसकेँ धोलो जाइए। नेपाली तुलसी। परोर। पसीझ गाछमे काँट होइत अछि। पानिक केसौर चौरीमे होइए। पुदीना पातक चटनी बनैए, सरबत बनैए, पात पीस कऽ पीलापर पेटक गैस कम होइए, पेटक पथरीमे उपयोगी। कुरथी दाइल भट्टा संगे बनेलापर स्वाद अबै छै। एकर उपयोगसँ पथरी नै होइ छै। बगहन्डी। बाँसक ओइध। बैजन्त्री। कटहरबा, केरबा फूल। आब एकटा मनी प्लान्ट आएल छै, कियो कहैए ई लगेलासँ पाइ अबै छै, कियो कहैए पाइ बिलाइ छै। मेहदी पात, आरिपर राहैर दालिक गाछ। लत्तीमे फड़ल तिलकोर। ललका पातबला करोटन आ हरियर पातबला खम्हरूआ। श्याम तुलसी पातक छनका सर्दीमे फएदा करैए। सम्मी। सरीफा, सागबान पात। साहोर गाछ, एकर डाढ़िक दतमैन बनैए। कहल जाइए जे साहोर गाछपर ठनका नै खसैए, ठनकाक अबाजपर लोक बजैए, साहोर-साहोर। साहोर गाछमे वृद्धि बहुत कम होइए। नबका सेब गाछ आ सफेदा-यूकेलिप्टस। अंग्रेज फिरंगी महिलाक आनल कुम्ही, केचली फूल। फरहद गाछ, फरहदक डारिक टुकड़ी मालक गाड़ामे बान्हि देने पील मरि जाइए, भागि जाइए। मेनागोबी, गाए-महिंस जँ समएपर पाल नै खा रहल अछि तै स्थितिमे गरमाइ लेल ई पात खिऔल जाइए। अर्जुनक गाछ, ऐमे फड़ होइए। बैर। सदाबहार, डायबिटीजक रोगी एकर पात पीस कऽ पिबै छथि। जोमक आँठीक आँटा खेलासँ सेहो डायबिटीजक रोगीकेँ फएदा होइ छन्हि। चिचोर, मिथिलाक अधिक जमीनमे होइबला अनेरुआ पौध। पानिक केशौर।

अम्मट अखनो बनैए।

गढ़ नारिकेलमे ई सभ अखनो छै... बलाठमे नै.. मोहन गबैय्या गढ़ नारिकेल अबैत-जाइत रहै छथि।

बाढ़ि कहाँ खतम कऽ सकलै ऐ गाछ-पातकेँ।

एगच्छा लग कने जमीन खेतीबला छै।

गहुमक खेती से शुरू भऽ गेल अछि।

अखनो खेतीक वएह तरीका.. मुदा कृत्रिम कऽ खाद देलेटा जाइ छै। जहर देल जाइ छै खेतमे.. सुरजू भाइ गोबर दै छथि तँ तीन मोनक कट्ठा होइ छन्हि, मुदा चारि बजे भोरसँ जे ओ उघै छथि, ओतेक मेहनति के करत..

जोड़ा बड़द हर, ईश- हरमे जोड़ि कऽ पालोमे बान्हल जाइ छै।

लगना, पालो- कन्हापर, पालोमे दू टा कनैल दुनू बगल बड़दकेँ एने- उने नै हेबऽ दै छै। कनैलसँ हटि कऽ एक सवा फीटक डोरी बान्हल जाइ छै। समैल (पौन फीटक लकड़ीक/ बाँसक) मे डोरी बान्हल जाइ छै। ईशक नीचाँमे पेटार ईशकेँ खुजऽ नै दै छै, ऊँच-नीच करऽ दै छै। हलमे पुट्ठी, नीचाँमे दू-फीटक अगल फल्ली पुट्ठीमे सेट कएल जाइ छै, माटि उरवाड़ै छै। परहत (लगना)- हरवाह ऐपर हाथ धरैए। तीन फीटक/ ६ इन्चक मुट्ठी पकड़ैबला लगनामे ठोकल जाइ छै (मुठिया)। नाधा- पालो-ईशमे बान्हिकेँ जोड़ल जाइ छै, डोरी होइ छै ४-५ फीटक। दू टा मैडोर (डोरी)- १०-११ फीटक दू टा- एकरा चौकीमे बान्हि कऽ बड़दमे बान्हि कऽ हरवाहा चौकी दैए। चौकी- (बाँस/ लकड़ीक) ६-७ फीटक - ऐपर हरवाह चढ़ि कऽ चौकी दैए। हरवाहाक हाथमे एक टा झूर/ ज्वोली/ लाठी बड़द हाँकै लेल रहैत अछि। गहूमक जोताइ ३ इन्च गहींर कऽ ४-५ टा चास दऽ होइत अछि। मक्कइ लेल ४-५ इन्च गहींर करऽ पड़ैत अछि। बीया- एक एकड़ (१०० डिस्मिल) मे २ मन गहूमक बीया, १० किलो मक्कइक बीया। खाद- एकड़मे २० कि. डी.ए.पी., ५ किलो पोटाश, ५ किलो यूरिया, ५ किलो जिंक गहूम बाउग करबा काल देल जाइत अछि। मकइमे डेढ़ सँ दू फीटक भेलाक बाद माटि चढ़ाओल जाइत अछि। २ कतार २ फीट चौड़ाइसँ। एकड़मे २ क्विंटल खाद देल जाइत अछि। १०० किलो डी.ए.पी., ५० किलो यूरिया, २० किलो साल्फिक, १२० किलो पोटाश, १० किलो जिंक। पानि पटवन समएमे खाद

दऽ कऽ माटि चढ़बै छिऐ, फेर पानि पटबै छिऐ। पानि पटेलाक बाद यूरिया एक एकड़मे एक क्विंटल देल जाइत अछि।

तर-तरकारीक प्रकार सिंघिया करैला- बड़ा- हाइ ब्रेक/ प्लेन। छोटकी करैला- हजरिया/ जुल्मी। सफेद करैला- पटनिआ (नजली- मध्यम खुटक)। तारबूज नामधारी-स्वादिष्ट- भीतरमे लाल, ऊपरमे सफेदी/ चितफुटरा (हरियर-उज्जर)। माइको- हल्का कारी। पहुजा- माइकोसँ बेशी कारी। राजधानी- कारी रंगमे। महाराजा- पैघ छोट कारी रंगमे। सैनी आ सुगरदीबी- कारी रंगक। नाथ- हल्का चितफुटरा (उज्जर/ हरियर)। गंगासागर- कुम्हर जकाँ उज्जर साफ। सोरैय्या- चितफुटरा। खीरा- जुल्मी- छोट। हाइब्रीड। माइको- नमगर/ हरियर/ पीअर। महाराजा- खीरा, खेतीबारी- हरियर रंगक, नमगर कम, पाछाँमे मोट बेशी आगाँ कम।

माङुर, सौरबचबा, इचना, कमल काँट, कोतरी, गरचुन्नी, गैंची, छही, गरै, नैनी, पोठी, बिकेट, बुआरी, भुल्ला, कौआ, डेढ़बा माँछ। भुन्ना, गैंची (गैंचा), कबै, टेंगरा, पोठी, इचना (झींगा), सौरा, सिंगही, मांङुर, चेंङा, बचबा, छही, डेढ़बा, मारा, कोतरी, काँटी, खुरसा, नैनी, ढल्लै, रेबा, लप्ची, भाकुर, गोलही, दरही, बुआरी, भोंरा, तोर, हिलसा, पतासी, चन्ना, बगहरि, बमौच, चेलहा, सूही, सिल्बर काप, कोमल काप, बिकेट, चेल्हबा, रेहु, भुनचट्टी, भुल्ला। बाढ़ि कहाँ खतम कऽ सकलै ऐ पानिक माँछ सभकेँ।

तड़ल चेचरा पलै रान्हल झोरसँ बहल तेल यौ
पूस हे सखि अन्न नबका, रान्हल माघुर माछ यौ
दुइ मिलि हम पलै रान्हल, आब ने बाँचत प्राण यौ
माघ हे सखि जाड़ भारी, रान्हल माघुर माछ यौ
दुइ मिलि हम पलै रान्हल, आब ने बाँचत प्राण यौ
फागुन हे सखि आबि पहुँचल, आयल पछबाक ओर यौ
सेदैत मारा आगि लागल आब नै बाँचत कौल यौ

चैत हे सखि रोग चहु दिससँ, रूप नाना धराय यौ
तरै भुटनी सोन्ह रान्हल, वैद करथि दवाइ यौ
मास हे सखि आबि पहुँचल, आयल मास बैसाख यौ
गेल रुचि ओ प्रेम माछसँ आब नै किछु चाही यौ
जेठ हे सखि आबि पहुँचल रान्हल भाकुर माछ यौ
दुइ मिलि हम पलै रान्हल आब नै बाँचत प्राण यौ
मास हे सखि आबि पहुँचल आयल नवल अखाढ़ यौ
आम दय-दय सौर रान्हल झोर भेल बड़ गाढ़ यौ
सावन हे सखि सर्व सुहावन रान्हल टेंगरा माछ यौ
दुइ मिलि हम पलै रान्हल आब ने बाँचत प्राण यौ
भादव हे सखि झिंगा रान्हल संग कोतरी माछ यौ
आसिन हे सखि मूर रान्हल गर्म लेल प्रसाद यौ
कातिक हे सखि आबि पहुँचल गरै गैंचा माछ यौ
गेल रुचि ओ प्रेम माछ सँ आब नै किछु चाही यौ

पानिमे अड़कि गेल, बाहर तड़पि गेल
बैसल तराजूमे, हाटपर ससरि गेल
गरै गंगा कबै काशी, खाइ तँ वैकुण्ठवासी।
माघ मास जँ गैंची खाइ, ससरि फसरि वैकुण्ठे जाइ।
जेठक गोआरी, माघक बोआरी... सभ कें पैर नै लगै छै...
भुल्ला माछ कबै के झोर, तै लऽ भुल्ला कण्ठी तोर
बिनु सरिसो कऽ माछ नै, बिनु धोधि कऽ सेठ
माघ मास जँ माङुर खाइ, ससरि फसरि वैकुण्ठे जाइ।
रोहूक मूड़ा भुन्नाक पेट
सीरा खाय मीरा, पुच्छी खाय गुलाम।
साओनक साग, भादवक दही, आसिनक ओस, कातिकक छही -

बचले रही।
लगेमे बीरपूर भूलि गेलिऐ जनकपुर, एतेक बड़का कोशी कतऽ
गेलिऐ पैसी।
कहत कबीर सुनो भाइ सन्तो माँछ बिना केकरो नै बनतौ
मरुआ रोटी, मारा माछ

घोंघीक मांसक तीमन खाएल जाइए, उसीन कऽ सुरका बना सुरकलो जाइए आ कोनो बर्तनमे राखि पाँच-सात घंटा बाद छुटलाहा पानिकेँ ममरखामे धिया-पुताकेँ पिऔल जाइए आ सुलबाइमे सेहो फएदा करैए।

काँकोर। डोका।

मुदा डकही पोखरिक मछैर बन्न भऽ गेलै। बाढ़िक कारण माछ सभ भागि जाइ से गौँआ सभ ओइमे मखान धऽ देलकै। आ मखानक खेती भेल तँ पोखरिमे माछ खतम।

मास हे सखि सरस अगहन भूजल चूड़ाक संग यौ
तरल चेचड़ा माछ मुरमुर लागय मोन भरि भंग यौ

पूस हे सखि अन्न नवका संग माघुर झोर यौ
कबइ कुरमुर दाँत दबैत करय जन जन शोर यौ

माघ बदरी जाड़ थर-थर काँपय तन बड़ जोर यौ
सुख बोआरी खंड लखि कय मनविनोद विभोर यौ

बढ़ल स्वादक माछ टेंगड़ा रान्हल सानल भात यौ
चैत हे सखि रोग सभदिन रूप नाना देखि यौ

तरल भुन्ना पलइ राखल खाइत बड़ सुख लेखि यौ

मास हे सखि आइ पहुँचल गरम बड़ बैसाख यौ

गेल मन रुचि माछ गागर खंड सभ दिन चाख यौ
जेठ हे सखि हेठ बरखा मुण्ड भाकुर पात यौ

पड़तु बिसरतु आबि ससरतु करू नवका भात यौ
मेघ सखि बरसय अषाढ़क जत रसालक डारि यौ

तोड़ि काँचे आम-आमिल देल सौरा पाल यौ
मास हे सखि आओल साओन भरल अण्डा घेंट यौ

तरल दड़ही माछ मारा खाथि भरि-भरि पेट यौ
भादव इचना भेटल कहुना खाय भरलहुँ कोठि यौ

मास आसिन देव पूजा शंख घंटा नाद यौ
रान्हि रहुआ माछ बैसब पूर्ण भेल परसाद यौ

मास कातिक बारि मड़ुआ बड़ तरल अपूर्व यौ
पूरल बारहमास हरिनाथ गाओल सगर्व यौ

कबीरो कहै छथि-

मड़ुआ मीन कऽ संग हो कहि गेल दास कबीर
सब संतन मिलि खाउ, निर्मल होए शरीर

दरही दया काया अति पाचक पोठिया प्राणाधार
नैनी नाम नारायण कऽ सउरी संत उदार

ढलै बच्चा जनकपुर तीरथ, कबै करबद्ध काशी
झिंगा जल प्रयाग महातम सिंगी मथुरा बासी

कुरसा सँ कुरुक्षेत्र द्वारिका, मथुरा स्वर्ग समान
रहु, रेवा, टेंगरा बुआरी, गैंची पढ़ै कुरान

भाकुर ठाकुर भवसागर उतरै चेल्हवा चढ़ै विमान
सभ तीरथमे मछरी दान तकरा मिलै गंग असलान

जगफल जगदम्बा करै उद्धार सभ मिलि खाउ संसार
रहू मूड़ामे जँ पड़ै तेल स्वर्गहु जीतय इन्द्रकेँ ठेलि
ताहूमे जे आमिल पड़ै की काशी जे घरे तड़ै

माँछ वंशीसँ सेहो मारल जाइत अछि। छोट माँछक लेल जाल- भौरी जालक प्रयोग होइत अछि। भिरखा हाथसँ उठा कऽ फेंकल जाइत अछि। ऐमे सूत आ लोहाक गोली प्रयोग होइत अछि, २५-२५ ग्रामक लोहाक गोली लगभग २-१/२ सँ ५ किलो धरि प्रयोगमे आनल जाइत अछि। अन्ता जाल छोट होइत अछि आ कछारमे रातिमे लगाओल जाइत अछि। कोठी जाल पैघ होइत अछि आ ऐमे बाँसक प्रयोग होइत अछि। बिसारी जाल दिनमे माँछ हरकि जेतै से रातिमे खुट्टी लगा कऽ रातिमे माँछ मारल जाइ छै। चट्टी जाल- प्लास्टिकक, पैघ-छोट दुनू, दिनमे प्रयुक्त, आषाढ़-साओन दुनू मे, ५-१० मिनटमे उठाएल जाइ छै। सूतक मोट पैराशूट जाल, सूत आ नाइलनक मिश्रणक करेन्ट जाल, सूतक बड़का हाटा जाल होइ छै। पैराशूटसँ छोटकी माँछ उड़ि जेतै। पैघ मछली बड़का वंशीसँ, बड़का चट्टी जालसँ, सूताक महाजालसँ मारल जाइत अछि। पैघ छोट दुनू माँछ बाँसक जंघासँ मारल जाइ छै। एकरा ४ हाथ खड़ा नारियल आ नाइलोनक डोरीसँ बान्हल जाइ

छै। बाँसक करचीक छीपसँ सेहो माँछ मारल जाइ छै। पटुआक सण्ठीक १००-२०० पुल्ली एक संग लगा कऽ सेहो माँछ मारल जाइ छै। हाटा जाल किलोमीटर धरि पैघ होइत अछि आ सूताक बनैत अछि। चाँच कहड़ा बाँसक होइत अछि। धार/ बदहाल घेरकैं मारल जाइत अछि। पानिकैं फुला कऽ डगरी लगाएल जाइ छै, चाँच फहड़ासँ घेरल जाइत अछि।

डाँरा मछली (डेरका मछली), मूँहा मछली, पोठी, लत्ता (पिआ माँछ), गड़इ, पलवा, टेंगड़ा, सिंघी, मांगुड़, चपड़ा, पैना, रेवा, गड़ही, उरन्था, मोहुल, बुआरी, बामी, बगहार, चेलवा, कौअल, गोर्रा, सौल, भौरा, कजाल, कलबौस, चित्तल, भोइ, कत्ती, भौकुड़ी, सिलोन, रेहू, मिरका, बिलासकप, सिल्वरकप, चाइना माँगुर, कबइ, चाइना कबइ। दरबा- छोट, पातर- २-३ इन्चक, पीठपर कारी, बगल सफेद। गड़इ- कारी, चोपड़ा- चाकर, कारी, मलिन; पलबा- दुनू दिस काँट, पीठपर सेहो काँट, रंग- पीअर-उज्जर, मोँछ सेहो होइ छै। टेंगड़ा- पैघ माँछ, एकरो तीन टा काँट, मुँहपर मोँछ। सिंघी- पातर, दू टा काँट दुनू दिस, लाल रंगक आ लाल आ हल्का कारी मंगुरी- मोट आ महग सेहो। एकरो दू टा काँट, लाल आ हल्का कारी पैना- सफेद रंगक, पीठपर काँट रेवा- सफेद, पौआ-आधा किलोक। डढ़ी- पीठपर काँट, सफेद। उरन्था- पीठपर काँट, नीचाँ गामे झुकल, सफेद। भालु- लम्बाइ मुँह, सफेद-खड़ा (पीअर), ऊपरमे काँटा, नाभिक लग काँट (सभ माँछमे)। बोआली- पैघ मुँह- २० किलो धरि, सफेद, पीठपर काँट, परवना दुनू दिस (सभ माँछमे)। बामी- लम्बा, बिलमे रहैत अछि, मुँह आगू, गोल मुँह, सूआ जकाँ लम्बा, पीठपर काँट, नाभिपर दू टा काँट। बघार- छोट, १ पौआसँ क्विंटल भरिक, कारी-खैरा (पीअर), काँट- पीठपर एकटा, बगलमे दूटा, पुच्छी- चाकर, मुँह चापट, चकड़ाइ- बेसी। चेलबा- उज्जर, काँट नै होइ छै, चलैक लेल दुनू दिस परवना, माँछमे तेजगर। कौअल- सफेद, मुँह नमगर। गोर्रा- मोँछ, दाढ़ी, काँटा, आगाँमे टेढ़। साउल- लाल आ पीअर, नमगर, २-३-५ किलोक। भौरा (गजाल), साउल, चितफुटरा, पैघ २०-२५-४० किलो तक,

गोल-गोल उज्जर, हरियर आ कारी। कलबौस- रंग हल्का कारी। अंदाजी माँछ। चित्तल- चकरगर बेसी, २०-२५ किलोक, २-३ फीट चकरगर। सिलोन- पालतू, ३-४ किलोक, पोखरिमे पोसल जाइत अछि। रोहु-पीअर, हल्का उज्जर, पीठपर काँट। मिरका- हल्का लाल सफेद। सिल्वरकप- पालतू। चैना मांगुर- चलानी (पालतू), दुनू दिस काँट। चैना कबइ- पालतू (चलानी), पीठपर जहाँ-तहाँ काँट। कबइ- कनफर आ पीठ दुनू ठाम काँट। चेंगा माँछ- सुखायलोमे दूर धरि चलि जाइत अछि, कबइ जकाँ। किछु दोसर जलजीव- सौंस- पानिमे माँछ खाइत अछि, आदमीकेँ नोकसान नै, आदमी संगे खेलाइत अछि, सीटीक अवाज (डोलफिन)। घड़ियाल- कुर्सेला लग गंगामे, मुँह लम्बा, एक-डेढ़ हाथ, दाँत- आंगुर जकाँ, रंग लाल, पुछरी नमगर, ३ हाथ । बोँछ- आदमीक रंग रूप, कारी, माथपर चूल- केश पकड़िकेँ डुमा दै छै।

मुदा आंध्रासँ ट्रकक ट्रक माँछ उतरैए।

अरसी- माछ फसबैबला अखनो अछि।

ऊखरि। अखनो अछि।

कल्टी हरसँ खेत अखनो जोतल जाइए।

कोथी सहत आ गोजी, माछ मारैबला कोथीबला सहत।

फीता, परकाल आ गुनियाँ स्केल सभसँ, जिंजीर, गंडरीसँ आ कगचिया पेन्शिलसँ गुल हसन जमीन नाप करैत रहै छथि। लोहाक बाढ़नि सन गोजीसँ माछ मारैए, हफ्फा आ टाइपसँ माँछ फँसबैए। तिआरि अछि माछ फसबैबला फानी। बंसी।

कोठीमे अखनो अन्न राखल जाइए।

माटिक चूल्हि अखनो ।

ढक माने ठेकमे अन्न अखनो राखल जाइए।

हुक्का। ढकिया, पथिया।

आरीसँ लकड़ी काटल जाइए। कच्चककैं रूखान सेहो कहल जाइए। लकड़ीमे भूर करब एकर मुख्य काज होइए। खत्कस अछि लकड़ीपर निशान दइबला ओजार। गिरमीट लकड़ीमे भूर करैक काज अबैए। गुटका रंदा अछि तक्था साफ करैबला ओजार। गुरूजखापसँ खिड़की, चौकैठकैं साफ कएल जाइए। चौरसीकैं बटारी सेहो कहल जाइए, चूर बनेनाइ ऐ ओजारक मुख्य काज अछि। झड़ीकस, चौकैठक खाँच-झड़ी काटए लेल अही ओजारसँ चेन्ह देल जाइए। डोरीसँ केबारी-पल्ला, चौकैठमे निशान देल जाइए। प्लेनसँ लकड़ीक कोण सोझ कएल जाइए। बटाम अछि चौकैठ, केबारी, चौकी, पलंग आदिक कोण शुद्ध करैबला ओजार। बर्मा अछि लकड़ीमे भूर करैबला ओजार। बैसला, काट-छाँटक संग लकड़ीक छेबनाइ ऐ ओजारक मुख्य काज होइत अछि। मरया हथौड़ी सेहो कहबैछ। ठोक-ठाक करैबला जेना काँटी ठोकनाइ आदि अनेक काजमे उपयोग होइबला ओजार अछि ई। लोहा रंदा, तक्था, चौकैठ आदि प्लेन करैबला ओजार अछि। नहाइ अछि लोहारक मुख्य ओजार, कोनो लोहाकैं पहिले भाथीमे गरमा कऽ नहाइपर राखि हथौरीसँ चोट दऽ समान बनाएल जाइए। भाथी अछि लोहारक मशीन।

कुरहरि, टेंगारी अखनो ।

छेनीसँ हसुआ कुटल जाइए। नबेरी, ओजार पनियबै लेल पानि राखएबला बासन। पत्तर, हाँसू अही पत्तीपर राखि कुटल जाइए।

पत्थलपर ओजार पिजौल जाइए। नम्हर लोहामे भूर करैए बड़का सुम्हा। बड़की छेनीसँ लोहा काटल जाइए। बैसला अछि लकड़ी छेबैबला ओजार। रेती- हसुआ, खुरपी छेनी आदिकैं अही रेतीसँ रेत कऽ धरगर बनाएल जाइए। सरसी गर्म लोहाकैं पकड़ैमे उपयोग होइए। सुम्हा अछि लोहामे भूर

करएबला ओजार।

बाढ़ि कहाँ खतम कऽ सकल ई सभ।

मुदा आब सभसँ सड़ल बाछा उसरगि आ ओकरा दागि कऽ साँढ़ बनाओल जाइए, आ ई नस्ल खराप कऽ रहल अछि।

डकहर अखनो बाजैए।

चचरीपुला।

कटहीगाड़ी।

कार कौआ सगरो। देशी कौआ नै जानि कतऽ चलि गेल। कार कौआ मारि देलकै प्रायः।

अरै डंगा मालदहमे, सभ मैथिली बजै छलै। ओइ इलाकामे बांग्ला पढ़ाइ होइ छै आ बच्चा सभ आब मैथिली नै बांग्ला बजै छै।

दुनू बान्हक बीच गुअरटोली। पहिने ई गामक टोल छल मुदा आब एतुक्का मतदाता सूची झंझारपुर बजारमे चलि गेल छै। गामक स्कूलपर वोटक बूथ रहने पहिने, बहुत पहिने, एकरा सभकेँ वोट नै देमए दैत रहै। आब तकर उल्टा छै।

बान्ह बनलाक बाद बनराहा गामक जमीन सभ सेहो महग भऽ गेल अछि। पहिने घटक अबैत रहए तँ ऐ गामक लड़कापर जे दस कट्ठा आ बनराहा गामक लड़कापर एक बीघा हिस्सा देखै छल तैयो अही गाममे कुटमैती करै छल। कारण बनराहा गाममे दसो बीघा खेत हिस्सा रहने गुजर कठिन छलै। मुदा आब ओकर सभक भाग्य खुजि गेल छै, ओइ गामक जमीन सभ उत्थर छै, से जखन बाढ़ि अबै छै तँ ओकर सभक खेतक पटौनी भऽ जाइ छै।

आ मास्टरी पहिने कियो करै नै से सभटा बनराहा सभ मास्टर भऽ गेलै।

आ आब मास्टरक दरमाहा देखू। सभटा बनराहा धोआ धोती पहीरि जे निकलैए तँ देहे जरि जाइ छै ऐ गौँआक। ऐ गौँआक माने गढ़ नारिकेलक लोकक।

कुञ्जड़ा टोली पीचपर। मिआँटोलीक लोक सभ बगलक गामक वोटर लिस्टमे अपन नाम अंकित करा लेने अछि।

ओतै मलिक सभक टोल सेहो अछि। बगलक गामक वोटर लिस्टमे नाम अंकित करा लेबाक कारण वएह अछि जइ कारणसँ गुअरटोली आब ऐ गामक वोटर लिस्टमे नै अछि।

मुदा वोटरलिस्टसँ गाम थोड़बेक बनै छै।

कतेक तरहक धानक किसिम अखनो होइ छै.. कत्ते दिन धरि हेतै के जानए..

पाइनझालि, सोरना, सीता, जया, सिंगरा, कर्रावती, कल्याणी, कसहन, मलिदा (धान कारी सुगन्धित, सुंग, गाछो सुगन्धित), भथन्नी (मोट दाना, निच्चा जमीनमे), बक्के, सुगवा, खेरहा (धानमे सुंग, मोट दाना), रंगा, पंझाली (नाम-नाम दाना आगाँमे टेढ़), चिनमा, साठी, दसरिया, चननचूर, करियाकामोर (धान कारी सुगन्धित), बाँसमंसूरी (मोट, गद्दरि), कांछी मंसूरी, मंसूरी, धूसरी, रामदुलारी, ममइ, शुक्ला, जगरनथिया, जसुआ, चौंतीस, छत्तेस, नाजिर, जल्ली, डबरा, आर-आर एट, सोनालिका, पंकज, परमल।

मिथिलाक फसिलमे आब गरमा धान सेहो आबि गेल अछि। अगहनमे धान तैयार होइए, भादवमे भदै आ आब चैत-वैशाखमे चापबला जमीनमे गरमा धान हेबऽ लागल अछि।

गद्दरिक चाउर होइ छै आ तकर भात सेहो, मुदा ई धान नै गद्दरि छी। ओना गहूमक सेहो भात होइए।

गाममे पेरुआ दूध आएल अछि। मक्खन कलसँ निकालि लेल जाइए। दू-दू तीन-तीन बेर दूध कलमे जाइए। पेरुआ दूधक दही पातर आ अम्मत होइए।

१९३६-३७ मे बर्मासँ सेहो भोजपुर बक्सरक लोक पूर्णियाँ, अररियामे भागि कऽ एला, डुमराँवक हरि बाबू हिनका सभकेँ बर्मामे बसेने छला आ बर्माक भारतसँ अलग भेलाक बाद ई लोकनि शरणार्थी बनि ऐ क्षेत्रमे आबि गेला। कतेको बर्मा टोल ऐ क्षेत्र सभमे अहाँकेँ भेटि जाएत। ऐ क्षेत्रमे कृषि–वाणिज्यपर हिनको सभक दखल भेलन्हि। मिथिलामे भेल पलायनमे १९७१ ई. मे बांग्लादेशक निर्माणक लगाति ओतुक्का हिन्दूक किशनगंजमे आ बादमे ओतुक्का मुस्लिमक पूर्णियाँ किशनगंजमे आगमन भेल। बाहर भेल पलायनक विरूद्ध भीतर आएल ई पलायन मिथिलाक बोली–वाणी सभ वस्तुकेँ प्रभावित केलक। जाति–धर्म आधारित विवाह मुस्लिम, राजपूत आ भूमिहार मध्य मिथिलाक भौगोलिक परिधिसँ बाहर हुअए लागल तइसँ सेहो बोली–वाणीक अंतर द्दष्टिगोचर भेल।

तीस सालक अवधिमे भेल पलायन मिथिलाक गामकेँ खाली कऽ देलक।

१९८१ ई. मे पटनापर बनल महात्मा गाँधी सेतु आ पटना दरभंगा डीलक्स कोच सभक पाँती मिथिलावासीक हेँजक–हेँज बाहर बहरेबामे योगदान केलक। तत्कालीन सरकार सभक राजनैतिक आर्थिक शैक्षिक सामाजिक आ सांस्कृतिक ऐ सभ क्षेत्रमे विफलता एकटा आधार तँ बनबे कएल, स्वतंत्रताक बादक तीस साल बिहार स्थित मिथिला आ नेपाल स्थित मैथिली भाषी क्षेत्रक बीचमे एकटा विभाजक रेखा सेहो खींचि देलक। १९६० ई. मे बनल कमला बान्ह आ अखन धरि अपूर्ण कोसी परियोजना मिथिलाक ग्रामीण आर्थिक आधारकेँ तोड़ि कऽ राखि देलक। प्राचीन कालक पलायन आ आइ काल्हिक पलायन मध्य एकटा मूल अंतर सेहो अछि। मिथिलाक

मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ अपन विद्वत्ताक प्रदर्शन, पठन पाठन आ दोसर राजाक दरबारमे जीविकोपार्जन निमित्त प्राचीन काले सँ जाइ छला, तँ गएर मैथिल ब्राह्मण–कर्ण कायस्थ जाति वाणिज्य, अंगरक्षक आदिक कार्य लेल दूर देशक यात्रा करै छला। प्राचीन कालमे मोरंग आ पछाति भदोही मिथिलाक बोनिहारक श्रम किनबाक केन्द्र बनल, मुदा ऐमे मोरंग नेपालक मिथिलाञ्चलमे पड़ैत अछि मुदा एकरा प्रवास ऐ लेल कहल जाए लागल कारण ओतुक्का शासक गएर मैथिल गोरखा भऽ गेल छला।

जातिक भीतरक स्तरीकरण, दू जातिक बीचमे मतभेद, बहु-विवाह, बाल-विवाह, बिकौआ विवाह। बाल-विवाहक विरोध आ विधवा विवाहक पक्षमे कोनो सांकेतिक आन्दोलन धरि नै भेल। शूद्र कवि ऐलूष वैदिक ऋचा लिखलन्हि तँ ओ समाज एतेक सुदृढ़ छल जे शुद्रक गण द्वारा एलेक्जेण्डरकेँ कड़गर विरोध सहऽ पड़लै। मिथिलाक सन्दर्भमे सेहो जखन अपन शिल्पी लोकनि आ सभटा तथाकथित समाजक निम्न स्तरक लोक जखन सुदृढ़ छल तखन जनकक नामकरण जन सँ भेल आ फेर सिमरौनागढ़, पजेबागढ़, बलिराजपुर किला, असुरगढ़ किला, जयनगर किला, नन्दनगढ़, कटरागढ़, नौलागढ़, मंगलगढ़, कीचकगढ़, बेनूगढ़, वरिजनगढ़, आदिक एकटा शृंखला मिथिलाक स्थापत्य कलाक रूपमे उद्घाटित भेल। आ ई किला सभ शत्रुकेँ मथऽ बला मिथिलाक नामकरणक अनुरूप रहल। बौद्ध खोह, ताराक मूर्ति आदि शिल्पी कलाक अन्य रूपक चर्चक रूपमे सेहो उपस्थित अछि। मुदा ई कट्टरता बढ़ैत गेल आ आइ मिथिलामे स्थापत्यक नामपर उपलब्धि सेहो शून्य भऽ गेल। आर्थिक स्थिति एहन भऽ गेल जे एक साँझ उपास रहऽ लागल। माइग्रेशन भुखमरी रोकलक मुदा किछु मूल्यपर। तहिना मैत्रेयीसन विदुषी सहस्राब्दी धरि विलुप्त रहली से जातिगत कट्टरताक (जाति मध्य आन्तरिक स्तरीकरण आ दू जाति मध्य- दुनु प्रकारक) कारणसँ। शिक्षाक ह्रास तँ तेहेन भेल जे षड दर्शनमे चारि टा दर्शन मिथिलासँ निकलल मुदा आइ गामक गाम मैट्रिक परीक्षामे पास नै केनिहारसँ भरल अछि।

कुशेश्वरस्थान दिसुका क्षेत्र तँ बिन बाढ़िक, बरखाक समयमये डूमल रहैत अछि। मुदा ई स्थिति १९७८-७९ क बादक छी। पहिने ओ क्षेत्र पूर्ण रूपसँ उपजाउ छल, मुदा भारतमे तटबन्धक अनियन्त्रित निर्माणक संग पानिक जमाव ओतऽ शुरू भऽ गेल। मुदा ओइ क्षेत्रक बाढ़िक कोनो समाचार कहियो नै अबैत अछि, कहियो अबितो रहए तँ मात्र ई दुष्प्रचार जे ई सभटा पानि नेपालसँ छोड़ल गेल पानिक जमाव अछि। कुशेश्वरस्थान दिसुका लोक ऐ नव संकटसँ लड़बाक कला सीखि गेला।

कुशेश्वरस्थानसँ महिषी उग्रतारास्थान जेबाक लेल बाढ़िक समएमे एबा लेल कहल जाइए कारण ओइ समएमे नाओसँ गेनाइ सरल अछि। रुख समएमे खत्ता-चभच्चामे नाओ नै चलि पबैत अछि आ सड़कक हाल तँ पुछू जुनि।

फसिलक स्वरूपमे परिवर्तन भेल, मत्स्य-पालन जेना तेना कऽ कए ई क्षेत्र जबरदस्तीक एकटा जीवन-कला सिखलक। कौशिकी महारानीक २००८ ई.क प्रकोप सोझाँ आएल।

दोसरपल्लव

घेंघीक मृत्यु भऽ गेलै। जाइसँ पहिने ओ अपन सभ जमीन गौरीशंकर स्थानकेँ लिखि देलकै।

ओत्तै जन सुनवाही आइयो होइ छै।

ओहीपर स्कूल चलि रहल छै।

मुखदेव कुसियार फैक्ट्रीमे डेरा बसेने अछि।

आ मुखदेव खिस्सा सुनबिते रहै छथि... गीत गबिते रहै छथि...

पुरान समएक गप अछि...

गढ़ नारिकेलक राजा दक्ष रहए।

राजा???? सुन ने अपना गाममे पहिने राजा रहै, तेँ ने नाममे गढ़ लागल छै...

फैक्ट्रीक बाहर गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ जुमल अछि... मुखदेव सँ खिस्सा सुनैले...

...ओ राजा बड्ड प्रतापी छल। मुदा ओकरा राज्यमे कोनो हाट-बजार नै रहै। राजा सोचलक जे हमर राज्यमे हाट कोना लागत? से राजा अपन राज्यमे ढोलहो पिटबा देलक जे हमरा राज्यमे हाट लागत आ जकर जे समान नै बिकाएत से हम कीनि लेब। सम्पूर्ण राज्यक लोक आबऽ लागल आ हाट लगबऽ लागल। ऐ प्रकारेँ सभ दिन हाटमे जे समान बचि जाइ छलै, तकरा राजा कीनि लै छल।

एहिना कतेक दिन बीति गेल। एक बेर एकटा सूतबला सूत बेचै लेल ओतऽ आएल मुदा तावत हाट उठि गेल रहै आ ओकर सूता नै बिकाएल। राजा ओकर सूत कीनि लेलक।

मुदा जहियासँ राजा सूता किनलक तहियेसँ ओकर अबस्था घटऽ लागल। किछु दिनुका बाद राजाक हालति गरीब जकाँ भऽ गेल। राजा अपन स्त्रीसँ कहलक- अम्बिका सुनू। अपन राज्यमे गरीबी पसरि गेल अछि। आब अपन राज्य रहबा योग्य नै रहल।

ओतऽ सँ राजा बिदा भेल आ जाइत-जाइत कोनो देश पहुँचल।

ओइ देशक नाम गढ़ पिंगल रहै।

गढ़ अरड़नेबा तँ नै... नै रौ...

ओतुक्का राजाक नाम सेहो देशक नामपर छल। गढ़ पिंगल राजाक ओइ नगरमे गढ़ नारिकेल राजा घुमैत-घुमैत पहुँचि गेल आ कहऽ लागल जे हे भाइ हमरा कियो नोकरी राखत?

राजा कहलक-हँ। हमरा एकटा नोकरक जरूरी अछि। एकरा राखि

लिअ।

गढ़ पिंगल राजाकेँ एक सए नोकर रहै आ ओकरा एकटा आर नोकरक आवश्यकता रहै कारण ओकरा लग १०१ टा घोड़ा रहै। ओ राजाक ऐठाम रहि गेल आ सभ दिन घोड़ाक घास लेल जाए लागल आ घास छीलि कऽ आनऽ लागल।

गढ़नारिकेलक राजा दक्षक स्त्री गर्भवती रहै आ गढ़पिंगलक राजाक स्त्री सेहो गर्भवती रहै। आ संयोग एहन रहल जे दुनू राजाक स्त्री एक्के दिन बच्चा जन्म दैत अछि।

पिंगलक राजा ब्राह्मण बजा कऽ ज्योतिष देखेलक आ राजा अपन पुत्रीक नाम राखलक आ कहलक जे एकर नाम मडुवन किए अछि?

ब्राह्मण कहलक जे एकर बियाह छठी रातिकेँ हएत।

राजा ओइ दिनसँ अपन राज्यमे ताकैत-ताकैत थाकि गेलथि मुदा हुनका ओ नै भेटल। राजाक खबासिनी कहलक जे अहाँ सभ चिन्ता किए करै छी। राजा साहेब पछिला बेर जे नोकर रखने छथि हुनका ऐठाम एकटा लड़का जन्म लेने अछि। ओकरे संग बियाह करा देल जाए। ओइ बच्चाक नाम राशिक अनुसार राजा ढोलन राखल गेल छल।

गढ़पिंगलक राजा सोचलक जे ई बड्ड नीक गप अछि, जखन ई लगेमे अछि तँ ओकरे संग बियाह करा देल जाए। दिन तँ ताकले रहै से ओइ छठिक रातिमे बियाह भऽ गेल। किछु दिनुका बाद राजा दक्ष कहलक जे आब एतऽ रहबा जोगर नै अछि। आब अपन देश जेबाक चाही।

राजा जइ साढ़ीनपर चढ़ि कऽ आएल रहथि ओइ साढ़ीनकेँ कहलन्हि जे साढ़िन आब अपन देश चलू। आब साढ़ीनपर चढ़ि कऽ राजा-रानी-बच्चा बिदा भेला। किछु दूर रस्तामे गेला तँ एकटा बोन भेटलन्हि। ओइ बोनमे रस्ताक कातमे एकटा पोखरि रहै। ओइ पोखरिक महारपर दू टा बाघ-बाघिन रहै छल। राजा सोचलक जे हमर सभक बच्चा जखन ऐ रस्तासँ अपन सासुर जाएत, तखन ई बाघ हमर बच्चा सभकेँ खा जाएत। तइ द्वारे एकरा मारि

देनाइ ठीक हएत। राजा बाघकैं मारि देलक आ आगाँ चलल तँ बाघिन कहलक जे राजा तूँ हमरा जेना राँड़ केने जा रहल छह, ओहिना तोहर बेटा जखन अपन सासुर जेतह तँ गढ़ पिङल राजमे ओकर कनियाँकैं हमहू राँड़ कऽ देबै।

बाघिनक ई अबाज मात्र राजा आ साढ़िन सुनलक। राजा अपन घर पहुँचि कऽ ई गप ककरो नै कहलक। ओ अपन साढ़िनकैं एकटा पैघ खधाइ खूनि कऽ ओइमे धऽ देलकै कारण बाहर रहलासँ ओ ई गप ओकर बच्चाकैं सुना दैतै।

ओही समय ओ छोट बालककैं अपन फुलवाड़ीक हरेबा-परेबा मालिनक संग दऽ देलक। ओकर दुनू बहिन ओकरा बड्ड नीक जकाँ सेवा करऽ लगली। एहिना करैत किछु दिन बीति गेल तँ ई बच्चा समर्थ भऽ गेल आ तखनो ओकरा किछु बूझल नै भेलै।

उम्हर ओ कन्याँ मड़ुअन सेहो पैघ भऽ गेलि। कन्या युवा भऽ गेलि तँ सखी सभक संग घुमैत फिरैत हुनका कोनो संगी कहलक जे हे बहिन। आब अहाँ समर्थ भऽ गेलौं। अहाँक पिताजी अहाँक बियाहक विषयमे किछु नै सोचि रहल छथि। ई बात सुनि कऽ कन्याँ बड़ चिन्तामे पड़ि गेली। अपन महलमे जा कऽ ओ पलंगपर पड़ि रहली आ खेनाइ त्यागि देलन्हि। ऐपर ओकर माए कन्या लग जा कऽ कहलक, बेटी अहाँ खेनाइ किए नै खाइ छी ?

कन्याँ बाजलि- माए। सखी सभ बड्ड किचकिचबैत अछि। तइ द्वारे हमरा भूख नै लगैत अछि।

माए कहलक- अहाँकैं की कहि किचकिचबै छथि?

कन्याँ बाजल- ओ सभ हमरा कहै छथि जे अहाँक पिताजीकैं कोन चीजक कमी अछि, जे अहाँक पिताजी अहाँक बियाह नै करा रहल छथि?

माए कहलक- बेटी, अहाँक बियाह छठीक रातिमे भऽ गेल अछि।

अहाँक सासुर गढ़ नारिकेलमे अछि। नै जानि ओ किए नै अबै छथि?

ई सुनि कन्याँ कहलक जे हमरा जबुनाक कातमे एकटा मकान बना दिअ आ सभ वस्तुक व्यवस्था कऽ दिअ। हम बारह बरिख धरि सदाव्रत बाँटब। एतेक सुनि राजा ओहिना केलक। मड़ुवन कन्याँ जबुनाक कातमे सदाव्रत बँटनाइ शुरू कऽ देलक।

बनिजारा सभ वाणिज्य करबा लेल गढ़ नारिकेलसँ गढ़ पिंगल जा रहल छल। बनिजारा सभ जखन गढ़ पिंगल पहुँचल तँ जबुना धारक कातसँ होइत आगाँ बढ़ि रहल छल। जाइत-जाइत ओ सभ ओइठाम पहुँचल जतऽ मड़ुवन कन्या सदाव्रत बाँटि रहल छली।

ओ कन्याँ पुछलक- अहाँ सभ कतऽ जा रहल छी आ कतऽसँ आएल छी।

बनिजारा बाजल- हम सभ गढ़नारिकेलसँ आएल छी आ गढ़ पिंगलमे हीरा-मोतीक वाणिज्य करै छी।

कन्याँ बाजल-अहाँ वाणिज्य कऽ कए घुरब तँ हमर एकटा पत्र लऽ जाएब?

बनिजारा बाजल- अहाँ पत्र लिखि कऽ राखब, हम जरूर लऽ जाएब।

बनिजारा जखन घुरल तँ ओ पत्र लऽ कऽ चलि गेल आ जखन गढ़ नारिकेल पहुँचल तँ हरेबा-परेबा जे दुनू बहिन छल- आ बड्ड पैघ जादूगरनी सभ छल- ओ जादूक जोरसँ पता लगा कऽ राजाकेँ खबरि केलक आ बनिजारासँ ओ पत्र लऽ कऽ ओकरा आगिमे जरा देलक आ ओइ राजाक बेटाकेँ एकर पता नै चलऽ देलक।

कन्याँक ई पत्र मारल गेल। ओ बेचारी बाट तकैत रहल। किछु दिन बीतल। ओ कन्याँ एकटा सुग्गा पोसने छली।

ओ सुग्गासँ पुछलक- की तूँ हमर पत्र लऽ जा सकै छह।

सुग्गा बाजल- हँ। हम पत्र राजाकेँ दऽ देब।

कन्याँ पत्र लिखि कऽ सुग्गाक गरदनिमे लटका देलक आ कहलक- जाउ।

सुग्गा ओतऽ सँ बिदा भेल। सुग्गा आकासमे उड़ि बिदा भेल आ पहुँचल गढ़ नारिकेल राज्य जतऽ हरेबा-परेबा आ राजा ढोलन रहथि। सुग्गा उड़ि कऽ ओकर कान्हपर बैसि गेल, ठोंठसँ सूता काटि कऽ खसेलक। ओइ समए हरेबा-परेबा राजा ढोलनक फुलवारीमे बैसल रहए। ठंढीक मौसम छल। आगि पजारि कऽ बैसल छल। जखने ओ पत्र खसेलक तखने मालिन ओइ पत्रकेँ आगिमे धऽ देलक। राजा ढोलनकेँ बड्ड तामस उठलै। दुनूकेँ दू-दू चमेटा मारलक आ कहलक जे तूँ दुनू गोटे एतऽसँ चलि जो। दुनू बहिन पकड़ि कऽ ओकरा मनाबए लागल।

कन्याँक ओहो पत्र खतम भऽ गेल। कन्याँ बहुत चिन्तामे पड़ि गेल। बहुत समए आर बीति गेल।

एक दिन जबुनाक किनारसँ एकटा महात्मा जोगी रूपमे जा रहल छल। कन्याँक नजरि ओइ महात्मापर पड़ि गेल। कन्याँ बड्ड चिन्तित भऽ कानि रहल छली। ओ साधु महात्मा कन्याँक कननाइ सुनि एली आ कारण पुछलक।

कन्याँ सभटा हाल बतेलक।

महात्मा कहलक जे तूँ एकटा पत्र लिखि कऽ हमरा दे आ हम ओ पत्र ओतऽ पहुँचाएब।

कन्याँ पत्र लिखि कऽ महात्माकेँ देलक। महात्मा ओतऽ सँ बिदा भेल।

कन्याँ महात्माकेँ गाँजा, भांग आ हफीम देलक। महात्मा खाइत-पिबैत ओतऽ सँ बिदा भेल। किछु दिनुका बाद महात्मा गढ़ नारिकेल पहुँचल, जतऽ हरेबा-परेबा आ राजा ढोलन रहए। ओ फुलबारीक बीचमे अपन डेरा

खसेलक। रतुका मौसम छल। भोर होइ बला छल। ओइ समय महात्मा एकटा मोहिनी बाँसुरी निकाललक आ बजबऽ लागल। ओइ बाँसुरीक अबाज सुनि राजा ढोलन उठल आ चलबा लऽ तैयार भेल तँ दुनू बहिन ओइ बाँसुरीपर बहुत रास जादू-गुण चलेलक। मुदा महात्माक किछु नै बिगड़ल। राजा ढोलन उठल आ दुनूकेँ दू-दू लात मारि महात्मा लग गेल। साधुजी ओइ पत्रकेँ निकालि कऽ राजा ढोलनकेँ देलन्हि। आ से पढ़ि राजा ढोलन तामसे बिख-सबिख भऽ गेल आ ओतऽ सँ घर गेल आ एकटा तलबार लऽ पितासँ पूछऽ लागल जे बताउ जे ई हमर बियाह कतऽ भेल अछि? पिताकेँ ओ बाघिन मोन पड़ि गेलै से ओ झूठ बाजल आ कहलक जे हम तोहर बियाह नै करबेने छियौ।

तामसे भेर भऽ ओ ओइ पत्रकेँ राजाक सोझाँ राखलक। राजा ओ पढ़ि बड्ड चिन्तामे पड़ि गेल।

ओ अपन बेटाकेँ कहलक। देखू बेटा। अहाँक बियाह हम छठीक राति केने छी आ गौना ऐ द्वारे नै केलौं कारण अबै काल हम एकटा बाघकेँ मारि देलौं। फेर ओ सभटा खिस्सा कहि सुनेलक आ कहलक, जे ओ डरे ओकर गौना नै करेलक।

ढोलन बाजल- हमर सवारी कतऽ अछि। हमर सवारी दिअ।

राजा कहलक- साढ़िन तँ तरहाराक नीचाँ अछि। ओ जीवित अछि वा मरि गेल से नै जानि।

राजा ढोलन तरहराक नीचाँसँ साढ़िनकेँ बहार केलक तँ साढ़िनक देहमे पिल्लू लागि गेल छलै। ओ ओकरा साफ केलक आ ओकरा चना-चबेना खुएलक। खुआबैत-खुआबैत ओ पहिने जकाँ तन्दरुस्त भऽ गेल।

राजा ढोलन बाजल- साढ़िन, तोहर पएर बहुत दिनसँ बान्हल छह। तूँ चौदह कोसक रस्ताकेँ एक दिनमे चारि चौखड़ लगा देबऽ तँ हम बुझब। हम

सभ फेरसँ गढ़ पिंगल पहुँचब। साढ़िन अपन चालि एक दिनमे बना लेलक। राजा ढोलन अपन सासुर बिदा भेल। साढ़िनपर सवार भऽ अपन कान्हपर बन्दूक लेलक आ बिदा भेल। चलैत-चलैत ओ ओही बोनमे पहुँचल। ओही रस्तासँ ओ सभ जा रहल छल, जतऽ ओ बाघिन रहै छली। बाघिनकेँ राजा ढोलन देखलक आ ओइ बाघिनकेँ मारि देलक। फेर ओ अपन सासुर गढ़ पिङल गेल आ फूल बगानमे डेरा खसेलक। साढ़िनकेँ ओ ओतै छोड़ि फूल-बगानकेँ तोड़ि-ताड़ि कऽ तहस-नहस कऽ देलक।

मालिन कहलक जे तोरा राजासँ से पिटान पिटबेबउ आ जतेक तोँ बरबादी केने छँह तकर हरजाना लेबउ।

राजा ढोलन बाजल- जो तोरा जे करबाक छौ कर।

मालिन तामसे बिदा भेलि आ राजा लग गेलि। राजासँ कहलक।

राजा पुछलक जे ओ कतुक्का अछि।

मालिन कहलक जे ओ अपन घर गढ़ नारिकेल बतेलक अछि।

राजा अपन सिपाही सभकेँ पठेलक।

ओ सभ ढोलनकेँ पुछलक- अहाँ कतुक्का छी आ कतऽ सँ आएल छी।

ढोलन बाजल- हमर घर गढ़ नारिकेल अछि आ हम अपन सासुर गढ़ पिंगल आएल छी।

सिपाही सभ ई गप राजाकेँ जा कऽ कहलक।

राजा प्रसन्नतासँ स्वागत कऽ डोलीमे बैसा कऽ ढोलनकेँ अपना घर अनलक। किछु दिनुका बाद राजा अपन बेटी-जमाएकेँ गढ़ पिंगलसँ गढ़ नारिकेल लेल बिदा केलक। ओतऽ सँ राजा ढोलन आ ओ मड़ुवन कन्याँ अपन घर गेल आ राज करए लागल।

फेर ऐ राजाक राजगद्दी कहिया गेलै?

गढ़ कतऽ बिलेलै?

नारिकेलसँ ऐ बिलैल गढ़क कोन सरोकार छै?

सभ किछु तँ बदलिये गेलै मुदा गाम वएह गढ़ नारिकेल। फरिछाएल ...

घुरि कऽ देखबाक प्रवृत्ति.....

साओन-भादवमे जखन चरैले घासे-घास रहै छै ओ पतरा जाइए, कारण कतबो चरैए आ पाछाँ घुरि कऽ देखैए तँ घासे घास देखा पड़ै छै, ओकरा होइ छै जे किछु नै चरल अछि।

आब कनसुप्तीक बदला मटिया तेलमे डुबाएल गेनी, लुड्डो, आइस पाइस, डैस कोस सिंगल बुलबुल मास्टर, क्रिकेट, वॉलीबॉल, बैडमिंटन खेल सभ सेहो आबि गेल अछि।

फतिंगा, तितली, टुकिली, हरियर रंगक हनुमान जीक घोड़ा, एकटा फतिंगा, जे.सी.बी. मशीन जकाँ, लगैए एकरे देखि कऽ ई मशीन बनल, ई सभ अखनो गढ़ नारिकेलमे अछि।

आसिनसँ माघ धरि ओस खसै छै। वैशाखमे घास नै रहै छै मुदा गदहा मोटा जाइ छै, पाछाँ घुरि कऽ देखै छै तँ एकोटा घास नै देखा पड़ै छै, ओकरा होइ छै जे खूब चरल अछि।

गहूम कम्मे शम्म लोक करै छल।

पहिने पसेरी कट्ठा होइ छलै, आब मोन कट्ठा होइ छै। झंझारपुरक सरकारी कृषि ऑफिसक सिंहजी सिखेलन्हि गौँआकेँ गहूमक खेतीक नव विधि।

सिराउर दऽ कऽ जोतलाक बाद ओइमे बीआ छीटि फेर बाइसम दिन जखन गाछ बहरेलै सिंहजी यूरिया छीटि दै छथि। हरियर कचोर गाछ बहरा जाइ छै। सौंसे गढ़ि नारिकेल जुमि जाइए। यूरियाक परमिट सेहो दिअबा देलन्हि सिंहजी। यूरिया टाएरगाड़ीमे भरि कऽ आनि रहल अछि गौँआ सभ।

मोहन गबैय्या कीटनाशक आ यूरियाक विरोध करै छथि, गीत गाबि कऽ, धू ई मोहन गबैय्या सभ चीजक विरोधे करैए, गीत गाबि कऽ।

मुदा किछु गप ओ ठीको कहि रहल अछि। छिऐ तँ जहरे ने ई नवका खाद। गोबर खादसँ बलगर थोड़े छै। मुदा गहूम नव फसिल तँ खादो नव!

कहि रहल छथि मुखदेव, देखबै दालि-तेलक कमी भऽ जाएत, गहूमक खेती हएत आ दालि आ तेल बजारसँ कीनऽ पड़त।

गहूमक खेतीमे खाद-बीआ-कीटनाशक आ पटौनीमे ततेक खर्चा होइए जे बटाइमे घाटा होइए, मुदा धानमे बचत छै। से गहूम नै करबै तँ बटाइपर धानोक खेती लेल जमीन नै भेटत। से गहूमक खेती करऽ पड़ैए।

ऐ मुखदेवक सभटा गप सही कोना भऽ जाइ छै?

तेसर पल्लव

एक मुट्ठी चाउर।

अखनो मुठिया चाउर अदहन दै काल मिथिलामे राखल जाइ छै। आ भिखमंगा सभकेँ देल जाइ छै। दाउन-ओसौनीक बाद अगौं राखल जाइ छै। बौकू भाइ तौलै छथि, हुनका ओ अगौं दऽ देल जाइए।

बाढ़ि कहाँ खतम कऽ सकलै ई सभ...

गढ़ नारिकेलक लोक सभ। मुठिया डाँर, ढकिया सन मूड़ी, डोका सन आँखि, औंठिया केश गालपर लटकल, धोबिया पाटसन छाती, मिसिया सन-सन दाँत, कतरल नाक, सवा हाथ टेरल मोंछ, सुपा सन कान, ऐंठल बाँहि।

ओहिना...

नौ गज नाम सात गज चाकर। सोलह शृंगार बत्तीसो अभरन केने।

बाइस हाथक डोपटा, पचुआ धोती, बाइस गज लपेटा, बारह पसेरीक तारक छड़ी।

ओहिना... एन-मेन..

गढ़ नारिकेलक लोक सभ।
कारी तँ गोर सेहो।
कतरल नाक तँ थोपल सेहो।
सोझका केश तँ औंठिया सेहो।
मिसिया सन-सन दाँत तँ खुरपा सन-सन सेहो।
सोलह गजक पचुआ धोती तँ लंगोट आ धरिया सेहो।
ओहिना...

लोक मोहन गबैय्याकेँ देखै छन्हि, बूढ़ झुनकुट.. गीत गाबैत.. खिस्सा सुनबैत.. हँसैत-बजैत.. गढ़ नारिकेलक खुशी... ओतुक्का लोकक खुशी.. अपन काजमे भेर।

लोक आपसमे बजैए.. कतेक बूढ़ हेता ई.. हौ गोटैक सए साल बूढ़ तँ अबस्से हेता। एहने सभ लोकक प्रतापक चलैत गाम डुमैत नै अछि। कतबो बाढ़ि आबि नै जाओ...

एहेन लोक नै मरैए.. खाली गीत गबैत रहैए। आ जँ मरियो जेता मुखदेव राम तँ फेर गढ़ नारिकेलमे जनम लऽ लेत एकटा आर मुखदेव राम गबैय्या, जे वंचितक हक लेल गबैत रहत.. कएक सए बर्ख धरि... आरो.. ।

नहिये सुनेलक मुखदेव सहस्रशीर्षाबला खिस्सा................।

(गढ़ नारिकेल उपन्यास त्रयीक पहिल उपन्यास)



श्रुति प्रकाशन
कार्यालयः 8/21, न्यू राजेन्द्र नगर, दिल्ली–110008
दूरभाषः (011) 25886656–57 फैक्सः (011) 25886658
website: http://www.shruti-publication.com
E-mail: shruti.publication@shruti-publication.com



Rs. 400/- US $25